कुंअर सिंह: एक अध्ययन

लेखक:—

महाराजकुमार दुर्गा शङ्कर प्रसाद सिंह

भूमिका लेखक—

श्री जयप्रकाश नारायण

प्रकाशक:—

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल

नया टोला, पटना—४

कुंअर सिंह: एक अध्ययन

लेखक:—

महाराजकुमार दुर्गा शङ्कर प्रसाद सिंह

भूमिका लेखक—

श्री जयप्रकाश नारायण

प्रकाशक:—

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल

नया टोला, पटना—४

प्रथम संस्करण : सन् १९५५ ई०

मूल्य
६)

मुद्रक
विष्णु यन्त्रालय,
बी० २।७१, भदैनी, बनारस

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री बचपन में मुझे अपने पितामह श्री नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह और उनके दो नौकर सहाई और दवर से कहानी के रूप में एक नहीं हजारों बार सुनने को मिली थी। इस 'लड़ाई के हाल' शीर्षक कहानी को बार-बार सुनने का फल यह हुआ कि अपने पूर्वजों की वीरता, विशेषकर कुँअर सिंह की बहादुरी पर मेरी आस्था और श्रद्धा जम गयी। फिर १६२४ के लगभग जब श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित ने "बाबू कुँअर सिंह" नामक पुस्तक की सामग्री जुटाते समय दलीपपुर में कई दिनों तक ठहर कर अनुसन्धान किया था उस समय भी इस ज्ञान की पुनरावृत्ति हुई। जैसे-जैसे साहित्य और पुरातत्व का शौक बढ़ता गया वैसे-वैसे उन कान सुनी कहानियों के आधारभूत लिखित प्रमाणों को इकट्ठा करने का मौका भी मिलता गया। फलतः १६५०-५१ ई० के लगभग जब बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद का जन्म हुआ और मेरी "भोजपुरी के कवि और उनके काव्य" नामक पुस्तक को उसने छापना स्वीकार तथा उस पुस्तक की भूमिका के रूप में भोजपुरी का इतिहास लिखने के लिए मेरी सेवा परिषद को ६ मास के लिए अर्पित की गयी तब मैंने बिहार सरकार के समक्ष एक स्मृति-पत्र भेजा। जिसमें कुँअर सिंह के ऊपर साहित्य के अभाव का जिक्र करते हुए यह आवेदन किया गया था कि १६४७ में जब स्वतन्त्र भारत के विभिन्न राज्य अपने अपने महान् सेनानियों, राष्ट्रसेवकों की शताब्दी वर्षगाँठ मनावेंगे उस समय बिहार राज्य के पास कुँअर सिंह की शताब्दी जयन्ती मनाने के लिए क्या मसाला वर्त्तमान है? उनकी एक प्रामाणिक जीवनी भी अब तक नहीं लिखी गयी है। इसके लिए अपने पास की सामग्री का तथा अपने कुँअर सिंह सम्बन्धी ज्ञान का हवाला देते हुए मैंने एक योजना पेश की थी, जिसमें कुँअर सिंह के सम्बन्ध की सभी आवश्यक सामग्रियों को शोध करने के सुझाव और तरीके थे और हर जिले में जहाँ बाबू कुँअर सिंह गये थे जा-जाकर लोक-स्मृति, सरकारी कागजों तथा अन्य साधनों से उनके ऐतिहासिक मसाला इकट्ठा करने के विविध विवरण दिये गये थे उसमें मैंने इस कार्य के

लिये अपनी सेवा भी अर्पित करने की इच्छा प्रकट की थी। उस स्मृति-पत्र के कारण अथवा स्वयं ही विहार सरकार का ध्यान उधर आकर्षित हुआ और कुँअर सिंह के स्मारक को कायम करने के लिये उसने विचार किया।

पटना विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० कालींकिङ्कर दत्त को कुँअर सिंह की जीवनी अंग्रेजी में लिखने का भार सौंपा गया और रुपये भी स्वीकृत हुए। मेरे सम्बन्ध में कुछ जाँच-पड़ताल करके सरकार को इसलिये शायद खामोशी अख्तियार करनी पड़ी कि मैं किसी विश्व-विद्यालय द्वारा सर्टिफाइड विद्वान नहीं था।

इधर जब २३ अप्रैल को कुँअर सिंह दिवस घोषित किया गया और उसके लिये जगदीशपुर में आयोजन हुए तो मुझे जन-सम्पर्क विभाग की ओर से कुँअर सिंह सम्बन्धी लेखों को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने का भार सौंपा गया। उसी सिलसिले में पटना के सचिवालय में अवस्थित विहार केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय में कुँअर सिंह पर शोध करने की अनुमति भी बड़ी कठिनाई से मुझे मिली।

अपने पूर्वज्ञान के आधार पर सामग्री खोजने में मुझे विशेष सुविधा हुई और उस विभाग के अभिलेखपाल तथा सहायक अभिलेखपाल श्री नारायण शरण M.A. तथा श्री आदित्य प्रसाद झा M.A. ने भी मुझे दिल खोलकर कागजों को देखने में सहायता दी। कुँअर सिंह सम्बन्धी ज्ञान का भाण्डार जो श्री झा के मस्तिष्क में मैंने पाया उससे मेरी उनके प्रति श्रद्धा बढ़ गयी। उन खोजों के फलस्वरूप समय कम होने पर भी कुँअर सिंह की जीवनी के विविध पहलुओं को लेकर मैंने स्वयं दर्जनों लेख लिखे और अन्य विद्वानों से सामग्री देकर लेख लिखवाये जो उत्तर भारत के पत्र-पत्रिकाओं में २३ अप्रैल को कुँअर सिह दिवस के अवसर पर प्रकाशित हुए। फिर उसके बाद भी उन विषयों पर जिनपर लेख उन कम समयों में तैयार नहीं किये जा सकते थे लिखे गये और प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक का पूर्वार्ध अध्ययनशील, शोधपूर्ण निबन्धों से सजाया गया है। इसमें साहित्यिक दृष्टिकोण के साथ-साथ कुँअर सिंह के जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालने की चेष्टा की गयी है। अपने तीस-चौंतीस वर्ष के

व्यक्तिगत शोध से प्राप्त सामग्रियों को साहित्यिक पुट के साथ रखने की चेष्टा की गयी है। कुँअर सिंह सम्बन्धी जन-श्रुतियाँ, लोक-गीत, काव्य, पँवारे आदि जो लोक-कण्ठों से तथा अपने पूज्य पितामह जी और अन्य वयोवृद्धों से सुनने को मिले थे उनको भी सजा कर रखा गया है। कुँअर सिंह की जीवनी का कई पहलुओं से शोधपूर्ण अध्ययन करके उन पर आलोचनात्मक विचार भी रखे गये हैं।

पुस्तक के परार्ध में १८५७ ई० की क्रांति में कुँअर सिंह की सेना के पचासों व्यक्तियों की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है तथा तद्कालीन राष्ट्रीय सरकार के शासन और सेना के विवरण भी दिए गये हैं। हरेकृष्ण सिंह जो उस क्रांति के प्रधान प्रवर्तक थे पर तब भी आजतक जनता के समक्ष शेक्सपियर के जुलियस सीजर नाटक के पात्र ब्रुटस की तरह अपने शत्रुओं के प्रचार के कारण धोखेबाज और अंग्रेजों का सहायक माने जाते थे। अपने असली रूप में प्रकट किये गये हैं। और उनकी तथा अमर सिंह की जीवनी के शोध एक विशेष चीज हुए हैं। अमर सिंह भी जो कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद भी अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये और जिनके सम्बन्ध में आजतक कई तरह की किम्बदन्तियाँ प्रचलित हैं अपने असली रूप में प्रकट हुए हैं। अन्त मे कुँअर सिंह की महानता और व्यक्तित्व पर एक प्रामाणिक समीक्षा का लेख भी दिया गया है।

पुस्तक के अन्त में उन प्राचीन कागजों की प्रतिलिपि भी दे दी गयी है जिनकी प्राप्ति शोध के सिलसिले में हुई है और जिनके आधार पर पुस्तक की ऐतिहासिकता अवलम्बित है। कुँअर सिंह सम्बन्धी अन्य कागज और वंश-वृक्ष भी दे दिये गये हैं। साथ ही पुरातत्व की जो सामग्री आज जगदीशपुर में प्राप्त हैं उनके चित्रों का भी समावेश किया गया है।

फिर भी प्रस्तुत पुस्तक में जो कुछ सामग्रियाँ आज तक हमारे पास प्राप्त थीं उनको इधर-उधर करके कुँअर सिंह की जीवनी पर प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है। और आशा है भावी शोधकों के लिये प्रस्तुत पुस्तक में असंख्य अलभ्य ऐसी चीजें मौजूद हैं जिनके आधार पर अच्छी से अच्छी तस्वीर तैयार की जा सकती है तब भी मुझे सन्तोष नहीं है और हिन्दी में कुँअर सिंह की जीवनी पूरी अनुसन्धान के बाद जो लिखने की मेरी हार्दिक इच्छा है वह कब और कैसे पूरी होगी, यह

उम्र की ढलती के साथ-साथ बढ़ती ही चली जा रही है। हिन्दी के प्रकाशकों में आज कोई इतना समर्थ नहीं दीखता जो इस वृहद खर्चीले काम को हाथ में ले। सरकार का ध्यान इधर आकर्षित करने के लिये समर्थ राजनीतिकों की सहायता और पैरवी की आवश्यकता है जो मुझे प्राप्य नहीं है। इसलिए इस आकांक्षा की पूर्ति का भार ईश्वर पर ही छोड़कर सन्तोष करने के अतिरिक्त मेरे सामने दूसरा मार्ग नहीं दीखता।

प्रस्तुत पुस्तक में "गलतफहमियाँ और उनका निराकरण" तथा "कुँअर सिंह के विश्वासी सरदार" शीर्षक जो दो लेख हैं वे २३ अप्रैल १९५५ के नवराष्ट्र में प्रकाशित हो चुके हैं। इन दो लेखों को लेकर इतिहास से अनभिज्ञ दो व्यक्तियों ने व्यक्तिगत लाभ के विचार से दो विवाद महेश प्रसाद सिंह और विरेन्द्र बहादुर सिंह के नाम से ३ मई और १४ मई के "नवराष्ट्र" हिन्दी दैनिक पटना, के अंकों में प्रकाशित कराया था। इन विवादों का प्रत्युत्तर श्री भोजपुरी शोधन ने नवराष्ट्र के ६ मई और २३ मई १९५५ के अंकों में निकाल कर उक्त विवादों में उठायी गयी सभी शंकाओं और मिथ्या धारणाओं का समाधान उस पक्ष के सरकारी कागजों के उदाहरण के साथ कर दिया था। उन विवादों को यहाँ देना पुस्तक की निरपेक्षता और प्रामाणिकता की दृष्टि से अनावश्यक प्रतीत होता है। जिन महाशयों को उन विवादों को जानने की आवश्यकता हो वे उन पत्रों की फाइलों को पढ़ लें।

अन्त में 'अन्तर्राष्ट्रीय-प्रकाशन-मण्डल' को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने इस पुस्तक के प्रथम संस्करण का भार स्वीकार करके उसे शीघ्र प्रकाशित किया और सुन्दर बनाने की चेष्टा की।

चूँकि पुस्तक की छपाई काशी में हुई और मुझको अन्तिम प्रूफ पढ़ने का अवसर नहीं मिला इसलिए पुस्तक में प्रूफ पढ़ने और सेटिङ्ग की अनेक भद्दी भूलें रह गयी हैं जिनके लिए मुझको और प्रकाशक को खेद है। अतः अन्त में एक शुद्धि-पत्र लगा दिया गया है पाठकों से निवेदन है कि उसकी सहायता से भूलों को सुधार कर पढ़ने का कष्ट करेंगे।

कदमकुआँ, पटना—३
३०/१०/५५

—दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक में भारत के उस अनमोल रत्न के अपूर्व साहस और देश-प्रेम की गाथा का दिग्दर्शन है जिससे इतिहास के पन्ने सुनहरे हो गये और महान अंग्रेज सामरिकों को भी उसकी लोकप्रियता, दान शीलता, निसर्गसिद्ध सामरिक दक्षता तथा अदम्य साहस का लोहा मानना पड़ा।

यह पुस्तक एक बड़े ही सजग एवं सर्व-क्षमता-सम्पन्न लेखक की कृति है। इसका प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक वाक्य और पंक्ति शालीन सावधानी से लिखी गयी है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का दुर्भाग्य था कि बाबू कुँअर सिंह के विषय में अभी तक इस कलेवर की कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी।

बाबू दुर्गा शङ्कर प्रसाद सिंह के अथक प्रयास से बाबू कुँअर सिंह सम्बन्धी सम्पूर्ण साहित्य शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

आशा है पाठक इस पुस्तक को अपनाकर हमारा उत्साह बढ़ावेंगे।

—प्रकाशक

विषय सूची

कुंअर सिंह : एक अध्ययन

२३ अप्रैल १८५८ ई० और उसके बाद

[यह लेख अंग्रेजी में पटना के 'स्पार्क' नामक अंग्रेजी पत्रिका, दिनांक १५ मई '५५ में शेखरप्रसाद सिंह के नाम से प्रकाशित हो चुका है।]

२३ अप्रैल जो अभी 'कुँअर सिंह दिवस' के नाम से सिपाही विद्रोह के महान नेता बाबू कुँअर सिंह की स्मृति में मनाया गया, वह बिहार के इतिहास में उल्लेखनीय दिन है क्योंकि १८५८ ई० के इसी दिन अंग्रेजी सेना को बिहार के राष्ट्रीय क्रान्ति में सबसे बड़ी पराजय का सामना जगदीशपुर के पास करना पड़ा था। अंग्रेजों की इस महान पराजय के बाद से जगदीशपुर क्रान्तिकारी सरकार की राजधानी बन गया। यहाँ क्रान्तिकारी और क्रान्तिकारी सरकार का प्रयोग अलंकारिक अर्थ में नहीं किया गया है बल्कि इनके व्यवहार तत्कालीन सरकारी अफसरों द्वारा उन कागजों में खुलकर किये गये हैं जो आज भी पटना सचिवालय में सुरक्षित हैं।

पटना डिवीजन के तद्कालीन कमिश्नर श्री ई० ए० सामुन्तलस ने अपने २५ सितम्बर १८५८ ई० के पटना डिवीजन में किये गये अपराधों के संबंध की रिपोर्ट बंगाल के छोटे लाट के समक्ष प्रस्तुत करते हुए लिखा था—

"इसलिये शाहाबाद का आन्दोलन राष्ट्रीय शान्ति के सभी गुणों से सम्पन्न था और बहुत-से छोटे जमीन्दारों ने इसको सहायता पहुँचायी थी तथा कमी-बेशी रूप में जिले भर के सम्पूर्ण राजपूत-जाति ने उसमें खुलकर भाग लिया था।" यह बयान डुमराँव के तत्कालीन महाराज महेश्वर बक्स सिंह की ४ जून १८६० ई० तथा इसके पूर्व के उन दरखास्तों से भी पुष्ट होता है जिसको उन्होंने १८५९-६० में बंगाल सरकार तथा शाहाबाद के कलक्टर कमीशन के पास

अधिक हथियार रखने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए दिये थे। उसमें अपनी राजभक्ति के अनेकानेक उदाहरणों को पेश करते हुए उन्होंने लिखा था—"शाहाबाद जिले भर के निवासी, जहाँ कि प्रार्थी की अधिक जमीन्दारी है, प्रार्थी से सबसे अधिक घृणा और नफरत इसलिए रखते हैं कि प्रार्थी ने मृत बागी बाबू कुँअर सिंह के विरुद्ध गत विद्रोह में अंग्रेजों की मदद की थी। लड़ाई के प्रारम्भ से ही यह भावना उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और आज तो बहुत बढ़ गयी है। इसलिये इतने कम हथियार रखने की आज्ञा से—जब कि आपका प्रार्थी अधिक हथियार रखने की आज्ञा की आशा किये था—प्रार्थी को अधिक हानि होने की निश्चित सम्भावना है।"

आम जनता की यह सार्वभौमिक घृणा उन व्यक्तियों के प्रति थी जो क्रान्ति के समय अंग्रेजों के भक्त थे। इस बात से और अधिक उत्तेजना फैली कि उस समय कुँअर सिंह के अपने सम्बन्धी ही विशेष रूप से अंग्रेजों की सहायता कर रहे थे। उपर्युक्त महाराज महेश्वर बक्स सिंह भी कुँअर सिंह के अपने सगोत्रीय भाई थे और एक ही शाखा के थे। दोनों में केवल चन्द पीढ़ी का अन्तर था। कुँअर सिंह के सगे भाई बाबू दयालू सिंह के पुत्र रिपुभंजन सिंह और गुमान भंजन सिंह ने भी अँग्रेजों का पक्ष लिया था और इसी कारण वे जनता के घृणा के पात्र बन गये थे।

जब क्रान्ति हवा हो गयी और अंग्रेजी सेना द्वारा १८५६ ई० के अन्त तक जनता में दमनचक्र द्वारा आतंक फैला दिया गया, तब तो ऐसे महानुभाव बड़े उत्साह से सामने आये और क्रान्ति में भाग लेने वालों को डरा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करने लगे तथा सरकार से अपनी खैरख्वाही के लिए जागीर पाने की कोशिश करने लगे। इनके इन करतूतों से जनता की इनके प्रति घृणा तीव्र हो गयी और सामाजिक बहिष्कार तक होने लगा।

रिपुभंजन सिंह ने ४।६।१८५६ से ७ जनवरी १८६१ तक कई दरख्वास्तें सरकार में देकर अपनी राजभक्ति का उल्लेख किया और कुँअर सिंह की जब्त रियासत को प्राप्त करने की कोशिश की। उनमें उन्होंने कहा था—"जब आरा के सरकारी कागजों, अधिकारियों तथा फौजी अफसरों की रिपोर्टों से और दूसरे

सबूतों और कागजों से जो इस मुकदमें में दाखिल किये गये हैं, यह साबित है कि प्रार्थी (रिपुभंजन सिंह) ने सिपाही विद्रोह के समय और उसके बाद भी अंग्रेजी सरकार के प्रति सदा अपनी राजभक्ति दिखलायी है; (२) बहुत-से यूरोपियनों, भद्र पुरुषों और महिलाओं की जानें बचायी हैं; (३) अंग्रेजी सेना को भरपूर मदद पहुँचायी है; (४) बहुतेरे विद्रोही सिपाहियों को हथियार रखने के लिए राजी किया है; (५) बहुतेरे दूसरे लोगों को भी बलवा में भाग न लेने के लिए समझाया है और (६) बहुत से अच्छे कामों को सरकार की मदद में उस बलवे में किया है, तब प्रार्थी (रिपुभंजन सिंह) अंग्रेजी सरकार से जागीर पाने का हकदार है। परन्तु जागीर पाने की बात तो दूर रही, अपनी पैतृक रियासत (कुँअर सिंह की जब्त रियासत) से भी वंचित किया जाता है। यह महारानी विक्टोरिया की घोषणा के अनुकूल नहीं है और न कानून और इन्साफ से ही उचित है।"

इन कार्यों से आम जनता की राष्ट्रीय भावना को महान धक्का लगा था। ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार भी तब से कुछ दिन पूर्व तक नितान्त जारी रहा यानी शादी-व्याह, खाना-पीना में ये लोग बिरादरी से बहिष्कृत रहे। इससे स्पष्ट है कि वह क्रान्ति राष्ट्रीय क्रान्ति थी, सिपाही विद्रोह नहीं था।

फिर क्रान्तिकारी सरकार कायम होने के सम्बन्ध में वही कमिश्नर श्री ई० ए० सामुन्तलस ने उसी रिपोर्ट में लिखा है—"गत जून मास (१८५८) में सेना अपने-अपने क्वार्टर्स में हट आयीं और बागी शाहाबाद के भीतरी भाग के बड़े हिस्से पर फौरन कब्जा कर लिये और हर जगह थाना और तहसीलदारी खोल दिये तथा जजों, मजिस्ट्रेटों और कलक्टरों के स्थान पर नुमायन्दों को नियुक्त कर दिया गया और मकान जेलों में परिणत कर दिये गये। उन्होंने मालगुजारी को अदम अदायगी में, जायदादों की नीलामी भी शुरू कर दी।"

जगदीशपुर की क्रान्तिकारी सरकार की कचहरी से जो कागजात जब्त किये गये थे, उनसे क्रान्तिकारी सरकार कायम होने तथा उसकी व्यवस्था पर काफी प्रकाश मिलता है।

निम्नलिखित कुछ पंक्तियाँ जो सरकारी कागजों के बयानों और नोटों से इकट्ठी की गयी हैं, तद्कालीन क्रान्तिकारी सरकार के भूले हुए विजय-दिवसों को याद दिलाती हैं और बताती हैं कि इसकी प्रतिक्रिया में किस तरह से अंग्रेजों को दीवानी अदालतों द्वारा भी जनता में दमन का आतंक फैलाने का प्रयत्न उस समय किया गया था।

जनरल आयर के नव सेना से सुसज्जित होकर आने पर कुँअर सिंह को आरा छोड़ देना पड़ा और वे वर्त्तमान उत्तर प्रदेश में विभिन्न व्यक्तियों से सैन्य संग्रह और सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से चले गये। इस कार्य का अभिप्राय यह था कि वे पुनः लौटकर शाहाबाद को जीतें। इधर कुअँर सिंह के छोटे भाई अमर सिंह रोहतास के पर्वतों में छिपकर छापामार युद्ध जारी रखने के लिए छोड़ दिये गये थे। १८५८ ई० के अप्रैल मास में अमर सिंह ने पलामू के बागी नेता नीलाम्बर और पीताम्बर साही नामक दो भाइयों को लिखा था— "मैं आप लोगों के पत्र से बहुत संतुष्ट हुआ। बाबू कुँअर सिंह एक बहुत बड़ी सेना अपने साथ लिये चले आ रहे हैं। वे चार या पाँच दिन के अन्दर यहाँ पहुँच जायेंगे। मैं तब आपको पूरी खबर भेजूँगा। वे चालीस कोस आगे बढ़ आये हैं। यहाँ साहबों (अंग्रेजों) के आदमी तुरत भागने की तैयारी कर रहे हैं।" इस समय बाबू कुँअर सिंह आजमगढ़ होकर शाहाबाद आ रहे थे। उनका सामना ब्रिगेडियर लुगार्ड ने किया था। उसमें उनकी पराजय हुई थी; परन्तु तब भी निर्भयतापूर्वक वे शाहाबाद की ओर अग्रसर हो रहे थे और यद्यपि ब्रिगेडियर लुगार्ड धड़ल्ले से उनका पीछा करता रहा तब भी वे शिवपुर-घाट के पास २१ अप्रैल १८५८ ई० को गंगा पार कर गये। जिस समय वे गंगा पार कर हाथी पर सवार होकर जगदीशपुर के लिए कूच कर रहे थे उसी समय अंग्रेजी सेना ने इस पार से निर्दयता पूर्वक उन पर गोली दाग दी। गोली उनके जाँघ और बाँह में लगी। गोली के इस संगीन चोट से वे आहत हुए। उसी क्षण उन्होंने बाँह को काटकर गंगा माता को अर्पण कर दिया।

शाहाबाद में कुँअर सिंह के इस अचानक पुनः प्रवेश से उनके समर्थकों में आनन्द की लहर दौड़ गयी और अंग्रेजों तथा उनके हिमायतियों में भगदड़

मच गयी। उसका अनुमान नीचे के उदाहरणों से लगाया जा सकता है। श्री एमड्न नामक एक अंग्रेज ने जो जगदीशपुर के पास से देशी (भारतीय) लवास में बचकर भागा था, लिखता है :—"कुँअर सिंह ने सहसा पुनः प्रवेश किया था। मेरे पास भागने के लिए समय नहीं था। उस समय जो कुछ मैं कर सकता था, वह यही कि मैंने अपने को उस समय छिपा लिया। तब तुरत सिपाही देश भर में सर्वत्र फैल गये।" बिहार का अफीम-एजेन्ट श्रीफारकुहारसन इस आतंक और घबड़ाहट के संबन्ध में आरा से यों लिखता है :—"यह रिपोर्ट कि कुँअर सिंह गंगा पार करके आरा में प्रवेश कर रहे हैं, सारे जिले को घबड़ा दिया। शहर के आदमी (अंग्रेज) भाग निकले और उनके साथ बहुतेरे देशी अफसर भी भाग चले।"

श्री डेल० पी० अरन जो इस्ट इन्डियन रेलवे का इञ्जीनियर था और उस दिन बिहिया के पास कोयरडीह में ठहरा था, अपनी दरखास्त में जो उसने गवर्नमेन्ट को भेजी थी, लिखता है :—"मैं वहीं मौजूद था जब कुँअर सिंह ने शिवपुर घाट पर गंगा पार किया। मैंने तत्काल इसकी सूचना नजदीक-पास के सभी यूरोपियनों को दे दी। उन लोगों के साथ मैं आरा भागा जब मुझे मालूम हुआ कि बागी सेना निकट आ रही है और हम लोगों का स्थान सुरक्षित नहीं है।"

यह तो २१ अप्रैल १८५८ ई० को शाहाबाद की दशा थी जब कुँअर सिंह ने गंगा पार किया। अब २२ अप्रैल और २३ अप्रैल की घटनाओं का वर्णन बंगाल के तत्कालीन छोटे लाट श्री हालीडे के निकट में दर्ज बयान से पढ़िये—"२२ अप्रैल को आरा की अंग्रेजी सेना के कमान के अफसर कैपटन ली ग्राण्ड ने, वहाँ के सिखेल अधिकारियों से राय करके जगदीशपुर पर तत्क्षण ऐसे समय में जब दुश्मन छिन्न-भिन्न हुआ है और हताश से थका-माँदा और उत्साहहीन है, हमला करने के लिए दृढ़ संकल्प हुआ। उसने निश्चय किया कि पूर्व इसके कि दुश्मन अपनी रक्षा की प्रचुर तैयारी कर सके, वह दुश्मन के सामने पहुँचकर हमला कर दे।"

इस निश्चय के अनुसार उसने दो कम्पनी हिज मैजेस्टी सेना नं० ३५ और १४० स्ट्राड, ५० यूरोपियन नाविक, और दो तोप के साथ रात ही में प्रस्थान करके दूसरे

दिन प्रातःकाल का उजाला होने के पूर्व ही जगदीशपुर के पड़ोस में पहुँच गया। जब दिन का प्रकाश हुआ तब वह जंगल में घुस गया। उसने जंगल में दूर तक नहीं प्रवेश किया था कि शत्रु से उसका साधारण मुकाबला हुआ। इस पर उसने अपनी सेना को पीछे हटने को आदेश दिया। यह आदेश शायद इस आशा से दिया गया था कि इससे शत्रु खुले मैदान में आ डटेगा। परन्तु पीछे हटने के आदेश का जो भी उद्देश्य रहा हो, इस आदेश से यूरोपियनों का हौसला पस्त हो गया और वे भाग खड़े हुए। अंग्रेज अफसरों के लाख ढाढ़स दिलाने के बावजूद भी गोरे सैनिकों का ढाढ़स नहीं बँधा। रास्ते की थकान और चिलचिलाती धूप के कारण जैसे उनके प्राण निकल रहे थे। आदमी पर आदमी भय के कारण गिरने लगा। लगभग २०० यूरोपियन सिपाही और नाविक जो आरा छोड़े थे, ५६ से अधिक आरा जीवित नहीं लौटे। तीन अफसर भी खेत आये, जिनमें एक ली ग्राण्ड भी था। दूसरे दो लेफ्टिनेन्ट इम्पे और डाक्टर क्लार्क थे जो हिजमजेस्टी की सेना नं० ३५ के अफसर थे। तोप, टोटा, बारूद, अस्त्र-शस्त्र, खेमे तथा अन्य सामान दुश्मनों के हाथ आये। परन्तु तोपखाने वालों की हिम्मत के कारण यह कहना पड़ता है कि वे अपने तोपों से अन्त तक लड़ते रहे और पाँच में से केवल तोपची बच सका। सिक्खों ने पीछे हटते समय अच्छी तरह से बर्ताव किया और शायद उन्हीं की वजह से ही ५६ यूरोपियन आरा बचकर पहुँच भी सके, नहीं तो एक भी नहीं आ पाता। सिक्खों में केवल २ मारे गये और ५ घायल हुए थे। लेफ्टिनेन्ट वालर ने, जो उनका कमान कर रहा था, बड़ी बहादुरी दिखलायी और वह भी बहुत सख्त घायल हुआ। वह भी बचकर आरा नहीं पहुँच सकता यदि सिक्खों के साथ का एक नेटिव (देशी अफसर) अपनी वफादारी से उसको अपना घोड़ा न दे दिया होता। इस अफसर का नाम निहालसिंह है। अपनी इस वफादारी और इस बहादुरी तथा धैर्य के लिए इस अफसर को फर्स्ट क्लास आर्डर आफ मेरिट की उपाधि कैप्टन रोटरी की सिफारिश पर दी गयी है।"

निहाल सिंह ने वालर को अपने घोड़े पर चढ़ाकर चार निजी सैनिकों को उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया और इस तरह वालर को आरा के किले* तक

*आरा कोई किला नहीं है और न तब था। यहाँ किला से उस मकान का

पहुँचाया। सिक्ख सेना की, संख्या अति सूक्ष्म होने के कारण निहाल के नेतृत्व में, जिन्होंने वालर के घायल होने के बाद सिक्ख सेना का कमान ले लिया था, पीछे हटना पड़ा। जब वे आरा से तीन मील की दूरी पर पहुँचे तो उन्होंने पीछा करने वाली शत्रु सेना का डटकर मुकाबला किया और उन्हें हरा दिया। इस तरह इस सिक्ख सेना ने सर्वनाश से आरा को बचा लिया जो दुश्मन के आरा तक पहुँच आने पर संघटित होता, क्योंकि थकी-माँदी सेना में अब विरोध की शक्ति नहीं थी।"

"बचे हुए सैनिकों और आतंक पीड़ित सिखेल अफसरों ने 'आरा हाउस' में उस रात शरण लिया और सारी रात बेकसी बेकली और बेचैनी में बिताया।

फिर श्री डेलपी अरन अपनी दरखास्त में जिसे उसने गवर्नमेन्ट में दी थी, लिखता है :—"इस दुर्घटना के बाद और कुछ करने को बाकी था और वह यह कि हमलोगों का पवित्र कर्त्तव्य था कि उनकी लाशें जो लड़ते-लड़ते मर गये थे, दफना दी जाँय। अतः हिजमेजेस्टी फौज न० ३५ के लेफ्टिनेन्ट ली पार्सन और नाविक ब्रिगेड के लेफ्टिनेन्ट श्री क्रोक ने और अन्य वीस आदमियों के साथ जो दूसरी-दूसरी टुकड़ियों के थे, बैलगाड़ी लेकर आरा स्टेशन के निकट उनकी लाशों को उस समय उठा लाया जब दुश्मन देश भर में चारों तरफ घूम रहे थे और उन्हें किले के दक्षिण पूर्व कोण पर गाड़ने में मदद दी।"

उपर्युक्त उदाहरणों से पाठकों को ज्ञात हो जायेगा कि २३ अप्रैल १८५८ ई० को अंग्रेजों की कितनी भयंकर हार जगदीशपुर में क्रान्तिकारियों ने की थी और आतंक कितना जोरों से अंग्रेज जाति पर पड़ा था। इसके बाद के चित्रों के दृश्य भी अन्य उदाहरणों से सहज में ज्ञात हो जाते हैं।

अब अंग्रेजों के दमनचक्र के ही बल के संबंध में तथा कथित न्यायशील सिखेल कोर्ट की मनोवृत्ति का उदाहरण भर दे देना ही पर्याप्त होगा।

बोध होता है जिसमें अंग्रेज १८५७ के विद्रोह में छिपे थे जो 'आरा हाउस' के नाम से विख्यात है।

श्री राजकुमार हरे कृष्ण सिंह कुँअर सिंह के सेनाध्यक्ष सेनापति थे। उनको सालारे-जंग की उपाधि कुँअर सिंह ने दी थी। वे बनारस जिले के बुढ्ढौल परगने के दिनेह नामक स्थान में ता० २६ अगस्त १८५६ ई० को पकड़े गये। उनको दुस्साहसन्ध नामक नवाब के कोतवाल ने पकड़ा था। उनके मुकदमें की प्रारम्भिक जाँच आरा में श्री हरशेल नामक मजिस्ट्रेट ने की थी और उनके विरुद्ध कई अभियोग लगाये थे जिसमें प्रधान थे—आरा जेल को तोड़ना, खोलना, कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद कुँअर सिंह के सेना का कमान लेना, जो सरकार बागियों ने जगदीशपुर में कायम की थी उसके प्रधान के रूप में काम करना, श्रीमती सामुन्तलस की गिरफ्तारी करना और उनकी अंग्रेजों से सुलहा की शर्तें तय करने का माध्यम बनाने की चेष्टा करना तथा कई ठीकेदारों की हत्या करना।

इस मुकदमे का सेशन केस श्री आर० टी० रिचार्डसन द्वारा जो शाहाबाद का स्पेशल जज और कमिश्नर था, देखा गया। उसने अपने फैसले में भी अपने बदला की भावना को व्यक्त करने से अपने को नहीं रोका। उसने फाँसी की सजा देते हुए लिखा :—"अन्त में मुझे ऐसी कोई चीज नहीं मिलती कि जो मुझे इस बात के लिए प्रभावित करे कि मैं सिफारिश करूँ कि कैदी हरेकृष्ण पर दया दिखायी जाय और इसलिये मैं सिफारिश करता हूँ कि हरेकृष्ण सिंह आरा जिले से जहाँ वह इस समय बन्दी है, जगदीशपुर के चौक पर ले जाया जाय जहाँ उसने अपनी मिथ्या दम्भ और निर्दयता का प्रदर्शन किया था और वहीं उसको गर्दन से लटका कर फाँसी दी जाय जब तक वह मर न जाय।"

"चूँकि कैदी की जायदाद सरकार द्वारा पहले ही जब्त कर ली गयी है इसलिये इस संबंध में दूसरी आज्ञा की आवश्यकता नहीं है।"

इससे स्पष्ट होता है कि किस तरह दिवानी के जज भी बदले की भावना से अनुप्राणित होकर दमनचक्र में अपने फैसला से उस समय सहयोग प्रदान कर रहे थे।

कुँअर सिंह की छापामार युद्धकला

सन् १८५७ की क्रान्ति के महान नेताओं से तुलना करते हुए कुँअर सिंह

के संबंध में डॉ० वी० डी० सावरकर ने अपनी "इंडियन वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स" नामक पुस्तक में लिखा है—"कुँअर सिंह का व्यक्तित्व महान् गुणों से सम्पन्न था। उनके व्यक्तित्व में जहाँ एक ओर भयंकर आक्रमण करके शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर देने की क्षमता थी वहाँ दूसरी ओर उनका व्यक्तित्व इतना उन्नत और महान् था कि उनके सैनिकगण इनसे अनुशासन और बहादुरी के साथ संग्राम करने की स्वाभाविक प्रेरणा सदा प्राप्त करते थे।............सन् १८५७ का क्रांति के सभी नेताओं में कोई भी ऐसा नेता नहीं था जो युद्ध-विद्या की योग्यता में कुँअर सिंह से आगे बढ़ा हो। यह केवल कुँअर सिंह ही थे जिन्होंने १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में शुरू से ही (गुरिला वार फेयर) छापामार युद्धकला की उपयोगिता को समझा।............यदि हम इस क्रान्ति के उन दो महान् जेनरलों—ताँतिया टोपी और कुँअर सिंह की तुलना करें, जो गुरिला युद्ध-विद्या के सैनिक पराक्रमों में अपने को सबसे आगे रखे थे तो हम इन दोनों में महान् अन्तर बताने वाली एक विशेष बात से आकृष्ट हुए बिना नहीं रहेंगे। ताँतिया टोपी को गुरिला युद्ध के संचालन में उसके नकारात्मक पहलू से संबंध है, बहुत ऊँचा स्थान दिया जाता है। परन्तु कुँअर सिंह गोरिला युद्ध के संचालन में उसके नकारात्मक और स्वीकारात्मक दोनों पहलुओं के ख्याल से तांतिया टोपी के बराबर स्थान ग्रहण करते हैं। ताँतिया टोपी शत्रु को ऐसा मौका नहीं देता था कि वह उसकी (ताँतिया टोपी) सेना अथवा शक्ति को ऐसा कुचल दे कि वह फिर उठ न सके; परन्तु कुँअर सिंह इस कार्य में अपने में ताँतिया टोपी की तरह ही दक्षता और निपुणता रखते हुए अपनी शत्रु सेना को दिलेरी के साथ कुचलने और भयंकर रूप से पराजित करने में भी सफलता प्राप्त करते थे।" फिर आगे सावरकर ने गुरिला युद्ध की कला का विश्लेषण करते हुए बताया है—"गुरिला युद्ध में अंतिम विजय निश्चित बनाये रखने के लिये यह अनिवार्यतः आवश्यक है कि नेता अपने अनुयाइयों के मन में उन दुर्बलताओं को उत्पन्न होने से रोके जो दुश्मन के समक्ष से अपने को बराबर हटाते रहने अथवा उसको अपने से बलवान समझकर आमने-सामने लड़ने से बचाते रहने की वजह से उत्पन्न होती है। सेना नायक को चाहिये कि ऐसे गुरिला युद्धों में जहाँ पराजयों

का सामना जानबूझ कर करना पड़ता है अथवा जहाँ संग्राम करके पलायन करना उसके लिये आवश्यक हो जाता है, इस खूबी के साथ वह उन्हें संगठित करावे कि उससे उसके अनुयाइयों के मन में भय, निरुत्साह, घबड़ाहट और अनुशासनहीनता की भावना जाग्रत होने नहीं पावे। युद्ध करने से निरन्तर बचते रहना, इस प्रकार नहीं संगठित होने दिया जाय कि अनुयाइयों के मन में संग्राम से ही भय खाने के भाव उत्पन्न हो जायँ। होशियारी से अपनी सेना को बचा लेना और भयभीत होकर युद्ध से भाग निकलना, दोनों दो भिन्न बातें हैं। इसलिये छापामार युद्ध के संचालन में यह अत्यन्त आवश्यक है कि कायरता के वशीभूत होकर कभी समराङ्गण से न हटा जाय। जब कभी लड़ाई लड़नी निश्चित कर ली जाय तब वह लड़ाई इस दिलेरी, जोश और धुँआधार आक्रमण के साथ लड़ी जाय कि दुश्मन के मन में अचानक भय उत्पन्न हो जाय जिससे अपनी सेना के सैनिकों के हृदय में अत्यधिक विश्वास, बल और उत्साह प्रकट हो;........"

"मतलब यह कि यदि शत्रु का बल अपने से बढ़ा हुआ है तो नेता को अपने को युद्ध में फँसाना नहीं चाहिये और यदि शत्रु का बल अपने बराबर है तो उससे भाग्य अवश्य आजमा लेना चाहिये। परन्तु स्वेच्छापूर्वक अथवा विवशता की दशा में बलात् आरम्भ किये हुए संग्राम में भय और अनुशासन-हीनता के साथ समराङ्गण कभी नहीं छोड़ना चाहिये, बल्कि इसके विपरीत, संग्राम इस दिलेरी और बहादुरी से करना चाहिये कि निश्चित पराजय अथवा मृत्यु के समय अपने यश-भाव से सैनिक सदा अनुप्राणित होता रहे, चाहे इस कार्य से युद्ध में उसको हार ही खानी पड़े। इस तरह से हमला करने से दुश्मन भयभीत हो जाता है और अनुयाइयों के अनुशासन और बहादुरी में कमी नहीं आने पाती और इन शहीदों की वीर गाथाओं से अपने अनुयाइयों को प्रेरणा मिलती रहती है। बहादुरी से बहादुरी और विजय से विजय उत्पन्न होती है। छापामार युद्ध के जेनरलों को कभी भी अपने अनुयाइयों के मन में इस भाव के उत्पन्न होने का मौका नहीं देना चाहिये कि उनके शत्रुओं ने बलवान और अधिक बहादुर होने के कारण उन पर विजय पायी। यही छापामार युद्ध की कुंजी है।"

छापामार युद्ध-विद्या की उपर्युक्त व्याख्या करके डॉ० वी० डी० सावरकर ने प्रतिपादित किया है कि—"ताँतिया टोपी छापामार युद्ध-विद्या के इस स्वीकारात्मक (पोजिटिव) पहलू का पालन नहीं कर सका।........परन्तु कुँअर सिंह, हटते समय भी अपना अग्रिम दल सदा ऐसा बनाये रखते थे कि जब उन्हें मौका मिलता तब अपना पीछा करने वाले शत्रु पर इस सख्ती और भीषणता के साथ टूट पड़ते थे कि उनकी सेना आत्मविश्वास और ऊँची आकांक्षा से उस समय भी भरी रहती थी जब दुश्मन की सेना उनके पीछे आक्रमणशील रहती थी।"

फिर आगे उन्होंने लिखा है—"कुँअर सिंह शिवाजी की तरह कभी भी अपनी सेना को आत्मविश्वास खोने नहीं देते थे, बल्कि अपने व्यक्तिगत हिम्मत, दिलेरी और अनुशासन से उनमें अपने ही जैसा अटूट विश्वास, दिलेरी और अनुशासन जाग्रत करते रहते थे। इस तरह कुँअर सिंह ने छापामार युद्ध के नकरात्मक और स्वीकारात्मक दोनों पहलुओं में, यानी संग्राम करने और संग्राम से बचने की कला में, अपनी बुद्धि का अद्वितीय परिचय दिया है। और इसीलिये तो अपने शत्रुओं को धूल-धूसरित और पददलित करने के बाद अपनी यशपूर्ण विजयों के साथ-साथ स्वतंत्रता के झंडे के नीचे अपनी राजधानी जगदीशपुर के स्वतंत्र राजसिंहासन पर वह बूढ़ा, बहादुर, महान् कुँअर सिंह एक महान् गौरवपूर्ण मृत्यु मर सका।"

कुँअर सिंह के संबंध में सभी मानते हैं कि उन्होंने सेना की बाकायदे शिक्षा कहीं नहीं पायी थी। फिर सिपाही जो उनसे आ आकर मिलते गये अथवा साधारण जनता उनके साथ होती गयी, उनके लिये यह कहना असत्य होगा कि वे सेना की शिक्षा प्राप्त किये हुए योद्धा थे। इसी के साथ उनके जो सेनानायक थे उन्होंने भी कहीं सैन्यसंचालन की शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। फिर दूसरी ओर विपक्षी दल के सिपाही, अफसर और जनरल या ब्रिगेडियर तत्कालीन सैन्य-शिक्षण के सबसे बढ़कर ज्ञाता थे। कवायद से सिपाहियों को अनुशासन में रखकर सेना-संचालन की शिक्षा उस समय जो यूरोप में प्रचलित हुई, उसमें सबसे बढ़े-चढ़े अंग्रेज थे। ऐसे ही दस जेनरलों से कुँअर सिंह को जुलाई

१८५७ से १८५८ तक लड़ना पड़ा। एक ही समय में कई-कई जेनरलों के साथ अपनी एक ही सेना से उनको युद्ध करना पड़ा और तब भी अपनी उसी पूर्वकथित सेना से वे विजयी होते गये; जहाँ विजयी नहीं हुए वहाँ छोटी-मोटी क्षति के साथ इस चतुर तरीके से हट गये कि अंग्रेज जेनरल कभी भी इतनी लम्बी अवधि में कुँअर सिंह को कहीं भी पूर्ण पराजित नहीं कर सके। बीबी-गंज की लड़ाई में कुँअर सिंह की हार हुई। यह मानी हुई बात है, परन्तु यह हार डनवर की जैसी हार नहीं थी कि उनकी सेना पराजय के बाद समाप्त हो गयी। ३ अगस्त को बीबीगंज की लड़ाई वे नये सिपाहियों के साथ लड़े। पर, हटते समय इस खूबी से हटे कि सिपाहियों के उत्साह में उस हार से कमी नहीं आने पायी और ११ अगस्त को जब जगदीशपुर पर आयर ने पुनः नये दल-बल के साथ डुमराँव के महाराज और उनके समर्थकों को लेकर हमला किया तब कुँअर सिंह ने उसके भी छक्के छुड़ा दिये, और डुमराव के महाराज के हाथी पर अमर सिंह ने अंग्रेजों में घूसकर वार किया। बीबीगंज की हार को पराजय तब कह सकते थे जब कुँअर सिंह जगदीशपुर (दुलौर) के युद्ध में, जो आठ दिन बाद ही संगठित हुआ था, आयर का सामना इस दिलेरी से नहीं कर पाते! बीबीगंज से हटते ही आठ दिन की अवधि में कुँअर सिंह ने जगदीशपुर शहर को तीन दिशा से मोर्चेबन्दी कर ली और १० हजार सैनिकों के ६ मास तक खाने के लिये अन्न अपने मकान में इकट्ठा कर लिया। इस तरह से बीबीगंज की हार केवल सैनिक पलायन (रिट्रीट) मात्र थी।

बीबीगंज की लड़ाई में भी कुँअर सिंह के पास गोली बारूद और अच्छी बन्दूकें तथा तोपों का सर्वथा अभाव था। उधर आयर के पास तोपखाना से सम्पन्न दो पलटनें और ऐन्फील्ड रायफल जो उस समय सबसे अच्छी बदूक थी तथा उनकी संगीनें थीं। कुँअर सिंह ने जब आयर के आक्रमण की खबर पायी तो उनके समक्ष दो जटिल प्रश्न उपस्थित हुए। आयर से आगे बढ़कर लड़ा जाय अथवा आरा छोड़कर जगदीशपुर जाकर वहीं जम कर मुकाबला किया जाय। अस्त्र-शस्त्र के अभाव को उन्होंने दोनों सूरत में अनिवार्य माना। उन्होंने आयर से आगे बढ़कर लड़ने के पक्ष में जो निश्चय किया उसमें उनकी बुद्धिमत्ता थी।

उन्होंने सोचा कि अस्त्र-शस्त्र के अभाव की पूर्त्ति तो दोनों दशा में नहीं होगी, किन्तु आयर से यहाँ छोटी-मोटी लड़ाई लड़ लेने से विजय की भी संभावना हो सकती है और सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि नये सैनिकों के मन में अपने नये नेता कुँअर सिंह की बहादुरी और दिलेरी में शंका नहीं उत्पन्न होगी। इस तरह उनका जो उत्साह गांगी की लड़ाई जीत कर बना है वह बिना मुकाबला किये ही जीते हुए आरा को छोड़कर जगदीशपुर भाग जाने से भंग ही नहीं हो जायगा, उससे सैनिक अनुशासन में भी कमी आयगी और विद्रोहियों के मन में कुँअर सिंह के नेतृत्व में अविश्वास उत्पन्न होगा। हो सकता है कि उस दशा में विद्रोही उनका साथ छोड़कर दूसरी ओर चले जायँ। इसलिये उन्होंने आयर के साथ लड़ना उचित समझा। संग्राम के समय भी बहुत समझदारी से काम लिया। अपनी सेना की एक टुकड़ी को रातोरात आगे भेजकर गजराजगंज में २ अगस्त के प्रातःकाल उन्होंने आयर का सामना किया और वह टुकड़ी कुँअर सिंह के आदेशानुसार आयर से लड़ती हुई धीरे-धीरे पीछे हट कर आयर को बीबीगंज तक बढ़ा लायी। यहाँ कुँअर सिंह ने अपनी पहली संचित सेना के साथ बीबीगंज के पास की छोटी नदी को उसके पुल से पार करके पुल को तोड़ दिया और जमकर आयर पर गोली चलाने लगे। जब आयर ने सामने का मार्ग अवरुद्ध देखकर एक ठीकेदार के बताने पर दक्षिण की ओर बढ़कर रेलवे लाइन से नदी पार करने के लिये प्रस्थान किया तब कुँअर सिंह ने बड़ी दिलेरी और तेजी से बढ़कर रेल पुल के पास के छोटे जंगल पर कब्जा कर लिया। इस जंगल में पेड़ थे, जहाँ से छिपकर शत्रुओं पर गोली चलायी जा सकती थी। ऐसा करने का तात्पर्य यह था कि गोली, टोटा और बारूद की कमी के कारण वे अंग्रेजी सेना को हस्त युद्ध की सीमा के अन्दर लाकर आयर के तोप और बन्दूकों को बेकार कर देना चाहते थे। इसमें उनको सफलता मिली। उन्होंने आयर के पुल से उतरते ही इस जोर से हमला किया कि उसके तोपखाने के सिपाही तोप छोड़कर भाग गये और आयर को संगीन चलाने का हुक्म देना पड़ा। कुँअर सिंह के सिपाहियों के पास संगीनें नहीं थीं। तलवार और किर्च संगीन के मार का सामना नहीं कर सकते थे। घोर युद्ध होने के बाद

जब कुँअर सिंह ने सिपाहियों को अधिक कटते देखा तो उन्होंने तितर-बितर होकर संग्राम से हटने का हुक्म दिया और आज्ञा दी कि वे पुनः निर्दिष्ट स्थान पर एकत्रित हो जायँ। इसी समय उन्होंने अपनी व्यक्तिगत बहादुरी भी बड़े कौशल के साथ दिखलायी। हटते समय तीन अंग्रेज सैनिकों ने आप पर हमला किया। आपने अपने दो अंगरक्षक तुलसीप्रसाद सिंह और उनके पुत्र नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह के साथ उन तीनों से युद्ध करके तीनों को मार गिराया। एक अंगरक्षक तुलसी प्रसाद जब तमंचा से मारे गये तो उनके शव को भी आप लेते आये।

गांगी के जीते युद्ध में भी आपकी रणचातुरी को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। फिर जगदीशपुर में दुलौर स्थान की प्रथम लड़ाई हुई। उसमें भी किसी तरह रण-संचालन की त्रुटि अथवा सिपाहियों की विशृंखलता प्रदर्शित नहीं हो पायी। तीन लड़ाइयों की इन घटनाओं से जो आपके सैन्य संचालन के नेतृत्व लेने के पन्द्रह दिन के अन्दर संगठित हुए थे, बाबू साहब ने अपनी छापामार युद्धकला के नकारात्मक और स्वीकारात्मक दोनों पहलुओं से अपनी दक्षता का पूरा-पूरा परिचय दिया और तभी आपको महान् सेनानी मानने के लिये अंग्रेज इतिहासकारों को भी बाध्य होना पड़ा।

संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के भ्रमणकाल में भी जो असंख्य सिपाही कुँअर सिंह के आधीन होकर उनके पीछे रहे उसका एक मात्र यही कारण था कि बाबू साहब की रणचातुरी तथा साहस और महान् व्यक्तित्व पर सिपाहियों की अटूट श्रद्धा और विश्वास था। बाबू साहब सिपाहियों के मनोविज्ञान को परखते थे और उसके अनुकूल रण-संचालन में उनकी शक्ति की मात्रा के अनुसार कार्य-क्रम निर्धारित करते थे। इससे सिपाही उनकी बहादुरी, बुद्धिमत्ता, रणकौशल, साहस और पौरुष पर अटूट विश्वास और अंध श्रद्धा रखते थे और उनकी आज्ञा पर मर मिटने के लिये तैयार हो जाते थे। आसाम का जब एक राजा पकड़ा गया तब गोरखों को छोड़कर उसकी सब सेना कुँअर सिंह के पक्ष में थी। २४ जून, १८५७ के अंक में विलायत के मशहूर पत्र 'टाइम्स' ने लिखा था : "अब भी कुँअर सिंह के पास तमाम सिपाही सेना का पाँचवाँ भाग है। यदि

वे रानीगंज पर धावा करके रेलवे पर कब्जा कर लें और कलकत्ता जा पहुँचें तो क्या होगा। नागौर में जब्बलपुर की ५२ और ५० नम्बर की सेना ने अंग्रेजों से बिगड़ कर सितम्बर के अन्त में कुँअर सिंह की अध्यक्षता स्वीकार कर ली। नेतृत्व की यह कला जो अनुयाइयों को निःस्वार्थ भाव से भक्त और मर मिटने के लिये तैयार बना देती है, उस समय वे अन्य क्रान्तिकारी नेताओं को प्राप्त नहीं थी।

साधारण जनता भी कहीं आपके विरुद्ध आपकी लड़ाई के संचालन का भेद तथा कोई आवश्यक सूचना या उनकी सेना कहाँ है इसका पता अंग्रेजों को नहीं देती थी। परन्तु ताँतिया टोपी जन-साधारण के दिये हुए भेद से ही पकड़ा गया था। कुँअर सिंह इतने जनप्रिय थे कि आप जहाँ जाते थे वहीं आपका स्वागत होता था और जनता रसद आदि से आपको सहायता देती थी। गाजीपुर तथा बलिया जिले में जब अंग्रेजों ने गंगा और सरयू के सभी नावों को डुबो दिया था, जनता ने आपको उन नावों को निकाल कर नदी पार होने के लिये प्रदान किया। बलिया जिले के निधासिंह नामक जमींदार की जमींदारी इसीलिये जब्त कर ली गयी थी कि उसने कुँअर सिंह को नाव पार करने के लिये दी थी।

कुँअर सिंह की छापामार युद्ध-कला का समर्थन आजमगढ़ से लेकर शिवपुर जगदीशपुर तक, याने ता० १७ मार्च से लेकर २३ अप्रैल, १८५७ तक, लड़ी हुई लड़ाइयों की सफलता से हो जाता है। २१ मार्च को आप मिलमैन को उसकी २०६ नम्बर की गोरी सेना के साथ हरा कर आजमगढ़ के जेल में बन्द कर देते हैं। उसको हराने के तरीके में भी आपने विलक्षण चातुरी दिखलायी। मिलमैन के हमला करते ही हल्का मुकाबला करके आप हट गये। जैसे ही मिलमैन की सेना भोजन बनाकर खाने बैठी वैसे ही आपने आक्रमण करके उसे हरा दिया। इसके बाद नयी-नयी सेनाओं के साथ बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ से चुने हुए जेनरल एक के बाद एक भेजे जाते हैं, पर आपके पास एक ही सेना है। आप उसका अकेले नेतृत्व करते हैं। फिर लड़ाइयाँ वहीं होती हैं, जहाँ अंगरेजी सलतनत का केन्द्र है। प्रजा उन अंगरेजों की है जिनका समर्थक जमींदार और धनिक वर्ग है। परन्तु वहाँ भी आम जनता आपके व्यक्तित्व और नेतृत्व से आकर्षित होकर आपके पक्ष का समर्थक हो जाती है। ठीक वैसे ही

जैसे कि नेपोलियन के पीछे उनकी सेना तथा जनता पागल थी। कोई भी आपका भेद अंगरेजों को नहीं देता। कई-कई जेनरलों से आप कभी लड़ते हैं, कभी हटते हैं, कभी उनके सामने लड़ते-लड़ते आप के सिपाही ऐसा तितर-बितर हो जाते हैं कि दुश्मन कहाँ गया! वे किसका और किधर पीछा करें! कभी मुट्ठी भर सिपाही अंगरेजों के बड़े-से-बड़े जेनरल और उसकी सेना को इस दिलेरी से लड़ कर रोक लेते हैं कि उसे हमला करके भी पीछे हटना पड़ता है। कर्नल डेम्स की अध्यक्षता में ४६ नम्बर और २६ नम्बर की गोरी सेना को कुँअर सिंह ने ऐसा दबाया कि उसे भागकर आजमगढ़ में छिपना पड़ा। फिर २७ मार्च को लार्ड कैनिंग द्वारा भेजी गयी लार्ड मारकर के नेतृत्व में १३ नम्बर की गोरी सेना ने, जो बनारस से तोपखाना और अन्य सेना को लेकर ६ अप्रैल को आजमगढ़ के पास मरसाना नामक स्थान में हमला किया तो कुँअर सिंह ने उसकी सेना को तितर-बितर कर दिया। तीन-तीन जेनरलों को अपनी सेनाओं के साथ आजमगढ़ में आबद्ध हो जाते देखकर कुँअर सिंह मौका देखकर फौरन १३ अप्रैल को आजमगढ़ से अपना घेरा हटा लेते हैं और जगदीशपुर की ओर बढ़ते हैं। पर, चौथी सेना लखनऊ से अडवर्ग लुगार्ड की अध्यक्षता में आपको १४ अप्रैल को तमसा नदी के पुल पर रोकना चाहती है। परन्तु कुँअर सिंह के सिपाहियों ने तथा कुँअर सिंह ने महान् बहादुरी और रणकुशलता का परिचय दिया। थोड़े से चुने हुए सिपाहियों की टोली को लेकर कुँअर सिंह ने तमसा नदी के पुल के उसी पार लुगार्ड की सेना को रोक दिया। उसका पहला प्रयत्न विफल हुआ। दूसरे प्रयत्न में जब उसने किसी तरह रिसाला के साथ पुल पार किया तो उसकी सेना कुँअर सिंह की सेना की इस छोटी टुकड़ी को भी पीछे हटाने में विफल हो जाती है। इधर लुगार्ड की सेना को इस तरह जबतक कुँअर सिंह ने रोक लिया था उसी अवधि में कुँअर सिंह की पूरी सेना जगदीशपुर की ओर काफी दूर चली गयी। यह टुकड़ी सेना भी मार्ग बदलकर उससे जा मिली और लुगार्ड को चकमा देकर अपनी सेना का पीछा करने से रोक दिया। लुगार्ड आजमगढ़ चला गया।

फिर आजमगढ़ से भेजी हुई रिसाला, तोपखाना आदि के साथ ब्रिगेडियर

डगलस की बड़ी सेना ने कुँअर सिंह का पीछा किया। पर, कुँअर सिंह उसका मुकाबला करके आगे बढ़ते गये और चकमा देकर शिवपुर के पास गंगा पार कर गये।

अंगरेजों की सारी शक्ति जो आपके जगदीशपुर जाने में बाधक सिद्ध हुई उसको विफल करके आप जगदीशपुर पहुँच गये। गंगा पार करने के बाद २१ अप्रैल को गंगा पार से फेंके हुए गोले से जब आपकी बाँह टूट गयी तब भी अपनी बहादुरी और सिपाहियों की आस्था बनाये रखने के लिए आपने अपनी टूटी बाँह को काट कर गंगा में प्रवाहित कर दिया। इसका फल यह हुआ कि एक दिन बाद ही जब लीगार्ड ने आरा से सेना लेकर जगदीशपुर पर हमला किया तब घायल होते हुए भी आप और आपके सैनिक तथा सरदारों ने उसकी सेना के एक-एक जवान को २३ अप्रैल को दुलौर के मैदान में काट डाला। ऐसी हार हरायी कि अंगरेजों के मुँह काले हो गये और इतिहासकारों को भी इस हार के लिए शर्म प्रदर्शित करना पड़ा।

ऐसे वीर की युद्धकला की प्रशंसा में डॉ० सावरकर की पूर्वोक्त उद्धृत लाइनें सर्वथा उपयुक्त और सही है। उनको भावना-प्रधान कहना ऐतिहासिक घटनाओं को अस्वीकार करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जायगा।

कुँअर सिंह सम्बन्धी गलत फहमियों का निराकरण

इधर कुछ दिनों से बाबू कुँवर सिंह पर लेख पत्र-पत्रिकाओं में निकल रहे हैं। उनमें उनकी जीवनी के सम्बन्ध में कुछ घटनायें ऐसी भी व्यक्त होती हैं, जिनका सम्बन्ध वास्तविक घटना से कम और लेखक की श्रद्धा तथा उनके प्रति प्रेम से अधिक है। अतः उनका स्पष्टीकरण कर देना ही इस लेख का उद्देश्य है।

महाराज लिखना कहाँ तक उचित ?

बाबू कुँअर सिंह नामक पुस्तक में उनको बाबू लिखा गया है इधर पत्रिकाओं में जो लेख निकलते हैं, उनमें उन्हें महाराज लिखा जाता है। वास्तविक बात क्या है यह विचारना है?

इस वंश के मूल पुरुष आन्तन शाह जो धार नगर से ८११ फसली में आये वे शाह या महाराज थे। उनके चार पुत्र, देव दुल्लह, प्रताप और एक और जो काशी पुर में उसी समय जा बसे। दुल्लह महाराज हुए और उनके वंशज महाराज तथा कुमार कहलाये। जो सबसे बड़ा होता था वह गद्दी पर बैठता और महाराज कहलाता। शेष सभी उस राजवंश के परिवार महाराज कुमार बाबू कहलाते थे। दुल्लह के वंशज राजवंश के माने गये और वे डुमरांव को बड़ी शाख होने के कारण गद्दी मिली। परन्तु, वहाँ भी नियम यही रहा कि जो सबसे बड़ा होता और बड़ी शाख का होता वही गद्दी नसीन होता और महाराज कहलाता शेष सभी महाराज कुमार बाबू लिखे जाते थे। दरबार में डुमराँव, जगदीशपुर, बक्सर तथा दलीपपुर के सभी महाराज कुमारों को रिश्ते के अनुसार सर्वप्रथम बैठने का स्थान मिलता था। इसमें उनका विचार नहीं रखा जाता था यह प्रथा बड़े महाराज केशो प्रसाद सिंह के समय तक चालू रही।

देव और प्रताप के वंशज चौगाई, नीमा, आथर बरनांव, केशठ आदि स्थानों में बसी और राजकुमार बाबू की उपाधि पाये जो अब तक चालू है। बाबू कुँअर सिंह तथा उनके वंशजों और पूर्वजों ने कभी भी इस प्रथा का उलंघन नहीं किया। केवल नारायण मल्ल ने जिनको दिल्ली दरबार से ७००० फौज के साथ राजा मन मनसबदार की उपाधि मिली थी। अपने को महाराज लिखा। उनके बाद उनके वंशजों ने भी इस प्रथा को चालू रखा। जो तवारीख उज्जैनियां नामक प्रकाशित ग्रन्थ है वह भी इस परम्परा को पुष्ट करता है।

इस वंश के इतिहास या प्रथा का ज्ञान सुदूर के विद्वानों को न होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि डॉ० सावरकर तथा सुन्दर लाल जैसे विद्वानों ने उन्हें राजा माना। श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित ने इस वंश के इतिहास को जगदीशपुर, डुमराँव आदि स्थानों में जाकर और तवारीख उज्जैनियाँ पढ़कर समझा। परन्तु वहाँ भी उन्होंने भूल की। उन्होंने केवल बाबू कुँवर सिंह लिखा, महाराज कुमार बाबू कुँवर सिंह जो बाहरी आदमी को ठीक नहीं जँचता छोड़ दिया। परन्तु महाराज कुमार बाबू लिखने की जो प्रथा जिले भर में आज तक है उसका मुख्य अर्थ यह है कि उल्लह शाह राज्यवंश के अमुक व्यक्ति है और

राजकुमार नाम लिखने के अर्थ है देव और प्रताप के वंश का अमुक व्यक्ति है परन्तु दीक्षित जी ने इस बात को समझ कर भी कुँअर सिंह के नाम के साथ केवल बाबू कुँवर सिंह रखा क्योंकि महाराज कुमार के साथ बाबू का जोड़ना बाहरी आदमी को जो इस रहस्य को जानता नहीं अच्छा नहीं जँचता। परन्तु कुँवर सिंह भोजपुरी जनता में केवल 'बाबूजी' 'दादाजी' के नाम से ही अधिक विख्यात थे। जिसका अर्थ पिताजी होता है। अथवा भाइजी, अतः कुँवर सिंह के नाम के साथ वास्तव में महाराज कुमार कुँवर सिंह होना चाहिये। परन्तु जनता ने उन्हें केवल कुँवर सिंह या बाबू कुँअर सिंह कह कर याद किया क्योंकि वे जनता के इतना निकट हो गये थे कि सामन्त शाही को दिवाल स्वरूप महाराज कुमार की उपाधि जब मिट गयी थी।

कुँअर सिंह की बाँह कहाँ और कैसे आहत हुई

इस सम्बन्ध में भी इधर गलत प्रकाश डाला गया है। बिहार नामक पत्रिका में तो कुँअर सिंह की तस्वीर नाव में बैठी हुई दिखा कर वहाँ बाँह काटा जाना छापा गया है। परन्तु बाबू कुँअर सिंह तथा गदर के इतिहास में तथा तवारीख उज्जैनिया में साफ लिखा है कि ब्रिगेडियर डगलस की सेना को अपनी रण चातुरी से चकमा देते देते बाबू कुँअर सिंह गंगा तट तक पहुँच गये और रातो-रात सेना के साथ गंगा भी पार कर चुके। डगलस भी सूर्य निकलते निकलते उस पार तब पहुँचा जब कुँअर सिंह सेना के साथ प्रस्थान कर रहे थे। वे हाथी पर चढ़े थे और उनके साथ रणदलन सिंह अंगरक्षक के रूप में थे। खवास ने उसी समय राजछत्र खींच दिया जिससे डगलस ने जान लिया कि उसी हाथी पर कुँअर सिंह हैं और उसने गोला का निशाना किया फलतः रणदलन और खवास दोनों मारे गये और बाबू साहब की भुजा तथा दाहिना रान के माँस उड़ गये। अपनी बाँह को काटकर उन्होंने गंगा में प्रवाह कर दिया वही बातें मैंने अपने पितामह श्री नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह जो सन् १६१६ ई० में मरे और जो बीबीगंज की लड़ाई में अपने पिता बाबू तुलसी प्रसाद सिंह के साथ कुँवर सिंह की ओर से उनके अंगरक्षक बन कर लड़े थे। जिनके नाम इस बहादुरी के लिये

दी हुई कुँअर सिंह की सनद आज भी मेरे पास है। फिर महाराज कुमार बाबू छत्र पति सिंह ने भी जो कुँअर सिंह के भाई दयाल सिंह के पौत्र थे बाबू कुँअर सिंह के लेखक मथुरा प्रसाद दीक्षित से यही बातें कही थी। मैं भी वहाँ मौजूद था। अतः कुँअर सिंह की भुजा गंगा पार कर जाने पर उस पार से चलाये हुये अंग्रेजी गोला से आहत हुई। गंगा पार करते समय नाव से वह नहीं आहत हुई।

कुँवर सिंह का शरीर कैसा था ? तस्वीर कौन सी ठीक है ?

कुँवर सिंह मझोले कद के जवान थे। बदन दोहरा, छाती चौड़ी, आँखें बहुत बड़ी, रंग गोरा था। गलगुच्छा रखते थे। मेरे १८ वर्ष की अवस्था के बीसीयों आदमी जो उनके साथ रहे थे जिन्दा थे। स्वयं मेरे पितामह जीवित थे। उन्होंने उनके कद के सम्बन्ध में यही वर्णन किया था। हाथी और घोड़ा की सवारी के बड़े शौकीन थे। यह कहना गलत है कि उनका डील बहुत ऊँचा था। जो तस्वीर आज विहार नामक पत्रिका में निकलती है वह उनकी असली सूरत तथा पोशाक और शरीर से कुछ भी सामान्यता नहीं रखती। इस तस्वीर की पोशाक भी शाहाबाद के उज्जैन ही नहीं किसी अन्य के आदमी की पोशाक से सामान्यता नहीं रखती। इसमें जो कद है, जो टोपी है वह सब बाबू साहब की पोशाक, कद आदि से कोई सम्बन्ध नहीं रखती। इस तस्वीर को हमारे चचा साहब महाराज कुमार बाबू कालिका प्रसाद सिंह किसी पत्रिका से सन् १९१७ के लगभग प्राप्त किये थे। उस समय दौड़ और सहाई नामक दो वृद्ध नौकर हमारे यहाँ थे। सहाई की आँख तो कमजोर थी पर दौड़ की आँख बहुत अच्छी थी। वह पराहु में कुँवर सिंह के हाथी के साथ सात दिन तक माल पर दरी लिये भागता फिरा था। उसने इस तस्वीर को देखकर कहा था कि 'ई बाबू जी के तस्वीर ना हवे।' अंखिया कुछ मिलता। इस तस्वीर का किस्सा यह कहा जाता है कि किसी अंग्रेज ने राजक्रान्ति के समय कुँवर सिंह की वीरता को सुनकर कल्पना के आधार पर इस चित्र को बनाया था जो विलायत के किसी पुस्तकालय में सुरक्षित है और वहाँ से इसका प्रचार हुआ। उज्जैन राजपूतों का जातीय पोशाक,

अंगा, पैजामा नीमा और पगड़ी है अथवा शमला है और तब भी था। डुमराँव के दरबार में इसी पोशाक में सब बैठते थे। पीछे अंगा के स्थान पर शेरवानी तथा पगड़ी के स्थान पर मुरेठा चालू हुआ। यह सन् १९३० के लगभग चला। अतः इस तस्वीर को भूल कर भी कोई सही नहीं मान सकता। अब प्रश्न है कि सही तस्वीर कौन है। आज कुँवर सिंह की तीन तस्वीर प्राप्त हैं। प्रथम तस्वीर खुदा बक्स खाँ लाइब्रेरी में है जो घोड़े पर शिकार करते समय की है। उसका लिबास ठीक नहीं है जो डुमराँव दरबार का तथा सारे उज्जैनों का लिबास है। जो अंगा, दुशाला और शाल कुँवर सिंह ने अपने हाथ मेरे पितामह नर्मदेश्वर प्रसाद को दिया था वह आज भी मेरे पास है। वह ठीक वैसा ही अंगा है जैसा कि कुँवर सिंह की तस्वीर में है। पितामह जी की तस्वीर विहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के पास उसी अंगा के पोशाक में आज भी वर्तमान है। फिर उसमें बाबू साहब का कद, उनके गलगुच्छे, उनकी आँखें, ठीक वैसीही है जैसा कि जनश्रुति परम्परा से चला आता है। उस तस्वीर में जो अन्य शिकार के चित्र हैं वे सभी ठीक वैसे ही हैं जैसा कि उस समय बाबू साहब शिकार खेला करते थे। रंग भी तस्वीर का गोरा है। फिर दूसरी तस्वीर पं० जगन्नाथ पंडा, दारागंज, प्रयाग के पास से हाथी दाँत पर उस समय मुझे देखने को मिली जब बाबू कुँवर सिंह लिखने के लिये दीक्षित जी मसाला जुटा रहे थे।

इस तस्वीर में बाबू साहब मलमल की टोपी में, ढीली मोहरी के कुर्त्ता में जो छापा बंदी था, जंघे पर एक पाँव रखे हुये बैठे हैं। सर पर मलमल की टोपी है। रंग बहुत गोरा, कद वैसा ही जैसा खुदाबक्स खाँ लाइब्रेरी के चित्र का है और हाथ में सटक है। तस्वीर हाथी दाँत पर सुन्दर थी। आँखें बड़ी, गलगुच्छा और चेहरा साफ है। उसी तस्वीर के साथ शान्तन शाह से तबतक की वंशावली भी पंडा ने मुझे दिखायी जो आज भी उसके पास है। फिर उसी के साथ बाबू साहब की दी हुई २५ बिगई की सनद भी दिखाई। ये सभी चीजें आज भी उनके पास मौजूद हैं। और उनके फोटो मेरी "भोजपुरी के कवि और काव्य नामक" पुस्तक की भूमिका में छप रहे हैं। इस चित्र के

फोटो का ब्लाक बाबू कुँवर सिंह नामक पुस्तक में छपा है। परन्तु उसमें सबसे बड़ी गलती यह हुई कि उनके हाथ से सटक आदि निकाल दिये गये और केवल बस्ट के रूप में चित्र दिया गया। ऊपर कुँवर सिंह का मूल चित्र जो पंडे के पास था वह उनके एक व्यक्ति ने किसी के हाथ चुपके बेंच दिया। बाबू कुँवर सिंह के मुख पृष्ठ पर छपा है। इन दोनों चित्रों में शरीर, आँख, पोशाक, गलगुच्छा, रंग आदि में सामान्यता है।

फिर तीसरा चित्र, सरदार हरिहर सिंह ने बाबू कुँवर सिंह के मुख्तार के घराने से प्राप्त किया था। जब वे उनकी प्रस्तर मूर्ति निर्माण के लिये प्रयत्नशील थे वह चित्र भी इन दोनों चित्रों से साम्यता रखता है। प्रसिद्ध चित्रकार ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने इन्हीं चित्रों के आधार पर कुंवर सिंह का घोड़े पर एक बहुत सुन्दर चित्र तैयार किया था जो आरा के बाल हिन्दी पुस्तकालय में सन् १९४२ की क्रान्ति तक था। पर खेद है कि वह सर्वोत्मक चित्र अंग्रेजों द्वारा नष्ट कर दिया गया। उपेन्द्र महारथीं जी ने भी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय से रजत जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित होने वाले बिहार के इतिहास नामक ग्रन्थ में जो चित्र निकाला है। वह चित्र भी इन्हीं पूर्व कथित चित्रों को आधार मान कर बनाया गया है। अतः बाबू साहब का यह चित्र जो विहार पत्रिका में कई बार छपा तथा भारत में अंग्रेजी राज्य में भी है तथा सावरकर लिखित इंडियन वार आफ़ इन्डिपेन्डेन्स में है गलत है और खुदाबक्स खाँ लाइब्रेरी तथा बाबू कुंवर सिंह वाली चित्र सही है।

वंश और भोजपुर

कुंअर सिंह का वंश मालवा के धार राज साहित्यिक भोजदेव : १००५,१०५५ का वंश है। भोज देव के वंशज राजाओं का राज्य इस पूर्वज प्रदेशों पर अर्जुन वर्मा : वि० सं० १२३७ : के समय अर्थात् १६१ वर्ष तक बना रहा। इस राज्य की राजधानी उस समय पुराना भोजपुर डुमराँव के पास थी। यह प्रदेश स्थली प्रान्त के नाम से उस समय विख्यात था वर्तमान बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ का महमूदाबाद तहसील छपरा का माशी थाना अथवा उसके निकटस्थ भूमि और कुछ भाग गोरखपुर का तथा शाहाबाद जिले का वर्तमान भोजपुर परगना इस स्थली

प्रान्त या मंडल में शामिल था। भोज या भोजदेव के सेनापति ने ही माशी से हैहो वंशी राजाओं को जो नहीं ८०० ई० से चेरों को हराकर राज्य कर रहे थे इटावा और गंगादेव को पार करके वे शाहाबाद के बीहोआ परगने में बीहोआ के पास बसे। उस समय शाहाबाद दो भाग में विभाजित था। आरा से ससराम तक घोर जंगल था जो वारायक के नाम से माना जाता था। और वर्तमान भोजपुर परगाना तथा कुछ भाग सासाराम और भभुआ का उस समय भोजपुर में शामिल था जो भोज के अधीन था। रैनल्ड साहब के ऐटलस १७८८ ई० में भी भोजपुर सरकार और सासाराम सरकार नामक दो सरकारें शाहाबाद में थी। मालवा में पँवारों की शक्ति अर्जुन वर्मा के बाद के राजाओं के समय में जब क्षीण हो गई तब भोजपुर प्रांत में आदिम जातियों ने पुनः अपना-अपना राज्य स्थापित किया। फिर जब अलाउद्दीन ने १३०० ई० के अंत में मालवा के राजा जयसिंह चतुर्थ को पराजित करके मालवा ले लिया तब उनके पुत्र शान्तनशाह ८११ फसली में १४०४ के लगभग गया श्राद्ध के बहाने अपने पूर्वजों के इस राज्य की ओर चले और वहाँ आकर चेरों को परास्त करके अपना राज्य कायम किया। केवल शाहाबाद तक ही उनका राज्य विस्तार नहीं रहा बल्कि बलिया में भी इन्होंने राज्य स्थापित किया। दिल्ली शासन से भी इस वंश का हमेशा मुकाबला रहा और कभी भी यह वंश पूर्णतया परास्त न किया जा सका। कुँअर सिंह जैसे ही वीर इस वंश में और भी हो गये हैं जिनके नाम भी आइना अकबरी तथा अन्य मुगलकालीन कागजों में आये हैं। शाहाबाद में बहुत गाँव इन्हीं वीरों के बसाये हुये हैं। तब से अब तक इन पम्मार (उज्जैन) राजपूतों का प्रभुत्व शाहाबाद में अक्षुण बना रहा।

२३ अप्रैल, कुँअर सिंह दिवस

रामू के महल्ले में एक बड़ी बूढ़ी दादी रहती थी, उसकी आयु १२० वर्ष की थी। उसके बाल सन की तरह सफेद हो गये थे। शरीर के चमड़े लटककर झूल गये थे। कमर की रीढ़ टेढ़ी हो जाने से बूढ़ी दादी धनुही की तरह झुककर चलती थी। परन्तु उसकी आँखें और जीभ पूर्ववत् चमकीली और तेज थीं। उसको बूढ़ी दादी कहकर महल्ले के लड़के पुकारते और सदा उसे घेरे रहते।

बूढ़ी दादी भी बच्चों को प्यार करती, पुचकारती, गोदी में बैठाती और प्रेम से उनकी पीठ सहलाती। बूढ़ी दादी के पास पैसे नहीं थे कि बच्चों को देने के लिये वह मिठाई खरीदती। बच्चों को देने के लिये मिठाई से भी मीठी चीज उसके पास प्रेम था और, थी पुरानी-पुरानी घटनाओं की सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ। प्रायः नित्य संध्या समय बूढ़ी दादी के आँगन में बच्चे जमा हो जाते और बूढ़ी दादी मचिया पर बीच आँगन में बैठ कर एक-से-एक अनोखी कहानी बच्चों को सुनाती।

झरिया से रामू जब अपने माँ-बाप के साथ घर आया तो दौड़ा-दौड़ा वह भी बूढ़ी दादी के पास पहुँच गया और दादी के पाँव छूकर प्रणाम किया। बूढ़ी दादी ने प्रेम से रामू को सहलाया और पुचकार-पुचकारकर उसका समाचार पूछने लगी।

रामू ने कहा—"दादी २३ अप्रैल को कुँअर सिंह दिवस की छुट्टी है। फिर २४ को एतवार पड़ता है। दो दिन की और छुट्टी लेकर चाचा जी हमें पहुँचाने चले आये। दादी ! ये कुँअर सिंह कौन थे? तुम इनकी भी कहानी जानती हो?"

बूढ़ी दादी की चमकीली आँखों में पानी भर आया। उसने लम्बी साँस खींची और धीरे से कहा—"कुँअर सिंह को मैं नहीं जानूँगी तो कौन जानेगा बेटा? मैं उनके यहाँ रही हूँ। उनके महल की दी हुई दोनी (दोने में परोसा हुआ भोजन) खाई है। तुम्हारे बूढ़े दादा कुँअर सिंह के खवास थे।"

रामू ने कहा—"तो तुम कुँअर सिंह की कहानी भी जानती हो। कहो न कैसी कहानी है?" बूढ़ी दादी ने कहा—"कुँअर सिंह की बहुत-बहुत कहानियाँ हैं बेटा। सुनोगे?"

सभी बच्चों ने बूढ़ी दादी को घेर लिया और कहना शुरू किया—"आज कुँअर सिंह की ही कहानी कहो? दादी, कुँअर सिंह की ही कहानी सुनाओ।"

दादी ने कहना शुरू किया—तुम जानते हो, कुँअर सिंह शाहाबाद जिले के जगदीशपुर नामक कसबे के बड़े प्रतापी जमींदार थे। कमल के फूल की तरह उनकी बड़ी-बड़ी आँखें थीं। धोबी के पाट जैसी पीठ थी। बरसात के भरे तालाब

की तरह विशाल छाती थी। उनकी कड़ी-कड़ी घनी मूँछें बरछी की नोक जैसी खड़ी थीं। मझोले कद का गठा हुआ शरीर था। रंग उनका गेंहुआँ था। जब वे बोलते थे तो मानो बादल गरजता था, डाँटते थे तो तुम जैसे बच्चे मारे डर के काँपकर माँ की गोदी में छिप जाते थे। ऐसे थे कुँअर सिंह। जब वे लड़के थे तब खूब खेला करते थे। खूब बन्दूक चलाते थे। खूब कबड्डी खेलते थे। खूब दौड़ते, खूब घोड़े दौड़ाते, कटारी, छुरी, तलवार, भाला आदि अस्त्र-शस्त्र चलाने का नित्य अभ्यास किया करते थे। किन्तु बेटा, किताब पढ़ने और पाठ रटने से वे दूर भागते थे।

उनके पिता का नाम था बाबू साहबजादा सिंह। उन्होंने एक मौलवी को कुँअर सिंह को पढ़ाने के लिये रक्खा था। कुँअर सिंह उसको चिढ़ाया करते थे। वह था भी अजीब बुद्धू। दाढ़ी तो उसकी चुकड़ी जैसी थी। पतला-दुबला शरीर था। सूखे भंटे की तरह उसके पिचके गाल थे। आगे के दाँत टूट गये थे, इससे जब वह बोलता था तो आवाज ठीक से नहीं निकलती थी। एक दिन उसने कुँअर सिंह को पाठ याद करने को दिया। दूसरे दिन कुँअर सिंह से जब पाठ पूछा तो उन्होंने जान-बूझकर याद पाठ भी नहीं बताया। मौलवी की शामत आयी। उसने कुँअर सिंह के कान उमेठ दिये। बस बहादुर बालक कुँअर सिंह को क्रोध आया। वे कोठरी में दौड़ गये और उन्होंने नंगी तलवार लेकर भागते मौलवी का पीछा किया। मौलवी बेतहाशा हाँफता हुआ भागा चला जा रहा था, इधर कुँअर सिंह नंगी तलवार ताने उसका पीछा कर रहे थे। मौलवी को जब कहीं शरण नहीं मिली तब वह बाबू साहबजादा सिंह की बैठक में घुस गया। कुँअर सिंह हट आये। मौलवी ने रो-रोकर सब कहानी कही। उसने पूरा हाल सुनाकर कुँअर सिंह की शिकायत की। तब साहबजादा सिंह ने हँसकर कहा—"मौलवी साहब, मेरे बेटे ने पहले-पहल तलवार उठायी तो आप भाग निकले। उसकी तलवार का सगुन नहीं हुआ। जाइये, उससे लड़ निपटिये। मन हो तो तलवार भी ले लीजिये।"

इस पर मौलवी मारे डर के काँपने लगा। वह बाबू साहबजादा सिंह के पैरों पर गिर पड़ा और जान बख्शवा कर भागा।

सब लड़के हँसने लगे। बूढ़ी दादी हुक्के के कश खींचने लगी। लड़कों का हँसना जब बन्द हुआ तो दूसरी कहानी की फरमाइश हुई। बूढ़ी दादी ने कहा—कुँअर सिंह जब मालिक हुए तो उनका रोब-दाब खूब फैला। उनके डर मे सब लोग वैसे ही काँपते थे जैसे तुम बच्चे भूत के नाम से डरते हो। उनके खजाने के पोतदार का नाम था चमारी साहु (शिवदयाल)। ये चमारी साहु खानदानी आदमी थे।

पुराने जमाने में इनके वंश में राजा हेमू हो गये थे। इन्हीं के वंश में 'बालक'-सम्पादक श्री रामलोचनशरण हैं। खानदानी जानकर कुँअर सिंह इनकी इज्जत करते थे। लेकिन दरबार में तो एक दूसरे के दुश्मन भी बहुत हुआ करते हैं जो मौके-बेमौके मालिक के कान भरा करते हैं।

एक बार ऐसा हुआ कि बाबू कुँअर सिंह के दूध में चीनी नहीं पड़ी। रसोइये पर जब डाँट पड़ी तब उसने हाथ जोड़कर कहा—"हुजूर, मेरी गलती नहीं है। भंडारी ने चीनी नहीं दी।"

भंडारी जब बुलाया गया तो उसने काँपते-काँपते कहा—"हुजूर, भंडार में चीनी दो दिन से नहीं है। मैंने मुंशी को सूचना समय पर दे दी थीं तब भी उसने चीनी नहीं मँगायी।"

जब मुंशी को पकड़ कर सामने लाया गया तो उसने कहा कि हुजूर, चमारी साहु भण्डार में सामान देते हैं। मैंने उनके पास खबर भेजी, पर उन्होंने कहला भेजा कि मेरे पास चीनी नहीं है।

कुँअर सिंह की आँखें लाल हो गईं। वे क्रोध से काँपने लगे। उनके भण्डार में चीनी नहीं? यह कितने शर्म की बात थी! फिर चमारी साहु की ऐसी हिम्मत कि उसने भण्डार में चीनी नहीं भेजी! उन्होंने डपटकर कहा—"कल प्रातःकाल चमारी साहु को दरबार में हाजिर करो।" कल क्या होगा? सारा दरबार भय से थर्रा उठा। चमारी साहु के दुश्मन खुश हुए और मित्रों ने दौड़े-दौड़े उनके पास खबर पहुँचायी। चमारी साहु के घर में सैकड़ों बोरे चीनी थी। अब वे क्या करें? छिपावें तो कहाँ छिपावें? उनके घर के पास ही एक पोखरी थी। उसी में उन्होंने चीनी के सभी बोरे रातोरात डलवा दिये। प्रातःकाल

कुँअर सिंह के सिपाहियों के दल ने चमारी साहु का घर घेर लिया। तलाशी हुई। चीनी के बोरे तो नहीं निकले पर पास की पोखरी का पानी शरबत हो गया था। हजारों बच्चे दौड़कर वहाँ जमा हो गये थे और खुश होकर शरबत पी रहे थे। सिपाहियों ने भी पोखरे का जल पिया और कुँअर सिंह को जाकर खबर दी कि चमारी साहु के घर से चीनी नहीं मिली पर पास की पोखरी का जल शरबत हो गया है।

बस, बाबू साहब सब समझ गये। वे मन में खुश हुए कि मेरे आदमी मेरा इतना अदब करते हैं। उन्होंने चमारी साहु को बुलवाया। चमारी साहु ने सच्ची कहानी कह सुनायी और अपनी गलती मानकर क्षमा-प्रार्थना की। बाबू साहब बड़े उदार स्वभाव के वीर पुरुष थे। उन्होंने देखा कि मेरे लहाज से इसने हजारों रुपये की चीनी को पानी में फेंक दिया। वे प्रसन्न हो गये। चमारी साहु को माफी ही नहीं दी बल्कि उनको पाँचो टुक कपड़े दिये, और जितनी चीनी पोखरी में बहा दी गयी थी उसके मूल्य दिये।

बूढ़ी दादी फिर हुक्का पीने लगी। बच्चे आपस में बात करने लगे। रामू ने कहा—"चुप रहो, चुप रहो। दादी दूसरी कहानी कहती हैं।" उसने दादी का हुक्का पकड़कर कहा—

बूढ़ी दादी ने मुस्कुराते हुए बच्चे की पीठ पर हाथ रखा और हुक्का का कश खींचकर धुआँ वमन करते हुए कहा—"खूब होता था रामू! तुम नहीं जानते कुँअर सिंह शाहाबाद जिले के रहने वाले थे। आरा नगर के उत्तर गंगा का कछार है और पूरब सोनभद्र का बालू। दोनों जगह खूब खरबूजा होता है। तब भी उतना ही पैदा होता था।"

रामू—"दादी कुँअर सिंह तो बड़े आदमी थे वे खरबूजा क्यों खाते होंगे? उनके लिये तो अंगूर, सेब, नासपाती आदि आती होंगी।

दादी ने कहा—"नहीं बेटा! कुँअर सिंह आज के ऐसे बड़े आदमी नहीं थे। वे एक समान सबसे मिलते जुलते और एक समान खाने की सभी चीजें खाते थे। उनके सामने मोटा और महीन अन्न का भेद नहीं था और न देशी

फल के आगे विदेशी फल की अधिक कदर थी। उनके खरबूजा की एक कहानी सुनोगे ?'

सब लड़के चिल्ला उठे—'हाँ-हाँ कहो-कहो।'

बूढ़ी दादी ने कहा—एक समय की बात है कि बाबू साहब आरा में अपने बाबू बाजार की कोठी में थे। गरमी की लूह चलने ही वाली थी। बाजार में ठंढे फलों का अभी अभाव था, इसी समय ऐसा हुआ कि बाबू साहब का नौकर ....! दादी चुप हो गईं, उनकी आँखें पसीज आयीं, कण्ठ भर गया। बच्चे चुप हो उनके मुँह को ताकने लगे। क्षण भर बाद उन्होंने कण्ठ साफ करके कहा—"बाबू साहब के खवास हमारे पति थे रामू ! उनका नाम कैसे लूँ ? रामू के बाप का नाम ही तो उनका नाम था। एक दिन वे बाजार तरकारी लाने गये थे। बाज़ार में एक ही खरबूजा उस दिन प्रथम-प्रथम आया था। खवास जी ने जब मोल किया तो कुँजड़िन ने दाम अधिक माँगा। इतने में डुमराँव के महाराज का नौकर भी वहाँ आ पहुँचा और उसने माँगे दाम से बेसी दाम देकर खरबूजा खरीद लिया। जाते समय कहता गया 'जानते हो मैं महाराज का नौकर हूँ। बाबू का नहीं'।"

"रात को पाँव दबाते समय खवास ने बाबू जी से ये बातें कहीं। बातें सुनते ही बाबू जी उठ बैठे। लाल, लाल आँखों से घूरते हुए खवास को डाँटने लगे और कहने लगे तुमने डाक बोल कर खरबूजा खरीद क्यों नहीं लिया पास रुपया कम था तो सन्देश भेजकर मँगवा लेते। तूने मेरी बेइज्जती की। दूसरे दिन दिनचर्या से फ़ुरसत होते ही बाबू साहब फिटन पर बैठ कर महाराज डुमराँव की कोठी जो आरा कतिरा में आज भी है गये। उधर महाराज को भी खरबूजे की इस घटना की खबर मिल चुकी थी। वे नौकर को डाँट चुके थे। कहा था, तुमने ऐसी गलती क्यों की ? कुँअर सिंह महा बिगड़ैल आदमी हैं। अब वे बिना कुछ अनर्थ किये नहीं मानेंगे।' इसी बीच कुँअर सिंह की फिटन दिखाई दी। महाराज मारे डर के अन्दर चले गये और मुसाहबों से खूब खातिरदारी करके क्षमा माँग कर क्रोध शान्त करने की बात भी कहते गये। कुँअर सिंह ने बग्गी से उतरते ही पूछा "महाराज कहाँ हैं ?" मुसाहबों ने शौच

जाने का बहाना बता कर बात करना शुरू की और खरबूजेवाली घटना का उल्लेख कर क्षमा माँगने लगे। बाबू जी जितने क्रोधी थे, जितने वीर थे उतने ही दयालु और शान्त भी थे। क्षमा की बात से उनकी क्रोधाग्नि जब कुछ धीमी होने लगी तब महाराज डरते-डरते आये और आते ही इसके पूर्व की कुँअर सिंह बिगड़े या कुछ कहें उन्होंने अपने नौकर की बेअदबी के लिए क्षमा माँगी और दो-चार टोकरियों में भरे खरबूजे सामने रखवा कर कहा, 'सरकार के भंडार में भेजने के लिए मनेर से ये खरबूजे मँगवाये थे और उस नौकर को पूरी सजा दी गयी है। इस पर बाबू साहब प्रसन्न हो गये और हँसते हुए घर आये।' बूढ़ी दादी फिर हुक्का पीने लगी और लड़के एक दूसरे को देखकर हँसने लगे।

हुक्का का कश खींचकर दादी ने हुक्का दूर रख दिया। बच्चों के और कहानी सुनाने के आग्रह पर उन्होंने कहा—"बाबू जी के दरबार में सदाव्रत चलता था। जो कोई भी वहाँ आता था उसको खाने का सीधा (दाल, चावल, आटा, तेल, तरकारी आदि) दिया जाता था। जो प्रजा मालगुजारी देने या किसी अन्य काम से आती उसे भी रसद दी जाती थी। एक बार ऐसा हुआ कि चार राजपूत लगान न देने के कारण पकड़कर लाये गये। उनको भोजन के लिए सामग्री मिली। वे खाना पकाने लगे। उन्होंने आटा की बाटी बनायी और खाते समय इस बात के लिए लड़ पड़े कि एक बाटी जो हिस्से से बच गयी थी वह किसको मिले इसी को लेकर आपस में लाठी भी चली और सर भी फूटे। दूसरे दिन बाबू साहब के दरबार में उनकी पेशी हुई। लगान बाकी के साथ-साथ बाटी के कारण मार-पीट की कहानी भी कह सुनायी गयी। बाबू साहब ने उनके मुख से झगड़े का विस्तारपूर्वक हाल सुनकर हँसते हुए अपने तहसील-दार से कहा—"तुम बड़े बेवकूफ आदमी हो। जो इनसे बाकी मालगुजारी पाने की आशा रखते हो। एक बाटी पर जब ये इतनी मार करते हैं तब तुम्हारी बाकी मालगुजारी कहाँ से दे देंगे? ये पेटू हैं इनको भण्डारो से भोजन दिलवा कर बिदा करो। बाकी मालगुजारी माफ कर दो।"

बच्चे हँसने लगे। दादी ने पुनः कहा—"वे कहते थे कि बाबूजी के दरबार में एक बार एक ऐसा असामी लाया गया जो नगद मालगुजारी नहीं देता था।

खेत में जो कुछ पैदा होता था उसी को देकर मालगुजारी साफ करता था। बाबू साहब ने उससे जब कारण पूछा तो उसने कहा—"महाराज मुझसे नकद रुपये नहीं मिलते। आपके यहाँ जिस किसी रकम की आवश्यकता हो उसको मैं देने को तैयार हूँ, पर नकद रुपये मेरे पास नहीं हैं। इस पर बाबू जी ने दरबारियों से राय पूछी और सबों ने राय दी कि उससे ऐसी चीज माँगी जाय कि वह दे न सके। बाबू साहब ने हुक्म दिया कि एक हजार बरधी (दो बोरों में भरी सामग्री से लदा बैल) खटाई और महुआ (मधुप फल) भण्डार में अविलम्ब पहुँचाये जायँ। हफ्ते के अन्दर ही जब इतने सामान भण्डार में पहुँचवा दिये तब बाबूसाहब प्रसन्न हुए और उसको ये सामान वापिस करके उसकी मालगुजारी माफ कर दिये और आज्ञा दिये कि वक्त पर तुमको मेरी सदा के लिये ऐसे ही आज्ञा का पालन करना होगा। सभी जरूरी चीजों को तुम अपने यहाँ जमा रक्खो।" तब से उससे अक्सर ऐसी ही ऐसी चीजें माँगीं जातीं और वह उन्हें पहुँचाया करता था। पर वे चीजें पुनः उसे वापस कर दी जाती थीं। वे कहते थे कि बाबूजी तेल लगाते समय एक दिन कह रहे थे कि ऐसा वे इसलिये करते हैं कि अपने पास ऐसी चीजों को रखे रहे कि वक्त आने पर वे उन्हें दे सकें। बूढ़ी दादी चुप हो गयीं।

थोड़ी देर ठहरकर बूढ़ी दादी ने पुनः कहा—"बाबू साहब के दरबार में एक बार एक गंधी आया। उसने शीशी से इत्र लेकर सभी दरबारियों को दिखाने लगा। सबों के हाथ पर शीशी को ढक्कन से जरा-जरा इत्र नमूने की तरह देता जाता था। जब वह बाबू साहब के दरबारी मसखरे के पास पहुँचा तो उसने हाथ बढ़ाने के बजाय अंजली फैला दी। गंधी ने अंजली में शीशी का इत्र उडेल दिया। मसखरे इत्र को दोनों घुटने में लगाना शुरू किया। सारा दरबार इस दृश्य को देखकर हसने लगा। बाबू साहब ने हँसकर पूछा—"सब तो इत्र को हाथ पर रगड़कर सूँघ रहे हैं। तुम घुटनों में क्यों लगा रहे हो।" मसखरे ने कहा—"सरकार जाड़े की रात में रात भर घुटना ही सूँघता रहता हूँ। इसीलिये वहाँ लगाता हूँ कि महका करे।"

बाबू साहब ने अपने खजांची को बुलाकर पूछा कि मसखरे को उस वर्ष जाड़े

के कपड़े नहीं दिये गये क्या ? खजांची ने जब न देने की बात कही तब बाबू साहब ने अपने सामने १५०) रुपये उसे जड़ावर के दिलवाये। सभी बच्चे ठट्ठा मारकर हँसने लगे। दादी चुप हो हुक्का उठाकर पीने लगी।

थोड़ी देर बाद बालकों ने बूढ़ी दादी के निकट आकर उन्हें हिलवाकर और कहानी कहने के लिये आग्रह किया। दादी ने क्षणभर तक सोचकर रामू से पूछा—"तुम कबूतर देखे हो ?" सभी लड़कों ने चिल्लाकर कहा—"मैंने देखा है। मैंने देखा है।"

बूढ़ी दीदी ने पूछा, "नवल बाबू के कबूतरों को देखे हो ?"

रामू ने कहा—मैंने देखा है।

दादी ने पूछा—"वे कौन से कबूतर पाले हैं, जानते हो ?"

सब लड़के चुप हो गये। एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।।'

दादी ने कहा, "नवल बाबू उड़ाई के कबूतर पालते हैं—इन्हीं को गिरबाज, डुब्बी आदि नाम से भी पुकारते हैं। देखते हो न नवल बाबू के कबूतर आकाश में घण्टों उड़ते रहते हैं।"

रामू ने कहा—"हाँ-हाँ, मैंने देखा है। मैंने देखा है उनको कबूतर उड़ाते।"

दीदी ने कहा—"वैसे ही कुँवर सिंह भी कबूतर उड़ाने के शौकीन थे। उनके कबूतरखाने में एक से एक गिरहबाज और डुब्बी कबूतर थे। उनके कबूतर जो सबेरे आकाश में उड़ जाते थे तो सन्ध्या को उतरते थे। उनके नस्ल के कबूतर जिले भर में किसी के पास नहीं थे और न किसी को वे अपने कबूतरों को देते ही थे। एक बार वे डुमराँव गये हुये थे। वहाँ दिन को जब भोजन करके चौकी पर बैठे हाथ धो रहे थे तब आकाश में कुछ कबूतरों को उड़ते देखकर उन्होंने कहा ये कबूतर तो मेरे कबूतरखाने के हैं। यहाँ कैसे आये ? जरूर कोई चुरा लाया है।" सिपाहियों को हुक्म हुआ कि पता लगावें कि किसके घर पर बे कबूतर बैठते हैं। जिस घर पर बैठें उसके मालिक को पकड़ लावे।

सन्ध्या समय एक दर्जी को पकड़कर सिपाहियों ने बाबूजी के सामने पेश किया। बाबू साहब के प्रताप को दर्जी जानता था। वह मारे डर के काँप रहा था। हाथ जोड़े सर झुकाये वह थर-थर काँपता हुआ सामने खड़ा था। दो सिपाही

दोनों ओर से उसकी बाँह पकड़े थे। बाबूजी ने उसको इतना डरा देखकर सिपाहियों को अलग खड़े होने का आदेश दे दर्जी से पूछा, "तुमने इन कबूतरों को कहाँ पाया, सच बताना। ये कबूतर मेरे कबूतरखाने के हैं कि नहीं?"

दर्जी रोता हुआ जमीन पर गिरकर बाबूजी का पाँव पकड़कर कहने लगा, "महाराज मेरी खता माफ हो, जान बक्शी जाय तो सच्ची कहानी कह सुनाऊँ।"

बाबूजी तो बड़े दयालु थे। उन्होंने कहा, "अच्छा माफ किया, कहो।"

दर्जी ने कहा—"सरकार मैं भी कबूतरबाज हूँ। मैं कबूतर का शौकीन हूँ। मेरा सम्बन्ध जगदीशपुर के करीम मियाँ के यहाँ है। मैं वहाँ गया था तो आपके कबूतरखाने से चार अण्डे चुरा लाया था। उन्हीं के ये बच्चे हैं। मैं नहीं जानता था कि सरकार की नजर इतनी तेज है कि अण्डे के बच्चों को भी सरकार ने पहचान लिया। इस खता के लिए जान बक्शी जाय।" दर्जी ने बाबूजी के पाँव पकड़ लिए। बाबूजी बहुत खुश हुए और उसको एक जोड़ा और कबूतर देने का हुक्म देकर उसे क्षमा किए।"

बच्चे हँसने लगे। दादी चुप हो गयी। रामू ने दादी का हुक्का भर कर उन्हें थम्हाते हुए कहा—"जबतक हुक्का सुलगता है तब एक कहानी और कहो दादी।"

बूढ़ी दादी ने प्रसन्न होकर कहा—"अच्छा सुनो। बाबू साहब कबड्डी कुश्ती, दौड़, धूप के बड़े प्रेमी थे। वे जानते थे कि इन खेलों के खेलने से शरीर बलवान होता है। साहस बढ़ता है। बूढ़ापे में वे स्वयं तो खेल नहीं सकते थे, पर उनको शौक था कि बच्चे भी वैसे ही बलवान हों जैसे वे स्वयं थे। सन्ध्या समय जब वे अपने बैठके के ऊँचे चबूतरे पर बैठते थे तब नगर के हजारों छोटे-बड़े लड़के नीचे के मैदान में जमा होते थे। बाबूजी सबों को खेलने का हुक्म देते थे। कोई कुश्ती लड़ता था, कोई कबड्डी खेलता था, कोई गेंद स पीटापट खेलता था, कोई दौड़ता था, कोई फाँदता था, और कोई सहाना काटता था। इस तरह अनेक बैठक के चबूतरे के नीचे का बड़ा मैदान खेलाड़ियों से भर जाता था। जब खेल समाप्त हो जाता था तब बाबू साहब के सामने टोकरों में भरी मिठाइयाँ लाकर रखी जाती थीं। एक एक करके बच्चों के गिरोह अलग अलग कर दिये जाते थे और उनको मिठाइयाँ बाबूजी अपने हाथ से देते थे।

फिर जब मिठाई खाकर वे स्वस्थ हो जाते थे तब बाबूजी मुट्ठी में पैसे ले लेकर एक एक गिरोह के बीच फेंकते थे और बच्चे आपस में कुश्तम कुश्ती करके पैसे लूटते थे। यह क्रम एक घण्टे तक चलता था। उसके बाद खेल की सभा बरखास्त होती थी। उनके खवास (दादी के पति) बड़े बली थे। रोज वे सबसे अधिक पैसे लूटते थे। बूढ़ी दादी हुक्का पीने लगी। बच्चे एक दूसरे से बातें करने लगे। जब बूढ़ी दादी हुक्के के दस पाँच कश खींच लिये तब रामू ने हुक्का पकड़कर कहा—"अब दादी कहानी कहो। हुक्का फिर पी लेना।" दादी ने निगाली से होंठ हटाते हुए कहा—"बाबू साहब के दरबार में बाज, अहेर, बहेरा, शिकरा आदि शिकारी पक्षी खूब पोसे जाते थे। जब बाबू साहब शिकार करने जाते तो शिकारी भी अपने अपने शिकारी पक्षियों के साथ शिकार करते। कोई बाज से खरहा, बत, गैबर, जाँघिल, और छोटे पशु और बड़ी पक्षियों को पकड़वाता तो जुररा से तीतर खखान आदि मध्यम श्रेणी के पक्षियों का शिकार करता और कोई शिकरा से हरिअल पंडुक आदि छोटी पक्षियों को पकड़वाता एक बार बाबूजी ने हुक्म दे दिया कि मेरे दरबार में सिपाही उसी को आने दे जिसके हाथ पर बाज आदि कोई पक्षी हो। बिना पक्षी के कोई दरबार में न आने पावे।

एक अक्खड़ उज्जैन राजपूत को यह बात बहुत बुरी लगी। कहाँ वे अङ्गा पैजामा पहन कर और ढाल तलवार बाँध कर दरबार में जाने के आदी थे और कहाँ ये बहेलिया की सूरत में बाज शिकरा लेकर जाने का हुक्म उन्होंने बिना पक्षी के ही जाने की ठानी पर जब दो एक बार अपने पुराने लबास में वे दरबार में जाना चाहे और सिपाहियों ने उन्हें रोक दिया। तब उन्होंने एक चील्ह पकड़वायी और अपने लबास में लैस होकर उस चील्ह को बिना अंगुस्ताना के ही दाहिने हाथ पर बैठाकर उसके नख से निकले रक्त से भींगे हाथ दरबार में दाखिल हुए। दरबार में जाने पर उन्होंने बिना सलाम किये ही अपना आसन ग्रहण किया। बाबू साहब के चोबदार ने चिल्लाकर कहा—"अदब या मुलाहिजा" यानी अदब के साथ रहिये यानी सलाम कीजिये। जब बाबूजी की नजर उनपर पड़ी तो उन्होंने सब समझ मुस्कुराते हुए कहा—"यह चील्ह पालने

का शौक आपको कैसे हुआ ? फिर बिना अंगुस्ताना के ही हाथ पर बैठा रखा ! क्या बात हैं ? तमाम खून से हाथ लाल हो रहा है ?" बाबूजी तो समझते थे कि राजपूत आज उनको हराने आया है। वे ऐसे कौतूहलों से प्रसन्न भी तो खूब होते थे। राजपूत महोदय को मौका मिला उन्होंने बिगड़ कर कहा—"सरकार के दरबार में अब बहेलिये ही तो आ सकते है। तलवार की जगह अब बाज ने ले लिया है। हम लोग तलवार ग्रहण करने के आदी हैं। चील्ह बाज को हाथ पर बैठाना क्या जाने ? फिर हाथ पर बाझ बैठाऊँ कि सरकार को सलाम करूँ ? एक मास जब फाटक से लौटाया जाता रहा तो आज यह चील्ह लेकर इस दुर्दशाके साथ दरबार में हाजिर हुआ हूँ। बेअदबी माफ हो। यही कहने के लिये आया था।" उठकर वे जाने लगे।

इस पर बाबू जी प्रसन्न हुए और उसी दिन से पुराना हुक्म रद्द करके सब को जैसे जी चाहे दरबार की मर्यादा के साथ दरबार में प्रवेश करने का हुक्म दिया।

बूढ़ी दादी ने कहा—"अब रात अधिक गयी, तुम लोग घर जाओ। मैं अब रोटी पकाने जाती हूँ।" बच्चों ने चिल्ला कर कहा—"एक और कहानी कह लो। बस, हम जायँगे।"

बूढ़ी दादी ने कहा—"अच्छा सुनो ! बाबू साहब को एक ही पुत्र था, उनका नाम था दलभंजन सिंह। जब वे सयाने हुए तब उनसे मुंगेर जिले के गिदौर के महाराज की लड़की की शादी के लिए पैग़ाम आया। कुल की रीति के अनुसार यह जरूरी था कि कुँअर सिंह डुमराँव के महाराज से जाकर शादी करने की अनुमति पहले प्राप्त कर लें तब शादी करें अतः कुंअर सिंह डुमराँव गये। तब महाराज से उन्होंने अनुमति माँगी तब महाराज ने यह कह कर अनुमति नहीं दी की वे पूरब के राजपूत हैं। अभी हम लोगों से सम्बन्ध नहीं हुआ है। कुँअर सिंह वहाँ से चुप चाप जगदीशपुर आये और शादी का प्रस्ताव स्वीकर कर के तिलक आदि का दिन निश्चित कर दिये। डुमराँव के महाराज की अनुमति के बिना शादी होने का अर्थ यह था कि भात की बिरादरी बारात में नहीं जायगी। कुँअर सिंह ने कहा—"ऐसा नहीं होगा। सभी जाँयगे। उन्होंने बड़ी बारात की तैयारी की और सभी भाइयों के साथ उन भाइयों को भी आमन्त्रित किया जो

डुमराँव द्वारा कारण विशेष से जाति से च्युत कर दिये गये थे। इसी के साथ उन्होंने बारात में न जाने वालों के साथ अपने उदण्ड व्यवहार की धमकी भी दी। फलतः शाहाबाद की सारी बिरादरी बाबू साहब के साथ गिदौर बारात गयी और डुमराँव महाराज अकेले रह गये यह बारात इतनी बड़ी थी और इस सज धज से ले जायी गयी थी कि इस में लाख रुपये से अधिक बाबू साहब के व्यय हुए। ऐसे बाबू साहब अपने आन के पक्के राजपूत थे।"

रामू ने पूछा—"अच्छा दादी एक बात बता कर कहानी कहना बन्द कर दो। हम इस वर्ष से २३ अप्रैल को "कुंअर सिंह दिवस" क्यों मनाना आरंभ कर रहे हैं? यह दिवस कैसा दिवस है? और कुँअर सिंह के ही नाम से क्यों मनाया जायगा?

बूढ़ी दादी ने दो एक कश तम्बाकू के खींचे और हुक्का रख कर कहना आरंभ किया—"कुँअर सिंह बड़े बहादुर थे। उनकी बात जिले के सभी लोग मानते थे। वे किसी के अन्याय को नहीं देख सकते थे। जो अन्याय करता था उसे वे फौरन दण्ड देते थे। उस समय मुसलमानों से देश की हुकूमत लेकर अंग्रेज लोग देश का शासन करते थे। उन्होंने बड़े-बड़े अत्याचार किये। देशी नरेशों को लड़ा-लड़ा कर उनकी शक्ति क्षीण कर दी और उनके राज्य भी किसी-न-किसी बहाने जब्त करने लगे। उनके खिलाफ देश भर में संगठन हुआ। संयुक्त प्रान्त में नाना साहब, तांतियाँ टोपी, रानी लक्ष्मी बाई, दिल्ली में बादशाह बहादुर शाह तथा बिहार में कुंअर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति की। कुंअर सिंह ने दानापुर कैंप के देशी सिपाहियों को मिलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति कराई और अंग्रेजों से खूब लड़े। कई लड़ाइयों में उन्होंने अंग्रेजों को तबाह कर दिया। कुँवर सिंह को भी अंग्रेजों ने कई बार हराया, पर वे पूरी तरह से परास्त नहीं किये जा सके। आठ महीने तक वे अंग्रेजों से लड़ते रहे। अन्त में संयुक्त प्रान्त के आजमगढ़, बलिया और गाजीपुर जिलों में कई लड़ाइयाँ लड़कर जब वे शिवपुर दिअर के पास २१ अप्रैल को गंगापार कर के जगदीशपुर अपने भाई अमर सिंह से मिलने के लिये लौटे आ रहे थे तब डगलस नाम के अंग्रेज ब्रिग्रेडिअर ने गंगापार से कुंअर सिंह के हाथी

पर तोप का गोला मारा। गोले के वार से कुंअर सिंह के अंग-रक्षक रणदलन सिंह और उनके खवास (मेरे स्वामी, जो छाता लिये पीछे बैठे थे) उड़ गये। कुंअर सिंह की बाँह में चोट लगी। वहाँ का मांस कट कर उड़ गया।

बूढ़ी दादी का गला भर आया, आँखें भींग गयीं। वह चुप होकर स्वस्थ होने लगी। बच्चे चुपचाप दादी को देखते रहे। फिर दादी ने कहना शुरू किया—हाथ के घायल होने पर कुंअर सिंह ने अपनी वह बाँह काट कर गंगा में डाल दी और अपनी सेना के साथ जगदीशपुर पहुँचे। यहाँ उनके भाई अमर सिंह उनसे बड़ी सेना के साथ मिले। उनके जगदीशपुर आने की खबर पाकर आरे से अंग्रेजी सेना लेकर कप्तान ली ग्रान्ट ने कुंअर सिंह पर २३ अप्रैल को हमला किया। कुंअर सिंह ने उसको मार डाला और उसकी सेना के सभी सिपाहियों को मरवा डाला। यह कुंअर सिंह की सबसे बड़ी और अन्तिम विजय थी। उसी विजय के साथ कुंअर सिंह की मृत्यु भी बाँह कटने की चोट के कारण हो गयी। इसीलिये २३ अप्रैल को सरकार ने अपने देश प्रेमी महान बीर कुंअर सिंह की अन्तिम विजय की याद में, 'कुंअर सिंह दिवस' मनाना शुरू कर किया है। तुम बच्चों को भी कुंअर सिंह की तरह ही बहादुर, पराक्रमी, बलवान, देश-प्रेमी और देश सेवक बनना चाहिये।

बूढ़ी दादी ने पूछा—"बोलो बचो, तुममें कौन-कौन कुंअर सिंह जैसा वीर और देश-भक्त बनना चाहता है ?"

सभी बचों ने एक साथ ही चिल्ला कर कहा—"हम सब कुंअर सिंह की ही भाँति वीर, बली और देश भक्त बनेंगे।"

कुँअर सिंह की जनप्रियता

जो लोग आम जनता को भला-बुरा समझ सकने में असमर्थ और अकृतज्ञ कहते हैं, उनकी धारणा निर्मूल और आधारहीन है। जनता अपने समय की कसौटी पर सबको कसती है और जो जैसा उतरता है, उसको वह उसी के अनुसार स्मरण भी करती है। वही पुरुष महान् और पूज्य है जिसको सभी श्रेणियों के व्यक्ति, चाहे वे संस्कृत हों अथवा असंस्कृत, साक्षर हों अथवा मूर्ख, एक समान

मानते हों, पूजते हों और उसकी कीर्ति का स्मरण करते हों। हर देश की यही परम्परा है। भारत ने तो अपने हजारों महान् पुरुषों को अनादि काल से केवल पूजा ही नहीं है, उन्हें देवता की कोटि में भी ला रखा है। राम और कृष्ण, सीता और सावित्री, पितामह भीष्म, कर्ण, द्रोण भी आज भारत के कोने-कोने में जीवित हैं। विक्रमादित्य भोज, शिवाजी, राणाप्रताप, अकबर आदि ऐतिहासिक पुरुष भी भारत के जनकण्ठों मे वैसे ही आज जीते-जागते वर्तमान हैं। इसी तरह आज से ९७ वर्ष पूर्व बाबू कुँअर सिंह भी जनता के हर वर्ग के लिये अनेकानेक भावों से पूज्य, स्मरणीय, महान् और आदर्श हैं। शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, धनी हो अथवा निर्धन, बालक हो अथवा युवा या वृद्ध, कुलीन हो अथवा अकुलीन, महान् कवि हो अथवा खलिहानों और खेतों का बिरहा गानेवाला किसान, कुँअर सिंह को अपने-अपने ढंग से आज भी स्मरण रखा है। कोई उनकी बहादुरी को कहानी कहकर उन्हें स्मरण करता है, कोई उनकी विलक्षण साहसिकता की घटनाओं का बखान करके प्रसन्न होता है तो कोई उनके बिरह में अपनी वेदना को गीतों द्वारा व्यक्त करता है, कोई उनके ध्येयों पर मर मिटने के लिए हौसला बाँधता है, तो कोई उन्हें बाबूजी, दादाजी आदि आदर-सूचक शब्दों से पुकारकर सम्मान प्रदर्शित करता है। कुँअर सिंह के सम्बन्ध में आज सैकड़ों की संख्या में ऐसी कहानियाँ हर श्रेणी की जनता के कण्ठों में वर्तमान है। इन कहानियों का संकलन यदि हो जाय तो वह खोज का ही महान् विषय नहीं होगा, बल्कि उसके अध्ययन से पाठकों को अपने चरित्र-सुधार का भी अवसर मिलेगा। इस लेख में ऐसी ही चन्द कहानियाँ को एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया है। कुँअर सिंह शान-शौकत में डुमरावँ के महाराज जय-प्रकाश सिंह से अपने को सदा आगे रखना चाहते थे। यदि कभी दूसरे पक्ष से कोई ऐसा बर्ताव हो जाता था जिससे कुँअर सिंह की शान में ठेस लगती थी, तो कुँअर सिंह का स्वाभिमानी स्वभाव तुरत उद्दण्ड हो उठता था और बल प्रयोग तक के लिये वे तैयार हो जाते थे।

घुड़सवारी का यश

कुँअर सिंह की घुड़सवारी का यश सर्वत्र फैला हुआ था। चैत्र नौमी के

दिन वे डुमराँव गये थे । उनके साथ उनके छोटे भाई दयालु सिंह और अन्य सरदार भी गये हुए थे ।

सन्ध्या समय सब लोग बैठकर वार्तालाप कर रहे थे । महाराज सिंह भी थे । उन्होंने दबी जबान से कहा चाचाजी, हरिहर सोन से पर साल १०००) रु० पर एक घोड़ा मँगाया था । वह जब से आया तब से बंधा ही है । कई सवारों ने उसको फेर कर ठीक करना चाहा, पर वह किसी की सवारी नहीं मानता । यह घोड़ा इतना बदमाश हो गया है कि किसी को भी पास नहीं जाने देता । लग्गी से उसे दाना-पानी दिया जा रहा है ।"

कुंअर सिंह ने समझ लिया कि यह उन्हें चुनौती दी जा रही है । उन्होंने कहा"आज तो शाम हो गयी । कल प्रातःकाल सवारी की जायगी ।

दूसरे दिन कई साईसों ने मिलकर घोड़े को किसी तरह कसा और रस्सा बाँध कर मैदान में उसे ला खड़ा किया । कुंअर सिंह ने सवारी करने के पूर्व महाराज से कहा घोड़े को काबू में करने के लिये उसे थकाना होगा । सम्भव है इस प्रयास में घोड़ा मर जाय ।"

महाराज चुप रहे । कुंअर सिंह घोड़े के निकट गये और केवल इसके कि घोड़ा मुंह घुमाकर उन्हें काटे, वे कूदकर उसकी पीठ पर जा बैठे और कोड़े की मार से उसे परेशान कर दिया । खूब दुलत्ती चलाने के बाद घोड़ा एक ओर भागा । कुंअर सिंह उसे बराबर कोड़ा मारते रहे और इस प्रकार उसे कोसों दौड़ाते चले गये । दयालु सिंह अपने घोड़े पर कुंअर सिंह के साथ हो लिये थे । उन्होंने पुकारकर कहा—"घोड़ा बेकाबू हो रहा है । कहिए तो तलवार से इसकी टाँग काट दूँ ।" निर्भीक कुंअर सिंह ने कहा, घबड़ाओ मत, घोड़ा काबू में है । मैं अब इसे फेरता हूँ ।" उन्होंने लगाम खींची पर घोड़ा नहीं घूमा । तब उन्होंने झुककर घोड़े की एक आँख में उंगली घुसेड़ दी और उसे एक ओर खींचा । विवश होकर घोड़े को मुड़ना पड़ा । कुंअर सिंह उसी वेग से घोड़े को दौड़ाते डुमराव तक लाये । जैसे ही घोड़ा अस्तबल के मैदान में पहुँचा कुंअर सिंह ने बाग खींची और रुक गया । कुंअर सिंह नीचे उतरे । थोड़ी ही देर के बाद घोड़ा काँपने लगा फिर तुरत गिरकर मर गया ।

आन और शान

कुंअर सिंह के चचेरे भाई बाबू तुलसी प्रसाद सिंह की कन्या का विवाह गोरखपुर जिले के गौरा राजपुर ग्राम में एक धनाढ्य कुलीन विसेन क्षत्रिय के परिवार में निश्चित हुआ। जगदीशपुर रियासत इजमाली रियासत थी। एक कर्ता खानदान की तरह जो गद्दीनशीन होता था वही सारे परिवारों का भरण-पोषण, शादी-व्याह आदि का प्रबन्ध रियासत से करता था। इस प्रथा के अनुसार रियासत के ऊपर सारे प्रबन्ध का बोझ था। तुलसी प्रसाद सिंह ने महाराज डुमराँव से प्रथानुसार वर कुल के सम्बन्ध में अनुमति तो ली थी परन्तु कुंअर सिंह से इस सम्बन्ध में बातचीत करना उन्होंने उचित नहीं समझा। कुंअर सिंह को लगा कि तुलसी सिंह उन्हें डुमराँव से छोटा मानते हैं। पहले तो वे चुप रहे। विवाह का प्रबन्ध रियासत के कर्मचारी प्रथानुसार कर रहे थे। जब बारात आने के दो दिन शेष थे, कुंअर सिंह ने सारी मदद रोक दी और ब्राह्मण, पुरोहित, नाई आदि सबों को तुलसी प्रसाद सिंह के यहाँ जाने की मनाही हो गयी।

तुलसी प्रसाद सिंह भी वैसे ही आन के पुरुष थे। उन्होंने भाई से माफी नहीं माँगी। वे सीधे डुमरांव गए और महाराज जय प्रकाश सिंह से सारा हाल कह सुनाया। जय प्रकाश सिंह बारात के स्वागत के लिए सारा सामान और आदमी-जन, ब्राह्मण, नाई आदि लेकर जगदीशपुर के लिए रवाना हुए। उधर बारात भी पहुँच चुकी थी। जब यह खबर कुँअर सिंह ने सुनी कि महाराज जिन्स वगैरह लिए हुए जगदीश पुर चले आ रहे हैं, वे अपने बैठक से उठे और तुलसी प्रसाद सिंह की ड्योढ़ी पर बैठ कर विवाह का सारा इन्तजाम करने लगे। उधर से जब तुलसी प्रसाद सिंह के साथ महाराज जय प्रकाश सिंह पहुँचे तब वे कुँअर सिंह को सारा प्रबन्ध स्वयं करते देखकर चुप हो गए। महाराज का स्वागत करते हुए कुँअर सिंह ने कहा—"शादी हमारी भतीजी की हो रही है। आप नैवेद्य में आए हैं, ठीक है। पर यह सामान, जिन्स आदि की क्या आवश्यकता पड़ी? क्या जगदीश पुर में अन्न और जन की कमी है कि डुमराँव मदद में आया है? भाई-भतीजे के झगड़े में डुमराँव का हस्तक्षेप

उचित नहीं।" महाराज लज्जित हो गए। सामान से लदी सभी गाड़ियों को वैसे ही लौट जाने की आज्ञा हुई।

अनोखी सूझ

एक बार बाबू कुँअर सिंह डुमराँव गए हुए थे। वहाँ आप कई वर्षों पर गए थे। महाराज ने सरदारों को हुक्म दिया कि सब लोग खूब सजधज कर दरबार में आवें और कुँअर सिंह के सामने किसी तरह दरबार की शान शौकत में कमी न होने पावे।

सभी सदस्यों ने अपने-अपने घर आदमी भेज कर अपने बहुमूल्य वस्त्राभूषण और अस्त्र-शस्त्र मंगवाये। सभी उज्जैन सरदार तथा डुमराँव के अमनेक (पम्मार क्षत्रिय के अतिरिक्त अन्य क्षत्रिय) बड़े मूल्यवान आभूषण और वस्त्र पहन कर दरबार में उपस्थित हुए। कुँअर सिंह ने जरी के सभी कपड़ों और आभूषणों को अपने मुसाहबों और नौकरों को पहनने के लिए दे दिया तथा अपने कुत्तों को रत्नजटित आभूषणों से सुसज्जित कराया और स्वयं वे मलमल का सादा अंगा और पायजामा तथा पगड़ी पहन कर दरबार में गए। आपकी अनोखी सूझ पर महाराज और भोजपुर के अन्य सभी सामन्त बहुत लज्जित हुए।

जनता की अटूट श्रद्धा

बाबू कुँअर सिंह के पुरोहित का नाम आदित्य मिश्र था। ये शकद्वीपीय ब्राह्मण थे। उनकी कन्या का विवाह अयोध्या नरेश दुदुआ साहब के पुत्र से ठीक हुआ। कुँअर सिंह से मदद माँगी गयी। उन्होंने कहा "अयोध्या के महाराज का स्वागत रियासत की ओर से किया जायगा। वे हमारे पुरोहित के यहाँ आ रहे हैं तो इसका मतलब है कि हमारे यहाँ आ रहे हैं।" सारा प्रबन्ध होने लगा स्वागत के लिये राजसी तैयारी की गयी। जनवासे में बारात द्वारपूजा के लिये तैयार हुई तो हाथियों पर थैलियों में रुपये भर भर कर रखे जाने लगे। दुदुआ साहब भी अपनी शान-शौकत दिखाना चाहते थे। तुरत बाबू साहब के यहाँ खबर आयी कि जनवासे में लुटाने के लिए हाथियों पर तोड़े लादे जा

रहे हैं। बाबूसाहब ने कहा "वे बरात लेकर आये हैं। उनका जो कर्तव्य है करते हैं। लेकिन क्या जगदीशपुर में कंगाल बसते हैं कि वे रुपये लुटायेंगे।" शहर भर में खबर दे दी गयी की कोई भी व्यक्ति एक रुपया न उठाये और यदि कोई उठायेगा तो उसके शरीर पर कल मस्तक नहीं रहेगा।

बारात जनवासे लगी। सैकड़ों तोड़े लुटाये गये। रुपयों से सड़क पट गयी। पर बारात वालों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कोई आदमी भी रुपया नहीं उठा रहा है। रात भर रुपये वैसे ही पड़े रहे। दूसरे दिन कुँअर सिंह ने हुक्म दिया कि सब रुपये बटोर कर जनवासे में महाराज के सामने भेज दिये जायं और उनसे कह दिया जाय कि सब रुपये अब तक सड़क पर पड़े थे। किसी ने उठाया नहीं इनको गिन कर मिला लिया जाय।

बाबू कुंअर सिंह चिन्तित थे कि कहीं एक रुपया भी कम न निकल जाय। पर जनवासे से सूचना मिली कि जितने रुपये हाथियों से लुटायें गये थे वे सब वापस मिल गये।

हिन्दी काव्य में बाबू कुँअर सिंह

बाबू कुंअर सिंह की वीरता दानशीलता देश प्रेम और त्याग आदि अनेक गुण ऐसे थे कि जिनके कारण लोक और सांस्कृतिक काव्य के कलाकारों का ध्यान उनकी ओर सहज रूप से आकृष्ट हुए बिना नहीं रहा। लोक साहित्य के श्रष्टाओं ने उनको अपनी कला में बाँधकर अनेकानेक लोक गीतों में बड़े प्रेम से गाया है। सांस्कृतिक काव्य-जगत के कलाकारों ने भी १८५७ ई० से ही उनके ऊपर उनके गुण विशेषों को लेकर रचना करना अपना कर्त्तव्य माना है। यही नहीं कि १८५७ ई० के आस पास के कलाकारों ने ही उनको अपनाया हो बल्कि तब से निरन्तर आज तक सांस्कृतिक काव्य के कलाकारों ने जिस तरह से शिवाजी को राणा प्रताप सिंह को अपनी रचना का पात्र बनाया है उसी तरह कुंअर सिंह की कीर्ति को भी अपने छन्दों में गाना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा। अतः कतिपय कवियों की रचनाओं को जो इन पक्तियों के लेखक को अबतक प्राप्य हो सकी हैं उधृत करना इस लेखका लक्ष्य है। इनमें से कुछ रचनायें ऐसी भी हैं जो यदा

कदा प्रकाशित हो चुकी हैं। अतः उनकी प्राप्ति जहाँ से हुई है उसका संकेत एक शोधक के नाते कर दिया गया है।

बाबू साहब के दरबारी कवि का नाम राम कवि था। राम कवि ने बच्चू साहब के यश गान में प्रचुर संख्या में रचनायें की थी। आपने कुंअर विलास, नामक काव्य पुस्तक भी लिखी थी जिसका जिक्र "बाबू कुंअर सिंह" नामक पुस्तक में भी आया है। परन्तु कुंअर विलास की पाण्डुलिपि अब तक प्राप्य नहीं हुई है। 'बाबू कुंअर सिंह' पुस्तक में उसकी कुछ रचनायें जो उसके लेखक को कुंअर सिंह के दरबारी व्यक्तियों तथा वंशजों से प्राप्त हुई थी, उद्धृत है। कतिपय रचनायें मुझे भी अपने पितामह जी से मिली थी। राम कवि बाबू साहब द्वारा किये गये जगदीशपुर नगर की उन्नति के संबंध में लिखते हैं।

कवित्त

एक ओर हाट बीच ठाट है बजाजन के,
एक ओर गुनिन टिके हैं देस-देस के।
जौहरी सर्राफ कार चोबी काम कारबारे,
हाट के बजाज वीर हैं हयेस के॥
कुंजड़ा, कसेरा, हलवाई, बनिया का ठाट,
ऐसे हैं तमोली जो रखैया पान बेस के।
पुण्य सुरसति की संचला की थिर लाई जहाँ,
ऐसी राजधानी भूप कुँअर नरेस के॥

इसी कवि द्वारा कुंअर सिंह विरचित शिव मन्दिर की मूर्तियों का वर्णन सुनिए:—

छप्पय

पूरब दिसि श्री जगन्नाथ स्वामी छवि सोहैं।
पश्चिम राधा-स्याम रासमण्डल मन मोहैं॥

उत्तर सीता बाँह तिलक राजस छवि साजै ।
दक्खिन शङ्कर बैल सहित मृगराज विराजै ।।
कवि राम कहै कौलौं कहौं मन लागै बहु जापते ।
नर एक बार चित दै भखै छूट जात त्रय तापसे ।।

अमर सिंह के दरबारी कवि थे शिव कवि। इनकी रची हुई भी अधिक रचनायें जन कन्ठों में थी और अब भी हैं। इन्होंने कोई ग्रन्थ रचना की थी या नहीं, यह ज्ञात नहीं।

अमर सिंह का युद्ध वर्णन

कवित्त

जैसे मृगराज गजराजन के झुण्डन में
प्रबल प्रचंड सुण्ड खण्डन उदण्ड है।
जैसे बाज लपटि लपेट लवान दल
दल मल डारति प्रचारति विहंग है ।।
कहै शिव कवि जैसे गरुड़ गरब्र गहि
अहि कुल दंडि मेटत घमण्ड है।
वैसे ही अमर सिंह कीरति अमर मण्डि
फौज फिरंगानी की करी सुखड-खंड है ।।
कसि के तुरंग तंग चढ़ि जब जंग पर
अंग अंग आनन्द उमंग रंग भरिगो।
सनमुख समर विलोकि रणधीर वीर
फौज फिरंगानी की समेटी सोक तरिगो ।।
कहै शिव कवि डाँटि-डाँटि कप्तानन को
काटि काटि ककड़ी औ कुम्हड़े सो निकरिगो।
हाथ मीचि हाकिम कहत शाह लन्दन सो
हाय ! हाय !! आफत अमर सिह करिगो ।।

गरजत सतघ्नि घन तरजत फनिन्द फन
चारो ओर बन्दी भीर करैं शोर करखा।
चमक कृपान को दामिनी दमक चारु
कुरि को कुहार मँह दादुर हिय हरखा ॥
कहै शिव कवि बान गोलन को बुन्द झरै
निज कर कोऊ कहीं परत ना परखा।
उदित उज्जैन वीर बाबू अमर सिंह
भादों मास भयानक मचायो रण करखा ॥

सारन जिले के सीवान प्रत्यमण्डल गत औदर परगने के पतारि नामक ग्राम के निवासी रजभाँट कवि तोफाराय ने 'कुँअर पचासा' नामक काव्य लिखा था। तोफाराय बाबू साहब के समकालीन कवि थे। इस 'कुँअर पचासा' की प्रतिलिपि इन पक्तियों के लेखक को पतारि ग्राम के रईस बाबू सुदर्शन सिंह से आज ३० वर्ष पूर्व प्राप्त हुई थी जिसमें गलत पाठों के साथ प्रचुर मात्रा में 'कुँअर पचासा' की रचनायें प्राप्य थीं। उस मूल प्रतिलिपि को मैंने बाबू शिवपूजन सहाय को समर्पित कर दिया था जो उनके पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित होगी यदि दीमकों ने कृपा न की होगी। उसी ग्रन्थ में भोजपुरी छन्द भी प्राप्य थे जिनको 'भोजपुरी लोकगीत और काव्य में "कुँअर सिंह" शीर्षक लेख में दिया गया है।

उपर्युक्त तोफाराय के चचा सखावतराय ने भी कुंअर सिंह के यशगान में सैकड़ों रचनायें की थीं जो आज तक भाटों तथा बूढ़ों के कण्ठों में वर्तमान हैं। सखावत राय ने एक "हरे कृष्ण चौतीसी" नामक काव्य-पुस्तिका भी लिखी थी जिसमें हरे कृष्ण की वीरता के ३४ कवित्त थे। हरे कृष्ण सिंह कुंअर सिंह के "सालारे जंग" यानी सेनानायक थे। छपरा जिले में शोध करने पर ये अप्राप्य और मूल्यवान् ग्रन्थ प्राप्य हो सकते हैं। सखावत राय की भोजपुरी कवितायें पूर्व लेख में दी जा चुकी हैं।

*[1] भारी सैन साजिबे को चाहत सिपाह धाये,
तुरत कुंअर सुनि हथ्यार लै जूट गये।
चले तीर तरवार धीर ना धरत काहू,
मारत सिक्ख गोरन गोली माथ फूट गये॥
सिक बनी सूरमा सुजान सहजादा जी को,
सिक्ख मन्दराजी को गुमान गर्व टूट गये।
किन्हों घमासान बाबू कुंअर सिंह मैदान,
मारे मरदान सारे लाटन को लूट गये॥

कवित्त

'गंग' कवि की भी एक रचना मुझे २३ अप्रैल को कुंअर सिंह दिवस समारोह के अवसर पर जो जगदीशपुर में हुआ था एक बाँका सिंह नामक जगदीशपुर के विसेन राजपूत से प्राप्त हुई।

समर में निसंक बंक बाँकुरा विराजमान,
सिंह के समान सोहे सेना बीच निज दल के।
कमर में कटारी सोहे करखा से बातें करे,
उछल उछल सिर काटे सत्रु बाहु बल के॥
बायों हाथ मोछिन पै ताव देत बार-बार,
दाहिनी समसेर वाके बिजुली सम चमके।
कहें कवि "गंग" जगदीशपुर कुंअर सिंह,
जाको तलवार देखि गोरन दल दल के॥

पूर्वोक्त वासुदेव राय दसौंधी द्वारा प्राप्त दूसरी वनाक्षरी—

कवित्त

कुंअर जन्म लीन्हां जब से जगदीशपुर,
तब से जगदीशपुर सूरमा कहायो है।

---

*१ यह कवित्त वासुदेव राय दसौंधी, सा० डोंइया, थाना दीनार, जिला आरा से मिला है।

उनकी सवारी में नौ लाख हाथी रहै टट्टू
और टाघन की कौन गिनती में गनायो है ॥
थाह्यो गंगा इस पार थाह्यो यमुना उस पार
कुंअर सिंह पार भयो मोछ फहरायो है।
बेगम सो भेंट कीन्हा बेगम फरमान दीन्हा
गाँव गाँव लूट लीन्हा थाना को लुटवायो है ॥

इस घनाक्षरी से उनके यमुना पार कर ग्वालियर जाने की तथा गंगा पार कर के जगदीशपुर आने की घटनाओं की पुष्टि होती है। साथ ही लखनऊ जाकर अवध के नवाब से फरमान लेने की बात भी सही होती है।

१८५७ के पचासो वर्ष बाद भी कुंअर सिंह कलाकारों को वैसे ही प्रिय रहे जैसे तब थे। स्वर्गीय गोपाल लाल चतुर्वेदी ने लिखा था—

कवित्त

जोर सो जपान जंग गाढ़े रण अंग ढंग
काढ़े हैं कृपान खींच मारते कड़ाक दे।
मुगदर और परस पुञ्ज भुसुण्ड केते वीर लिये।
तोड़ते तड़ाक किला साहबी सड़ाक दे ॥
कहत गोपाल लाल गोरा गर्द मांहि मिले
पावते न पार वीर धावते धड़ाक दे।
क्षत्रिय में क्षत्रपति नामी सुभ कुंअर सिंह
डंका दे विजय की हाल आवते भड़ाक दे ॥

इन पंक्तियों के लेखक श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह उपनाम 'नाथ' ने १९१४-१५ ई० से लगभग अपने पूज्य पितामह 'ईश' कवि (नर्वदेश्वर प्र० सिंह) से बीबीगंज की लड़ाई का वर्णन सुनकर एक घनाक्षरी की रचना यों की थी—

चढ़े जंग संग "कुंअर" सेना सिपाह 'नाथ'
डटे हैं कमान तानि फरकत भुज दण्ड है।

लिये साथ 'ईश' अंग-रक्षक तक्षक सो बने
शेष फन नीचे बैठे जैसे भगवन्त हैं ॥
'तुलसी' तुरंग तेग कसिके निसंक वैसे
घालत घमाघम शत्रु खंडत घमण्ड है।
बीबीगंज जङ्ग जैसे तमञ्चा फिरंग मारे
तैसे रिपु दौड़ि काटे 'तुलसी' को कबन्ध है ॥

१६२१ ई० के आन्दोलन के बाद कुंअर सिंह कलाकारों तथा नेताओं द्वारा खूब याद किये गये। डुमराँव के श्री मनोरञ्जन प्रसाद *M. A.* जो छपरा के राजेन्द्र कालेज के प्रिन्सिपल थे, लिखा था—

"था बूढ़ा पर वीर बाँकुरा कुंअर सिंह मरदाना था"
मस्ती की थी छिड़ी रागिनी, आजादी का गाना था।
भारत के कोने-कोने में, होता यही तराना था ॥
उधर खड़ी थी लक्ष्मी बाई, और पेशवा नाना था
इधर बिहारी बाँकुड़ा, खड़ा हुआ मस्ताना था ॥
अस्सी वर्षों की हड्डी में, जागा जोश पुराना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा बीर मर्दाना था ॥
नस नस में उज्जैन वंश का, बहता रक्त पुराना था।
भोजराज का वंशज था, उसका भी राज घराना था ॥
बाल पने से ही शिकार में, उसका बिकट निशाना था।
गोला गोली तेज कटारी, महाबीर का बाना था ॥
उसी नीव पर युद्ध बुढ़ापे, में भी उसने ठाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा बीर मर्दाना था ॥
राम अनुज जम जान लखन, ज्यों उनके सदा सहायी थे।
गोकुल में बलदाऊ के प्रति जैसे कुंवर कन्हाई थे।
बीर श्रेष्ट आल्हा के प्यारे ऊदल ज्यों सुखदायी थे ॥
अमर सिंह भी कुंवर सिंह के वैसे ही प्रिय भाई थे।
कुँअर सिंह का छोटा भाई वैसा ही मस्ताना था ॥

सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा बीर मर्दाना था।
देश देश में व्याप्त चहूँ दिसि, उसकी सुयस कहानी थी॥
उसके दया-धर्म की गाथा, सबको याद जबानी थी।
रोबीला था बदन और, उसकी चौड़ी पेशानी थी॥
जग जाहिर जगदीशपुर में, उसकी प्रिय रजधानी थी।
वहीं कचहरी थी आफ़िस था, वहीं कुंअर का थाना था॥
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा बीर मर्दाना था।
बचपन बीता खेल कूद में, और जवानी ऊधम में॥
धीरे धीरे कुंअर सिंह भी, आ पहुँचे चौथे पन में।
उसी समय घटना कुछ ऐसी, घटी देश के जीवन में॥
फैल गया विद्वेष फिरङ्गी, प्रति सहसा सबके मनमें।
खौल उठा सन सनतावन में, सबका खून पुराना था॥
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा बीर मरदाना था।
बङ्गाले के बारक पुर में, आग द्रोह की सुलगाई॥
लपटें उसकी उठी जोर से, दिल्ली औ मेरठ धाई।
काशी उठी, लखनऊ जागा, धूम ग्वालियर में धाई॥
कानपुर में औ, प्रयाग में, खड़े हो गये बलवाई।
रण चण्डी हुँकार उठी, शत्रु हृदय थर्राना था।
सब कहते कुंअर सिंह भी, बड़ा बीर मर्दाना था॥
सुनकर के आह्वान समर में कूद पड़ी लक्ष्मीबाई।
स्वतन्त्रता की ध्वजा पेशवा ने बिठूर में फहराई॥
खोई दिल्ली फिर कुछ दिन को वापस मुगलों ने पाई।
थर-थर करने लगे फिरंगी उनके सर शामत आई॥
काँप उठे अंगरेज कहीं भी उनका नहीं ठिकाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥
आग क्रान्ति की धधक उठीं पहुँची पटने में चिनगारी।
रणोन्मत्त योद्धा भी करने लगे युद्ध की तैयारी॥

चन्द्रगुप्त के वंशज जागे, करने माँ की रखवारी।
शेरशाह का खून लगा, करने तेजी से रफ्तारी॥
पीरअली फाँसी पर लटका, मजहब का दीवाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
पटने का अंगरेज कमिश्नर, 'टेलर' जी में घबड़ाया।
चिट्ठी भेज जमींदारों को, उसने घर पर बुलवाया॥
बुद्धि भ्रष्ट थी हुई और, आँखों पर था पर्दा छाया।
कितनों ही को जेल दिया औ, फाँसी पर भी लटकाया॥
कुंअर सिंह के नाम किया, उसने जारी परवाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
कुंअर सिंह ने सोचा जब, उनके मुंशी की हुई तलाश।
दगाबाज अब हुए फिरङ्गी, इनका जरा नहीं विश्वास॥
उसी समय पहुँचे विद्रोही, दानापुर से उनके पास।
हाथ जोड़कर बोले वेः—सरकार आपकी ही है आस॥
सिंहनाद कर उठा केशरी, उसे समर में जाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
'गांगी' तट पर अर्द्ध रात्रि को, हुई लड़ाई जोरों से।
रणोन्मत्त हो देशी सैनिक, उलझ पड़े जब गोरों से॥
शून्य दिशायें काँप उठीं, तब बन्दूकों के शोरों से।
लेकिन टिके न गोरे, भागे, प्राण बचाकर चोरों से॥
कुछ क्षण में अंग्रेज फौज का, वहाँ न शेष निशाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
आरा पर तब हुई चढ़ाई, हुआ कचहरी पर अधिकार।
फैल गया तब देश-देश में, कुंअर सिंह का जय-जयकार॥
लोप हो गई तब आरा से, बिलकुल अंग्रेजी सरकार।
नहीं जरा भी होने पाया, मगर किसी पर अत्याचार॥
भाग छिपे अंग्रेज किले में, सब लूट चुका खजाना था।

सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥
खबर मिली आरा की तो, 'आयर' बक्सर से चढ़ आया।
विकट तोपखाना था, सङ्ग में, फौजें था काफी लाया ॥
देश द्रोहियों का भी भारी, दल था उसके सङ्ग आया।
कबतक टिकते कुँअर सिंह, आरे से उखड़ गया पाया ॥
अपने ही जब बेजाने थे, उलटा हुआ जमाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥
हुआ शुरू जगदीशपुर में, मचा वहाँ पूरा घमसान।
अमर सिंह का तेज देखकर, दुश्मन दल भी था हैरान ॥
महाराज डुमराँव वहीं थे, ज्यों मुगलों में राजा मान।
अमर सिंह झपटा तेजी से, लेकर उनपर नग्न कृपाण ॥
झपटा जैसे मान सिंह पर, वह प्रताप सिंह राणा था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥
हौदे में थे महाराज, पड़ गई तेज की खाली वार।
नाक कट गई पिलवान की, हाथी भाग चला चीघ्घाड़ ॥
अमर सिंह भी बीच सैन्य से, निकल गया सबको ललकार।
'दादा' जी पे चले गये, फिर लड़के की थी क्या दरकार ॥
पड़ा हुआ था शून्य महल, जगदीशपुर विराना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥
राजा कुँअर सिंह जा पहुँचे, अत्तरौलिया के मैदान।
आ पहुँचे अंग्रेज उधर से, हुआ परस्पर युद्ध महान ॥
हटा वीर कुछ कौशल-पूर्वक, झपट पड़ा फिर बाज समान।
भाग चले 'मिलमैन' बहादुर, बैल-शकट पर लेकर प्राण ॥
जाकर छिपे किले के अन्दर, उनको प्राण बचाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥
विजयी राजा कुँअर सिंह तब, आजमगढ़ पर चढ़ धाया।
कर्नल 'डेम्स' फौज ले संग में, उससे लड़ने को आया ॥

किन्तु कुँअर के साथ तनिक भी, नहीं समर में टिक पाया।
भागा वह भी गढ़ के अन्दर, करके प्राणों की माया॥
आजमगढ़ में कुँअर सिंह का, फहरा उठा निशाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
आगे बढ़ते चले कुँअर सिंह, था, ध्यान लगा झाँसी की ओर।
सुनी मृत्यु लक्ष्मीबाई की, लौट पड़े तब बढ़ना छोड़॥
पीछे से पहुँचा 'ले गार्ड' भी, लगी प्राण की मानो होड़।
गाजीपुर के पास पहुँच कर, हुआ युद्ध पूरा घनघोर॥
विजय हाथ थी कुँअर सिंह की, किसको प्राण गवाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
'डगलस' आकर जुटा उधर से, लेकर के सेना भरपूर।
शत्रु सैन्य था प्रबल और सब, ओर घिर गया था वह शूर॥
लगातार थी लड़ी लड़ाई, थे थककर सब सैनिक चूर।
चकमा देकर चला बहादुर, दुश्मन दल था पीछे दूर॥
पहुँची सेना गङ्गा तट पर, उस पार नाव से जाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
दुश्मन तट पर पहुँच गये, जब कुँअर सिंह करते थे पार।
गोली आकर लगी बाँह में, दायाँ हाथ हुआ बेकार॥
हुई अपावन बाहु जान, बस काट दिया लेकर तलवार।
"ले, गङ्गे यह हाथ आज", तुझको ही देता हूँ उपहार॥
वीर भक्त की वही जाह्नवी, की मानो नजराना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था॥
इस प्रकार कर चकित शत्रु दल, कुँअर सिंह फिर घर आये।
फहरा उठा पताका गढ़ पर, दुश्मन बेहद घबड़ाये।
फौज लिये 'लिग्रैन्ड' चले, पर वे भी जीत नहीं पाये॥
विजयी थे फिर कुँअर सिंह, अंग्रेज काम रण में आये।
घायल था वह वीर किन्तु, आसान न उसे हराना था॥

सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ।।
वही कुँअर की अन्तिम जय थी, और वही अन्तिम संग्राम ।
आठ महीने लड़ा शत्रु से, बिना किये कुछ भी विश्राम ।।
घायल था वह वृद्ध केशरी, थी सब शक्ति हुई बेकाम ।
अधिक नहीं टिक सका और, वह वीर चला थक कर सुरधाम ।।
तब भी फहरा रहा दुर्ग पर, उसका विजय निशाना था ।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ।।
बाद मृत्यु के अंग्रेजों की, फौज वहाँ गढ़कर आई ।
कोई नहीं वहां था, थी महलों में निर्जनता छाई ।।
किन्तु शत्रु ने शून्य भवन पर, भी प्रतिहिंसा दिखलाई ।
देवालय विध्वंस किया औ, देव मुर्त्तियाँ गिरवाई ।।
दुश्मन दल की दानवता का, कुछ भी नहीं ठिकाना था ।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ।।
चला गया यों कुंअर अमरपुर, साहस से सब अरिदल जीत ।
उसका चित्र देख कर अब भी, दुश्मन होते हैं भयभीत ।।
वीर प्रसविनी भूमि धन्य वह, धन्य वीर वह, धन्य अतीत ।
गाते थे और गावेंगे हम, हरदम उसकी जय की गीत ।।
स्वतन्त्रता का सैनिक था, आजादी का दीवाना था ।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ।।

यशस्वी कवि रामदयाल पाण्डेय की नई रचना देखिये—

कोटि-कोटि कण्ठों से गूंजे युग-युग यही तराना ।
"देश-भक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना ।।

जिसके स्मरण मात्र में बिजली, उसमें कितना बल था ।
आँखों में था सूर्य प्रखर, गति में भूडोल प्रबल था ।
ज्वालामुखी काँपते भय से, ऐसा तेज अनल था ।
माता का अभिमान और पद मर्दित का सम्बल था ।।

मिट्टी का पुतला था वह या हिम्मत का पुतला था।
वन पर्वत का साहस उसके गर्जन से पिघला था॥
राज त्याग कर, देशभक्ति की असि लेकर निकला था।
साक्षी है इतिहास, ब्रिटिश नहले पर वह दहला था॥

तन का, धन का भला क्या, उसने कभी न जाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूंजे युग-युग यही तराना॥
देशभक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना।

लाख मृत्युओं से भी नहीं मरने वाला कुंअर है।
देश और आजादी के हित मरकर बना अमर है।
नहीं हुई परवाह बुढ़ापे की वह सदा अजर है।
कोटि जवानों में जवान वह निर्भय नर-नाहर है।
अट्ठारह सौ सत्तावन ईस्वी का समय निराला।
आजादी की, देश भक्ति की धधकी सोई ज्वाला।
अन्धकार में सूर्योदय का फूट पड़ा उजियाला।
प्रलयंकर शङ्कर ताण्डव की चले पहन फणि-माला।

जान हथेली पर ले निकला, देश हुआ दीवाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूंजे युग-युग यही तराना।
आजादी का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना॥

लगे देश के सैनिक तलवारों का जंग छुड़ाने।
आजादी की लपट उठाकर लगे खून खौलाने॥
मातृ भूमि की बलि बेदी पर हंसकर शीश चढ़ाने।
चले हथेली पर मस्तक लेकर देश भक्त मस्ताने॥
अस्सी वर्षों की हड्डी की दृढ़ फौलाद बनाकर।
दुनियाँ को आश्चर्य चकित कर, अम्बर को दहलाकर॥
निकले कुंअर सिंह नर-नाहर प्रणकर, भुजा उठाकर।

उधर चली थी लक्ष्मी बाई और चले थे नाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूंजे युग युग यही तराना।
देशभक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना॥

पटना से आ गई बुलाहट, मिला हुक्म टेलर का।
वीर कुंअर ने ठुकरा डाला, न्यौता दिया समर का॥
आजादी का वीर मानना हुक्म सिर्फ ईश्वर का।
सदा भरोसा करना अपनी भुजा और खञ्जर का॥
दानापुर में वीर सैनिकों ने विद्रोह मचाया।
वीर कुंअर ने उन्हें बढ़ावे का सन्देश पढ़ाया॥
उनका साहस हुआ चौगुना, ज्यों नवजीवन पाया।
उनका तूफानी जत्था आरा तक भी बढ़ आया॥

कुछ पहुँचे जगदीशपुरी तक लिए हुए अफसाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देश-भक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना॥

कुंअर सिंह जी थे शिकार पर, लौट शाम को आए।
इधर नगर के लोग सैनिकों से थे कुछ घबड़ाये॥
वीर कुंअर के आते ही सब शान्त हुए, हर्षाये।
जो कुछ थे सामान किसी के सभी गए लौटाए॥
बीर कुंअर थे नहीं दीन पर हाथ उठाने वाले।
शरणागत की रक्षा में थे जान लगाने वाले॥
साथ सैनिकों के आरा की ओर चले मतवाले।
इन्तजार में आरा के सैनिक थे डेरा डाले।

लगा गगन गाने मस्ती में कुंअर की विजय का गाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देशभक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना॥

शाहाबाद हुआ विद्रोही, युद्ध हुआ आरा में।
पानी नहीं, खून बहता था गांगी की धारा में॥

तब उनकर कप्तान फिरंगी बोला—"अब हारा मैं" ।
गोरे शासक छिपे भाग आरा-हाउस कारा में ।।
बन्दूकें थी इधर उधर थी गोली तोपें भीषण ।
फिर भी टूट गये आरा में पराधीनता बन्धन ।।
कितने शरण माँगने आए भय से करते क्रन्दन ।
अभय शरण दो बीर कुंअर ने उन्हें मानकर अशरण ।।

सबसे कहा कि शरणागत पर कभी न हाथ उठाना ।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना ।
देश भक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना ।

फिर तलवारें चमकी जाकर बीबीगञ्ज समर में ।
लौटे कुंअर देश का झण्डा लेकर जन्म नगर में ।
स्वतन्त्रता को लिए साधना निकले वन प्रान्तर में ।
बढ़ते गये दुखों को सहते, कफन बांधकर सर में ।
घेर लिया जगदीशपुर को तोपों से आयर ने ।
तोपों का पानी कर डाली बिजयी बीर अमर ने ।
वीर अमर का साथ दिया डटकर हर नारी नर ने ।
बच्चों को भी शेर बना डाला था वीर कुअँर ने ।

वीर कुँअर ने पहुँच कालपी में नूतन रण ठाना ।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना ।
देश भक्ति का दीवाना था कुँअर सिंह मर्दाना ।।

फिर आ पहुँचे आजमगढ़ में भीषण हुई लड़ाई ।
हार गया मिलमैन, ब्रिटिश सेना ने मुँह की खाई ।।
अंगरेजों ने आ गङ्गा की नावें सभी डुबाई ।
देश भक्त जनता के सन्मुख चली न यह चतुराई ।।
उनकी नाव स्वयं गङ्गा माता ने पार लगाई ।
वीर पुत्र भुजा दौहिनी माँ को भेंट चढ़ाई ।।

भुजा पुकार रहीं है अबतक, सुनो, सुनो हे भाई।
भुजा समर्पित करो देश पर हो यदि विपदा भाई ।।
वीर कुँअर ने देशभक्ति के गौरव को पहचाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देशभक्ति का दीवाना था कुअँर सिंह मर्दाना ।।
नतमस्तक इतिहास भरा है उनके चरणों में।
बिजली है जगदीशपुर के पावन धूलकणों में ।।
पंछी गाते विजयी गान हैं पर्वत और वनों में।
जीवित सदा रहेंगे वे आजादी के सपनों में ।।
अस्सी वर्षों की दुर्बल हड्डी में ऐसी हलचल।
कहाँ हुआ ऐसा सेनानी? किसका ऐसा भुजबल ।।
झूठा है इतिहास, कहे यदि हुआ युद्ध असफल।
क्रांति नहीं असफल होती है मिला हमें उसका फल ।।
आजादी का दीप जलाकर देश हुआ परवाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देशभक्ति का दीवाना था कुँअर सिंह मर्दाना ।।
सुने-सुने दुनिया, योद्धा सरदार अभी जीवित है।
जीवित है वह भुजा और तलवार अभी जीवित है।।
कुँअर अमर जीवित हैं, उनका वार अभी जीवित है।
लपटें हैं सो गयी, मगर अंगार अभी जीवित है ।।
तीर्थ भूमि पर वीरों की है भारतवासी! आओ।
कृतज्ञता कर्त्तव्य भक्ति गौरव के फूल चढ़ाओ।
वीरों की पूजा से नस-नस में वीरत्व जगाओ।
तुम उनकी सन्तान वीर हो, दुनिया को दिखलाओ ।।
झूठा कभी न होगा भारत का केसरिया बाना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देश भक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना ।।

जीता वही देश को जिसने निज सरबस दे डाला।
पहन चूड़ियाँ मर जाता है स्वार्थ चाहने वाला॥
कालिख से इतिहास करे गद्दारों का मुँह काला।
जनता का राजधिराज है देश भक्त मतवाला।
कोटि-कोटि कण्ठों से बोलो-"अमर कुंअर की जय हो॥
स्वतंत्रता की विजय पताका उन्नत हो, निर्भय हो।
देशभक्ति की आग धधकती रहे, न उसका लय हो।
हम चाहे मर मिटें, देश की लेकिन सदा विजय हो॥

श्री रामनाथ पाठक "प्रणयी"

कुंअर सिंह का अखिल देश हो देश भक्त मस्ताना।
कोटि-कोटि कण्ठों से गूँजे युग-युग यही तराना।
देश भक्ति का दीवाना था कुंअर सिंह मर्दाना॥

काँप गयी धरती, नभ डोला, चकित हुआ संसार रे।
चमक उठी जब कुंअर सिंह की नागिन-सी तलवार रे॥
स्वाभिमान भारत का जागा,
जागे फिर स्वदेश के कण-कण
जागा वीर शिवाजी का व्रत,
जागा फिर प्रताप का प्रिय प्रण,
हिला हिमालय का आसन भी देख सिन्धु का ज्वार रे।
चमक उठी जब कुंअर सिंह की नागिन-सी तलवार रे॥
कौंध गयी प्राणों में विद्युत,
नस-नस में भर आया यौवन,
निकल पड़ा नरसिंह गरजकर,
खुला रूद्र का भाल विलोचन,
दूर दूर तक प्रलयङ्कर का फैल गया हुँकार रे।
चमक उठी जब कुंअर सिंह की नागिन-सी तलवार रे॥

बजा क्रान्ति का बिगुल, अनल की,
बढ़ी लाल लपटें घर-घर में,
आज यहाँ, कल वहाँ, निरन्तर,
लगे जूझने लोग समर में,

पद-पद पर वह चली मचलती चपल रुधिर की धार रे।
चमक उठी जब कुँअर सिंह की नागिन-सी तलवार रे॥

एक ओर था बल मानव का,
एक ओर था दानव का दल,
जलकर अन्तिम शिखा दीप की,
बना रही थी जग को उज्ज्वल,

हाथ कटाकर माँ गङ्गा को दिया पुण्य उपहार रे।
चमक उठी जब कुंअर सिह की नागिन-सी तलवार रे॥

विजय वाहिनी शत्रु विजय कर,
घर पहुँची, फिर उठा उपद्रव,
फिर भेरी बज उठी अचानक,
नाच उठा फिर बूढ़ा भैरव,

लगे बरसने फिर धरती पर धधक-धधक अङ्गार रे।
'चमक उठी जब कुंअर सिह की नागिन-सी तलवार रे॥

किन्तु कीर्ति की कनक पताका,
कुँअर सिंह की फहरायी फिर,
कड़ी-कड़ी मूछों वी गरिमा,
मुक्त पवन में लहरायी फिर,

उठी भोजपुर के आँगन से नभ चुम्बी जयकार रे
चमक उठी जब कुंअर सिह की नागिन-सी तलवार रे॥

भोजपुरी लोक गीत तथा काव्य में कुँअर सिंह

सन् १८५७ ई० की क्रांति के अपने वीर सेनानी कुँअर सिंह को ४ करोड़ भोजपुरी जनता ने सबसे अधिक प्रेम, आदर और श्रद्धा से अपना तथा अपने देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति का पथ प्रदर्शक माना। गाँधी जी की अहिन्सा की लड़ाई में कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतन्त्रता शपथ लेना सीखा। वह शपथ भी अधिकांश में शिक्षित वर्ग तक ही सीमित रहा। परन्तु भोजपुरी ४ करोड़ आबाल वृद्ध नर नारियों ने सन् १८५७ की क्रान्ति की पराजय के बाद से ही बिना किसी नेतृत्व के आपही आप अपने वीर सेनानी कुँअर सिंह के नाम को स्मरण करके उस शपथ को हरसाल दुहराया जब फागुन की मस्ती उनकी नसों में नव रक्तों का संचार करती है और जब उनके हर गाँव में मदमस्त जनों की असंख्य मण्डलियाँ उमंग में भरी मधुर शृङ्गार गाने बैठती हैं और प्रतिज्ञा की है कि "हे बाबू कुँअर सिंह, इस शुभ होली के अवसर पर हम प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम्हारे राज्य को बिना पुनः वापिस लाये हम केसरिया बाना नहीं रंगावेंगे।" बस इस प्रतिज्ञा के साथ डफ बज उठता है। हजारों कण्ठ विप्लव की होली गा उठते हैं और कुंअर का शब्द चित्र सामने खड़ा हो जाता है।—

बाबू कुँअर सिंह तोहरे राज बिनु अब न रंगइबो केसरिया।
इतले अइले थेरि फिरङ्गी, उतते कुँअर दुई भाई॥
गोला बरन्द के चले फिचकारी, बिचवा में होति लड़ाई।
बाबू कुँअर सिंह तोहरे राज बिनु अब न रंगइबो केसरिया॥

उधर खलिहान में पुआल की ढेर पर खेलता हुआ अल्हड़ बालक ढेर से कूद कर लाठी पटक कान में उँगली डाल गा उठता है।—

बाबू कुंअर सिंह के नीलका बछेड़वा, पीअले कटोरवन दूध।
हाली हाली दुधवा पिआई कुंअर सिंह, रयनि जायके बाड़े दूर।
अबकी रयनिया जिताव नील बछेड़वा, सोनवें मढ़इबे चारों खूर॥

तबतक दूर खेत की आर पर घास गढ़ती हुई अहीर छोकड़ी उधर ताकती है और खुरपी फेंककर गाने लगती है।—

बाबू बनवा-बनवा खेले ले सिकरवा ।
रोवेली बनवा के हरिनियाँ ।।
पहिल लड़ईया बाबू हेतमपुर भइली ।
रजवा बहेलिया दिहले ना ।।
अे-अ‍े-अे-सतरह सौ सैंतासी मउजा कुछुओ न बूझले ।
गढ़ लूटवाई दिहले ना ।
रजवा देलसि धोखा ना ।

उधर गाँव के हरिजन मण्डली से आवाज आती है :—

बाबू कुंअर सिंह तेगवा बहादूर ।
बंगला में उड़ेला अबीर ।
हो लाला बंगला में उड़ेला अबीर ।।

और ढोल-झाल गदगदा उठता है । उधर गाँव से दूर आहर की पिण्ड पर नीरव खेतों के सुनसान में अकेले पाट पर कपड़ा पटकते हुए धोबी गाता है :—

बाबू कुंअर सिंह पच्छिम से जब पाँयत कइले,
पयना में डेरा गिरवले ना ।
लोहा के जामा सिअवले कुँअर सिंह,
तम्मन बन्द लगवले ना ।
ढाल तरुअरिया के कवन ठिकाना,
गोली दरजवा खाये ना ।
अे-अे-अे-ओहि दिन सञ्जना उन्हकर केहूँ ना दिहलं,
जगदीशपुर ना होइत फिरंगीया राज ।
आछूँ—आछूँ ।

गायक समुदाय के सामने तो वैसे जनप्रिय कुँअर सिंह को भूलाना जीविका प्राप्ति के प्रधान साधन को भूलाना था । प्रायः प्रत्येक याचक गायक को कुंअर सिंह पर कुछ कहना जरूरी था । चाहे भाँट हों, चाहे रूपक, चाहे भिखमंगा

सूरदास हो। चाहे जोगिन के नाच में जोगिड़ा गाने वाला हो अथवा पंवारा गाने वाला पंवरिया हो, सबके कण्ठों में कुंअर सिंह का यश गान याद रखना लाजिमी था। आज से, २५ वर्ष पूर्व इस देश का कोई भी वयस्क व्यक्ति ऐसा नहीं था जो कुंअर सिंह पर दो चार गीतें याद न रखा हो। पंवरियों में तो इस बात की होड़ रहती थी कि कौन पंवरिया उनकी बावनों लड़ाइयों के पंवारे याद किये है। ये पंवरिये ढोल आदि बाजों पर कोरस के रूप में अतुकान्त स्वर छन्दों में तलवार के पैंतरे पर दृश्य काव्य के साथ साथ शब्द काव्य का चित्र उपस्थित करते हैं। जिससे वीर रस सजीव खड़ा हो जाता है। पंवारों के विवरण का एक अलग लेख इस पुस्तक में दिया जा रहा है।

जोगिन के नाच पर जोगिड़ा गानेवाला गुरू मच्छन्दर और गोरख आदि का सुमिरन करने के बाद कुँअर सिंह का सुमिरन करना अपना कर्त्तव्य मानता है:—

बक्सर से जो चले कुँअर सिंह पटना आकर टीक—
गुरू हो बक्सर से—
बक्सर से जो चले कुँअर सिंह पटना आकर टीक—
पटना के मजिस्टर बोले—करो कुँअर को ठीक—
अतुना बात जब सुने कुँअर सिंह दी बंगला फुकवाई—
गली-गली मजिस्टर रोये, लाट गए घबड़ाई—
बच्चू रे ताल होस कर—

बस इस सुमिरन के साथ लौंडा नाच उठता है। घूँघूरू बजने लगता है और ढोल गरज उठता है। फिर तो लटके पर लटके कवि के मुख से निकलने लगते हैं:

कुँअर सिंह अमर सिंह एक लाद के भाई—
हाथ के कोड़ा छूट गया पाताल घोड़ा खिलाई—
लौंडे ताल होस कर—
बच्चू रे धीरे-धीरे—
जोगिन के ताल ना टूटे—
लौंडे के कमर डोले—

फिर ललकारता है:—

गजरा के गजरीट बनाया, मुरई के दरवाजा,
सरकन्द का जे तोप बनाया, लड़े कुँअर सिंह राजा—
बच्चू रे ताल होसकर—

कविता गान पर जीविकापार्जन करनेवाले भाँट कवि अपनी घनाक्षरियों से यश के साथ-साथ धन कमाना अपना कर्त्तव्य समझते थे। छपरे जिले के तोफा राय ने भोजपुरी में "कुँअर पचासा" लिखा जो कवित्त, सवैया, छन्दों में है। वहीं सखावत राय ने वीर रस की सैकड़ों घनाक्षरियाँ कहीं जो आज भी वृद्धों के कण्ठों में उनके साथ मृतप्राय हो रही है। उन्होंने "हरकिसुन चौतीसी" नामक काव्य पुस्तिका की रचना भी हरे कृष्ण सिंह के नाम पर किया था। दो-एक घनाक्षरी भी जो जन-साहित्य का ही अङ्ग है, सुनिए। तब आगे बढ़िए!

लेली हाँ कृपान जब कुंअर आ अम्मर सिंह।
दाहिना अलग भुज फरकत बा फर्र् फर्र्॥
सात सौ सेना के समेटि के समीप कैली।
जेने बा फिरङ्गी सब बात पूछत डर्र् डर्र्॥
सखावत कहत हथिआरन के तैयारी देखि।
कूटनन के घर के लागे ढ़र्र् ढ़र्र्॥
चढ़ि के तुरङ्ग रङ्ग घूमे जब उज्जैन वंश।
देखि के सरूप ओकर काँपे थर्र् थर्र्॥
जुटि-जुटि दल जब चढ़ेले मैदान बीच।
घटा के समान छूटे तब झप्प झप्प॥
चञ्चल बदन पर तुपक तैयार होत।
ताकि मारै गोली अङ्ग पैठि गप्प गप्प॥
सखावत कहे धूंआ छाई रहे चारों ओर।
लोथि पर लोथि गिरे जात थप्प थप्प॥

सारन जिले के पतारि नामक ग्राम के तत्कालीन खानदानी राज भाँट कवि तोफा राय ने कुंअर सिंह पर "कुंअर पचासा" नामक वीर रस का सुन्दर काव्य लिखा है। जिसकी ख्याति खूब हुई और जिसके अधिकांश छन्द आज भी प्राप्त

है। तोफा राय सारन जिले के हथुआ और गोरखपुर जिले के मझौली राज्य के राज्य-कवि थे। उन्होंने कुंअर सिंह के बीबीगञ्ज के संग्राम का इतना सुन्दर वर्णन किया है कि उससे उनकी कला की प्रखरता ही नहीं प्रकट होती वरन् कुंअर सिंह की बहादुरी, रणकौशल और राजनीतिज्ञता के ऐतिहासिक प्रमाण भी मिलते हैं। कुंअर सिंह के पास टोंटा, बारूद, तोप, गोला, गोली इत्यादि के न रहने पर भी अंगरेज सेनापति के तोपखाना और नये सर्वोत्तम एन्फिल्ड रायफलों से सुसज्जित सेना को किस प्रकार उन्होंने परेशान कर दिया। उसके तोपखाने को परास्त करके किस तरह हाथ युद्ध की सीमा के अन्दर लाया और घोर संग्राम करके अन्त में अपने सिपाहियों को अधिक कटते देख किस तरह पीछे हटने की आज्ञा दी तथा किस तरह अपने तीन आक्रमणकारी अंगरेजों से अपनी अङ्ग-रक्षा तथा चचेरे भाई तुलसी प्रसाद सिह और उनके पुत्र नर्वदेश्वर प्रसाद सिह की सहायता से मार गिराया आदि ऐतिहासिक बातें काव्य कला में पिरो दी गई हैं यह छन्द देखने से ही ज्ञात होता है—देखिये—

खलबल भैल तब कुंअर सिह सेना बीच,
बीबीगञ्ज आइ आचर बागिन पीट्टल नू।
तोप आ बनूकि उगिले लाल आगे ओने से,
त ऐने टोटा हीन हो बनूकि लाठी बनल नू॥
आरा आ गांगी के लड़ाई सब सोखि लेलसि,
टोटा आ बरूदि जे दानापुर से ले आवल नू।
सेनानी कुंअर तबो चिन्तित ना भैल रंच,
बङ्क करि नैन सेना जङ्गल धरावल नू॥ १॥
एक एक पेड़ पीछे एक एक वीर ज्वान,
नेजन सङ्गीन खाँड़ा गहि छिपि बैठल नू।
दन्न दन्न गोली चले चीखे तोप धाँय धाँय,
झम्म पानी पड़े मेघ लौका घहरि लौकल नू॥
भैल घमासान सैन आगे फिरङ्गी बढ़ल,
मार सङ्गीन शुरू होखल नेजा चमकल नू।

चढ़ि गैल रङ्ग जब गरजे कुंअर वीर,
बिज्जु अस तरुआरि चमचमा लरजल नू ॥ २ ॥

खप्प करि अस्सि घुसे थप्प लोथि गिरे भूमि,
सिक्ख गोरा कटत देखि आचर दहलल नू ।
भुखाइल बाघ अस वीर भोजपुरी दल,
पड़े ललकारत हर - हर बम्म कहल नू ॥
देवता देखे लागल जोगिनी भखे लागलि,
गोरन के रकत लाल पीके पेट भरल नू ।
ऊपर अकास गर्जे कुंअर जी नीचे गर्जे,
गोरन फिरङ्ग सङ्ग पावस होली खेलल नू ॥ ३ ॥

खपाखप छूरी चले छपाछप मूड़ी कटे,
टहकत सोनित के बा नदी धार बहल नू ।
चमके उज्जैनी नेजा तीखन दुधारी तेगा,
सेना बीच कुंअर वीर आदि ललकारल नू ॥
इन्द्र डरे भागि जावे जमराज दौड़ि आवे,
खप्पर लेई डाकिनी नाचै नाच लागलि नू ।
झूमत कुंअर वीर बाँका रन बीच जैसे,
हाथी दल कोपि सिंह डाँकि फाँदि पैठल नू ॥ ४ ॥

आचर चालाक जैसे देखेला कटत सैन,
पीछे से घुमा के दुतरफी वार कैलसि नू ।
जङ्गल के दुनो ओर जङ्ग जुझार छिड़ल,
वीर सेनानी दुनो हाथ लोहा फेकलसि नू ॥
गजरा मुरई अस गोरा सिक्ख कटे लागे,
लोथि प लोथि गिरल ढेरि काटि कैलसि नू ।
हार फिरङ्ग होइत गोला ना सहाय देत,
हर किसुन दगा ना कुंअर से कैलसि नू ॥ ५ ॥

आधहूँ ते अधिका खेत सेना जब अइले,
धोखा से हर किसुन भेद आपन दिहले नू।
चतुर कुंअर तबे हटे के हुकुम देले,
तोफा कहे लेखि दल तुरते चिरले नू॥
समय ताकि कुंअर सङ्ग तुलसी नर्वदेस,
रिपु के काटत सेना एक ओर निकले नू।
देखि पहचान फिरंग टूट पड़ले झूट,
पीछे से धाइ चुपे घात कइल ऊ चहले नू॥ ६॥

घूमि पड़ले तुलसी नर्वदेस बाप पूत,
भाई के ढकेलि पीछे आगे ललकरले नू।
गोरा कीर्च खींचे जौले भाला तुलसी के चले,
भेदि झट छाती गोरा आंर पार निकले नू॥
ओने गिरे गोला एने साथी के तमञ्चा छूटे,
ठाँइ - ठाँइ - ठाँइ कई आवाज दन्न निकले नू।
हुलसत तुलसी के दमकत माथा फोरि,
अपनो नू माथा फोरि गोली रोई गिरले नू॥ ७॥

राम कहि खेत ऐले जैसे तुलसी तइसे,
बढ़त कुँअर भाला तानि गोरा दौड़ल नू।
कूदि हनिवन्त अस आगे अइले "ईश" तौलें,
खाडा भाँजि भाला साथ गोरा हाथ काटल नू॥
तिसरका अंगरेज कटकटा दाँत पीस,
पीछे सङ्गीन लेई हाँफत दौड़ टूटल नू।
बार होत घातक देखत कुंअर तुरतें,
फेंकि के कटार काम तमाम कै देहल नू॥ ८॥

बाप लोथि कान्हें लादि झण्डा ले बढ़ले आगे,
मारत काटत मानो नायक कुंअरऊ हो।

चतुर कुंअर पीछे से अङ्गरक्षक बनि,
साथ बढ़े आगे शत्रु जैसे घालत गाजर हो ।।
पलक मारत सेना पवले आपन आगे,
हर - हर बम्म कहे भूखल जे नाहर हो ।
ताकि रहे अंगरेज माथा धै आयर रोये,
आँधी पानी ऐले घन चीरि बिज्जु बाहर हो ।। ६ ।।

कथक वृन्दों ने तो गम्भीर से गम्भीर गीतों की रचना की और उन्हें राग में बाँधा जिनमें होली का रङ्ग बहुत बढ़ा रहा ।

भोजपुर में कुंअर मानत नाहीं ।

(यह होली उस समय को बोध कराती है जब भारत में सवत्र क्रान्ति का दमन हो चुका था और कुंअर अमर भोजपुर प्रदेश में लड़ रहे थे । और अङ्ग-रेज बिलख बिलख कर रोता हुआ कह रहा था कि तमाम तो शान्ति हो गयी पर कुंअर, अमर भोजपुर में नहीं मान रहे हैं ।

तथा

चिठिया जे लिखि लिखि भेजे कुंअर सिंह ।
सुनहु अमर सिंह भाई ।।

यह गीत उस समय को संकेत करता है जब उन्होंने अपने भाई अमर को सम्बोधन करके रण में शरीक होने के लिये आवाहन किया था ।

फिर दूसरा ऐतिहासिक पँवारा गया जिले का दसौंधी गाया है । इसमें उस समय का चित्र चित्रित है । जब विप्लव शान्त हो चुका था । अंग्रेजी राज के भक्त राजे महराजों ने अङ्गरेजों का साथ देकर कुंअर सिंह को हरा दिया था और कुंअर सिंह लाख प्रयत्न करके भी इनको संगठित करने में असफल रहे और इनके कारण पराजय का सामना किये । इसमें तद्कालिक ऐतिहासिक घटनाओं का भी सिहांवलोकन है ।

भर भोजपुर में कुंअर बिरजले, रीवाँ रहल सरनिया नू ।
हाट बजरिया कवन बिसारे, के कहल सब गुनवा नू ।।
बेतिया अवरु दरभंगा बाड़े, आउर बाड़े टेकारी नू

जैपुर जोधपुर दूर बसेले, छोटे राज मझवली नू ॥
भोजपुर में डुमराँव बसेला, उहो बाड़े फिरङ्गिये नू ।
सबे बिसेन मिलि घुसे लुकइले, बाबू परेला अकेलवा नू ॥
जल्दी से जरि कागज मगाव, जल्दी पुरजा लिखाव नू ।
पूरब दिसा कलकत्ता बसेला, उहाँ लाट सहेबवा नू ॥
सब दिन मनलन मोर हुकुमवा, आजु सबे रोकलनु नू ।
परयाग जी में उतरे सिपहिया, सबके कुरसी दिहलसि नू ॥
उहाँ से चिट्ठी जगदीशपुर अइले, सुनि ल अमर सिंह भाई नू ।
पतिया देखि अमर सिंह रोअले, छाती मूका मरलनि नू ॥
होवे सवारी कुंअर अमर सिंह, बिज्जू घोरा कसवलनि नू ।
जहाँ से डेरा टेकारी में दाखिल, रानी अकेला बिचारे नू ॥
बाबू साहब गुनावन करीला, अबका करीह अम्मर नू ।
हिन्दू खातिर हम बिगड़ली, हिन्दू दिहल पचलतिया नू ॥

दूसरी व्यङ्गात्मक लोकोक्ति उस समय को बोध करती है जब क्रान्ति सर्वत्र दबा दी गयी और कुंअर सिंह के मृत्यु होने के उपरान्त कई मासों तक स्वतंत्र रहकर अमर सिंह की पराजय हुई और वे नैपाल सरकार द्वारा गिरफ्तार करा दिए गए। अमर सिंह की गिरफ्तारी के उपरान्त अंग्रेजों की गर्वोक्ति के रूप में प्रश्न है।

अम्मर सिंह के कम्मर बाँधो,
कुंअर सिंह के नाम का।
पूछि आव दलभंजन सिह से,
लड़िहें कि करिहें का॥

अर्थात् अमर सिंह को तो गिरफ्तार कर लिया गया। कुंअर सिंह का अब नाम निशान ही नहीं। उनके पुत्र दलभंजन सिह से जाकर पूछ लो कि वे लड़ेंगे अथवा क्या करेंगे? उसका उत्तर दलभंजन सिंह की ओर से यों दिया गया है:—

लड़ब ना त करब का, भाई से है साहब ।
हाथी-घोड़ा बाँधि के, सिपाही के खिग्राइब ।।

इतिहास बताता है कि दलभंजन सिह पहले ही मर चुके थे। परन्तु इस लोकोक्ति के रचने वाले को इसका ज्ञान कहाँ।

एक बिरहा उस समय का सुनिये जब कुंग्रर सिंह ने लड़ाई के पूर्व जन प्रतिनिधियों की पंचायत बुलायी और उनसे अंग्रेजों के विरुद्ध लोहा लेने की राय पूछी। पञ्चों ने पूछा—"आखिर आप अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लेने पर क्यों इतना तुले हुए हैं।"

और कुंग्रर सिंह ने अंग्रेजों के अत्याचारों की जो तालिका गिनायी थी उसका वर्णन घर का बूढ़ा अपने बच्चों को बता रहा हैं—

बबुआ, ओहि दिन दादा लेले तरुअरिया हो ना।
बबुआ, धनवा धरम अवरू गइया पर ना।
बबुआ, विधवा ओ राँडि के बिरितिया पर ना।
बबुआ, माई ओ बहिनिया की इजतिया पर ना।
बबुआ, बाप अवरू दादा के कीरतिया पर ना।
बबुआ, आइल रहे बिपति के घरिया पर ना।
बबुआ, ओहे दिन दादा लेले तरुअरिया हो ना।
बबुआ, मरले मराठा जूझल सिखवा हो ना।
बबुआ, पेसवा के पूतवा गुलमवा हो ना।
बबुआ, दिल्लीपति भइले कङ्गलवा हो ना।
बबुआ, मँगलो पर मिले नाहीं भिखिया हो ना।
बबुआ, ओह दिन दादा ले ले तरुअरिया हो ना।
बबुआ, बिछिया बिचइली जाह दिन तोपवा हो ना।
बबुआ, जङ्ग खाइ गइले बन्दुकिया हो ना।
बबुआ, हंसुआ गड़इले तरुवरिया हो ना।
बबुआ, तजि देले लाठी भोजपुरिया हो ना।
बबुआ, ओहि दिनवैं ले ली दादा तरुअरिया हो ना।

बबुश्रा, असी हो बरीस के उमिरिया हो ना।
बबुश्रा, थर थर कांपे जेकर सुड़िया हो ना।
बबुश्रा, बकुला के पांखि श्रइसन केसिया हो ना।
बबुश्रा, गिरि गइली जाइ दिन बतिसिया हो ना।
बबुश्रा, श्रोही दिनवा दादा लेले तरुश्ररिया हो ना।

यह तो हुई सन् १६२१ के असहयोग श्रान्दोलन के पूर्व के लोक-साहित्य की एक छोटी-मोटी झांकी जिस दिशा में युवक अनुसन्धानकों को काम करने का आज विस्तृत क्षेत्र खुला हुआ है। असहयोग आन्दोलन की अहिंसात्मक लड़ाई में भी कुंअर सिंह खूब याद किये गये और प्रेसीडेन्ट राजेन्द्र प्रसाद से लेकर बिहार के थाना कार्यकर्ताओं तक कोई वैसा नहीं रहा जो कुंअर सिंह के नाम की दुहाई देकर जनता को उभाड़ने का प्रयत्न नहीं किया हो।

इस समय भोजपुरी कवियों ने भी नये रूप से कुंअर सिंह को याद किया और जनता ने उन गीतों को खूब गाया तथा कांग्रेसियों ने उनको दुहरा-दुहराकर लाभ उठाया। डुमराँव के प्रिन्सिपल मनोरञ्जन ने अस्सी बरस का वीर बाँकुरा कुँअर सिंह मरदाना था, की रचना को जो हिन्दी में थी और खूब जनप्रिय हुई। गांधी जी तक ने उसको पसन्द किया।

इन पंक्तियों के लेखक श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के भी कतिपय गीत सन् १६२१ के असहयोग और १६३० के सत्याग्रह आन्दोलन के समय बहुत जन-प्रिय हुए। उनमें कुँअर सिंह दूसरे रूप से याद किये गये थे। मोतीहारी में जब महात्मा जी ने सर्व प्रथम आन्दोलन शुरू किया तब उनका स्वागत करते हुए उनको कुँअर सिंह का अवतार बताया गया और भोजपुरियों के अहिंसात्मक सहयोग का वीराना तौर से आश्वासन दिया गया।

शेरसाह के सेर भूमि इहे जिला आरे हवे,
भोज के भोजपुरिया हमनी कहाईला।
आईं जी जगत गुरू गांधी बाबा आईं इहाँ,
पपनी बिछाइ हमनी राँवाँ के बइठाईला॥

दादा हो कुँअर सिंह के इहे भूमि आरे हवे,
वीर अइसन वीरजी के स्वागत हमनी करीला।
अस्सी हो बरीसवा के तेग हाथ जब लिहले,
हमनी जवनका के खून जब खउलेला॥
उहे बाबू गांधी बनि आजु राँवाँ फेनु अइलीं,
लेके व्रत अहिंसा हमनी राँवाँ संगे धाईला।
राज लिहलिस थाह लिहलिस भाई-बहिनी इज्जत लिहलिस,
माई दुखवे खातिर हमनी गरदन कटाईला॥

आरा के भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव "भानु" की आधुनिक रचना देखिये—

तलवार कुँअर सिंह को समझा रही हैं और अपनी शक्ति का परिचय देकर समरांगण में उतर आने को कह रहीं हैं—

कवित्त

ए रे वीर कुंअर अमर वे समर छोड़ि संका,
धीर धीर मोके म्यान से निकालु आज।
देखु छन भर में मचेला रन हाहाकार,
गोरन के सीस प गिरेला अररा के गाज॥
छुवते छुवत लीला नागिन समान भूमि,
बैरिन के खून जइसे लखा के चूसे बाज।
बैरी बिच लाके चमका के बिजली के तेज,
बीरह बढ़ाके 'भानु' राखि लीला तोर लाज॥
साजि रन साज बाज बाजी लेले गाजत का,
बाजी ले लगाइ बाजी देखु जितवाईला।
बैरिन के दलबल रौंदत ना लागी पल,
काली जी के खाली आजु खप्पड़ भराईला॥
अइल अभाग भाग फूटल फिरङ्गिन के बा,
बचिहें ना भाग कहीं आग बरसाईला।

काली के समान बिकराली बनि गोरन के,
हाली हाली काली जी के बकरा बनाईला ।।
करले प्रतिज्ञा वीर कर लेके हमें फिर,
बनि के बे पीर देखु परलय मचाईला ।
काटि दो ले रुण्ड मुण्ड वैरिन के झुण्ड झुण्ड,
इहें कीरपान कीरपा न उर लाईला ।।
साफ क के जङ्गिन फिरङ्गिन के सङ्गि ले ले,
देखु वीर बङ्का डङ्का जीत के बजाईला ।
जब ले ना होला प्रन पूरा ना हटेला मन,
छोड़ि के अधूरा रन में आन में न जाईला ।।
सारन जिले के कवि महेन्द्र शास्त्री की आधुनिक रचना सुनिये ।

कुँअर सिंह के महल पुकार

कुँअर सिंह के कीर्ति अपार, युग-युग तक गाई संसार ।
सन्तावन के ऊ गद्दर, कहल गइल कइसे घर-घर ।।
जगल सिपाही जागल राही, अंगरेजन के महल तबाही ।
औ लोगन में हाहाकार ।।

जगल कानपुर जागल दिल्ली, साहेब लोगवा बनल बिल्ली ।
भूल गइल ऊ आपन रार ।।
जाग गइल जेकरा में प्रान, खाली भइल ओकर म्यान ।
निकलल गेहुँअन बन तेरवार ।।
मूर्दों में नव जान आ गइल, सगरे एजी शान छा गइल ।
कुँअर सिंह के जब ललकार ।।
कुँअर सिंह के घोर बुढ़ारी, ओह् उमिर में घोड़सवारी ।
चम-चम चमकल तेग कटार ।।
जानु भीष्म पितामह अइले, त्राहि-त्राहि अरि-दल सब कइले ।
सिंह शत्रु हो गइल सियार ।।

"जन्म सवारथ हो पील जा, दुश्मन के अब साफ लील जा ।"
कुँअर सिंह के महल पुकार ॥

कुँअर सिंह के पँवारे

जो सिनेमाओं में डाकुमेन्टरी फिल्मों को देखते हैं वे भारत भरके मुख्य-मुख्य लोक नृत्यों की कुछ जानकारी रखते हैं। वैसे ही वीर लोक नृत्यों में पँवारा का नृत्य भी एक वीर लोक नृत्य है। विहार में पँवरिया नामक एक जाति है। जो सामन्त शाही युग से भी पहले से चली आ रही है और जिसका पेशा है सामन्त शाही के वीर पुरुषों की मुख्य लड़ाइयों की वीर गाथाओं को एक विलक्षण टेकनिकल के छन्दों में ढालकर ढोल मजीरा के साथ विलक्षण ताल से गाना और वीर नृत्य नाचना। ये पँवरिये खोजों की तरह केवल उसीके यहाँ जाकर नृत्य करते हैं जिसके यहाँ पुत्र उत्पन्न होता है। अपनी शक्ति के अनुसार कोई १२ दिन, बरही तक, कोई केवल छट्ठी भर ही, कोई केवल एक ही दिन नचाता है और उनको भोजन-बिदाई देता है। इनकी अपनी-अपनी सीमा हैं, जजमान हैं जिनसे उनकी वृत्ति चलती है। पवरियाँ मुसलमान धर्म को मानने वाले अधिक हैं। उत्तर प्रदेश में भी एक ऐसी ही जाति है जिसको वहाँ किंगिरिहा कहते हैं। उसका भी पेशा नाचना और गाना ऐसा ही है, पर उनके और विहार के पँवरियों के नृत्य तथा पवाँरा गाने के टेकनिकल में अन्तर है। वहाँ के किंगिरिहों एक किंगिरिहों यानी एक बार को छोटी सारङ्गी लेकर बजा-बजा कर साधारण नृत्यकार की तरह नाचता है। पर यहाँ का पँवरिया पहले तो ढ़ाल तलवार पर अब ऐसे ही तलवार के पैंतरे पर तलवार भाँजने की मुद्रा में बीर नृत्य नाचता है और वीर पँवारों को गा-गाकर उसके भावों को बताता है जिससे उस गाथा काव्य का चित्र उपस्थित हो जाता है और वीर रस का पूर्ण संचार होता है।

इस तरह पँवारा नृत्य और पँवारा गीत एक तरह से वीर गाथाओं का दृश्य काव्य है जो नृत्य के माध्यम से अपने विलक्षण टेकनिकल द्वारा वीर गाना के साथ प्रतिपादित किया जाता है।

कहते हैं बाबू कुंअर सिंह ने जब इनके पंवारा को सुना और पंवारा नृत्य को देखा तब उन्होंने कहा "इनके पैतरे और तलवार के हाथ तो बहुत ही मजे हुए हैं। ये तो बड़े अच्छे सैनिक हो सकते हैं।" और उन्होंने पंवरियों का दल ही नहीं रखा बल्कि पंवरिया टोला नामक एक अलग मुहल्ला ही जगदीश पुर में बसा दिया जो आज तक उसी के नाम से जगदीशपुर में वर्तमान है। कहाँ तक यह नया रिक्रुट बहादूर साबित हुआ, इसकी भी एक कहानी है। बाबू साहब के चन्द राजपूत सिपाहियों ने बाबू से कुछ असंतुष्ट होकर दरबार में आना बन्द कर दिया। बाबू साहब तो बड़े कौतुकी जीव थे। उन्होंने कहा—"वे जो नये सिपाही रखे गये हैं उनको भेजो कि जाकर उन लोगों को पकड़ लावें।" जब पंवरियों का दल उन सिपाहियों को बुलाने गया तो उन असली सिपाहियों ने उन्हें मार भगाया। जब बाबू साहब के पास यह खबर मिली तो उन्होंने कहा—"इनका काम उत्साह और जोश जगाना है जो वे भलीभाँति कर लेते हैं। इनको उसी पेशा में रहने दो।"

जगदीशपुर के इस पंवरिया टोली के पंवरियों में अब कोई ऐसा वयस्क बूढ़ा नहीं रह गया है जो सामन्तशाही युग के पवारों को गावे और पंवारों के वीर नृत्य को नाचने की क्षमता रखता हो। एक खुदादीन मियाँ नामक पचास-साठ वर्ष का बूढ़ा है जिसको कुंअर सिंह के दो पंवारे स्मरण हैं। वह पंवारा वीर नृत्य नाच भी लेता है। खुदादीन मियाँ का कहना है कि कुंअर सिंह और अमर सिंह की लड़ाईयों के ५२ लड़ाइयों के पंवारे उनके पिता और चाचा को स्मरण थे। वे तलवार लेकर जब नाचने उठते थे तो दर्शक वृन्दों के हाथों से तलवार लाठी आदि अस्त्र-शस्त्र इस भय से रखवा लिये जाते थे कि जोश आने पर कहीं वे उनका प्रयोग न कर बैठें। खुदादीन मियाँ का एक बूढ़ा सम्बन्धी मंगरैली मियाँ हैं। इनका घर पटना जिले के विक्रम थाने के सुन्दर पुर ग्राम कभी था। पर अब वह जगदीशपुर ही बस गये हैं। ये बूढ़े भी वीर पंवारा नृत्य नाचते हैं। विरमपुर की लड़ाई का पंवारा उन्हें स्मरण है। तीसरा पंवरिया मुझे पटना में मिला। उसको भी कुंअर सिंह का पंवारा याद है। उसका नाम है कादिर बख्स उसके पिता का नाम है कन्तू मियाँ। यह फुलवारी शरीफ जिला पटना का रहने

वाला है इसकी उमर पचास वर्ष की है। इसको जो पंवारा स्मरण है जो नीचे उद्धृत है उसको इसने अपने लड़कपन में अपने बहनोई राजवली मियाँ से सीखा था जिनकी उमर उस समय ६० वर्ष के करीब थी। राजवली मियाँ इस पंवारे को अपने ममेरे भाई खदेरू मियाँ से जो सारन जिले के नगरा थाना के आकौर ग्राम के निवासी थे, सीखा था जिनकी उमर राजवली मियाँ के लड़कपन के समय तीस पैंतीस के लगभग थी। कादिर मियाँ ने पवाँरा का तलवार नृत्य नाच कर और पवाँरा गाकर उन्हें दिखाया और सुनाया। इनकी नृत्य कला जगदीशपुर के खुदादीन मियाँ के नृत्य की तरह कलापूर्ण और बीर रस उत्तेजक होता है। गाने के टेकनिक एक समान ही है।

इन विवरणों से स्पष्ट है कि बिहार भर में ये पँवरिये कुंअर सिंह के पँवारे को खूब गाते थे और तलवार नृत्य की प्रथा बहुत प्रचलित थी और आज भी है पर वह लुप्त प्राय हो रही है। एक बात इन तीन व्यक्तियों से लिये गये पंवारों से स्पष्ट होती और वह यह कि हरे कृष्ण और कुंअर सिंह के उपरोहित ने अंग्रेजों से मिलकर भरोसा देने तथा उसी तरह रिपुभंजन सिंह के अंग्रेजों को सहायता देने की बात दोनों व्यक्तियों के पँवारे में कही गयी है। जनश्रुत किंवदन्ती भी ऐसा ही है।

खुदादीन मियाँ को दुलौर और नोमीडोह की लड़ाई के पँवारे स्मरण हैं। कादिरबख्स को एक दूसरा ही पँवारा स्मरण है जिसमें संग्राम का सारांश वर्णन किया गया है। ये पँवरिये आज भी जब घेरदार जामा, पगड़ी, दुपट्टा और पॉयजामा तथा कमरबन्द से लैस होकर वीरों की तरह पैंतरा करके तलवार चलाने की मुद्रा में कड़खे के स्वर में गाने के अपने विलक्षण टेकनिक के साथ ढोल और साथियों के दाद के स्वर में जब वे पँवारा गाने और नाचने लगते हैं तब दृश्य और श्रुत-काव्य का विलक्षण चित्र सामने खड़ा हो जाता है और वीर-रस सजीव हो उठता है।

आवश्यकता आज इस बात की है कि इन दो कलाकारों के जीते जी इस मृतप्राय पवाँरा नृत्य कला का डॉक्यूमेण्टरी फिल्म सरकार तैयार करा ले और उसके वंशजों को ऐसा प्रोत्साहन दे कि इसको वे मरने न दें।

खुदादीन मियाँ के गाये हुए पँवारों को हम नीचे उद्धृत करते हैं। इसको जैसा सुना गया वैसा ही लिखने की कोशिश की गयी हैं। परन्तु गाने के टेकनिक छन्द ऐसे हैं कि वे लिखकर नहीं बताये जा सकते।

पहले बिना ढोल या साथियों के दाद के वे धुहा या टेक को गाते हैं और जब धुहा सम पर आकर समाप्त होने को होता है तब ढोल-झाल बज उठते हैं, नृत्य शुरू हो जाता है और साथियों के कण्ठ जगह-जगह पर दाद मिलने लगता है।

पहले हम खुदादीन मियाँ द्वारा प्राप्त पँवारा देते हैं:—

दुलौर की लड़ाई

सुर मदरता जियरे का, धन का दरदा नादान।
मर्द भँवरा लाज के डरिये, कुल में आवे हान॥
सुरमा पाँचो भले जी, कादर जोड़िये पचास।
आन परे सिर आपना, सुरमा छोड़ न पराय॥
दुलउर मैदान बनाये, बदो फिरङ्गी टेक।
चढ़ के दौड़े साहब मजिस्टर, लिया अमर सिंह टेक॥
हुकुम दीन का ?। मुहलत मत लो।
मर्दों का नाम, मर्द पँवारा॥
चले निदान, बाजन बाजे।
गड़ा निसान, ई बाबू ने जोड़ किया॥
लिख परवाना, भेजे का ?
जा बाँकीपुर दाखिल होवे—
"सुन, हवलदार मेरी बात, मैं अंगरेज से बिगड़ा हूँ।
अंगरेज का ऐन बुरा है—
खाना खाय कहता है, पानी पीने कहता है।
टोटा काटने कहता।"
एतना बात हवलदार सुना, लिख परवाना भेजे का ?

आ जगदीश दाखिल हुआ, सुनते बाबू ! मेरी बात,—
"मैं टोटा काटूगा ना,—मैं पानी पीऊँगा ना,—
बाम्हन रजपूत मेरी जाति, सेख सैयद मेरी जाति,
मुगल पठान मेरी जाति, मैं टोटा काटू गा ना,
सुनिये बाबू मेरी बात।"
लिख परवाना भेजे का ?
जा कलकत्ता दाखिल हुआ,—सुन जनरैल मेरी बात,—
"भोजपुर मा के बाबू हैं, कुंअर सिंह वाके नाम,
अमर सिंह वाके नाम, बड़े सुरमा बाबू हैं।
बड़े कड़ुआ बाबू है, अंगरेज का अदब माने ना,
अपना दोहाई फेरता है लाली लाली आँखें हैं,
कड़ी कड़ी मोछें हैं।
किसी का अदब माने ना,
पैकड़ को खेला जवान, बिछुआ को खेला जवान,
कुस्ती को खेला जवान" अतना बात जरनैल सुनै
सुन जरनैल मेरी बात, "कइसे बाबू आई हाथ ?"
तब जरनैल बोले का ?
"सुन हवलदार मेरी बात, वही गोरा दो मँगाय।
जो लाहौर तोड़ा है, तबे बाबू आवे हाथ॥"
ई जरनैल जोड़े का ? बीगुल दिया तब बजाय।
आधा रात आगे जाय, आधा रात पीछे जाय॥
कलकत्ता को छोड़ दिया, रात-दिन का धावा किया।
आ बिहिया डेरा दिया, बम का गोला छोड़े जाय॥
बाबू कान गई आवाज, खबरदार खबर ले आव।
किसकी गोली दगती है ई खबरदार जोड़े कर
सुन तू बाबू मेरी बात अंगरेज पड़ाव पड़ा है
अंगरेज कचहरी लगी है तब ले बाबू बोले का

सुन अमर मेरी बात सोने कलम हाथों ले
लिख परवाना भेजे का ? जा टेकारी दाखिल हुआ
जा डुमराँव दाखिल हुआ, जा दलीपपुर दाखिल हुआ
जा रामगढ़ दाखिल हुआ, सुन तू बाबू मेरी बात
गोतिया भाई आप कहाते मेरी मदत पर आओ काम
मैं अङ्गरेज से बिगड़ा हूँ मेरी मदत पर आओ काम
ई बाबू ने जोड़ किया सुन तो बाबू मेरी बात ।
मेरे पास जोश ना मेरे पास पल्टन ना,
कहो बाबू क्या करें अतना बात बाबू ने सुना
सुन अमर मेरी बात जब जवानी मेरी थी
तब अङ्गरेज बिगड़ल ना, अब जयेफी बीती जाय,
जीरा ऐसा दाँत हो जाय, आ सन ऐसा बार हो जाय
झुल-झुल मास लटकत जाय, बाँह में कूबत मिले जाय
कैसे तेगा पकड़ूं मैं, कैसे मनी* को मारूँ मैं
तबले अमर सिंह बोले का, सुन भैया मेरी बात
बैठल भैया पान चबाब, मैं अंगरेज को देखूँगा
ई अमर सिंह जोड़े का, सवा घैला पानी माँग
सिर से गोसल किया बनाय, चनन लगौलन आठो अंग
उर्दी पेटी ले मँगाव, झालम-झार ले मँगाव
बारह गज के माँगे थान, ऐंठ कमर बाँधे तलवार
कमैत घोड़ा ले मँगाव, कूद के घोड़ा हो असवार
जगदीशपुर किला छोड़ के, ये बीहीआ का पैंड़ा ले
जब जरनल देखे जाय, सुन हवलदार मेरी बात
जल्दी खाना करो तैयार, जल्दी पानी पी हो तैयार
जबले बाबू जोड़े का, जा गोल में गइल समाय
बायें तलवार फेरे जाय, दाहिने तलवार फेरे जाय

---

*मनी गया का कलक्टर था ।

सवा हाथ का नेजा है, दाहिने बाबू दे घुमाय
जैसे काटे कोदो-धान, मूंड़ काट करे खरिहान
पगड़ी का फेन उतराय, खून की नदी वह जाय
कितना गोरा चले पराय, जा आरे दाखिल हुआ
धूसन में गोरा है, धूस बीचे आग लगाय
नामे आरे लूटे जाय, ओ भी डेरा छोड़ के ये
जा कुलहड़िया दाखिल हुआ, जामे कुलहड़िया लूटे जाय
ओ भी डेरा छोड़ के ये, जा सनेस दाखिल हुआ
जामे सनेस लूटे जाय, ओ भी डेरा छोड़ के ये
जा कोरी में दाखिल हुआ, ओ भी डेरा छोड़ के ये
आ दुलउर पड़ाव किया, बम का गोला दागे जाय
ओ भी डेरा छोड़ के ये, आ जगदीशपुर दाखिल हुआ

नोनी डीह की लड़ाई

ई जरनइल जोड़ किया लिख परवाना भेजे का
जा कलकत्ता दाखिल हुआ सुन लाट मेरी बात
ई बाबू ना आई हाथ बड़ी कडुआ बाबू है
उन्हें गोरा भेजल जाय जंगी पलटन भेजे जायँ
रिसाला को भेजा जाय तब ले लाट बोले का
हवलदार को हुकुम दिया जल्दी पलटन फालिन करो
आधी रात आगे जाय आधी रात पीछे जाय
कलकत्ता छोड़ को दो गंगे गङ्गे गोरा चले
जहाजन पर तोप चले रात-दिन का धावा किया
आ बिहिया दाखिल हुआ। तब ले जरनैल बोले का
सुन हवलदार मेरी बात पण्डित जी को ले बोलाय
लिख परवाना भेजे का सुन पण्डित मेरी बात
हरकिसुन सिंह को दो बुलाय आधा राज तुमको देंगे

आधा राज हरिकिसुन को देंगे बाबू को राह दे बताय
ई पंडित जी जोड़ किया पाँव खड़ाऊ पेन्हे जाय
हाथ सुमिरन पकड़े जाय काँख त पोथी जाँते जाय
बिहिया का पैंड़ा लिया जाय तब ले जरनैल देखे जाय
आइये पण्डितजी बैठे जाय बाबू राह दी बताय
आधा राज तुमको देंगे आधा राज हरिकिसुन को देंगे
ई हरिकिसुन जोड़ किया बिहिया को छोड़ दिया
आ जगदीशपुर दाखिल हुआ तब ले जरनैल जोड़ किया
बम का गोला दागे जाय बाबू कान गयी आवाज
ई बाबू ने जोड़ किया पण्डित जी को लिये बुलाय
सुनो पण्डित जी मेरी बात सगुन दो बिचार
ई पण्डित जी जोड़ किया सुनिये बाबू मेरी बात
सवा दिन भदरा है ई बाबू ने जोड़ किया
खोल तलवार रखे जाय तब ले जरनैल जोड़े का
आधी रात आगे जाय आधी रात पीछे जाय
गोरा को दो उठाय रातदिन का धावा किया
आ जगदीशपुर दाखिल हुआ। बम के गोला दागे जाय
सुरुजमुख मन्दिर गिराय पच्छिम मुंहे किला गिराय
सुतल बाबू उठे चिहाय सुन हलकारा मेरी बात
कौन चढ़ा मेरी मैदान तबले हलकारा बोले जाय
सुन तो बाबू मेरी बात अङ्गरेज का गोरा आया है
सुरुजमुख मन्दिर गिराय पच्छिम मुहे किला गिराय
तबले बाबू बोले का सोने कलम हाथों ले
लिख परवाना भेजे का जा कचहरी दाखिल हुआ
सुनत अमर सिह मेरी बात अङ्गरेज का गोरा आया है
इतनी बात अमर सुने जा भैया को दिया सलाम
सुन भैया मेरी बात,

छोटका किला जगदीशपुर है, बड़का किला रामगढ़ है
चलो रामगढ़ देखेंगे, हाथ तेगा पकड़े जाय
जोरू लड़का के मारे जाय, जा ईनार में दे भठाय
जगदीशपुर किला छोड़ दिया, जङ्गल में घुसा जाय
जंगले-जंगले बाबू चले, ई जरनैल जोड़ किया
दूरबीन लगाय के देखे जाय, यही बाबू जाता है
लिख परवाना भेजे का, सुनो बाबू मेरा बात
जङ्गल छोड़ कर लड़ो, इतनी बात बाबू सुने
सुन जरनैल मेरी बात, मैं जङ्गल छोड़ूँगा
तुम तोप धर के लड़ो, इतनी बात जरनैल सुने
सुनिए बाबू मेरी बात, मैं तोप नहीं धरूँगा
मेरा तोप माता है, इतनी बात बाबू सुने
सुन जरनैल मेरी बात;
तुम्हारा तोप माता है, मेरा जङ्गल पिता है
मैं जङ्गल छोड़ूँगा नहीं, रात-दिन का धावा किया
जा नोनीडीह* दाखिल हुआ, तबले जरनैल जोड़ किया
दूरबीन लगा के देखे जाय, बाबू के पलटन छिपा है
तबले जरनैल जोड़ किया, जा नोनीडीह पड़ाव किया
इतनी बात बाबू सुना, आपन पलटन फालिन किया
सवा घइला पानी मँगाय, सिर गोंसल किया बनाय
अगतर बगतर पेन्हें जाय, झिलम झार बान्हे जाय
छाती बीचे तासा दे, गोली बारी अवसर न खाय
आँखों बीचे छोपनी दे, ई बाबू ने जोड़ किया
हे राम तू कइले का, अबकी पानी रही ना
जब जवानी मेरी थी, तब अंगरेज बिगड़ल ना

---

*नोनीडीह बसारा सिकरहटा के पास है, पीरू थाना में है।

कहो अमर क्या करें, जिरा अइसन दाँत हो जाय
सन ऐसा बार हो जाय
बाँह में कूवत मिले नाहिं, कैसे तेगा पकड़ूँगा मैं
कैसे मनी को मारूँ मैं, तब ले अमर बोले का
सुन भैया मेरी बात, बैठल भैया पान चिबाय
मैं अंगरेज को देखूंगा, बारह गज मांगे थान
ऐंठ कमर बान्हे तलवार, कुमैत घोड़ा लिए मँगाय
कूद घोड़ा होय असवार, तबले बिगुल दिया बजाय
अलि-अलि को दौड़े जाय, ई बाबू ने जोर किया
जा गोल में घुस जाय, बायें तोप दे भिड़ाय
दाहिने तोप दे भिड़ाय, जैसे छिपे जङ्गल में शेर
वैसे छिपावे बाबू घोड़, बायें गोली बहके जाय
दाहिने गोली बहके जाय, सिकन्दरपुर का है पैठान
शेख सदुलह उनका नाम, इसकी गोली दगती है
एक तो अन्धरिया रात, दूसरे पुरवैया जोड़
सब ऐसी गोली बाजे, पिन-पिन तेगा बोले
ई बाबू ने जोड़ किया, जैसे काटे कोदो-धान
मुड़ काट के करे खरिहान, पगड़िन का फेन उतराय
लहुन की नदी बह जाय, एक पहर का कार किया
हजार जवान मारे जब, ई बाबू ने कैसा किया
नोनीडीह डेरा छोड़ दे, रामगढ़ का पैंड़ा ले।

———

कुँअर सिंह के पँवारे

गङ्गा माता गङ्गा देवी, गङ्गा सरन तोहार
सात तरी हेल कर गङ्गा, तू बड़ी संसार
हुकुम दीन का ऐसा होय, एक दिन दुनिया पैदा होय

जनम युग जीये न कोई, हँस खेलि के माँटी होय
कौन-कोन बाबू बाँधे तरवार, श्रीकिसुनसिंह वाके नाम
दलभंजन सिंह वाके नाम, कुँग्रर सिंह बाँधे तलवार
अंगरेज के देहिया देय उटाय, इतना बात लाट सुना
लाट ने हाय-हाय किया, ई जुलुम हुआ का
भोजपुर माने बाबू है, जरी रोब माने ना
पच्छिम के माल पुरुब न जाय, दखिन के माल उत्तर न जाय
बीचे बाबू छीन खाय, जो सुने कुंअर के नाम
थर-थर काँपे आठो अंग, जो सुने अम्मर के नाम
थर-थर काँपे आठो अंग, तारे बिजुली दे लगाय
लाट साहब को मेरा सलाम, दुनिये की बात होती है
भोजपुर मानी बाबू है, हन-हन तेगा मारता है
सोन नदी में धोता है, विक्टोरिया को मेरा सलाम
आन कलकत्ता दाखिल है, सुनो लाट मेरी बात
भोजपुर माने बाबू है, जरी रोब माने ना
ई लाट जोर किया, सुनो सिपाही मेरी बात
चाहे संगीन धर के जाओ, चाहे खाना खाके जाओ
दाँत से टोटा काटे जाओ, जहाजों पर लादनी है
ई सिपाही कौसर किया, अपने में कौसर किया
कोई है बाम्हन की जात, कोई है कायथ की जाति
कोई है ब्रम्हन की जाति, कोई है कुरमिन की जाति
छत्तीस जातियों के इसी तरह नाम, कोई है मोगल की जाति
कोई है पैठान की जाति, छतीसो बरन भरती हैं
अंगरेज ने दीन इमान, जात रात लेत हैं
भोजपुर माने बाबू हैं, उनके बाँह में मिलेंगे
तब इमान बचेगा, बीच बचेगा हइये ना
ओहू डेरा छोड़े जाय, दीन रात धावा किया

आन बरदवान दाखिल हुआ, सोझे फाटक गये समाय
सुनो बाबू मेरी बात, अंगरेज से बिगड़ गई हैं
चार दिन के भूखे हैं, जरा रसत दो जिमाय
खस्सी भेड़ा दो जिमाय, घी आटा दो जिमाय
इतना बात बाबू सुना, सुनो सिपाही मेरी बात
घी आटा हइये ना, लोहन लकड़ी हइये ना
हम मदद देंगे ना, इतना बात सिपाही सुना
कम्मर से झरि तरवार, जवन जवान आगे मिले
भरके तेगा मारे जाय, जबन जवान पाछे मिले
भरके तेगा मारे जाय, ओहू डेरा छोड़े जाय
आन फतूहा दाखिल होय, हियां बनिया रहता है
ओ बनिया सुनो बात, चार दिन के भूखे हैं
लोहन लकड़ी दो जिमवाय, खस्सी भेड़ा दो जिमवाय
घी आटा दो जिमवाय, हे बनिया कहते बात
सुनो सिपाही मेरी बात, घी आटा हइये ना
लोहन लकड़ी हइये ना, हम मदद देंगे ना
ई सिपाही जोर किया, कम्मर से झरि तलवार
ई सिपाही जोर किया, ओहू डेरा छोड़े जाय
आन पटना दाखिल होय, गोल घर को तूड़े जाय
सब कैदी को दे छोड़ाय, ओहू डेरा छोड़े जाय।
आन बीहिआ दाखिल होय, वोहीं पर गड़ा निशान।
बीहीआ का है मैदान, धनु परे का है मैदान ॥
ओहू डेरा छोड़े जाय, आन जगदीशपुर दाखिल होय ॥
जा सिपाही किया सलाम, तुम तो हो अंगरेज के पलटन।
यहाँ काहे को आये हो, सुनो बाबू मेरी बात।
आप की बाँह में मिले हैं, अंगरेज से बिगड़े हैं ॥
जरा रसद दो जिमवाय, एतना बात बाबू सुन।

जाजिम को दे विछाय, सब सिपाही बैठे जाय ॥
हे लाट ने जोर किया, श्रो मनी सुनता ना ।
विगड़ी पलटन गई कहाँ, हे मनी ने जोर किया ॥
दिन रात धावा दे, आन जगदीशपुर दाखिल हुआ ।
डेरे डेरे घूमे जाय, हे मनी कलकत्ता गया ॥
सुनो लाट मेरी बात, जगदीशपुर माने बाबू है ।
उसके बाँह में मिला है, धाओगे पाओगे ॥
बीच पाओगे हइये ना, इतना बात लाट सुना ।
हाय हाय लाट ने किया, ई मनी जोर किया ॥
भोजपुर को हम देखेंगे, जगदीशपुर को देखेंगे ।
बाबू कुँअर को देखेंगे, सुनो मनी मेरी बात ॥
कितना फौज तुमरे पास, पाँच सौ गोरा मेरे पास ।
पाँच तोप मेरे पास, ई मनी ने जोर किया ॥
दीन रात धावा दे, आन जगदीशपुर दाखिल होय ।
मोर बाजा जाय, सिंहा बाजा बाजे जाय
तासा बाजा बाजे जाय, बाबू के कान गई आवाज
ओ जासूस सुनता ना, कहाँ बाजा बजता है
कहाँ बीगुल बजता है, ई जसुसिया जोर किया
डेरे डेरे घूमा जाय, खेमे खेमे घूमे जाय
ओ बाबू सुनिये बात, मनी साहब पहुँचा है
केतना फौज है तैयार, के तोप साथे है
पाँच सौ गोरा है तैयार, पांच तोप है तैयार
ई बाबू गोचर किया, गोरी है भूत को जात
धूप के हाल जाने ना, ठंढ़े ठंढ़े लड़ते हैं
आन दुपहरिया पीता है, ई बाबू जोर किया
बीच गोल गये समाय, कम्मर से झरि तलवार
बवन जवान आगे मिले, भरि के तेगा मारे जाय

जवन जवान पाछे मिले, अरि के तेगा मारे जाय
पाँच सौ गोरा मारा ठाँव, पाँच गोरा भागे जाय
ई रजपूतिन कोठा से देखे जाय, अढ़ैया के मार मारे जाय
पसेरी के मार मारे जाय, पाँच गोरा को मारा ठाँव
अफसर मनी भागे जाय, आन कलकत्ता दाखिल होय
ओ लाट भोजपुर मनि सुरमा है, पाँच सौ गोरा मारा है
अफसर हम भागे हैं, धाओगे पाओगे
बीच पाओगे हई नहीं, ई लाट ने जोर किया
पाँच सौ गोरा साथ ले, पाँच तोप साथ ले
आगे किया है गाय की पलटन, पीछे किया है गोरे की पलटन
आन जगदीशपुर दाखिल हो, लगे बाजा बजे जाय
बीगुल बाजा बजे जाय, मोर बाजा बजे जाय
देवी के मंडप तूरे जाय, लाल फाटक तोड़े जाय
बाबू कान गई आवाज, ओ जसुसिया जनता ना
कहाँ बाजा बजता है, कहाँ बीगुल बजता है
ई जसूसिया जोर किया, डेरे डेरे घूमे जाय
खेमे खेमे घूमे जाय, सुनो बाबू मेरी बात
अँगरेज आय पहुँचा है, लाल फाटक तोड़ा है
देवी मंडप तोड़ा है, इतना बातें बाबू सुना
ई बाबू हाय किया, थी जवानी पहुँचा ना
आन बुढ़ापा पहुँचा है, कैसे तेगा मारेंगे
कैसे तेगा पकड़ेंगे, अम्मर सिंह ने जोर किया
तुलसी सिंह ने जोर किया, जब दादा जीते थे
जब लाहौर तोड़े थे, जिनके पोता हम भी है
बिना मारे छोड़ेगे ना, जब बाबू जीते थे
यही पलामू तोड़िन था, जिनके बेटा हम भी हैं
बिना मारे छोड़े ना, निली घोड़ी-हो सवार

दूनो भाई चले जाय, बीच गोल गये समाय
कम्मर से झरि तरवार, गो मारे हत्या है
भैंस को दे लुटाय, गाय को दे लुटाय
धुआँ से हो अंधा, बाप न चीन्हे बेटा को
बेटा ना चीन्हे बाप को, कम्मर से झरि तरवार

पाँच सौ गोरा मारा ठाँव, अफसर लाट भागे जाय
आन कलकत्ता दाखिल हो, मनी साहब जोर किया
सुन लाट मेरी बात, उपरोहित को ले बुलाय
सिरी किसुन सिंह को लो बुलाय, रिपु भंजन सिंह को लो बुलाय
सुनो उपरोहित मेरी बात, कुँअर सिंह को दो निकाल
अम्मर सिंह को दो निकाल, आधा राज तोको दे
आधा राज अपने ले, रिपुभंजन सुनो मेरी बात
कुँअर सिंह को दो निकाल, अम्मर सिंह को दो निकाल
सिरी किसुन सुनो बात, कुँअर सिंह को दो निकाल
अम्मर सिंह को दो निकाल, आधा राज तोके दें
आधा राज अपने ले, दे लाट ने जोर किया
दीन-रात धावा दे आन जगदीशपुर दाखिल हो
बाबू किला तूड़े जाय, बाबू कान गई आवाज
ओ सिपाही सुनता जा, हे सिपाही जोर किया
लाट साहब ने पहुँचा है, किल्ला को तोड़ा है
तूड़ ताड़ के किया मैदान, ओ उपरोहित सुनो बात
कैसा दिन बीतता है, जस सगुन दो बिचार
हे उपरोहित देखे, आठ घड़ी का भदरा है
माल खजाना लो निकाल बहू बेटी लो निकाल
नइहर सासुर दो भिजाय, बाबू कुँअर सिंह जो किया
बीच गोल गये समाय, कम्मर से झरि तलवार
पाँच सौ गोरा मारा ठाँव, भरके गोली मारे जाय

दूरबीन से अंगरेज देखे जाय, इह बाबू भागे जाय
फूटा गोली बाहैं खाय, आती गंगा बहके जाय
पीछे गंगा थाह हो जाय, बाह को काटि जाय
ले गंगा सरन तोहार, एक दिन बीते जाय
दो रोज बीते जाय, तीन रोज बीते जाँय
चार रोज बीते जाँय कुँअर सिंह को पतेना
ई लाट ने जोर किया, सिरी किसुन कों ले बुलाय
सुनो सिरी किसुन मेरी बात, जिसका नीमक खाते थे
उसका तुम हुए नाहिं, हमरा तुम हुए नाहिं
सिरी किसन सिंह को तखतें चढ़ाय, रिपु भंजन सिंह को ले बुलाय
सुनु रिपुभंजन मेरी बात जिसका नीमक खाते थे
उसके तुम हुए ना, मेरे तुम होवेगा ना
उपरोहित सिंह के ले बुलाय, सुन उपरोहित मेरी बात
जिसका नीमक खाते थे, उसका तुम हुए ना
मेरे तुम होवेगे ना उनको तब तखती पे चढ़ाय
अम्मर सिंह ने जोर किया, दीन रात धावा दे
आन डुमराँव दाखिल हो गोतिया भैया होते हो
जरा मदत दो जिमवाय, ई बाबू कहते बात
सुनो अमर सिंह मेरी बात फौज पलटन हइये ना
हम मदत देंगे ना, ओहू डेरा छोड़े जाय
आन बक्सर दाखिल होय, गोतिया भैया कहाते हो
जरा मदत दो दो जुमवाय, देखें अङ्गरेज कैसे लड़े
सुनो अमर सिंह मेरी बात, गोरा पलटन हइये ना
गोला वरूद हइये ना, हम मदत देंगे ना
आन आरे दाखिल हो, गुद्दर सिंह के मेरी सलाम
मगगह देश लूटी जाय, भोजपुर देश लूटी जाय
देखे अंगरेज क्या करे, गुद्दर सिंह ने जोर किया

नहाना थाना तूड़े जाय, आन मसौढ़ी दाखिल होय
मसौढ़ी थाना तूड़े जाय, सब सिपाही को छोड़े जाय
आन पुनपुना दाखिल होय, पुनपुना थाना तूड़े जाय
पटना को घेरे जाय, गोल घर को घेरे जाय
हियें गोला रहता है, हियें बरूद रहता है
सब कैदी को छोड़े जाय, आन मनेर दाखिल हो
थाना को तूड़े जाय आन बिहटा दाखिल हो
बिहटा थाना तूड़े जाय, आन आरा दाखिल हो
आन बिहिआ दाखिल हो, आन जगदीसपुर दाखिल हो
एक महींना बीते जाय, दू महीना बीते जाय
तीन महीना बीते जाय, चार महीना बीते जाय
पाँच महीना बीते जाय, छः महीना बीते जाय
साल भर बीते जाय, बाबू कुँअर सिंह को पते ना
गाया पँवारा किया निदान, रहे ईश्वर जी के नाम

महाराजकुमार बाबू कुँअर सिंह

वंश-परिचय

अग्निवंशीय क्षत्रियों की चार मुख्य शाखाएँ हैं—चौहान, पम्मार (प्रम्मर), सोलंकी और राठौर। कुंअर सिंह मालवा के पम्मार वंशीय क्षत्रिय थे। आप धार के राजा भोजदेव पम्मार (१००५–१०५५ ई०) के वंशजों में थे। ये ही भोजदेव सरस्वती कंठाभरण साहित्यिक राजा भोज थे। भोजदेव के मुख्य ७ विजयों में* एक विजय पूर्वीय प्रदेश के स्थली मण्डल की विजय थी। यह स्थली प्रान्त या मण्डल† वर्तमान बलिया और गाजीपुर के जिले, आजमगढ़ का महमूदाबाद तहसील, सारन जिले का मांझी थाना तथा उसकी निकटस्थ भूमि और कुछ भाग पूर्वीय गोरखपुर के तथा वर्तमान शाहाबाद के जिले के भोजपुर परगने

---

*"भोजपुर के कवि और काव्य की भूमिका" लेखक दुर्गाशङ्करप्रसाद सिंह
†देखिये " " "

में फैला हुआ था। भोजदेव या उसके सेनापति ने मांझी के हैहव वंशीय क्षत्रियों को ११०० ई० के प्रारम्भ में (लगभग ११६६ ई०) में हराकर गंगा देवहा (सरयू) पार भगाया था*। ८०० ई० में इन हैहव वंशीय क्षत्रियों ने मांझी के गढ़ को वहाँ के आदिवासी राजा को हराकर दखल किया था और तब से वे वहाँ रह रहे थे। वहाँ से भागकर ये लोग शाहाबाद के वर्तमान बिहिआ नामक स्थान में रहने लगे थे।† भोजदेव ने मांझी विजय के बाद अपनी राजधानी डुमराँव स्टेशन के पास पुराने भोजपुर को बनाई जहाँ तत्कालीन चिन्ह आज भी वर्तमान हैं।

भोजपुर नगर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह बहुत बड़ा नगर था। उसमें ५२ गलियाँ थीं और ५३ बाजार थे।

"बावन गली तिरपन बाजार, दिया जले छप्पन हजार।" की लोकोक्ति आज भी कही जाती है। अतः उस नगर में सम्भवतः ४ लाख नर-नारी निवास करते थे। बलिया जिले का नाम गंगा और घाघरा नदी का संगम होने के कारण उन दिनों घाघ्र द्वार था।¶ जो नाम भोजदेव के दान-पत्रों में आया है। शाहाबाद का सम्पूर्ण जिला उस समय दो भागों में बँटा था। आरा से सहसराम तक जो घोर जंगल था वह आरण्यक कहा जाता था। बाद को सहसराम सरकार के नाम से विख्यात हुआ। यह भाग उस समय हैहो वंशीय राजाओं के आधीन हुआ। दूसरा भाग बक्सर के पास भोजपुर परगना तथा भभुआ प्रत्यामण्डल के कुछ भागों को लेकर बना था। यह भाग भोजदेव के आधीन था। भोजदेव ने अपने इस विस्तृत पूर्वी प्रदेश की राजधानी गंगा पर बसे भोजपुर को बनाकर यहाँ अपना शासन दृढ़ बनाया था। §

भोजदेव के वंशज राजाओं का आधिपत्य इस स्थली मण्डली पर १०१६ ई० से लेकर वि०सं० १२३७ तक अर्थात् धार के राजा अर्जुन वर्मा के समय तक यानी

---

* भोजपुरी काव्य और उसकी भूमिका—ले० दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह प्रकाशक—विहार राष्ट्रभाषा परिषद् † देखिये शाहाबाद गजेटीअर।

¶ देखिये 'भोजपुरीके कवि और उनके काव्य' की भूमिका—ले०-दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह। § भोजपुरी के कवि और उनके काव्य नामक पुस्तक की भूमिका—ले०—दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह। प्रकाशक—विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

१६१ वर्षों तक अक्षुण्ण बना रहा। इस लम्बी अवधि में यहाँ की बोली और संस्कृति पर मालवा की संस्कृति का सुन्दर प्रभाव पड़ा। किन्तु इस काल में मालवा का राजा राजवंश मालवा छोड़कर यहाँ बसा नहीं था। उसके सामन्तगण ही इसका शासन कर रहे थे। मालवा की शक्ति जब अर्जुन वर्मा के बाद के राजाओं के समय में क्षीण हो गई तब स्थली प्रान्त पर उनका राज्य कायम नहीं रह सका। इस प्रान्त के आदिम जातियों ने पुनः अपने-अपने राज्य स्थापित किये। अहीर, दुसाध और चेरो तथा कहीं-कहीं राजपूत जो यहाँ सामन्त के रूप में बस गये थे, ख्याति में आये। इनमें परस्पर संग्राम भी खूब हुए। इन्हीं लड़ाइयों को लेकर लोरिक, कुंअर विजय मल्ल आदि वीरों के पँवारे गाथा काव्य के रूप में भोजपुरी में गाये गये जो आज तक गाये जाते हैं* और जिनके रूपान्तर भोजपुरी की अन्य भगिनी भाषाओं में हो गये हैं।

भोजपुर की इस ख्याति के कारण ही भोजपुर नाम पर इस प्रदेश की बोली का नामकरण भोजपुरी हुआ। जब अलाउद्दीन खिलजी ने १४०० ई० के आरंभ में मालवा के राजा जयसिंह अथवा जयदेव चतुर्थ को परास्त करके धार और मालवा को ले लिया तब उनके पुत्र शान्तनु शाह ने ८११ फसली में अपने चार भाइयों के साथ गया श्राद्ध करने के बहाने अपने पूर्वजों के इस राज्य की ओर प्रस्थान किया। उनमें से एक भाई ने तो काशीपुर (ओरीसा) में जाकर राज्य स्थापित किया और शेष भाइयों ने यहाँ शाहाबाद में ठहरकर यहाँ के चेरों और भुइयाँ जाति के राजाओं से लड़कर उन्हें परास्त किया और अपना राज्य स्थापित किया।† इस बार मालवा के पम्मारों की यह सेना यहाँ बस गई। चूँकि मालवा (उज्जैन) से वे लोग यहाँ आये थे इस लिये यहाँ ये उज्जैन क्षत्रिय के नाम से कहे जाने लगे। राज्यवंश ने इस तरह शाहाबाद में दाँवा आदि स्थानों में रहने के बाद पुराना भोजपुर के पास नया भोजपुर बसा कर नवरत्न नामक किला बनाया।

---

* भोजपुरी के कवि और उनके काव्य नामक पुस्तिका की भूमिका—ले०—दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह। † देखिये 'उदवन्त प्रकाश', नामक अप्रकाशित ग्रन्थ जो कुँअर सिंह के भाई दयाल सिंह के वंशजों के पास आज भी वर्तमान है, तवारीख उज्जैनिया, शाहाबाद गजेटीअर इत्यादि।

और वहीं अपनी राजधानी कायम की। तब से अंग्रेजों के समय तक भोजपुर के इन पम्मार राजपूत राजाओं का प्रभुत्व शाहाबाद ही नहीं बलिया में भी बना रहा और मुगलों के समय में भी इन्होंने कभी भी दिल्ली की पूरी अधीनता स्वीकार नहीं की। दिल्ली से सदा लड़ाइयाँ होती रही जिनके जिक्र 'आइने अकबरी' तथा दूसरे इतिहास की शाही पुस्तकों में होते रहे हैं। नया भोजपुर छोड़कर राज्यवंश डुमराँव जगदीशपुर, बक्सर, और दलीपपुर समय समय से बसता गया।

शान्तन शाह की आठवीं पीढ़ी में राजा होरिल शाह नं० १ के पुत्र नारायण मल्ल के समय में भोजपुर राज्य जब दिल्ली की सेना से परास्त करके जब्त कर लिया गया तब नारायण मल्ल ने अपनी राजधानी बिहटा नामक स्थान पर जो सोन के तट पर अवस्थित है बनायी। और मौका देखकर आप शाहजहाँ के दरबार में गये और अपनी बहादुरी से बादशाह को प्रसन्न करके पुनः भोजपुर का राज्य प्राप्त किया और स्वयं राजा मनसबदार सत हजारी की उपाधि लेकर घर लौटे। वापस आने पर आप नया भोजपुर नहीं गये। बिहटा छोड़कर जगदीशपुर जा बसे, फिर नारायण मल्ल के परपौत्र होरिल शाह नं० २ जो शान्तन शाह से १२ वीं पीढ़ी में थे, जगदीशपुर राज्य अपने चाचा सुजान शाह तथा उनके पुत्र उदवन्त सिंह को छोड़कर भोजपुर परगना में पहले मटिला गये और वहाँ से वर्तमान डुमराँव को होरिल नगर नाम देकर वहाँ जा बसे। किन्तु होरिल नगर नाम नहीं चल सका पुराना नाम डुमराँव ही कायम रहा। इन्हीं सुजान शाह की चौथी पीढ़ी में तथा शान्तन शाह से १६ वीं पीढ़ी में बाबू कुँअर सिंह ने अपने पिता बाबू साहबजादा सिंह और माता पंचरत्न कुँअर के गर्भ से जन्म लिया। आपका जन्म १७८२ ई० में हुआ।

इस वंश में बड़े-बड़े वीर कुँअर सिंह के पूर्व भी हो गये हैं जिनके वीर, यशपूर्ण कार्यों से तवारीख उज्जैनियाँ के पन्ने भरे पड़े हैं।*

---

* इस वंश का वृहद् इतिहास तथा भोज राज्य के यहाँ होने के प्रमाण आदि जानने के लिये "भोजपुरी के कवि और उनके काव्य" नामक वृहद् ग्रन्थ की भूमिका को देखिये जिसके लेखक है बाबू दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह और प्रकाशक हैं बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद्, पटना।

बाबू कुँअर सिंह

जन्म, बाल्यकाल और युवावस्था तथा गद्दीनशीनी

बाबू कुंअर सिंह का जन्म १७८२ ई० में हुआ था। आपके पिता का नाम शाहबजादा सिंह और माता का नाम पंचरत्न कुंअर था। आपके और तीन भाई दयालु सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह २, ११ और २६ वर्ष क्रम से कुंअर सिंह से छोटे थे। आपके और दो छोटे भाइयों की आयु में जो इतना बड़ा अन्तर है उससे आपके पिता बाबू साहबजादा सिंह का दो व्याह होना प्रतीत होता है। कुंअर सिंह के वंश का जिक्र ऊपर किया जा चुका है, वंशावली भी इसी पुस्तक में अलग दी गयी है। उसको देखने से ज्ञात होगा कि जगदीशपुर राज-वंश के वर्तमान जीवित वंशजों के मूल पूर्वज उदवन्त सिंह थे जो ११३३ फसली में गद्दी पर बैठे थे। बाबू उदवन्त सिंह की मृत्यु के बाद उनके चार लड़के गजराज सिंह, उमराव सिंह, रणबहादुर सिंह, दिग्गासिंह से बड़े पुत्र गजराज सिंह रियासत के कर्त्ता-खानदान हुए। गजराज सिंह के पुत्र शिवराज सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र भूपनारायण सिंह गद्दी पर बैठे। ये सन्तानहीन मरे। इस वंश की परम्परा यह थी कि बड़ी शाख का बड़ा लड़का रियासत का प्रबन्धक होता था और उसी के नाम रियासत सरकारी कागज में दर्ज होती थी। जैसी प्रथा आज भी इजमाल घरों में है। शेष सभी हकदार इजमाल रहकर बड़े परिवार की तरह खानदान की मर्यादा के अनुकूल रियासत का उपभोग करते थे। भूपनारायण सिंह जब कर्त्ता खानदान हुए तब उन्होंने उमराँव सिंह के एकमात्र पुत्र साहबजादा सिंह से वैसा अच्छा व्यवहार नहीं रखा जैसा कि उन्होंने रणबहादुर सिंह के तीन पुत्रों रामबक्स सिंह, बृजा सिंह और तेगबहादुर सिंह से रखा था। अतः शाहब-जादा सिंह भूपनारायण सिंह के दुर्व्यवहारों से दुःखी रहते थे। कहते हैं कि साहबजादा सिंह के पुत्र कुंअर सिंह और दयालु सिंह जब ड्योढ़ी के इनारे के पास खेल रहे थे तब भूपनारायण सिंह के महल की किसी बाँदी ने दोनों भाई

को इनारे में जान-बूझकर ढकेल दिया था। इस घटना से साहबजादा सिंह इतना दुःखी हुए कि उन्होंने जगदीशपुर का रहना ही छोड़ दिया। वे दलीपपुर ग्राम में एक कलवार जाति के वनिये के घर रहने लगे। कई वर्षों बाद जब भूपनारायण सिंह की मृत्यु हुई तब साहबजादा सिंह जगदीशपुर आये।

भूपनारायण सिंह सन्तानहीन थे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी स्त्री तलिवन्त कुंअर ने पूर्व द्वेष के कारण रणबहादुर सिंह के पौत्र ईश्वरी प्रसाद सिंह को गोद ले लिया। साहबजादा सिंह बड़ी शाखा के बड़ा लड़का होने के नाते कर्त्ता खानदान होने के हकदार थे। तलवन्त कुंअर को मुसम्मात होने की वजह से तथा रियासती रिवाज के अनुसार दत्तक पुत्र लेने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था। अतः साहबजादा सिंह उनसे मुकदमा लड़े और उसमें जिले से १६ मार्च और ११ नवम्बर १७६६ ई० तथा कलकत्ता सदर कोर्ट से ६ मई १८०३ के फैसले के अनुसार इजमाल रियासत की गद्दी पर बैठे और रियासत के सरकारी कागजों में उनका नाम दर्ज हुआ।

जब बाबू साहब जादा सिंह संयुक्त राज की गद्दी पर बैठे तब आपके तीसरे पुत्र राजपति सिंह का जन्म हुआ। कहते हैं कि उसी वजह से पुत्र का नाम भी राजपति सिंह रखा गया। आपके कर्त्ता खानदान होने के बाद आपके दो वयस्क पुत्र कुंअर सिंह और दयाल सिंह में अनबन रहने लगी। किसी तरह पिता समझा बुझाकर कुछ दिनों तक चलाते रहे। परन्तु यह तीव्र बोध अधिक दिनों तक नहीं चल सका। १८१२ ई० के अन्त तक इन दोनों भाइयों के बीच की शत्रुता बहुत अधिक बढ़ गई। इसी बीच बाबू साहब जादा सिंह को चतुर्थ पुत्र भी नवम्बर १८११ ई० में पैदा हुआ जिसका नाम अमर सिंह रखा गया।* १८१३ ई० में कुँअर सिंह की उमर ३० वर्ष की हो चुकी थी। दयालु सिंह २८ वर्ष के थे! बाबू कुंअर सिंह पिता से भी रुष्ट रहकर नाना तरह के उद्दंडता पूर्ण कार्य पिता के विरुद्ध किया करते थे। जिससे पिता पुत्र में भी अनबन चलने लगी थी। पिता से प्राप्त रुपये से जब कुंअर सिंह का काम चलना कठिन हो

---

* देखिये अमर सिंह की जीवनी इसी पुस्तक में।

जाता था तब आप रियासत के असामियों से तथा तहसीलदारों से रसीद देकर मनमाना रुपया बलपूर्वक वसूल कर लेते थे जिससे पिता को परीशान होना पड़ता था। कहते हैं कि एक दो बार पिता के आमने सामने होकर बल प्रयोग करने के लिए भी आप तैयार हो गये थे। पिता को किसी तरह दे देना पड़ा था। फिर लाख कहने पर भी कुंअर सिंह राज के प्रबन्ध से पिता को मदद नहीं देते थे बल्कि शिकार, घुड़सवारी, खेल-कूद, आमोद-प्रमोद में व्यस्त रहते और अपना एक अलग दल बनाकर उनको खिलाने पिलाने तथा हर तरह मदद देने में ही खुश रहते थे। उधर दयालु सिंह पिता की आज्ञा में रहकर चलना अपना कर्त्तव्य समझते थे। इससे वे पिता के प्रिय हो गये थे। शेष दो भाई अभी नाबालिग ही थे। अतः चतुर शाहब जादा सिंह ने अपने पुत्रों को भारी कलह के सर्वनाश से बचाने के अभिप्राय से तथा कुंअर सिंह के उद्दण्ड व्यवहारों से अपनी परीशानी हटाने के लिए इजमाल रियासत के हकदार सरदारों की एक पंचायत बुलायी और इस भावी सर्वनाश से लड़कों को बचाने के लिये कोई उपाय ढूँढ़ निकालने का आग्रह किया। अतः सबों की राय से, जिनमें कुंअर सिंह और दयाल सिंद शामिल थे, तय हुआ कि संयुक्त रियासत की परम्परा जो बाबू उदवंत सिह की वसीयत दिनाङ्क २६ जेठ ११३७ फसली * में व्यक्त है, नष्ट न की जाय और रियासत बाँटी न जाय; परन्तु ऐसा इन्तजाम किया जाय कि इन लड़कों के हक हिस्से अलग-अलग करके उन्हें इस तरह दे दिये जाँय कि भविष्य में पिता की मृत्यु के बाद झगड़ा होने का कोई मौका न आवे तथा रियासत की ईकाई भी बनी रहे। इस नीति को निश्चित कराने में साहब जादा सिह के भी स्वार्थ की सिद्धि थी और वह यह कि कुंअर सिंह के उद्दण्ड व्यवहारों से उनको छुट्टी मिल जाती थी।

फलतः इस नीति के आधार पर उदवंत सिंह के दो औलाद वाले उमराव और रणबहादुर सिंह के वंशजों के हिस्से की आठ-आठ आना रियासत मान कर

---

* उदवन्त सिह का बिल जो आज भी दुर्गा शङ्कर प्रसाद सिह के पास सुरक्षित है। देखिये चित्र नं० जहाँ उसका फोटो छपा है।

उमराव सिंह के वंशज के ।।) आने हिस्से से जिसके हकदार साहबजादा सिंह के चार पुत्र थे ।) कुँअर सिंह को दिए गए और शेष ।) उनके तीन भाई दयालुसिंह राजपति सिंह और अमर सिंह तथा उनकी मां पंचरत्न कुँअर में छोटे बड़े के हिसाब से बाँट दिये गये । कुँअर सिंह को कर्त्ता खानदान ।।।) रियासत का (यानी ।) उनका और ।।) रण सिंह के वंशजों के हिस्से की रियासत का) माना गया। परन्तु सरकारी कागजों में कुंअर सिंह का ही नाम सोलहो आने रियासत पर दर्ज होने की शर्त इसलिए रखी गई कि रियासत की ईकाई उदवंत सिंह की वसीयत के अनुसार नष्ट न होने पावे। यह निश्चय ता० ११ पूस १२२१ फसली को एक एकरारनामा और सुलहनामा में चारों भाइयों के बीच लिखवाया गया जिसमें राजपति सिंह और अमर सिंह की वली उनकी माता पंचरत्न कुंवर थीं। रजिस्ट्री २ मार्च १८१३ ई० को आरा में हुई। इस एकरारनामें में एक शर्त्त यह भी रखी गई थी कि पिता के जीवन पर्य्यंत चारों भाई जो कुछ पिता उन्हें देते रहेंगे उसीसे सन्तोष करेंगे। उनकी मृत्यु के बाद एकरारनामें के अनुसार अपनी-अपनी जायदाद पर चारों भाई काबिज होंगे।*

उक्त सुलहनामे की रजिस्ट्री तो १८१३ ई० में हो गयी परन्तु भाई-भाई तथा पिता-पुत्र के भीतरी मन मुटाव की आग सदा के लिये बुझ नहीं सकी। जैसे जैसे समय बीतने लगा वैसे-वैसे कुंअर सिंह ऐसे खर्चीले स्वभाव के आदमी के लिये यह असम्भव होने लगा कि वे पिता की कृपा से जो कुछ रुपये पावें उसी पर अपना गुजर-बसर करें। उधर पिता की दयाल सिंह पर जो विशेष कृपा थी यह उस द्वेषाग्नि में घृत का काम करने लगा। साहबजादा सिंह भी काफी बूढ़े हो चुके थे। सत्तर वर्ष की अवस्था पहुँच रही थी। इससे उनका खर्चीला स्वभाव अधिक खर्च करने के लिये रुपयों की चिन्ता में सदा रहा करता था। अपने खर्च से रुपये नहीं बचते थे कि कुंअर सिंह की माँग पूरी की जाय। उधर

* देखिये इसी पुस्तक में परिशिष्ट १ पृ०........जहाँ इसकी प्रतिलिपि उधृत है। इस एकरारनामें का छपा अंग्रेजी अनुवाद पटना सचिवालय में सुरक्षित है।

दयालु सिंह पिता की कृपा प्राप्त कर के सुख चैन के दिन बिता रहे थे। रण-बहादुर सिंह के वंशजों को भी तकलीफ ही थी। वे कुंअर सिंह के पक्ष के होने के कारण साहब जादा सिंह और दयालु की अकृपा के पात्र बनने लगे। उन्हें भी अपने खर्चे के जो रुपये रियासत से मिलते थे उसमें कमी दीखने लगी। पिता की वृद्धावस्था के कारण दयाल सिंह ही का रियासत के प्रबन्ध में अधिक हाथ रहने लगा। दरबारी नौकरों-चाकरों का कुंअर सिंह के प्रति वर्त्ताव शेखी से भरा रहने लगा इन सब कारणों से कुंअर सिंह ने रणसिंह के वंशजों को राय-बात से, जो जल्द से जल्द साहब जादा सिंह के राज से अपनी मुक्ति चाहते थे, आरा की अदालत में इस आशय का मुकदमा १८१८ ई० में दायर किया कि १८१३ ई० में जो सुलहनामा एकरार नामा हुआ था उसका अमल-दरामद अभी कर दिया जाय क्योंकि साहब जादा सिंह बहुत वृद्ध हो गये हैं और उनसे राज्य प्रबन्ध नहीं होता और अपव्यय दिनोंदिन बढ़ता जाता है। जिससे रियासत नाश हो रही है।

यह मुकदमा पिता-पुत्र में जोरों से चलने लगा। जब काफी मुकदमे बाजी हो चुकी और दोनों पक्ष थक गया तब १८२१ ई० में पिता-पुत्र में सुलहा हुई। एक सुलहनामा अदालत में प्रेषित किता गया। इसमें जायदाद के बटवारे के सम्बन्ध में प्रायः वे ही शर्तें मान्य रहीं जो १८१३ ई० के सुलहनामे में तय हुई थी। कुछ मौजों में हेर फेर किये गये। सब से मुख्य बात यह रखी गयी कि शाहब जादा सिंह आगामी साल से राज्य प्रबन्ध छोड़कर अपने वृद्धापन का जीवन शान्त से व्यतीत करें और चारों बेटे १८१३ ई० के सुलहनामे के अनुसार १८२२ ई० यानी १२२६ साल से अपनी सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त करके अपना अलग प्रबन्ध करें और नफा लें। किन्तु सरकारी कागजों में शाहबजादा सिंह का ही नाम उनके जीवन पर्यन्त रहे। इस दूसरे १८२१ ई० के सुलहनामे के अनुसार १८२२ ई० में यानी १२२६ साल में कुँअर सिंह इजमाल रियासत के मालिक हुए और दयाल सिंह आदि अन्य तीन भाई अपने-अपने हिस्से की सम्पत्ति पर अधिकार पाये और शाहबजादा सिंह राज्य का प्रबन्ध छोड़कर

वृद्धावस्था का जीवन व्यतीत करने लगे।* यही कारण है कि बाबू कुँअर सिंह और बाबू दयाल सिंह की जो मुहरें आज जो कागजों पर प्राप्त हैं उनमें १२२६ फसली खुदी हुई है जिसका अर्थ यह है कि १२२६ फसली यानी १८२२ ई० में इन लोगों ने अपनी रियासत पर अधिकार प्राप्त किया।

१८२७ ई० में..........................बाबू शाहबजादा सिंह का देहावसान हुआ। उनकी मृत्यु के बाद जब कुँअर सिंह ने १८१३ ई० के सुलहनामे के अनुसार १६ आने रियासत अपने नाम से दाखिल खारिज कराने का आवेदन-पत्र आरा कलक्टर के पास दिया तब उनके तीन भाई तथा माता पञ्चरत्न कुँअर उसमें इस बात के लिए उजुरदार हुईं कि उनके हिस्से की सम्पत्ति कुँअर सिंह के नाम दाखिल खारिज न की जाय बल्कि उसपर उनके नाम चढ़ाए जायँ। यह मुकदमा खूब सजधज से १८३८ ई० तक कुँअर सिंह और उनके तीन भाइयों तथा माता पञ्चरत्न कुँअर के साथ चलता रहा और अन्त में चारों भाइयों का अलग-अलग नाम अपने-अपने हिस्से की सम्पत्ति पर चढ़ा और परिवार की मुकदमेबाजी समाप्त हुई। इसी दौरान में भाई-भाई की शत्रुता इस सीमा तक पहुँच गई कि बाबू दयाल सिंह को जगदीशपुर का रहना विवश होकर छोड़ देना पड़ा। वे दलीपपुर जाकर बस गए। बाद को अमर सिंह और राजपति सिंह भी मिठहाँ तथा ककिला जा बसे। बाबू कुँअर सिंह ने दयाल सिंह के महल और बैठके को ढहवाकर वहाँ तालाब खुदवा दिया और उसके पश्चिम वारी पिण्ड पर शिव मन्दिर का निर्माण किया जिसे आयर ने सुरङ्ग से जगदीशपुर के पराजय के उपरांत १८५७ ई० के अगस्त में उड़ा दिया।

कर्ज, स्वभाव और क्रान्ति की पूर्व योजना

बाबू कुँअर सिंह के ऊपर जो १८ लाख के लगभग का कर्ज १८५७ की क्रान्ति के समय कहा जाता है वह सम्पूर्ण कर्ज कुँअर सिंह का ही किया हो, सो बात नहीं है। बाबू साहबजादा सिंह ने भी मुकदमेबाजी तथा फजूल खर्चियों

---

*देखिये इन मुकदमों की फाइलें तथा सुलहनामे की नकल जो पटना सचिवालय में आज भी सुरक्षित हैं।

में काफी कर्ज किया था जो कुँअर सिंह के मत्थे आया। उस कर्ज की अदायगी का दायित्व दयालुसिंह, अमर सिंह और राजपति सिंह के ऊपर नहीं छोड़ा गया था। सुलहनामा में इन तीनों भाइयों की जहाँ जायदाद मिली है वहाँ कर्ज का जिक्र नहीं है। फिर भी इसका यह मतलब नहीं है कि कुँअर सिंह ने कर्ज नहीं किया।

कुँअर सिंह का स्वभाव पिता से भी अधिक खर्चीला था। पिता का खर्च जहाँ छोटी जाति के नौकर-चाकरों पर अधिक होता था वहाँ कुँअर सिंह का खर्च अपनी शान-मर्यादा के रख-रखाव और उसकी वृद्धि में बढ़ा हुआ था। फिर भी उन्होंने मकान, मन्दिर, मसजिद आदि कीर्तियों की रचना भी की थी। जमीन्दारी भी बढ़ायी थी। उसी के साथ जगह-जमीन का दान मुक्तहस्त से करना उनका स्वभाव था। अंग्रेज अधिकारियों तथा अन्य मित्रों के स्वागत और सत्कार का खर्च भी कम नहीं था। यह स्वभाव अतिशयता को तब प्राप्त किया जब आपके एकमात्र पुत्र दलभंजन सिंह की मृत्यु हो गयी और दलभंजन सिंह का एकमात्र पुत्र वीरभंजन सिंह पागल हो गया। आपने अपने पुत्र की शादी गिद्धौर के महाराज की कन्या से की और बारात में लाखों रुपये खर्च किये। भाइयों से आपका व्यवहार अच्छा था ही नहीं अतः स्वभाव में निष्प्रियता आ जाने से अपने यश व नीति के सामने सम्पत्ति या धन-संचय का विचार नगण्य हो गया। अब उनके लिये एकमात्र सन्तान जिसके लिए उन्हें कुछ करना था 'यश' और 'कीर्ति' थी। यश, कीर्ति छोड़कर मरना उनके जीवन का ध्येय बन गया।

आपके स्वभाव सम्बन्धी अन्य खूबियों के ज्ञान इस पुस्तक के अन्य लेखों से प्राप्त होंगे, परन्तु एक बात यहाँ समझ लेनी आवश्यक है और वह यह कि आपके स्वभाव में जो प्रारम्भ से अन्त तक हिम्मतवाले कामों को करने की भावना, अक्खड़ और निर्भीक, उत्साह तथा (Rashness) उद्दण्ड कार्य करने की दिलेरी थी उसी ने आगे चलकर परिस्थितियों के संयोग से आपको देशव्यापी धर्म युद्ध का नेतृत्व ग्रहण करने के लिये प्रेरणा प्रदान की। जो एक दलविशेष की यह धारणा है कि कर्ज की अदायगी की सूरत न मिलने के कारण ही आपने क्रान्ति का पक्ष ग्रहण किया था, वह सर्वथा निराधार है। दूसरा पक्ष उनको पहले से

तैयार होकर क्रान्ति का सूत्रधार बनने की बात जो कहता है वही सही बात है। परन्तु कुँअर सिंह के विद्रोही बनने के वास्तविक कारण तो उनके स्वतन्त्र विचार, उद्दण्ड प्रकृति तथा स्वच्छन्द स्वभाव में ही निहित थे, जैसा कि ऊपर कहा गया है। आपमें अपनी मान-मर्यादा, शान-शौकत के रख-रखाव का विचार कूट-कूटकर भरा था और इसकी रक्षा में आप द्वारा किये गये कार्य भी अनोखे ढङ्ग के हुआ करते थे। फिर भी जैसे हर महापुरुषों के स्वभाव में कुछ विलक्षणता (एसन्ट्रीसिटी) रहती है वैसी कुँअर सिंह के स्वभाव में भी कुछ विलक्षणता थी। उस समय जिलेभर में आपका दबदबा इसलिए सबसे अधिक था कि आप निर्बल को, जिसको सबल अन्यायपूर्वक दबाता हो अथवा जो आपकी शरण में आ जाता था उसके रक्षार्थ धन, जन और शक्ति का प्रयोग खुलकर करने में जरा भी नहीं हिचकते थे। जब दूसरा कोई तरीका नहीं सूझता था तब आप दल-बल के साथ चढ़ जाते और मारपीट से भी उसे दुरुस्त करने की नीति का अनुसरण करते थे।

आपका यह स्वभाव इतना प्रबल था कि इसने लॉर्ड डलहौसी के रियासत जब्त कर लेनेवाली नीति की तथा अँग्रेजों के अन्य अन्यायपूर्ण कार्यों के विरुद्ध पक्ष ग्रहण करने के लिये आपको सहज ही में प्रभावित किया। फलतः आप देश व्यापी क्रांति के आयोजन १८५७ के पूर्व से ही करने लगे थे। कुँअर सिंह की रियासत के सम्बन्ध में भी कुछ ज्ञातव्य बातें यहाँ उधृत कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। जब कर्ज अधिक बढ़ गया तब उसकी अदायगी की सूरत ढूँढ़ निकालने में कुँअर सिंह को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। कुँअर सिंह के सभी अँग्रेज अधिकारी मित्र थे और उनकी सहायता से उन्होंने १८५४ ई० दिसम्बर मास में अपनी रियासत को अँग्रेजी सरकार के अधीन प्रबन्ध करने और कर्ज दे देने के लिए दिया। ऐसा होने के पूर्व आरा पटना के अधिकारियों ने आपकी रियासत के आय व्यय तथा जमा और वसूली का हिसाब देखा और पूरी छान-बीन के बाद जिलेभर के रईसों की राय लेकर उन लोगों ने बोर्डआफ डाइरेक्टर के पास लिखा कि कुँअर सिंह शाहाबाद के सबसे बड़े सम्मानित खानदानी रईस हैं। इनकी रियासत की वार्षिक आय तीन लाख चालीस हजार रुपया है। इसमें कुँअर सिंह केवल १ लाख ४० हजार वसूल कर पाते हैं। शेष रैयतों के पास रह

जाता है और वह कभी वसूल नहीं हो पाता। अतः कुँअर सिंह को यदि ६० हजार रु० सालाना व्यक्ति गत खर्चे के लिये देकर राज्य अँग्रेजी सरकार के प्रबन्ध के अन्दर ले लिया जाय तो रियासत बच जायगी और कुँअर सिंह का कर्ज भी चुकता हो जायगा। बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और रियासत सरकारी प्रबन्ध में ले ली गयी। परन्तु कुँअर सिंह की रियासत को ढाई वर्षों तक अपने प्रबन्ध में रखकर भी अँग्रेजी नौकर शाही ने कुँअर सिंह के कर्ज में कुछ भी राशि नहीं अदा कर पाई। बल्कि मई १८५७ ई० में उन लोगों ने एका एक कुँअर सिंह की रियासत को छोड़ दिया और कुँअर सिंह को सूचित कर दिया कि कर्ज दारी के रुपये वे एक मास के अन्दर दे दें। उनकी अदायगी न होने पर कर्ज दार रियासत को नीलाम करा सकते हैं। बोर्ड के ऊपर इसका दायित्व अब नहीं रहा। उधार कर्ज दारों को भी कहते हैं कि सख्ती करने के लिये कहा गया।

ऐसा क्यों हुआ और अचानक ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता अँग्रेज सरकार को क्यों प्रतीत हुई यह अभीतक ठीक निश्चित नहीं हो पाया है। सम्भव है कुँअर सिंह पर क्रान्तिकारियों के पक्ष करने की बात का अनुमान जब सही मान लिया गया हो तब अधिकारियों ने सोचा हो कि रियासत छोड़ देने से कुँअर सिंह की विचार धारा रियासत के प्रबन्ध और कर्ज को देने के तरीका सोचने में व्यस्त हो जायगी और उनकी क्रान्ति कारियों के प्रति सहानुभूति में इससे कमी आ जाय फिर इसी के साथ जनता में जो लार्ड डलहौसी की रियासत हड़पने की नीति से तथा अन्य जुल्मों से जो क्षोभ और घृणा की भावना बढ़ चली थी जिसके फल स्वरूप १८५७ के जुलाई मास की क्रान्तिघोषणा के १३ मास पूर्व बिहार भर के रईस, सैनिक पुलिस तथा जनता द्वारा गुमनाम पत्र के रूप में एक चुनौती (आल्टीमेटम) बंगाल की सरकार के पास अपने १३-१४ शिकायतों को व्यक्त करके दी जा चुकी थी और उसमें साफ कह दिया गया था कि यदि अंग्रेज सरकार इन बुराइयों का सुधार नहीं करती तो हम लोग सशस्त्र बलवा करेंगे उस घृणा भावना पर लीपा पोती करने की नियत से भी क्रान्ति के दो मास पूर्व रियासत कुँअर सिंह को वापिस कर दी गयी हो।

जो उपर्युक्त गुमनाम पत्र लार्ड हाली डे के समक्ष दिया गया था उसमें बिहार की जनता की ओर से अँग्रेजों द्वारा किये गये आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक और व्यवसायिक अत्याचारों की सूची दी गयी थी जैसे अँग्रेज अफसरों को सेना तथा पुलिस में उच्च स्थान देना, अँग्रेजी जानने की शर्तें रखना, राज-रियासत जब्त करना, नीलेह साहबों को प्रोत्साहन देना, ईसाइयों का धर्म परिवर्तन में सहायता देना, काले गोरों का भेद मानना और देश के व्यवसाय को नष्ट करना तथा अँग्रेजों द्वारा किये गये अन्य अत्याचार। इस गुमनाम पत्र को हाली डे ने यह कहकर दबा दिया था कि असन्तोष है पर यह चन्द असन्तुष्ट खुराफाती व्यक्तियों के कार्य हैं। आम जनता या सैनिक वर्ग इसमें शामिल नहीं है। यदि यह अनुमान सही है तो इससे भी कुँअर सिंह का हाथ क्रान्ति की योजना में पहले से होने की बात सिद्ध होती है। यही कारण है कि तत्कालीन सभी क्रांतिकारियों से आपके पूर्व परिचय तथा पत्र व्यवहार के कागज आज सरकारी सचिवालयों में मिल रहे हैं। अभी पटना के कमिश्नरी में ऐसे कागज मिले हैं जिनसे यह सिद्ध है कि १८४५ ई० में उत्तरीय भारत के प्रायः सभी मुख्य राजाओं को मिलाकर एक गोप्य षड़यन्त्र रचने की तैयारी की गयी थी। जिसका लक्ष्य यह था कि अँग्रेजों के राज्य को भारत से जल्द से जल्द हटाया जाय। इसका संक्षिप्त विवरण २८ अगस्त १८५५ के इण्डियन नेशन में भी श्री जय शंकर झा द्वारा (Little known anti British Plot of 1845-46 in Bihar) शीर्षक से निकल चुका है। इस षडयन्त्र में उस साल के हरिहर क्षेत्र के मेले में ख्वाजा हुस्सेन अली खाँ के खेमे में प्रान्त भर के हिन्दू मुसलमान राजे रईस तथा प्रमुख व्यक्ति इकट्ठे हुए थे। उसमें कुँअर सिंह भी थे और इनकी नेपाल के महाराज को पक्ष में लाने का भार दिया गया था। ये सभी काम गोप्य रूप से होने पर भी प्रगट हुए और अँग्रेज अधिकारियों ने इस पर काम किये।

फिर १८५७ के पूर्व नाना साहब से कुँअर सिंह का जो पत्र-व्यवहार हुआ था तथा कुँअर सिंह स्वयं सन्........में प्रयागराज और मथुरा आदि स्थानों में तीर्थ करने के बहाने घूमे थे और वहाँ के पण्डों को सनद दिये थे उस यात्रा के पीछे भी इस षड्यन्त्र के प्रचार का हाथ था। नाना साहब के पत्र का विषय

यद्यपि आपके कर्जों की अदायगी के लिये नाना साहब से कर्ज लेने का था परन्तु उससे आपका उनसे घनिष्ट सम्बन्ध तो सिद्ध ही होता था और उस समय क्रान्ति के सम्बन्ध के पत्र भी तो सांकेतिक तथा आलंकारिक शब्दों में श्लेष अर्थ में होते थे।* फिर बिहार और छोटानागपुर के अन्य क्रान्तिकारियों से भी आपके पूर्व परिचय के प्रमाण मिलते हैं। यही नहीं उनसे क्रान्ति सम्बन्धी संगठन के भी प्रमाण मिलते हैं। रामगढ़ की सेना का उधर से आकर दिल्ली के बादशाह की आज्ञा से कुँअर सिंह से मिलने की बात दिल्ली के 'नेशनल आर्याइव्ज' में प्राप्त कागजों से सिद्ध है। फिर बिहार के अन्य क्षेत्रों में जो छोटे-बड़े बलवे हुए थे उनमें सभी बलवाइयों ने जगदीशपुर चलने का नारा बुलन्द किया था जिससे कुँअर सिंह का पूर्व सम्पर्क उनसे सिद्ध होता है। बाबू कुँअर सिंह जगदीशपुर में हारकर सहसराम के जङ्गलों में रामगढ़ के बलवाइयों और भागलपुर के नं० ५ इरेंगुलर सेना के आने की प्रतीक्षा कई दिनों तक करते रहे। परन्तु इन विद्रोही सेनाओं की चतरा (हजारीबाग) में हार की सूचना पाकर आप अकेले रीवाँ की ओर चले गये और अमरसिंह सहसराम में रह गये। ये बातें भी केन्द्रीय पुरातत्व के सरकारी कागजों से सिद्ध हैं। इन्हीं कागजों से आपका रीवाँ के सरदार हुम्मत अली और हरचन्द राय की बगावत से प्रभावित होकर वहाँ जाना भी सिद्ध है। वहाँ से आपका बाँदा जाना और वहाँ नाना साहब के एजेण्ट शान्त रूपे की सेना से मिलने का प्रयत्न करना और विफल होने पर ग्वालियर जाना भी सिद्ध ही है। इनके सेनाध्यक्ष निशानसिंह के बयान से जिसको उन्होंने सहसराम के

---

* सरजान के ने लिखा है "महीनों से नहीं बल्कि बरसों से ये लोग अपना षड्यन्त्रकारी जाल सारे देश भर में फैला रहे थे। एक देशी रियासत से दूसरी रियासत तक विशाल भारतीय महाद्वीप के एक छोर से दूसरे छोर तक नाना साहब के दूत आवाहन का पत्र लेकर घूम चुके थे। इन पत्रों में सावधानी के साथ रहस्यपूर्ण शब्दों में भिन्न-भिन्न जातियों और भिन्न धर्मों के राजाओं और सरदारों को सम्मति दी गयी थी और उन्हें आगामी युद्ध में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया गया था।"

तत्कालीन मजिस्ट्रेट श्री कोल के सामने दिया था।* काल्पी जाकर ग्वालियर की सेना की प्रतीक्षा करने की बात स्पष्ट है। फिर जून और जुलाई मास में तथा इसके पूर्व भी दानापुर के सिपाहियों से आपकी जो गुप्त वार्ता हरे कृष्ण सिंह के माध्यम से हो रही थी। और रणदलन सिंह के साथ विद्रोह के समय दानापुर मौजूद थे, ये बातें भी आपकी क्रान्ति के लिये पूर्व तैयारी को स्पष्ट करती हैं। फिर आपका दानापुर के सिपाहियों पर प्रभाव होना पटना के कमिश्नर की उस बात से सिद्ध है कि उसने आपको उन्हें शान्त करने की बात कहलवायी थी और आपने यह कहकर उनसे कुछ कहना इनकार कर दिया था कि दानापुर के सिपाहियों में जो शाहाबाद के सिपाही हैं उनको छोड़कर अन्य सिपाहियों पर मेरे कहने का कोई प्रभाव नहीं होगा। फिर आपका विद्रोहियों पर पूर्व प्रभाव होने का दूसरा प्रमाण यह है कि आपने आरा के कलक्टर का खजाना अपने कुछ सिपाहियों की संरक्षता में पटना निर्विघ्न पहुँचवा दिया था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों की रिपोर्ट भी आपकी क्रान्ति के पक्ष के प्राप्त हैं। विद्रोह के कुछ ही दिनों पूर्व १८ जुलाई को आरा जज की टेबुल पर जो गुमनाम पत्र मिला था उसमें गया के विप्लवी मुसलमान नेता अब्दुलकरीम खाँ के जगदीशपुर आकर आपसे बातें करने और क्रान्ति की तिथि २५ जुलाई निश्चित होने की बात भी स्पष्ट थी।

अमर सिंह का संथालों और पलामू जिले के विद्रोही नेता नीलाम्बर और पीताम्बर शाही के नाम भेजा हुआ पत्र भी मिला ही है जिसमें कुँअर सिंह के पश्चिम से एक बड़ी सेना के साथ लौटने की बात कही गयी है।†

राँची जिले के सलजी ग्राम के जगन्नाथ शाही के सम्बन्ध के जो कागज पटना सचिवालय में प्राप्त हैं उनसे स्पष्ट है कि जगन्नाथ शाही जो दयाल सिंह के दामाद थे आपके पक्ष से छोटानागपुर में क्रांति के लिए सङ्गठन कर रहे थे इन

---

* देखिए इस पुस्तक में 'निशान सिंह की जीवनी'।

† देखिए इसी पुस्तक में २३ अप्रैल १८५८ और उसके बाद के चित्र शीर्षक लेख।

सब कारणों से पटना डिविजन का कमिश्नर श्री ई० ए० सैमुअलस ने अपने २५ सितम्बर १८५८ की रिपोर्ट में बङ्गाल के छोटे लाट को लिखा था—

"There is no doubt that he (Kunwar Singh) had determind on rebellion for some time before the actual out break took place." "इसमें सन्देह नहीं है कि कुंअर सिंह विद्रोह शुरु होने के पहिले ही विद्रोह करने के लिए दृढ़ सङ्कल्प हो गए थे।",

अतः उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यह निश्चित है कि कुंअर सिंह १८५७ के पहले से क्रांति की तैयारी जो छिपे रूप से हो रही थी उसमें बिहार के प्रधान नेता थे और यह कहना गलत है कि कुंअर सिंह अनायास बिना कुछ सोचे-समझे एक-ब-एक सिपाहियों के दबाव से मजबूर होकर तथा अपनी कर्जदार रियासत को बचाने के लिए क्रांति में कूद पड़े।

सक्रिय क्रांति का सूत्रपात

१८५७ के शुरु में बिहार में बढ़ती हुई भावी क्रांति की अफवाह सुनकर सशङ्कित अंग्रेजों के दबाव से पटना के कमिश्नर श्री टेलर की विवेक-बुद्धि ठीक काम करने में असमर्थ होने लगी। १८ जून १८५७ को उसने अपनी कमिश्नरी भर के जमींदारों को बुलाकर सभा की। पर उसमें कुँवर सिंह एक ऑफिसर के द्वारा बुलाए जाने पर भी नहीं गये। फिर २ जुलाई १८५७ को कमिश्नर टेलर ने मौलवी अजीमुद्दीन नामक एक डिप्टी कलक्टर को जो कुँअर सिंह के मित्र और शाहाबाद जिले के कोआथ नामक ग्राम के बेलग्रामी खानदान के रईस थे। कुँअर सिंह को बुला लाने के लिए भेजा। इसी के साथ कुँअर सिंह के घर पर डिप्टी कलक्टर को यह देखने के लिए भी ताकीद की गयी थी कि वे विद्रोह की तैयारी तो नहीं करते हैं।

जब अजीमुद्दीन जगदीशपुर आये उस समय कुँअर सिंह के दरबार में दो दल जोरों से अपने-अपने ध्येय के अनुकूल काम कर रहे थे। वह दल जो क्रांति के पक्ष में था उसका नेतृत्व राजवंशीय सरदारों में तुलसी प्रसाद सिंह जो रण-सिंह के पौत्र थे तथा दरबारी मुसाहबों में हरेकृष्ण सिंह और रण दलन सिंह

कर रहे थे। दूसरा दल जो कुंअर सिंह को क्रांति में भाग लेने से रोकना चाहता था उसके प्रमुख नेता थे दयालु सिंह के पुत्र रिपुभंजन सिंह और गुमान भंजन सिंह तथा अमर सिंह स्वयं। दयालु सिंह सम्भवतः उस समय मर चुके थे। रिपुभंजन सिंह कुंअर सिंह को समझाकर पटना भेजना चाहते थे परन्तु दूसरा दल उनको पटना जाने से रोकता था। अन्त में कुंअर सिंह ने रिपुभंजन सिंह की दलीलों को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि ये भाई भतीजे चाहते हैं कि मैं पटना जाकर फाँसी पड़ूँ और वे हमारे धन के उत्तराधिकारी बनें *। फलतः आपने डिप्टी से अपनी अस्वस्थता का बहाना बताया और अच्छा होते ही पटना आकर कमिश्नर से मिलने की बात कह कर उन्हें विदा किया।

इस घटना के बाद कुंअर सिंह के यहाँ षड़यन्त्र की योजना जोरों पर चलने लगी। इसी बीच गया का सुप्रसिद्ध जमीन्दार अब्दुल करीम खाँ भी कहते हैं कि बाबू साहब के यहाँ आया और उनसे षड़यन्त्र की योजना में राय-बात हुई और विद्रोह शुरू करने की एक तिथि निश्चित हुई। फलस्वरूप हरेकृष्ण सिंह और रणदलन सिंह दानापुर सिपाहियों को उभाड़ने के लिये भेजे गये। कहते हैं कि बाबू साहब को इन कार्य्यवाइयों की खबर गुप्त रूप से बिना अपने को प्रकट किये हुए रिपुभंजन सिंह ने अंग्रेजों तक पहुँचाना शुरू किया। † जुलाई १८५७ के दूसरे सप्ताह में आरा की कचहरी में जज की टेबुल पर एक गुमनाम पत्र पड़ा मिला। उसमें अन्धे अब्दुल करीम के जगदीशपुर आने की सूचना दी गई थी और बताया गया था कि उससे कुंअर सिंह की बातें हुई और कुंअर सिंह ने

---

* देखिये १८५७ के गदर का इतिहास ले० शिव नारायण द्विवेदी पृ० ८७४

† देखिये रिपुभंजन सिंह की दिनाङ्क ७।६ जनवरी १८६१ ई० की दरख्वास्त जिसको उन्होंने छोटे लाट बंगाल के पास भेजी थी और जिसमें कुंअर सिंह की जायदाद और जागीर पाने की प्रार्थना की थी तथा अपने राजभक्ति के कार्यों का उल्लेख था। उसमें उन्होंने साफ कहा है कि बलवे के पूर्व भी उन्होंने अंग्रेजों को विद्रोह के विरुद्ध मदद दी है। देखिये पारा (२) इसी पुस्तक का परिशिष्ट १—

क्रान्ति में सम्मिलित होने का वचन उसको दिया है। उस पत्र में यह भी कहा गया था कि इस विप्लव का सूत्रपात बिहार में २५ जुलाई १८५७ को ही होगा उसमें कुंअर सिंह के मुख्तार काशी प्रसाद की तलाशी लेने का भी सुझाव दिया गया था। कहते हैं कि इस गुमनाम पत्र के प्रेषक में रिपुभंजन सिंह का सोलह आना हाथ था और यह बात रिपुभंजन सिंह के ७।६ जनवरी १८६१ की दरखास्त में प्रकारान्तर से व्यक्त भी है। नहीं तो कुंअर सिंह के इस गोप्य भेद को दूसरा और कौन जान सकता था और विद्रोह के पूर्व रिपुभंजन सिंह अंग्रेजी को भेद देने के अतिरिक्त और सहायता ही क्या कर सकते थे। जिसका उन्होंने अपनी दरखास्त में किया है। उक्त पत्र के आधार पर काशी प्रसाद गिरफ्तार हुए और कुंअर सिंह के आरा स्थित मकान की तलाशी हुई। इधर कुंअर सिंह भी बैठे नहीं रहे। उन्होंने हरेकृष्ण सिंह और रणदलन सिंह को दानापुर के बलवाइयों के पास भेज दिया। उनको इसलिए भेजा गया कि वे वहाँ छावनी के सिपाहियों को आपकी आज्ञा सुनाकर विद्रोह करावें और उन्हें आरा लावें।

किन्तु जहाँ कुंअर सिंह द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति करने को १८४५ से ही षड्यन्त्र रचने की तैयारी में सहयोग देने की बात की पुष्टी हम करते हैं वहीं जगदीशपुर रियासत को जब्ती के लिये अंग्रेजों कि बुरी नीयत के प्रमाण भी इस क्रान्ति के बहुत पहले से पाते हैं। जब टेलर साहब कमिश्नर होने के बहुत पूर्व आरा के जिला जज थे तब उनके सामने अमृत कुंअर नामक किसी मुसम्मात ने दो तीन लाख रुपये की नालिश बाबू कुंअर सिंह के विरुद्ध की। टेलर बाबू साहब के व्यक्तित्व और लोकप्रियता से बहुत प्रभावित था। अतः उसने कुंअर सिंह के इस मुकदमे में सुलह करा देना चाहा ताकि उनकी रियासत बच जाय। इस अभिप्राय से उसने पार्टी को रुपया देकर कलक्टर तथा दो-चार व्यक्तियों की एक पंचायत बनाकर खुद उसका सभापति बना और खानगी तरह से मुकदमा तय करा देना चाहा। अमृत कुंअर को यह पसन्द नहीं आया और उसने इसकी अपील कलकत्ता कर दी। इस पर टेलर से अवैधानिक कार्य के लिए कैफियत पूछी गयी। टेलर की इस कैफियत को बोर्ड आफ डाइरेक्टरस् के पास भेजते हुए वहाँ के अधिकारी वर्ग एक गोप्य पत्र में डायरेक्टरों को लिखा था कि टेलर

की ऐसी कार्रवाई अंग्रेजों के हित के विरुद्ध नहीं हुई है। उन्होंने उसमें लिखा था कि जगदीशपुर रियासत बहुत बड़ी रियासत है। कुंअर सिंह बूढ़े हुए। उनके लड़कों की मृत्यु हो गयी। एक पोता है वह भी पागल ही है। अतः हम लोगों को जगदीशपुर से रियासत जल्द से जल्द ले लेनी होगी। इसलिये अगर टेलर ने ऐसा काम करके उसको बरबाद होने से बचाया तो इसमें उसका दोष नहीं कहा जायगा और बोर्ड आफ डाइरेक्टरस ने टेलर की कैफियत स्वीकार करके उसे क्षमा किया।* तो इस कागज से स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजों की यह मंशा थी कि लार्ड डलहौसी की 'हड़प नीति' के अनुसार शाहाबाद ही नहीं बल्कि बिहार की बड़ी रियासतों में जो कुंअर सिंह की रियासत है उसे उनके जीवन में ही जब्त कर ली जाय और कुंअर सिंह की मृत्यु के पहले हो रियासत से हटा दिया जाय, परन्तु वह मंशा पूरी होने के पूर्व ही क्रान्ति शुरू हो गयी।

युद्ध

२५ जुलाई १८५७ को दानापुर की ७ और ८ नम्बर की पलटन ने अधिकारियों द्वारा हथियार रखने की आज्ञा देने पर बगावत किया और ४० नम्बर की देशी सेना ने भी उनका साथ दिया। अधिकांश सिपाही हरेकृष्ण सिंह और रणदलन सिंह के साथ पश्चिम की ओर चले। २५ जुलाई को वे सिपाही सोन पार कर आरा पहुँचे। इतिहासकार मालेशन ने लिखा है कि कुँअर सिंह पहले ही सोन नदी पर तैयार थे और उनके आदमियों ने विद्रोही सिपाहियों का सोन पार करने के लिए नाव का प्रबन्ध किया था तथा कुँअर सिंह की आज्ञा से सिपाही आरा जाकर जेल खोलें और खजाना लूटें। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के देशी इतिहासकारों ने मालेशन के इस कथन का समर्थन नहीं किया है क्योंकि उनको कुँअर सिंह के विद्रोही बनने के कारण अंग्रेजों के मत्थे मढ़ना था। परन्तु सही बात मालेशन के कथन में ही है जैसा कि पूर्व पृष्ठों में कहा जा चुका है। निशान सिंह ने भी अपने बयान में कहा है कि "मैं आरा में पहले से

---

* यह कागज पटना सचिवालय में अभी प्राप्त हुआ है। वहाँ यह सुरक्षित है।

ही विध्वंश नहीं किया गया बल्कि कुंअर सिंह का बनवाया शिव मन्दिर भी गिरा दिया गया और जगदीशपुर तथा आस-पास के गाँव भी जला डाले गये। घायल सिपाहियों को रास्ते के पेड़ों पर लटकाकर फाँसी दी गयी। जो लड़ाई में मारे गये थे उनकी लाशें पेड़ों पर लटका दी गयीं। कुंअर सिंह के मकान की रक्षा करते ५० सिपाही मरे थे, वे भी इसी तरह पेड़ों से लटकाये गये। कुंअर सिंह का मकान विध्वंश करके आस-पास के गाँव जलाकर भस्म कर दिये गये और निवासी मारे गये।*

११ अगस्त १८५७ से १७ मार्च १८५८ तक का यात्रा-विवरण

दुलौर की लड़ाई के बाद कुंअर सिंह और अमर सिंह दलबल के साथ सहसराम पहुँचे। वहाँ दोनों भाई अमर सिंह और कुंअर सिंह इस बात को लेकर आपस में एक दूसरे से लड़ते रहे कि जगदीशपुर की पराजय का कारण अमर सिंह थे अथवा कुंअर सिंह। फलतः अमर सिंह दोषी ठहराये गये और वे कुंअर सिंह से अलग रहने लगे और उनके साथ पश्चिम भी नहीं गये।†

सहसराम के जंगलों में कुंअर सिंह अपनी सेना के साथ पूर्व सूचना के अनुसार रामगढ़ से आने वाली विप्लवी सिपाहियों की सेना तथा भागलपुर की ५ नम्बर की इरेंगुलर सेना की प्रतीक्षा कुछ दिनों तक करते रहे। परन्तु जब हजारीबाग जिले के 'चतरा' नामक स्थान में उनकी हार होने की सूचना, जैसा पहले कहा गया है इन्हें मिली तब कुंअर सिंह पश्चिम रीवाँ की ओर अकेले चल पड़े। रीवाँ में वहाँ के सरदार हुम्मत अली और हरचन्दराय पहले से विप्लवी बन चुके थे। आपके लाख कहने पर भी महाराज ने आपका साथ नहीं दिया, पर भय दिखाने पर, कहते हैं गाँवों के जलाए जाने पर उन्होंने आपको १००००

---

* Mutiny of Indian Empire volune 11 Page 406
तथा १८५७ के गदर का इतिहास पृ० ६०० ले०—शिवनारायण द्विवेदी।

† देखिए बंगाल के छोटे लाट के सचिव द्वारा अमर सिंह पर लिखा गया नोट जो ता० ३१।८।१८६५ को लिखा गया था और जिसकी प्रतिलिपि पटना सेक्रेटेरियट में वर्तमान है। इस पुस्तक का परिशिष्ट १—पृष्ठ.......

खेराज देकर अपना पिण्ड छुड़ाया। रीवाँ से कुंअर सिंह बाँदा गये।* वहाँ आप नाना साहब के एजेण्ट शान्ति सूपे की सेना से मिलना चाहे पर वहाँ के जमींदारों ने इसमें बाधा पहुँचायी और आपको बाँदा छोड़ना पड़ा। बाँदा से आप ग्वालियर गये। ग्वालियर से आप उत्तर पश्चिम की ओर बढ़े और अयोध्या में २००० सैनिकों के साथ पहुँचे। इन घटनाओं के सम्बन्ध के कागज दिल्ली के नेशनल आर्चाइव्ज में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं कागजों के सहारे आपका लखनऊ होते हुए आजमगढ़ जाना भी सिद्ध है।† निशान सिंह के कथनानुसार लखनऊ के नवाब ने आपको अपने देश में जाकर शासन करने का फरमान दिया और १२ हजार रुपये मदद में दिये तथा आपको अपने पूर्वी जिलों (आजमगढ़ तक) का शासक बनाया और अयोध्या के राजा मानसिंह के नाम एक आज्ञा भी दी जिसमें १६ हजार रुपऐ देने की हिदायत थी। निशान सिंह ने भी अपने बयान में इस यात्रा का समर्थन किया है। पर उससे इनका रीवाँ तथा ग्वालियर न जाकर काल्पी में ही ग्वालियर से आनेवाली सेना की प्रतीक्षा करना कहा गया है और कहा गया है कि ग्वालियर से ऐसा पत्र आया था कि कुंअर सिंह यमुना नदी न पार करें, वहीं ग्वालियर की सेना आवेगी। ग्वालियर की सेना आने पर काल्पी से आप कानपुर आए और वहाँ से लखनऊ गये। काल्पी के पास अंग्रेजी सेना से युद्ध की भी बात कही जाती है जिसमें आपका पौत्र वीरभञ्जन मारा गया था। यहीं आपकी रखेली वेश्या धर्मन बीबी की मृत्यु हो जाने की भी बात कही जाती है।§

इसी यात्रा में कुंअर सिंह मध्य भारत के अन्य स्थानों पर जाना और सैन्य

---

* देखिये 'बाबू कुंअर सिंह' नामक पुस्तक। ले० —मथुरा प्रसाद दीक्षित पृष्ठ १४७

†ज्ञात हुआ है कि इस यात्रा के विवरण केन्द्रीय राष्ट्रीय आर्चाईव्ज में मिले हैं।

§देखिए निशान सिंह का बयान जो १५ मई १८५४ के बिहार समाचार नामक पत्रिका में जो जन सम्पर्क विभाग पटना से निकलती है, छपा है तथा धर्मन बीबी की जीवनी।

ही विध्वंश नहीं किया गया वल्कि कुंअर सिंह का वनवाया शिव मन्दिर भी गिरा दिया गया और जगदीशपुर तथा आस-पास के गाँव भी जला डाले गये। घायल सिपाहियों को रास्ते के पेड़ों पर लटकाकर फाँसी दी गयी। जो लड़ाई में मारे गये थे उनकी लाशें पेड़ों पर लटका दी गयीं। कुंअर सिंह के मकान की रक्षा करते ५० सिपाही मरे थे, वे भी इसी तरह पेड़ों से लटकाये गये। कुंअर सिंह का मकान विध्वंश करके आस-पास के गाँव जलाकर भस्म कर दिये गये और निवासी मारे गये।*

११ अगस्त १८५७ से १७ मार्च १८५८ तक का यात्रा-विवरण

दुलौर की लड़ाई के बाद कुंअर सिंह और अमर सिंह दलबल के साथ सहसराम पहुँचे। वहाँ दोंनों भाई अमर सिंह और कुंअर सिंह इस बात को लेकर आपस में एक दूसरे से लड़ते रहे कि जगदीशपुर की पराजय का कारण अमर सिंह थे अथवा कुंअर सिंह। फलतः अमर सिंह दोषी ठहराये गये और वे कुंअर सिंह से अलग रहने लगे और उनके साथ पश्चिम भी नहीं गये।†

सहसराम के जंगलों में कुंअर सिंह अपनी सेना के साथ पूर्व सूचना के अनुसार रामगढ़ से आने वाली विप्लवी सिपाहियों की सेना तथा भागलपुर की ५ नम्बर की इरेंगुलर सेना की प्रतीक्षा कुछ दिनों तक करते रहे। परन्तु जब हजारीबाग जिले के 'चतरा' नामक स्थान में उनकी हार होने की सूचना, जैसा पहले कहा गया है इन्हें मिली तब कुंअर सिंह पश्चिम रीवाँ की ओर अकेले चल पड़े। रीवाँ में वहाँ के सरदार हुम्मत अली और हरचन्दराय पहले से विप्लवी बन चुके थे। आपके लाख कहने पर भी महाराज ने आपका साथ नहीं दिया, पर भय दिखाने पर, कहते हैं गाँवों के जलाए जाने पर उन्होंने आपको १००००

---

* Mutiny of Indian Empire volune 11 Page 406 तथा १८५७ के गदर का इतिहास पृ० ६०० ले०—शिवनारायण द्विवेदी।

† देखिए बंगाल के छोटे लाट के सचिव द्वारा अमर सिंह पर लिखा गया नोट जो ता० ३१।८।१८६५ को लिखा गया था और जिसकी प्रतिलिपि पटना सेक्रेटेरियट में वर्तमान है। इस पुस्तक का परिशिष्ट १—पृष्ठ.......

खेराज देकर अपना पिण्ड छुड़ाया। रीवाँ से कुंअर सिंह बाँदा गये।* वहाँ आप नाना साहब के एजेण्ट शान्ति सूपे की सेना से मिलना चाहे पर वहाँ के जमींदारों ने इसमें बाधा पहुँचायी और आपको बाँदा छोड़ना पड़ा। बाँदा से आप ग्वालियर गये। ग्वालियर से आप उत्तर पश्चिम की ओर बढ़े और अयोध्या में २००० सैनिकों के साथ पहुँचे। इन घटनाओं के सम्बन्ध के कागज दिल्ली के नेशनल आर्चाइब्ज में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं कागजों के सहारे आपका लखनऊ होते हुए आजमगढ़ जाना भी सिद्ध है।† निशान सिंह के कथनानुसार लखनऊ के नवाब ने आपको अपने देश में जाकर शासन करने का फरमान दिया और १२ हजार रुपये मदद में दिये तथा आपको अपने पूर्वी जिलों (आजमगढ़ तक) का शासक बनाया और अयोध्या के राजा मानसिंह के नाम एक आज्ञा भी दी जिसमें १६ हजार रुपऐ देने की हिदायत थी। निशान सिंह ने भी अपने बयान में इस यात्रा का समर्थन किया है। पर उससे इनका रीवाँ तथा ग्वालियर न जाकर काल्पी में ही ग्वालियर से आनेवाली सेना की प्रतीक्षा करना कहा गया है और कहा गया है कि ग्वालियर से ऐसा पत्र आया था कि कुंअर सिंह यमुना नदी न पार करें, वहीं ग्वालियर की सेना आवेगी। ग्वालियर की सेना आने पर काल्पी से आप कानपुर आए और वहाँ से लखनऊ गये। काल्पी के पास अंग्रेजी सेना से युद्ध की भी बात कही जाती है जिसमें आपका पौत्र वीरभञ्जन मारा गया था। यही आपकी रखेली वेश्या धर्मन बीबी की मृत्यु हो जाने की भी बात कही जाती है।§

इसी यात्रा में कुंअर सिंह मध्य भारत के अन्य स्थानों पर जाना और सैन्य

---

* देखिये 'बाबू कुंअर सिंह' नामक पुस्तक। ले० —मथुरा प्रसाद दीक्षित पृष्ठ १४७

†ज्ञात हुआ है कि इस यात्रा के विवरण केन्द्रीय राष्ट्रीय आर्चाईब्ज में मिले हैं।

§देखिए निशान सिंह का बयान जो १५ मई १८५४ के बिहार समाचार नामक पत्रिका में जो जन सम्पर्क विभाग पटना से निकलती है, छपा है तथा धर्मन बीबी की जीवनी।

संचय करना भी साबित है। आपकी इस यात्रा से सुदूरपूर्व आसाम से मध्यभारत के बरार तक आपका यशगान होने लगा और प्रताप विराजने लगा जब्बलपुर की ५२ नम्बर की सिपाही सेना कुंअर सिंह के यश को सुनकर उत्तेजित हो गयी। उसने गोंडवाना प्रदेश के शङ्कर शाह नामक बूढ़े राजा और उनके पुत्र को १५ सितम्बर १८५७ की गिरफ्तारी से उत्तेजित हो उसे कैद से छुड़ाने की चेष्टा की, पर विफल रही। १८ सितम्बर को जब उस राजा को पुत्र के साथ तोप से उड़ा दिया गया तो रात को ५२ नम्बर की सेना छावनी छोड़कर निकल गयी। अपने साथ सेनापति मेक ग्रेगरी को भी लेती गयी। २७ सितम्बर को जब्बलपुर से २५ मील दूर गोरी सेना से उनकी मुठभेड़ हुई और क्रान्तिकारी सेना मेक ग्रेगरी की लाश छोड़कर पीछे हट गयी। इसके बाद नागौद नामक स्थान में ५० नम्बर की सिपाही सेना भी उनसे आ मिली और अंग्रेज खजाना छोड़कर भाग गये। यहीं इन दोनों सेनाओं ने कुंअर सिंह की अधीनता स्वीकार की।१ नागौद से होकर ही कुंअर सिंह रीवाँ गये थे। रीवाँ में वहाँ के कई गाँवों के जलाने की बात कही जाती है। उधर सुदूरपूर्व आसाम में जब वहाँ का राजा पकड़ा गया तब कुछ गोरखों को छोड़कर उसकी सारी सेना कुंअर सिंह के पक्ष में थी। इन ख्याति वृद्धियों के बहुत पूर्व इंग्लैंड के टाइम्स नामक पत्र में छपा था—"अब भी कुंअर सिंह के पास तमाम सिपाही सेना का पांचवा हिस्सा है। जो वे रानीगञ्ज पर धावा करके रेलवे पर कब्जा करें और कलकत्ता जा पहुँचें तो क्या होगा?"*

इस तरह अगस्त ११, १८५७ से मार्च १७, १८५८ तक कुंअर सिंह सैन्य संचालन करते हुए संयुक्त प्रान्त और मध्यभारत में भ्रमण करते रहे। इस अवधि में उनसे सिपाही सेना जहाँ अंग्रेजी बगावत कर करके मिलती रही वहीं स्वयंसेवकों के रूप में बिना वेतन के भी जन सेना उनके साथ हजारों की तादाद में होती गयी इस बात के भी प्रमाण मिले हैं।

---

* Times, June quoted in mutiny of Indian Empire vol. II. Page 490.

आजमगढ़ की लड़ाई

१८ मार्च १८५८ से २६ अप्रैल १८५८ तक के विकट संग्राम और कुंअर सिंह का निधन

४००० से अधिक सैनिक लेकर कुँअर सिंह १७ या १८ मार्च को आजमगढ़ से २५ मील दूर अतरौलिया नामक स्थान पर पहुँचे। तारीख २१ मार्च को मिलमैन की अंग्रेजी सेना से उनका संग्राम हुआ और उसमें वे पूर्ण विजयी हुए। मीलमैन भागकर आजमगढ़ गया और वहाँ जेल में अपने को सुरक्षित स्थान में रखा। वहाँ से उसने बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ सहायता के लिए लिखा।

अन्य लोम हर्षक युद्ध

२४ मार्च को बनारस से समाचार पाकर कर्नल डेम्स के अधिनायकत्व में ४६ सैनिक बनारस से और १२० पैदल गोरे गाजीपुर की २६ नं० सेना से आजमगढ़ भेजे गये। कर्नल डेम्स पहले आजमगढ़ गया और वहाँ के कई सौ गोरे सैनिकों मद्रासी सवार और दो तोपें लेकर कुंअर को हराना चाहा पर वह हार गया और भागकर आजमगढ़ जा छिपा। उसके ११ सैनिक और एक अफसर मारे गये।

२७ मार्च को जब मिलमैन की हार का समाचार इलाहाबाद पहुँचा तो लार्ड-कैनिङ्ग चिन्तित हुए। वे कुंअर सिंह की रण कुशलता से परिचित थे। उन्होंने कुंअर सिंह के भावी कार्य-क्रम का अनुमान लगाया कि आजमगढ़ पर कब्जा करके वे तुरत अपनी बड़ी सेना के साथ बनारस पर हमला करेंगे। इस तरह इलाहाबाद लखनऊ और कलकत्ता का रास्ता रुक जायेगा। अतः उन्होंने इलाहाबाद स्थित १३ नं० की गोरों की पैदल सेना को लेकर सेनापति लार्ड मार्ककार को आजमगढ़ जाने का आदेश दिया। उनको निर्देश किया कि बनारस की तमाम सेना को लेकर कुंअर सिंह का मुकाबला करें।

६ अप्रैल १८५८ ई० को लार्ड मार्ककार आजमगढ़ से ८ मील की दूरी पर मर्साना (निशान सिंह के बयान के अनुसार शिवनारायण नामक स्थान जो

आजमगढ़ से १० मील दूर था), पहुँचा। कुंअर सिंह ने उसका मुकाबला किया और युद्ध हुआ। लार्ड मार्ककार को आगे बढ़ना मुश्किल हो गया। उसकी रसद से लदी बैल, गाड़ियाँ, हाथी, ऊँट और घोड़ों को सिपाहियों ने छीन लिया। १० हाथी, ११ ऊँट, ६२ बैलगाड़ियां और कुछ घोड़े निसान सिंह के बयान के अनुसार कुंअर सिंह के अधीन हुए। जिस मकान में छिपकर सिपाही गोली चला रहे थे उस मकान में मार्ककार ने आग लगा दी। विवश होकर सिपाहियों को बाहर निकलना पड़ा। इस तरह आजमगढ़ का मार्ग साफ करके लड़ता भिड़ता मार्ककार आजमगढ़ पहुँचा। अब आजमगढ़ में मिलमैन, डेम्स और लार्ड मार्ककार तीन जेनरलों ने कुंअर सिंह से हारकर शरण ली। कुँअर सिंह ने शत्रु सेना की इस बढ़ती को देखकर वहाँ अधिक दिनों तक घेरा कायम रखना उचित नहीं समझा। उन्होंने १३ अप्रैल को आजमगढ़ छोड़कर जगदीशपुर शीघ्र पहुँचने का निश्चय किया। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि कुंअर सिंह को लार्ड कैनिङ्ग की आशंका के अनुसार बनारस पर हमला करके उसे कब्जा में करना चाहता था। परन्तु उनकी धारणा इसलिए गलत थी कि बनारस के पास जगदीशपुर की तरह सिपाही सेना के छिपने के लिये जंगल नहीं थे। और उत्तर भारत की क्रांति सर्वत्र समाप्त थी। अतः अंग्रेजों की भारी सेना वहाँ पहुँच जाती और कुंअर सिंह को कुछ करते नहीं बनता। अतः उन्होंने जगदीशपुर के जङ्गलों से छापामार युद्ध के विचार से वहाँ जाना उचित समझा जो बाद को सही भी निकला। वे यह भी जानते थे कि अभी लखनऊ से सेना आने को बाकी है अतः उसको निर्विरोध छोड़ देने से शत्रु उनका पीछा करेगा। अतः जो भारी सेना लखनऊ से लुगार्ड के नेतृत्व में २६ मार्च को भेजी गयी थी और १४ अप्रैल को आजमगढ़ से सात मील पर पहुँच चुकी थी उसको रोक रखने के लिये उन्होंने चुने हुए सिपाहियों की एक टुकड़ी सेना तमसा नदी के पुल के इस पार नियुक्त की और अपनी शेष-सेना लेकर गाजीपुर के पास गंगा पार करने के उद्देश्य से आगे बढ़े। टुकड़ी सेना को आदेश था कि वह तब तक लुगार्ड को रोके रहे जब तक वह यह न समझ ले कि कुंअर सिंह दूर निकल गये होंगे।

सेनापति लुगार्ड ने बड़े वेग से पुल के रक्षक सिपाहियों पर हमला किया पर वीर सिपाही ऐसा घमासान संग्राम करके गोरी सेना को हटाने लगे कि उनके साहस की कथा इतिहास में सदा अमर रहेगी। कोई सिपाही पीछे नहीं हटा, मरते मारते वे आगे बढ़े। लुगार्ड का पहला हमला व्यर्थ गया, सेना पुल की ओर न बढ़ सकी। फिर दूसरा हमला हुआ, इस बार सिपाही होशियारी से हट गये। तमसा पार होने पर लुगार्ड ने थोड़ी सेना सिपाहियों के पीछे भेजी पर सिपाही सेना ने पुनः डटकर गोरी सेना पर आक्रमण किये। लुगार्ड की सेना गोली चलाती रही पर सिपाही बढ़ते गये। तब उसने रिसाला सेना को आक्रमण करने को कहा पर वे भी विफल रहे।" सिपाही सेना अर्द्ध चन्द्राकार व्यूह बनाकर लड़ती हुई आगे बढ़ी। घोर सग्राम हुआ। दोनों ओर के वहुत से वीर जवान मारे गये और घायल हुए। सिपाही सेना इस तरह लुगार्ड को क्षति पहुँचा और काफी समय तक रोककर हट गई। अब लुगार्ड की हिम्मत सिपाही सेना का पीछा करने की नहीं रही। उसने आजमगढ़ जाकर वहाँ से ब्रिगेडिअर डगलस को कुंअर सिंह का पीछा करने के लिये भेजा *।

"इधर कुँअर सिंह ने निधाई नामक ग्राम में अपना व्यूह बनाया। वे जानते थे कि अंग्रेजी सेना उनके पीछे आवेगी। बिना इसके रास्ते में विघ्न डाले वे जगदीशपुर नहीं पहुँच सकेंगे। इसी कारण कुँअर सिंह ने बड़ी चतुराई से सैन्य संगठन किया। पास ही घने वृक्षों की कतार थी इसी की आड़ में सिपाही सेना तैयार रही। आगे तोप लगाई गयी। १७ अप्रैल को प्रातःकाल डगलस ने कुँअर सिंह पर हमला किया। कुँअर सिंह ने एक सेना को डगलस से लड़ने के लिए भेजा तथा बाकी सेना के दो भाग करके दोनों ओर भेज दिया। जब पहला दल डगलस से लड़ने लगा तब कुअँर सिंह दूसरे स्थान के लिए रवाना हुए। डगलस की सेना पीछे चली। चार-पाँच मील जाकर चाल कम हुई। कुँअर सिंह की सेना दो हिस्सों में बँट गयी थी वह रात के समय फिर एक हुई।"*

"उसी रात ब्रिगेडियर डगलस ने सिपाही सेना से ६ मील के फासले पर पड़ाव डाला। सबेरा होते ही वह सिपाहियों की ओर बढ़ने लगा। पर कुँअर

---

*१८५७ के गदर के इतिहास से उद्धृत।

सिंह की सिपाही सेना ने उससे भी अधिक योग्यता का परिचय दिया। वे बड़ी तेजी से दस मील रास्ता पार करके नगरा नामक ग्राम में पहुँचे। सवार और घोड़ों की तोपें दिन भर उनका पीछा करती रही, पर पैदल सेना के न आ सकने से डगलस युद्ध न कर सका। रात को वह कुँअर सिंह की सेना से तीन-चार मील दूर पड़ाव डाल कर रहा।"*

कुंअर सिंह इसकी "खबर पाकर उसी रात को कूच करके सिकन्दरपुर की ओर चले और बिना किसी प्रकार की बाधा के घाघरा नदी पार हो गये। इसके बाद वे गाजीपुर जिले के मान्नाहार नामक स्थान पर पहुँचे। उनकी सेना भूखी थी। रास्ता चलकर थक गयी थी। यहीं भोजन करके आराम करने का विचार था, पर ये ऐसा न कर सके। कुंअर सिंह की कूच की खबर मिलते ही सवेरे नव बजे डगलस ने सिकन्दरपुर की तरफ कूच किया। रात को वह फिर कुंअर सिंह की सेना से ४ मील की दूरी पर जाकर रहा। दूसरे दिन फिर यात्रा शुरु हुई। २० अप्रैल को कुंअर सिंह की सेना दिखायी दी। जिस स्थान पर कुँअर सिंह की सेना थी वह साफ मैदान था। व्यूह रचना के योग्य वहाँ कोई जगह नहीं थी न कोई रुकावट ही थी। डगलस के हमले से इनकी सेना के पैर जरूर उखड़े पर वे तितर-बितर नहीं हुए। ६ मील रास्ता लड़ते-लड़ते पार करके भी गोरी सेना कुछ नहीं बिगाड़ सकी।"* कुंअर सिंह ने यहाँ अनोखी सूझ से काम लिया। उन्होंने आगे किसी निश्चित स्थान पर मिलने की आज्ञा अपनी सेना के दो हिस्से करके दो दिशाओं में भेज दिया। डगलस नहीं समझ सका कि शत्रु आगे कहाँ मिलेंगे, अतः उसे रात भर वहीं पड़ा रहना पड़ा।

इधर कुंअर सिंह का गङ्गा पार करना ध्येय था। अंग्रेजों ने गाजीपुर जिले की तमाम नावों को डुबो दिया था, पर वहाँ की प्रजा ने कुंअर सिंह को डुबायी हुई नावों का स्थान बता दिया। कई नावें निकाली गयीं और २१ अप्रैल १८५८ को सवेरा होते-होते कुंअर सिंह शिवपुर घाट नामक स्थान पर गङ्गा पार कर गये। निशान सिंह का बयान है कि कुंअर सिंह ने हाथी पर ही गङ्गा पार किया। सम्भवतः यह सही है कि नावों की कमी थी और शत्रु पीछे थे। इससे

---

*१८५७ के गदर के इतिहास से उद्धृत।

उन्होंने वैसी सावधानी बरती हो। परन्तु इन पंक्तियों के लेखक के पितामह जी का कहना था कि कुंअर सिंह नाव से हीं गङ्गा पार किये और इस पार आकर हाथी पर बैठकर चलने को तैयार हुए। तब उनको गोला लगा। जो भी हो गङ्गा पार होने पर सबेरा हो गया था। गोरी सेना गङ्गा के उस पार पहुँच गयी थी। इसी समय कुंअर सिंह की सेना इधर कूच कर रही थी। कुंअर सिंह के हाथी पर उनके पीछे रणदलन सिंह और छत्रधारी खवास थे। खवास ने अनायास ही छत्र खींच लिया। इधर दुश्मन ने छत्र को देखकर हाथी पर गोला मारा। रणदलन सिंह और छत्रधारी नौकर गोला के साथ उड़ गये पर कुंअर सिंह बच गये। इनकी भुजा के ऊपर का मांस औ कुछ जांघ का मांस गोला के साथ उड़ गये।" कुंअर सिंह विचलित नहीं हुए। उनकी सेना भी सेनापति के आहत होने से विशृङ्खल या विचलित नहीं हुई। कुंअर सिंह ने वहाँ भी अपनी अन्तिम और सबसे बड़ी बहादुरी दिखलायी। उन्होंने कहा—"विधर्मी शत्रु के उसी गोले से जिसके छूने से हमने धर्म नाश मानकर, क्रान्ति की, आहत होकर बाँह अपवित्र हो गयी है। इसको कोई काटकर गङ्गिया (गङ्गा) मैया को चढ़ा दो।" पर किसकी हिम्मत थी कि सेना की ऐसी महान आज्ञा की पाबन्दी करे। कुंअर सिंह ने तलवार खींचकर स्वयं अपने हाथ से भुजा काट डाली और उसे गङ्गा को भेंट दे जगदीशपुर रवाना हुए। अपने महान सेनानी की वीरता और शत्रु से घृणा को देख कर सेना में दूना उत्साह बढ़ गया। जो निराशा और मुर्दनी गोला लगने से छा गयी थी उसको कुंअर सिंह ने अपने बहादुराने त्याग से पुनः बड़ी आसानी से निर्मूल कर दिया और सिपाही सेना पहले से दूनी हिम्मत से लड़ने को तैयार हो गयी।

कुंअर सिंह पालकी पर २१ अप्रैल की सन्ध्या समय जगदीशपुर आये। आपका गढ़ जगदीशपुर के पतन के बाद ही विध्वंस कर दिया गया था, पर अमर सिंह अपनी सेना के साथ पहुँच चुके थे। भाई ने आपका स्वागत किया। जनता ने भी खुलकर हर्ष प्रकट किया। आप अपने भग्नावशेष बैठक के एक कमरे में रखे गये। कुंअर सिंह के इस आगमन से सनसनी फैल गयी। जहाँ जो अंग्रेज था, भाग-भागकर आरा पहुँचने लगा। अंग्रेजों के भक्त, खासकर डुमराँव

के महाराजा महाराज महेश्वर बक्स सिंह और दयालु सिंह के वंशज बाबू रिपु-भञ्जन सिंह डर गये! आरा के अधिकारी वृन्द घबड़ा उठे। पूरे जोर के साथ जगदीशपुर पर हमले की तैयारी आरा में होने लगी। उस समय कप्तान लिग्रांड (Le-Grand) वहाँ का सेनापति था। वह आयर की तरह विजय का मंसूबा बाँधकर २३ अप्रैल को जगदीशपुर के लिए रवाना हुआ। इधर कुंअर सिंह की सेना उनकी बाँह कटनेवाली घटना से इतना अनुप्राणित थी कि उसने प्रण कर लिया था कि जीवन रहते पग भर भी पीछे नहीं हटेंगे। कुंअर सिंह की घातक चोट से अब हरेकृष्ण सिंह ने भी अमर सिंह के विरुद्ध पूर्व दुरावभाव को त्याग दिया था। सभी सरदारों ने एक होकर लिग्राड का सामना किया और उसकी सेना पर धावा किया। अंग्रेजी सेना के पाँव उखड़ गये, पर वे पीछे भाग नहीं सके। इस युद्ध में अमर सिंह ने अपनी तलवार से लिग्रांड को मार डाला।"* इस हार में अंग्रेजों की जैसी दुर्गति हुई और जिस तरह वे भगेड़ों की तरह भाग-भागकर इनारों में, कहीं तालाबों में कूद-कूदकर जान बचाना चाहे और अनुशासन को भुलाकर भगदड़ मचा दिये वह अंग्रेज जाति के लिए महान लज्जा की बात थी। अंग्रेज इतिहासकारों ने भी इसको स्वीकार किया है। अधि-कांश सेना मारी गयी।

इस लड़ाई को तथा उसके बाद के चित्रों का वर्णन अन्यत्र इसी पुस्तक में दिया गया है। इस विजय के बाद कुंअर सिंह का देहावसान २६ अप्रैल को जगदीशपुर में हुआ। कहते हैं कि बाबू साहब की मृत्यु कुछ पहले हो चुकी थी, पर २६ अप्रैल को वह ऐलान की गयी। पहले मृत्यु गुप्त इसलिए रखी गयी थी कि सेना में किसी तरह हतोत्साह न आने पावे। हरेकृष्ण के मुकदमे में जो गवाहियाँ गुजरीं उनमें कुंअर सिंह की मृत्यु २१ अप्रैल को हो गयी है। जज ने भी यही माना है। परन्तु अन्य कागजों से यह सिद्ध है कि २६ अप्रैल १८५८ को मरे।

---

* देखिए बाबू कुंअर सिंह नामक पुस्तक पृष्ठ १५५।
लेखक—मथुरा प्रसाद दीक्षित।

मरते समय उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में सेना का कमान अमर सिंह को दिया। इस तरह जगदीशपुर का महान वीर केसरी कुंअर सिंह विहार ही नहीं समस्त उत्तर भारत में उथल पुथल मचाकर अपने स्वतन्त्र जगदीशपुर में २६ अप्रैल १८५८ को महा प्रस्थान किया जो अन्य किसी भी क्रांति के नेता के सौभाग्य में प्राप्त नहीं था। १८५७-५८ को क्रान्ति की सारी लड़ाइयों में ली-गैराड की हार की तरह कहीं भी अंग्रेजी सेना नहीं हारी थी।

कुंअर सिंह की वीरता, बहादुरी, संगठन पटुता तथा अनेक गुणों के सम्बन्ध में ज्ञान इस पुस्तक के अन्य लेखों से प्राप्त होंगे।

कुंअर सिंह की सैन्य संचालन की निपुणता को अंग्रेज लेखकों और अधि-कारियों ने दिल खोल कर स्वीकार किया है। पटना के कमिश्नर भी ई० ए० सैमुश्लस् ने अपने २५ सितम्बर १८५८ ई० के रिपोर्ट में बंगाल के छोटे लाट को लिखाथा—

"Kunwar Singh was as a man also, it would seem, with much chivalery in his composition Hard field sports & in habit of presenting his conviction that if he had been trained soldier he would have made an excell-ent commander."

ऐसा प्रतीत होता है कि कुंअर सिंह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमें वीरता कूट-कूट कर भरी हुई थी और साथ ही साथ उनमें कठिन से कठिन सामरिक कार्य करने की क्षमता थी। यदि उनको अच्छी सैनिक शिक्षा मिली होती तो वे एक बहुत ही उत्तम कमांडर सिद्ध होते। 'हिस्ट्री आफ दी इण्डियन म्यूटिनी' नामक ग्रन्थ भी जी० डब्ल्यू० फस्ट ने लिखा है:—

"कुंअर सिंह को सैनिक शिक्षा नहीं दी गयी थी। और वे उमर में बहुत बूढ़े हो चुके थे जब उन्होंने सैन्य संचालन का भार ग्रहण किया, परन्तु तब भी उन्होंने बहुत शीघ्र छापाकार युद्धकला की निपुणता प्राप्त कर ली। उनके दृढ़

संकल्प, नीर्भीकता पूर्ण जवाँमर्दी और हिम्मत से प्रभावित होकर अनुयायी उनके भक्त और सहायक बन जाते थे * ।"

*He, Kunwar Singh, had no military training & he was advanced in age when he assumed Command of the field, but he soon proved apptitude for Guerrilla Warfare. His strong will, dash & courage won the alligance & devotion of followers."

एक दूसरे अंगरेज इतिहास कार उनकी वीरता, धीरता और रण चातुर्य से प्रभावित होकर लिखता है, 'But Kunwar singh, Though he not trined in his profession of arms, was a borns tratagion & could not be easily caught." यद्यपि कुंअर सिंह को युद्ध विद्या की शिक्षा उचित नहीं दी गयी थीं तथापि वे जन्मना युद्ध कला की बारिकियों का ज्ञान रखते थे। और इस तरह आसानी से नहीं पकड़े जा सकेंगे। और तद्कालीन सहायक सरजन श्री हाल ने लिखा है—

"Indeed we are not aware that he ever perticipated in the attrocities which were generally committed by them (rebels). Even his opponants speak of his mastery retreat across the Ganges when closely persued by the force under, Sir, Edugard with respect. In this retreat the old lion received his Death wound but managed to reach Jagdishpur."

"विद्रोहियों द्वारा जो अत्याचार किये गये थे उनमें कुंअर सिंह कभी शरीक हुए थे कि नहीं इसका पता हम लोगों को नहीं है। परन्तु सर ह० लुगार्ड जब उनका पीछा कर रहा था उस समय जिस चतुराई और बहादुरी से गंगा के उस पार के दक्षता पूर्वक पीछे हटते गये इसकी तारीफ उनके शत्रु भी बड़ी इज्जत के साथ करते थे। इसी पलायन में उस वृद्ध शेर को घातक चोट भी खानी पड़ी परन्तु तब भी वह जगदीशपुर सफलता पूर्वक पहुँच ही गया।"

महाराज कुमार बाबू अमर सिंह

बाबू अमर सिंह कुंअर सिंह के सब से छोटे भाई थे। आपका जन्म भी जगदीशपुर में हुआ था। सरकारी रिपोर्ट के आधार पर १८५८ के नवम्बर मास में आप ४७ वर्ष के थे।* आपकी इस आयु की पुष्टी उस रजिस्ट्री कागज से होती है जो ११ पूस १२२१ फसली में लिखा गया था। यह कागज सुलहनामे के रूप में कुंअर सिंह और उनके तीन भाइयों के बीच लिखा गया था जिसके अनुसार अन्य तीन भाइयों के हक हिस्से जगदीशपुर को हजमाल रियासत से पिता की मृत्यु के बाद अलग होने को थे। उस कागज में अमर सिंह नाबालिग बतलाये गये हैं और उनकी वली उनकी माता पंचरत्न कुंअर बनी हैं। इससे स्पष्ट होता है कि १८५८ में जो सरकारी रिपोर्ट में अमर सिंह की उमर ४७ वर्ष लिखी है वह सही है।

अमर सिंह का जन्म इस तरह १८११ ई० के नवम्बर मास में निश्चित है। अमर सिंह जब दो वर्ष के थे तभी आपके पिता बाबू साहबजादा सिंह ने पूर्व कथित सुलह का एकरार नामा आप चार भाइयों के बीच लिखवाया था जिसकी रजिस्ट्री २ मार्च १८१३ ई० को आरा में हुई थी और जिसके अनुसार अमर सिंह के हिस्से की सम्पत्ति कुल रियासत के –) हिस्से की थी। जिसको तब तक वे भोगते रहे जब तक रियासत अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त नहीं हो गयी।

पिता की मृत्यु के उपरान्त उक्त सुलह नामा के अनुसार अमर सिंह भी अपने भाइयों की तरह अपनी सम्पत्ति पर काबिज हुए और कुछ दिन जगदीशपुर रहने के बाद आपकी भी कुंअर सिंह से नहीं पटी और आप भी दयाल सिंह और राजपति सिंह की तरह जगदीशपुर छोड़ कर मिठहाँ जा बसे जो जगदीशपुर और दलीपपुर के बीच एक छोटा गाँव है और जहाँ आपका गढ़ आज भी भग्नावशेष में खड़ा है।

मिठहाँ में अमर सिंह का जीवन शान्ति के साथ बीतने लगा। वहाँ आपका अधिक समय शिकार और जमीन्दारी के प्रबन्ध में बीतता था। आपकी अधिक घनिष्टता दयालु सिंह और उनके वंशजों से थी। कुंअर सिंह से एक तरह से

मनमुटाव चलता रहा। जब जून १८५७ ई० में विद्रोह का सूत्र पात होने को हुआ और कुंअर सिंह का झुकाव विद्रोह की ओर होने लगा तब अमर सिंह भी दयाल सिंह तथा उनके वंशजों की तरह कुंअर सिंह को विप्लवकारी बनने से रोकने लगे। आप लोगों का विचार था कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने में सफलता की आशा रञ्च मात्र भी नहीं है और इससे राज रियासत सब चली जायगी तबाही ऊपर से होगी। परन्तु दयाल सिंह और अमर सिंह के इस गुट के विपरीत एक दूसरा दल कुंअर सिंह के दरबार में ऐसा भी था जो कुंअर सिंह को देश की आजादी के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में शरीक कराना चाहता था। इस दल के नेता थे हरेकृष्ण सिंह तथा रणदलन सिंह जो कुंअर सिंह के सब से बड़े विश्वासी मुसाहेब थे और तुलसी प्रसाद सिंह जो रण सिंह के वंशज और कुंअर सिंह के अपने चचेरे भाई थे।* दयालु सिंह के पुत्र ऋपुभंजन सिंह ने कुंअर सिंह को समझाया "अंग्रेज देश के बादशाह हैं और हम मामूली जमीन्दार मात्र हैं। न हमारे पास बन्दूकें हैं न तोपें और न फौजें। हम बादशाह के साथ किस तरह युद्ध कर सकते हैं? ऐसे काम से हमारा समूल नाश होगा। इसलिये आपका (पटना के कमीशन के बुलाने पर) पटना जाना ही अच्छा है।"

कुंअर सिंह ने "भतीजे की बात पर विश्वास नहीं किया। उनको विश्वास हो गया कि बेटा मर चुका पोता पागल है, उनकी सम्पत्ति के अधिकारी भाई भतीजे उन्हें (पटना) जाने की सलाह दे रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि उनकी सम्पत्ति के वे इच्छुक हैं'। †

अतः अमर सिंह को जब इस प्रयत्न में सफलता नहीं मिली तब वे तटस्थ होकर अपने घर मिठहाँ में रहने लगे। अमर सिंह का स्वभाव बहादुरों का स्वभाव था। वे मनस्वी और अपने वचन के पक्के थे। आप में राजपूतों की

---

*देखिये १८५७ के गदर का इतिहास लेखक शिवनारायण द्विवेदी पृ० ८७३ ८७४।

† देखिये १८५७ के गदर का इतिहास ले० शिवनारायण द्विवेदी पृ० ८७४

वीरता और आन भरी थी। छल फरेब अथवा ओछी चालाकी से आप दूर भागते थे। जो बात हाथ में लेते थे उसे अन्त तक पूरा करने की भरपूर चेष्टा करते थे। अतः कुंअर सिंह को विप्लव से रोकने में आपको जब असफलता मिली तब आपको इसी स्वभाव के चलते तटस्थता भी स्वीकार करनी पड़ी। आप के सद् और निःस्वार्थ परामर्श की जब सुनवाई नहीं हुई तब आपके लिए उसके पीछे पड़ा रहना स्वभाव के विरुद्ध पड़ा। परन्तु तब भी आपने अपने भाई भतीजे दयालु सिंह तथा रिपु भञ्जन सिंह की तरह अंग्रेजों को मदद देने के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं ही किया।

जब बीबीगञ्ज की लड़ाई (३ अगस्त १८५७) में हारकर कुंअर सिंह दल-बल के साथ जगदीशपुर आये और वहाँ शत्रु से डटकर लोहा लेने की तैयारी में लगे तब उन्होंने अमर सिंह के पास सहायता हेतु पुनः सन्देश भेजा। कहते हैं कि अमर सिंह ने इस बार भी भाई को अंग्रेजों के विरुद्ध मदद देने में अपनी असमर्थता इसलिये बतायी कि उनका पूर्व विश्वास अब भी दृढ़ था। दन्त-कथाओं और पवाँरों से यह बात स्पष्ट है कि कुंअर सिंह को बीबीगञ्ज की हार और जगदीशपुर में भावी आक्रमण की आशङ्का से सशङ्कित होकर वे सज्जन जो लड़ाई के पक्ष में नहीं थे विशेषकर अमर सिंह और दयालु सिंह के वन्शज अपनी स्त्रियों को रिस्तेदारों के यहाँ भेज देना उचित समझा। अतः जब अमर सिंह अपनी धर्मपत्नी को पालकी में बैठाकर आप घोड़े पर चढ़े उनको मायका पहुँचाने जा रहे थे तब जगदीशपुर के निकट एक ऐसी घटना घटी जिससे अमर सिंह को अपने पूर्व निश्चय को बदलने के लिए विवश कर दिया। पास के कुएँ पर तीन अहीरनी पानी भर रहीं थीं। उन्होंने इनको डोला के साथ जाते देखकर आपस में वार्ता करना शुरू किया। एक ने कहा—"बाबूजी त लड़तानी। ई बाबू कहाँ जा रहल बानी?" अर्थात् पिता कुंअर सिंह तो युद्ध कर रहे हैं। ये छोटे बाबू अमर सिंह कहाँ जा रहे हैं?

दूसरी ने कहा—"इहाँ का लड़ब? धाँधी तर के गाँजा पीअनिहार।" अर्थात् ये छोटे बाबू क्या लड़ेंगे? ये तो झुरमुट के नीचे बैठकर शिकार की खोज में बैठे-बैठे निश्चिन्त गाँजा पीनेवाले हैं?

मनमुटाव चलता रहा। जब जून १८५७ ई० में विद्रोह का सूत्र पात होने को हुआ और कुंअर सिंह का झुकाव विद्रोह की ओर होने लगा तब अमर सिंह भी दयाल सिंह तथा उनके वंशजों की तरह कुंअर सिंह को विप्लवकारी बनने से रोकने लगे। आप लोगों का विचार था कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने में सफलता की आशा रञ्च मात्र भी नहीं है और इससे राज रियासत सब चली जायगी तबाही ऊपर से होगी। परन्तु दयाल सिंह और अमर सिंह के इस गुट के विपरीत एक दूसरा दल कुंअर सिंह के दरबार में ऐसा भी था जो कुंअर सिंह को देश की आजादी के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में शरीक कराना चाहता था। इस दल के नेता थे हरेकृष्ण सिंह तथा रणदलन सिंह जो कुंअर सिंह के सब से बड़े विश्वासी मुसाहेब थे और तुलसी प्रसाद सिंह जो रण सिंह के वंशज और कुंअर सिंह के अपने चचेरे भाई थे।* दयालु सिंह के पुत्र रिपुभंजन सिंह ने कुंअर सिंह को समझाया "अंग्रेज देश के बादशाह हैं और हम मामूली जमीन्दार मात्र हैं। न हमारे पास बन्दूकें हैं न तोपें और न फौजें। हम बादशाह के साथ किस तरह युद्ध कर सकते हैं? ऐसे काम से हमारा समूल नाश होगा। इसलिये आपका (पटना के कमीशन के बुलाने पर) पटना जाना ही अच्छा है।"

कुंअर सिंह ने "भतीजे की बात पर विश्वास नहीं किया। उनको विश्वास हो गया कि बेटा मर चुका पोता पागल है, उनकी सम्पत्ति के अधिकारी भाई भतीजे उन्हें (पटना) जाने की सलाह दे रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि उनकी सम्पत्ति के वे इच्छुक हैं'।†

अतः अमर सिंह को जब इस प्रयत्न में सफलता नहीं मिली तब वे तटस्थ होकर अपने घर मिठहाँ में रहने लगे। अमर सिंह का स्वभाव बहादुरों का स्वभाव था। वे मनस्वी और अपने वचन के पक्के थे। आप में राजपूतों की

---

*देखिये १८५७ के गदर का इतिहास लेखक शिवनारायण द्विवेदी पृ० ८७३ ८७४।

† देखिये १८५७ के गदर का इतिहास ले० शिवनारायण द्विवेदी पृ० ८७४

वीरता और आन भरी थी। छल फरेब अथवा ओछी चालाकी से आप दूर भागते थे। जो बात हाथ में लेते थे उसे अन्त तक पूरा करने की भरपूर चेष्टा करते थे। अतः कुंअर सिंह को विप्लव से रोकने में आपको जब असफलता मिली तब आपको इसी स्वभाव के चलते तटस्थता भी स्वीकार करनी पड़ी। आप के सद् और निःस्वार्थ परामर्श की जब सुनवाई नहीं हुई तब आपके लिए उसके पीछे पड़ा रहना स्वभाव के विरुद्ध पड़ा। परन्तु तब भी आपने अपने भाई भतीजे दयालु सिंह तथा रिपु भञ्जन सिंह की तरह अंग्रेजों को मदद देने के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं ही किया।

जब बीबीगञ्ज की लड़ाई (३ अगस्त १८५७) में हारकर कुंअर सिंह दल-बल के साथ जगदीशपुर आये और वहाँ शत्रु से डटकर लोहा लेने की तैयारी में लगे तब उन्होंने अमर सिंह के पास सहायता हेतु पुनः सन्देश भेजा। कहते हैं कि अमर सिंह ने इस बार भी भाई को अंग्रेजों के विरुद्ध मदद देने में अपनी असमर्थता इसलिये बतायी कि उनका पूर्व विश्वास अब भी दृढ़ था। दन्त-कथाओं और पवाँरों से यह बात स्पष्ट है कि कुंअर सिंह को बीबीगञ्ज की हार और जगदीशपुर में भावी आक्रमण की आशङ्का से सशङ्कित होकर वे सज्जन जो लड़ाई के पक्ष में नहीं थे विशेषकर अमर सिंह और दयालु सिंह के वन्शज अपनी स्त्रियों को रिस्तेदारों के यहाँ भेज देना उचित समझा। अतः जब अमर सिंह अपनी धर्मपत्नी को पालकी में बैठाकर आप घोड़े पर चढ़े उनको मायका पहुँचाने जा रहे थे तब जगदीशपुर के निकट एक ऐसी घटना घटी जिससे अमर सिंह को अपने पूर्व निश्चय को बदलने के लिए विवश कर दिया। पास के कुएँ पर तीन अहींरनी पानी भर रहीं थीं। उन्होंने इनको डोला के साथ जाते देखकर आपस में वार्ता करना शुरू किया। एक ने कहा—"बाबूजी त लड़तानी। ई बाबू कहाँ जा रहल बानी?" अर्थात् पिता कुंअर सिंह तो युद्ध कर रहे हैं। ये छोटे बाबू अमर सिंह कहाँ जा रहे हैं?

दूसरी ने कहा—"इहाँ का लड़ब? धाँधी तर के गाँजा पीअनिहार।" अर्थात् ये छोटे बाबू क्या लड़ेंगे? ये तो झुरमुट के नीचे बैठकर शिकार की खोज में बैठे-बैठे निश्चिन्त गाँजा पीनेवाले हैं?

कहैं 'शिव कवि' जैसे गरुड़ गरब्र गहि,
अलि कुल दण्ड-दण्ड मेटत घमण्ड है ।
वैसे ही अमर सिंह कीरति अमर मण्डि,
फौज फिरङ्गानि को करी सुखण्ड खण्ड है ॥

नोट—यहाँ पर यह लिख देना आवश्यक है कि जो दरखास्त महाराज डुमराँव ने छोटे लाट बंगाल को ४ जून १८५६ में दी थी जिसमें अधिक हथिआर रखने की आज्ञा प्राप्त करने को प्रार्थना की गयी थी और जिसमें अपनी दी हुई सहायताओं का तिथिवार जिक्र किया गया था उस सूची में जगदीशपुर की लड़ाई में महाराज का रहना नहीं शामिल है। यद्यपि अन्य जगहों की लड़ाई में आपका उपस्थित रहना अपनी राजभक्ति के प्रमाण में लिखा हुआ है। इससे महाराज का उस लड़ाई में रहना सन्देहात्मक हो जाता है परन्तु यह भी हो सकता है कि जान-बूझ कर उसे छिपाया गया हो इस ख्याल से कि उससे बदनामी होगी।

अमर सिंह की इस व्यक्तिगत बहादुरी का फल यह हुआ कि इनके सैन्य संचालन के कार्य में अनुपस्थिति के कारण शायद कुछ त्रुटि आ गयी और सिपाही सेना अपने सेनानी को न देखकर अनुशासन हीन हो गई हो तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। और इसीसे शायद शत्रु सेना को विजय प्राप्त करने में सुविधा हुई अमर सिंह की इस त्रुटि को हरेकृष्ण सिंह ने पकड़ा और कुंअर सिंह का कान भरना शुरू किया। यही कारण है कि दोनों भाइयों में सहसराम पहुँच कर अनबन और मन मुटाव हुआ एक भाई दूसरे भाई को हार का कारण बताते रहे और आपस में लड़ते रहे, यहाँ तक कि दोनों अलग-अलग रहने लगे थे।*

---

*देखिये ३१-८-१८६५ ई० की किसी बँगाल के छोटे लाट के सचिव की रिपोर्ट जो गवर्नमेंट को भेजी गयी थी। जिसकी प्रतिलिपि पटना सेक्रेटरियट में वर्तमान है और जिसमें अमर सिंह के सम्बन्ध की बहुत सी बातें और उनकी गिरफ्तारी, मृत्यु तथा मुकदमा चालू करने की सूचनाएँ हैं। इसमें लिखा है :—

वहाँ कुंअर सिंह राम गढ़ के बलवाइयों और भागलपुर की इरेंगुलर सेना नं० ५ के लिये जो दिल्ली के बादशाह की आज्ञा से कुंअर सिंह से मिलने के लिये आने वाली थी रोहतास में कुछ दिनों तक प्रतीक्षा करते रहे, परन्तु चतरा (हजारी बाग) में उनकी पराजय हो जाने का समाचार सुनकर कुंअर सिह रींवा की ओर बढ़े पर अमर सिंह कुंअर सिंह के साथ नहीं गये* फिर भी वे विद्रोही बने रहे और अपने बलपर अंग्रेजों से अन्त तक लड़ते रहे।

कुँअर सिंह के पश्चिम चले जाने के बाद अगस्त, १८५७ से अप्रैल १८५८ तक अमर सिंह ने बिहार में अकेले विप्लव जारी रक्खा। उन्होंने विप्लव को जिलाया ही नहीं बल्कि छापा मार युद्ध लड़कर अंग्रेजों के दाँत भी खूब खट्टे किये। शाहाबाद जिले भर में उन्होंने अपना रोब और दबदबा इस अवधि में इतने सुन्दर रूप से कायम कर लिया था कि जिले के किसी गाँव में जब अंग्रेजों की पलटन या पुलिस बागी को पकड़ने जाती थी तब गाँववाले उसे मदद नहीं देते थे और अनेक अवसरों पर सरकारी पुलिस को गाँव से बाहर खदेड़ भी देते थे। †

It is said that the Brothers (on reaching Sasaram) querreled with each other, Kunwar Singh accusing Umer Singh of being cause of the disasterous defeat at Jagdish pur and that hence they kept aloof from each other.

* इस बात को पुष्ट करने वाले कागज केन्द्रीय आर्चाइव्ज में प्राप्त हैं।

† पटना डिवीजन के कमिश्नर श्री ई० ए० सैम्युएल्स ने पटना डिवीजन की पुलिस पर १८५७ की जो रिपोर्ट बङ्गाल के छोटेलाल के सचिव श्री ए० आर यङ्ग को ता० २५ सितम्बर १८५८ को लिखी थी उसके पृष्ठ ६ से ७ में लिखा है:—

"But the Rajput villagers & the people of Shahabad District, when Kunwar Singh left Arrah for the western contries would give no assistance to Europeans in apprehanding mutineers & on several

अर्थात् "कुँअर सिंह के पश्चिमीय देशों की ओर चले जाने पर भी शाहाबाद जिले के राजपूत गाँवों की जनता तथा ग्राम जनता यूरोपीयनों की बागियों को पकड़ने में कोई मदद नहीं देती थी बल्कि अनेकों अवसरों पर उनका सामना करती थी और सरकारी पुलिस को गाँव से बाहर खदेड़ देती थी। जब वह किसी बागी को पकड़ने के अभिप्राय से गाँव में घुसती थी। तब भी अमर सिंह और सिरनाम सिंह कैमूर के पर्वतों में रहा करते थे यद्यपि कि उनको पकड़ने अथवा पकड़वाने के लिए इनाम बोला गया था। अमर सिंह और सिरनाम सिंह के रहने का स्थान पर्वत के नीचे के कई गाँवों के निवासियों को मालूम था फिर भी वे इसको गोप्य रखते थे। उनकी यह वफादारी प्रशंसनीय अवश्य होती यदि यह अच्छे काम के लिए बरती जाती।"

फिर ३१।८।१८६५ को अमर के ऊपर अपनी रिपोर्ट तैयार करते हुए बङ्गाल के सचिव ने लिखा है*—"जब कुँअर जगदीशपुर में अपनी दूसरी हार के बाद रीवां की ओर चले गये तब उनके भाई अमर सिंह सासाराम के निकट की पहाड़ियों में जो ग्रेन्ट ट्रङ्क रोड के पास है, रहने लगे। अमर सिंह के जिम्में परिवार की औरतें रक्खी गयीं थीं।.........अमर सिंह की सेना अपने सुदृढ़ पहाड़ी स्थानों से जहाँ से वह आसानी से नहीं हटायी जा सकती थी बहुत खुराफात करती रही। यूरोपियनों की फैक्टरियाँ जला दी गयीं, गाँव लूट लिए गये। संक्षेप में, अमर सिंह का पहाड़ियों में रहना सरकार के लिए विशेष चिन्ता और भय की बात हो गयी।

---

occasions Rose & drove the police out of the villages when they entered for perpose of capturing the rebels. Still Umar Singh & Sirnam Singh, though leave rewards were offered for their capture continued to lurk in the Kaimoor Hills, their retreat known to the inhabitants of more than one village at the fort of the hills, but protected by a fidelity which would have been admirable if exhibited in better cause.

* पटना सचिवालय में यह कागज आज भी सुरक्षित है।

"उनकी गिरफ्तारी के लिए १०००) रु० का इनाम घोषित किया गया। इसके बाद सरकारी रिपोर्ट इस आशय की आयी कि इस इनाम की मात्रा काफी नहीं थी। अमर सिंह १८५७ के विप्लव का मुख्य प्रवर्तक है और वह आरा में बागियों की सेना का मुख्य नायक है, इसलिए इनाम की संख्या ५०००) बढ़ाकर कर दी गयी।" "फिर १८५८ के जून में जब यह मालूम हुआ कि अमर सिंह जगदीशपुर के जङ्गलों में उतर आये तो यह आज्ञा पटना डिवीजन के सभी जिलों में पुनः ऐलान होने के लिए भेज दी गयी।"

कुँअर सिंह सम्बन्धी शोध में आज जो नयी-नयी बातें केन्द्रीय तथा राज्य के कागजों से ज्ञात हो रही हैं उनसे अमर सिंह के सम्बन्ध की भी बहुत वैसी बातें ज्ञात होती जाती हैं जो आज तक प्रान्तीय तथा जिले के कागजों में अप्राप्य थीं। इन कागजों से यह सिद्ध है कि कुँअर सिंह के पश्चिम चले जाने पर अमर सिंह ने बिहार में कैमूर की पहाड़ियों में अपना आधिपत्य सुन्दर रूप से स्थापित कर लिया था और लम्बी अवधि तक गोरिल्ला युद्ध कला से अँग्रेजों को परेशान करते रहे। उन्होंने सहसराम और गया के बीच के मार्ग पर कब्जा करके रास्ता बन्द कर दिया था फिर बाद में तो वे पहाड़ियों के नीचे उतर आये थे, और गहमर, बनारस तथा अवध में भी उनके जाने की बातों का केन्द्रीय सरकारी कागजों में उल्लेख मिलता है। उन्होंने बिहार में भी विद्रोहियों को सङ्गठित करने की बहुत चतुर नीति अपनायी थी। उन्होंने संथालों को अपने पक्ष में करने का जो प्रयत्न किया था इसका भी उल्लेख केन्द्रीय आर्चीइव्ज के कागजों में मिलते है।

बिहार सचिवालय में ऐसे भी कागज मिले हैं जिनमें अमर सिंह का पलामू जिले के 'बोगची' जाति के नेता श्री नीलाम्बर शाही और पीताम्बर शाही से पत्र व्यवहार होना प्रमाणित है। १८५८ के प्रारम्भ में कुँअर सिंह के बिहार वापस आने के पाँच चार दिन पूर्व अमर सिंह ने नीलाम्बर और पीताम्बर को एक पत्र में लिखा था—

"मैं आपके पत्र से बहुत प्रसन्न हुआ। बाबू (कुँअर सिंह) अपने साथ सेना लिये आ रहे हैं और वे ४–५ दिन में यहाँ पहुँच जायंगे तब आप लोगों

को पूरी खबर भेजूँगा। वे ४० कोस की यात्रा समाप्त कर चुके हैं और इस जिले में साहबों के आदमी (अर्थात् अंग्रेज और उनके मददगार) शीघ्र भागने की तैयारी कर रहे हैं।*

इस तरह अमर सिंह का बिहार में कुँअर सिंह की गैरहाजिरी में भी विप्लव चलाते रहना और अंग्रेजों से सफल रूप से लड़ते रहना सरकारी कागजों से सिद्ध है। इस बीच में अनेकों युद्ध और मुठभेड़ हुए। पटना डिवीजन के कमिश्नर श्री ई० ए० सैम्युएल्स के १८५७ की पुलिस कार्य पर भेजी हुई उक्त रिपोर्ट के पैरा ७ वाँ (२५ सित० १८५८) से स्पष्ट है कि अंग्रेजों को १८५७ के जाड़े में अमर सिंह के विरुद्ध युद्धों में कुछ सफलता मिलने लगी थी। उन्होंने लिखा है—"कर्नल मिचेल के साहस पूर्ण कार्यों से जिनको उन्होंने इन पहाड़ियों (कैमूर की पहाड़ियों) में गत जाड़े के मौसम में किया है, बागियों के जत्थे की बची-खुची शक्ति भी सफल रूप से तोड़ दी गयी और रोहतास तिलौथू तथा पहाड़ के समीप के दूसरे स्थानों में सेना के टुकड़ियों को रखने की जो व्यवस्था की गयी थी उससे चन्द बागियों को सिमट कर एक जगह हो जाना पड़ा था। इस तरह किले में एक तरह से शान्ति स्थापित हो गयी थी।--------कुँअर सिंह अवध में थे और आशा की जाने लगी थी कि १८५८ का साल शाहाबाद में शान्ति और सुख का साल होगा। परन्तु ये आशाएँ कुँअर सिंह के आगमन से निराशा में परिणित हो गयीं।"

परन्तु सैम्युएल्स कमिश्नर की उक्त धारणा उस समय भी गलत ही थी क्योंकि अमर सिंह का नीलाम्बर और पीताम्बर शाही के नाम भेजा हुआ १८५८ का पत्र सिद्ध करता है कि भीतर-ही-भीतर क्रान्ति की महान अग्नि प्रज्वलित की जा रही थी और तूफान के पूर्व की ही वह शान्ति थी जिसको कमिश्नर ने शान्ति समझा था।

---

*देखिये पटना से प्रकाशित 'स्पार्क' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक के दिनांक २५ मई १९५५ के अङ्क के पृष्ठ ४ पर प्रकाशित A Picture of April 1858 & after" शीर्षक लेख। लेखक शेखर प्र० सिंह

अमर सिंह को बदनाम करने की कुचेष्टा

कुंअर सिंह की जीवनी से स्पष्ट है कि आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया आदि जिलों में लड़ते हुए कुंअर सिंह २१ अप्रैल, १८५८ को शिवपुर घाटपर रातोंरात गङ्गापार कर गये। गङ्गा पार करने पर प्रातःकाल डगलस की सेना गङ्गा के दूसरे छोर पर पहुँच गयी। उसने कुंअर सिंह के हाथी पर गोला मारा और उनकी बाँह आहत हुई। उसी दिन वे जगदीशपुर पहुँच गये। उसके एक ही दिन बाद २३ अप्रैल, १८५८ को आरा से अंग्रेज सेनापति लीग्रेंड ने जगदीशपुर पर हमला किया और कुंअर सिंह उस युद्ध में पूर्ण विजयी हुए। विजय के उपरान्त २६ अप्रैल को कुंअर सिंह की मृत्यु हुई। उनकी मृत्यु के बाद अमर सिंह का जगदीशपुर आना और क्रान्तिकारी सेना का नेतृत्व लेना तथा कुंअर सिंह का उत्तराधिकारी बनना सरकारी कागजों में बताया गया है।* परन्तु कुछ कागज अब ऐसे भी मिलेहैं जिनसे प्रमाणित है कि अमर सिंह २२ अप्रैल १८५८ को जगदीशपुर पहुँच गये थे और उन्होंने लीग्रेन्ड को स्वयं लड़कर परास्त किया था। इन पक्तियों के लेखक श्री दुर्गाशङ्कर प्रसाद सिंह के पितामह श्री नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह कविवर "देश" जिन्होंने वीवीगञ्ज की लड़ाई में कुंअर सिंह की अंगरक्षा में बड़ी बहादुरी दिखायी थी और कुंअर सिंह के साथ गङ्गापार कर जगदीशपुर आये थे का कहना था कि अमर सिंह कुंअर सिंह की प्रतीक्षा में पहले से ही जगदीशपुर के जङ्गलों में आ गये थे और कुँअर सिंह के जगदीशपुर पहुँचने पर वहाँ वे मौजूद थे। यह बात पूर्व कथित नीलाम्बर और पीताम्बर शाही के नाम भेजा हुआ अमर सिंह के पत्र से भी प्रमाणित होती है

---

*देखिये—बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव के ३१-८-१८६५ का पत्र जिसकी छपी प्रति विहार सेक्रेटेरियट में है।

"........After the Death of Kunwar Singh, Ummar Singh came down from hills & placed himself at the head of the insurge to lately commanded by his brother."

जिसमें स्पष्ट लिखा गया है कि कुंअर सिंह बड़ी सेना के साथ पश्चिम से दो-चार दिन के अन्दर आ रहे हैं और आजमगढ़ से ४० कोस का मार्ग तय भी कर चुके हैं। उक्त नर्वदेश्वरप्रसाद सिंह का यह भी कहना था कि कुंअर सिंह की चोट की संघातकता सब को नहीं बतायी गयी थी। उनके स्वास्थ्य की गम्भीरता गोप्य रखी गयी थी कुंअर सिंह की मृत्यु भी गोप्य ही रखी गयी और शव तेल में डाल कर कई दिनों तक सुरक्षित रखा गया था जब अंग्रेज जगदीशपुर की लड़ाई में हार गये तब कुंअर सिंह की मृत्यु घोषित की गयी और उनका शव सैनिक सम्मान के साथ उसी हाते में जलाया गया। अमर सिंह को उनका उत्तराधिकारी राजा तद्पश्चात् घोषित किया गया।

ली ग्रैण्ड के साथ अमर सिंह के युद्ध का वर्णन करते हुए नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह का कहना था कि अमर सिंह में व्यक्तिगत बहादुरी बहुत बढ़ी चढ़ी थी। वे अकेले शत्रु की सेना में घुसने में रञ्चमात्र भी भय नहीं खाते थे। ली ग्रैण्ड की सेना जब भागी तो अमर सिंह उसमें प्रवेश किये। ली ग्रैण्ड स्वयं उनपर आक्रमण किया। अमर सिंह ने उसका सामना किया। ली ग्रैण्ड घोड़े पर था। और तलवार से जनेया हाथ मार कर उसे काट गिराया। सहाई और दौड़ नामक उनके दो नौकरों ने जो ली ग्रैण्ड की मृत्यु के बाद उसकी सेना की भगदड़ की कहानी सुनाया करते थे। वह ठीक वैसी ही थी जैसा कि चित्र उन अंग्रेजों ने अपने अपने रिपोर्ट में १८५८ को लिखा था जिनके उल्लेख "१८५७ और उसके बाद के चित्र" शीर्षक लेख में प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

परन्तु पटना के कमिश्नर श्री० ई० ए० सैम्युएल्स तथा उसका उत्तराधिकारी कमिश्नर श्री फरगुशन ने कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद अमर सिंह के जगदीशपुर आने की बात लिख-लिखकर सत्य पर परदा डाल दिया है। श्रीसैम्युएल्स ने छोटे लाट के सचिव को लिखा था—'कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद अमर सिंह क्रान्तिकारियों द्वारा बुलाये गये और वे बहुत खेदपूर्वक आगा-पाछा करके जगदीशपुर आये। निःसन्देह उन्होंने बहुत सक्रिय भाग लड़ाई में नहीं लिया और वे अधिक अफीम के नशे में रहा करते थे। वास्तविक नेता और विश्वासी

व्यक्ति जिस पर विद्रोही सिपाही भरोसा करते थे हरेकृष्ण सिंह और उनके चार भाई थे।"*

कमिश्नर फरगुशन ने लिखा था—"इस आदमी (अमर सिंह) का नाम इस प्रान्त में बड़ा नेता के रूप में हर आदमी के मुख में है। वह एक अजीब असहाय पशु की तरह बना हुआ है और अधिकांश वह (अमर सिंह) दूसरों के हाथ का खिलौना हो रहा है। निःसन्देह वह किसी तरह नाममात्र का अपने भाई का उत्तराधिकारी बना और उसी हैसियत से काम भी करता रहा। अतः इतनी ख्याति प्राप्त कर लेने के बाद मेरी राय में यह राजनीति की दृष्टि से उचित नहीं होगा कि उसे क्षमा दिया जाय अर्थात् उसको जीवनदान की जो आज्ञा दी गयी है वह रद्द की जाय।" †

---

* देखिए छोटे लाट बंगाल के सचिव का अमर सिह पर तैयार किया हुआ (minute) मिनट दिनांक ३१ अगस्त १८६५ ई० जिसमें इन कमीशनों के नाम उद्धृत हैं। सैम्युएल्स के पास थे—

"The sopposition that as Umar Singh's name had been prominantly put forward by the Rebels after the Death of Kunwar Singh, he was the most influence of their leaders. This was a mistake. Umar Singh was sent for by the Rebels or Kunwar Singh's Death & came it is said with much Reluctance. He certainly took no active part in the proceedings & was greetly under the influence of open the actual leaders & the man whom the sepoys worked upon were Har Kishan Singh & his four brothers."

† देखिए पूर्वकथित बंगाल के छोटे लाट के सचिव का मिनट दिनांक ३१।८।१८६५ में उद्धृत फरगुशन के वाक्य—

"Mr. Furgusson said, "This man Umar Singh

दोनों कमिश्नरों के उपर्युक्त रिमार्क अपने-अपने पत्रों में उस समय लिखे गये थे जब निचले प्रान्त से क्रान्तिकारियों के हटा दिये जाने के बाद और राजकीय Amnesty घोषित हो जाने के उपरान्त पटना के कमिश्नर के पूछने पर केन्द्रीय सरकार ने यह सूचना दी थी कि बिहार के विद्रोहियों में केवल अमर सिंह ही ऐसे हैं जिनको क्षमा प्राप्ति से वंचित किया जाता है और जिनको केवल जीवनदान का आश्वासन भर दिया जा सकता है। इन दोनों कमिश्नरों ने केन्द्रीय सरकार से इस आज्ञा में संशोधन करने की प्रार्थना की थी और छोटे लाट की सिफारिश पर केन्द्रीय सरकार ने संशोधन स्वीकार भी कर लिया था।"

पटना के दोनों कमिश्नरों की उक्त रिपोर्टों में अमर सिंह के विरुद्ध जो बातें कही गयी हैं वे सहसा विश्वास करने योग्य नहीं हैं, क्योंकि वे पूर्वापरि कागजों से स्वयं खण्डित हो जाती हैं। पूर्व पृष्ठों में हम देख चुके हैं कि १८५७ के अगस्त से १८५८ के अप्रैल तक किस तरह अकेले अमर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध बिहार में विद्रोह जारी रक्खा और संयुक्त प्रान्त के भागों में वे गये, ये बातें सरकारी कागजों में ही नहीं बल्कि इन कमिश्नरों की रिपोर्टों से भी सिद्ध हैं। उनकी गिरफ्तारी के लिए ५००० का इनाम इन्हीं कमिशनरों की सिफारिश पर किया गया और तब भी वे नहीं पकड़े जा सके। कमिश्नर ने अपने २५ सितम्बर १८५८ की रिपोर्ट नम्बर १५१५ में* अमर सिंह के सफल और योग्य नेतृत्व को

---

is in every one's mouth as the Great Leader of this Province. He is a poor creature & in great meesure he was the tool of others. He now ever certainly became the nominal successor of Kunwar Singh & acted as such. Having gained that bad provinenc it would not in my opinion politic to pardon him."

* उक्त रिपोर्ट के पृष्ठ ६ पर लिखा है :—

But the Rajput villagers & the people of Shahabad District when Kunwar Singh left Arrah for western

स्वीकार किया है और कहा है कि गाँव में पुलिस के जाने पर गाँववाले उसे खदेड़ देते थे और बागियों का कोई पता नहीं बताता था। उसी कमिश्नर ने १ महीने के बाद अमर सिंह को अयोग्य, अफीम खानेवाला और नाममात्र का नेता लिखा है। यह कहाँ तक मान्य हो सकता है। पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं।

अमर सिंह की नवाबी जो अप्रैल १८५८ के अन्त से दिसम्बर १८५८ तक शाहाबाद जिले में रही और जिसने एक तरह से अंग्रेजी सत्ता को शाहाबाद से नष्ट कर दिया था उससे जलकर ही जाति-भेद के कारण अंग्रेज कमिश्नरों ने शायद ऐसी रिपोर्टों को भेजकर लोकप्रिय योग्य अमर सिंह को इतिहास और सरकारी कागजों में नगण्य और लघु कहने की चेष्टा की हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जो अंग्रेज "ब्लैक हाल ऑफ कलकत्ता" की कहानी रच सकता है उसके लिये ऐसा लिखना असम्भव नहीं कहा जा सकता है। हरेकृष्ण सिंह का प्रभाव विद्रोहियों पर अवश्य था क्योंकि शुरू से अन्त तक वे बागी सिपाहियों के साथ दे रहे थे।

शासन तथा सेना दोनों में से उनको कमाल हासिल था, परन्तु इसका यह मतलब कदापि नहीं लगाया जा सकता है कि अमर सिंह उनके सामने नगण्य थे

---

oontries would give no assistance to Europeans in apprihanding mutineers & on several occasion rose and drove the police out of the villages when they entered for perpose of capturing the Rebels.

Still Umar Singh & Sirnam Singh through leave rewards were offered for their capture continued to lurk in the Kaimoor hills, their retreat known to the inhabitants of more than one village at the fort of the hills, but protected by a fidelity which would have been anmirable if exhibited in better cause.

और हरेकृष्ण सिंह अमर सिंह का चार्ल्स मार्टेल थे* और अमर सिंह Roifain Cant (रोईफेन कैंट) थे। यह सही है कि अमर सिंह शुरू से ही गाँजा का सेवन करते थे, यह भी संभव हो सकता है कि अंतिम दिनों में जब अतिसार रोग का वे शिकार बन चुके थे तब दवा के रूप में अफीम का सेवन शुरू कर दिया हो। परन्तु इन सब बातों का अर्थ यह कदापि नहीं लगाया जा सकता कि अमर सिंह पक्के अफीमची थे और उनमें कोई बहादुरी या सैन्य संचालन की शक्ति, शासन-पटुता और संगठन शक्ति अथवा व्यक्तित्व का सर्वथा अभाव था और हरेकृष्ण सिंह उनका चार्ल्स मार्टेल थे।

अधिक संभव है कि श्री मणि कलक्टर ने अमर सिंह की बढ़ती हुई ख्याति और अंग्रेजों के विरुद्ध कार्य देख कर जाति-भाव के द्वेष से अनुप्राणित हो ऐसी कहानी उन्हें बदनाम करने के लिए गढ़ी हो। अतः श्री सैम्युएल्स तथा उनके उत्तराधिकारी श्री फर्गुसन के विद्रोह शान्त होने के बाद विरोधात्मक रिपोर्ट को अक्षरशः मान लेना और अमर सिंह के ऐसे जनप्रिय, शक्ति शाली, और महान पराक्रमी नेता को नगण्य करना किसी तरह भी सच्चे ऐतिहासिकों को मान्य नहीं होगा।

जब अमर सिंह की जन प्रियता उक्त दोनों कमिश्नरों को मान्य थी तब यह कैसे विश्वास किया जा सकता है कि सारे बिहार प्रान्त की जनता ने उनको गुण-हीन होने पर भी अपना महान् नेता माना होगा। इन कारणों के आधार पर श्री सैम्युएल्स और फर्गुसन द्वारा कही गयी उपर्युक्त निंद्य बातों के पीछे उनको निजी जाति गत द्वेषपूर्ण राजनीतिक भावना की प्रधानता का होना ही अधिक संभव जान पड़ता है। यदि वे सचमुच विद्रोह में सक्रिय भाग नहीं लिये थे तो उनके जीवन को Amnesty के अन्दर क्षमादान प्राप्त करने से वंचित रखने की

---

* देखिये, शाहाबाद के कलक्टर श्री मणि की वह रिपोर्ट जिसमें उन्होंने शाहाबाद के प्रमुख बागियों का विवरण दिया है और अमर सिंह Roifan cant कहा है जो बंगाल के छोटे लाट के सेक्रेटरी श्री ए० आर० यंग के पत्र नं० ६२४ दिनांक २-१-१८४६ के साथ नत्थी है।

सिफारिश उन दोनों कमिश्नरों ने क्यों की? यदि वे निर्दोष थे तो उन्हें Amnesty में क्षमादान मिलना चाहिये था और गवर्नर जनरल ने जो अमर सिंह के जीवन दान की गारंटी देने की आज्ञा निकाली थी उसमें इन दोनों को बाधक होकर उसे रद्द न कराना चाहता था।

अमर सिंह के संग्राम

कुँअर सिंह के देहान्त के बाद अमर सिंह सेना के नायक बने। भाई के उत्तराधिकारी के रूप में राजा भी घोषित किये गये। २३ अप्रैल १८५८ के युद्ध से ली ग्रैंड को पूर्ण पराजित करके उन्होंने आरा पर धावा किया। यद्यपि यह आक्रमण सफल नहीं हुआ फिर भी निष्फल भी नहीं गया। उत्तेजित जनता आपकी सेना में आकर सम्मिलित होने लगी। अप्रैल १८५८ से दिसम्बर १८५८ तक अमर सिंह ने अंग्रेजी सेना के साथ युद्ध जारी रक्खा और छापा मार युद्ध कला से उन्हें परेशान करते रहे। ली ग्रैंड की मृत्यु के बाद आरा के अंग्रेजों को बड़ा भय हुआ। अमर सिंह कहीं आरे पर आक्रमण कर हम लोगों का जानमाल खतरे में नहीं डाल दें इस बात की चिन्ता पल-पल में वे करने लगे। इधर पूर्वोक्त कप्तान लु गार्ड ने कप्तान डगलस को पत्र देकर बहुत शीघ्र बुलाया। उधर आजमगढ़ से सेनाध्यक्ष करफील्ड भी लुगार्ड साहब की सेना में आ मिले। लखनऊ का विजेता कप्तान हॅलॉक भी अपनी जबरदस्त घुड़सवार पलटन लेकर इन लोगों की सहायता में आ डटे। अभिप्राय यह कि एक ही अमर वीर का मुकाबला करने के लिये अनेक कप्तान अपनी फौज लेकर भोजपुर के समराङ्गण में उतर आये। इन सबों ने अपनी सम्मिलित शक्ति द्वारा बाबू अमर सिंह और उनकी सेना को परास्त करने के लिये भरपूर प्रयत्न किया; परन्तु सबका सारा परिश्रम विफल चला गया। इधर बाबू अमर सिंह भी इतनी बड़ी सेना से डट कर कभी लड़ाई नहीं कर सकते थे, अतएव अंग्रेजी सेना द्वारा आक्रमण होने पर वह अपने पलटन लें कभी बिहिया, कभी पीरो में और कभी सहक वार (सतवाद पुरवा) के जंगलों में छिप जाते और जब कभी मौका पाते थे तो अंग्रेजी फौज पर टूट पड़ते थे। इस प्रकार उनपर आकस्मिक आक्रमण कर उनकी शक्ति, बल और पराक्रम

को छिन्न-भिन्न कर डालते थे ।"* अमर सिंह को लड़ाइयों के सम्बन्ध में १८५७ के गदर में इतिहास लेखक श्री शिवनारायण द्विवेदी पृ० ६१५—१६ में लिखा है—"कप्तान लुगार्ड पहले करफील्ड के आने की प्रतीक्षा करता रहा पर जब उसे मालूम हुआ कि अमर सिंह आरा पर हमला करने वाले हैं तब वह लड़ाई के लिये तैयार हो गया। और अमर सिंह से दीर्घकाल व्यापी संग्राम का सूत्र पात हुआ। 'अमर सिंह की सेना जंगल से निकल कर आरा की ओर चली थी कि लुगार्ड के सवारों और गोलंदाजों ने उनका रास्ता रोका। इसके बाद लुगार्ड ने अपनी सेना के तीन हिस्से करके लड़ते-लड़ते जगदीशपुर पर कब्जा किया। अमर सिंह की सेना शतवर पुर (सतबरद पुरवा, आधुनिक नाम दुलौर जो जगदीशपुर से दो मील पूरब है) में रहने लगी।' फिर लुगार्ड ने वहाँ भी चढ़ाई की। इधर सहसराम के सेनापति करफील्ड ११ मई १८५८ को जगदीशपुर से ७ मील दक्षिण पीरो नामक स्थान पर लुगार्ड से मिला। सहसराम से पीरो तक उसे अनेक स्थानों पर अमर सिंह की सेना से संग्राम करना पड़ा था। जिस दिन करफील्ड लुगार्ड से मिले उसी दिन लुगार्ड की सेना से सिपाही हेतमपुर (जगदीशपुर से तीन मील पश्चिम) नामक स्थान में हार चुके थे। अब एक ओर लुगार्ड और दूसरी ओर करफील्ड उनके पराक्रम को तोड़ने लगे। २० मई, १८५८ को अंग्रेजी सेना का एक अफसर मारा गया। २७ जून को दलीपपुर (जगदीशपुर से ५ मील दक्षिण) नामक स्थान पर सिपाही हारे।"

दलीप-पुर में हार कर भी सिपाही निराश नहीं हुए। उनका एकदल डुमराँव के निकट एक नील की कोठी तोड़ आया। दूसरे दल ने बक्सर के पास राजपुर नामक गांव को लूट लिया। इससे शाहाबाद में फिर आतङ्क छा गया। अंग्रेज फिर चिन्तित हुए। अंग्रेजी सेना को भी कम कष्ट नहीं हुआ। वह बहुत थक गयी! गर्मी के मारे परेशान हो गयी, हर समय जङ्गली और पहाड़ी रास्तों मे घूमते-घूमते हैरान हो गयी। दूसरी ओर सिपाही मानो नित्य नये उत्साह से उनके सामने आते थे सेनापति लुगार्ड ने २ जुलाई को अपनी सेना को दो हिस्सों

---

* देखिये, बाबू कुँअर सिंह नामक पुस्तक ले०—मथुरा प्रसाद दीक्षित पृ० सं० १०७।

में बांटा। एक हिस्सा केशवा (दलीपपुर से एक मील पूरब) और दूसरा दलीप पुर की ओर बढ़ा। यहाँ रास्ता बनवा लिया गया था (सम्भवतः अंग्रेजों के सहायकों द्वारा), इससे उसकी विजय हुई! पर जीतने पर भी सिपाहियों का दल भंग न हुआ। वे फिर दूसरे स्थान पर एकत्र हुए। १५ जून १८५८ तक लुगार्ड उनसे युद्ध करते रहे, परन्तु उन्हें पूरी तरह से हरा न सके। लगातार लड़ाई करते करते थक कर अन्त में लुगार्ड ने सेनापति पद त्याग कर इंगलैंड की राह ली। अंग्रेजी सेना एक स्थान पर छावनी डालकर पड़ गयी। अंग्रेजी सेना को एक स्थान पर हाँफते देखकर अमर सिंह ने अपने पहले वाले स्थान पर फिर कब्जा किया। इस प्रकार जो ताकत कम हो गयी थी, वह उन्होंने फिर संग्रह कर ली।"*

"ब्रिगेडियर डगलस लुगार्ड के स्थान पर सेनापति बने। उन्होंने सेनापति पद ग्रहण करते ही सुना कि अमर सिंह ने गया का जेलखाना तोड़ दिया सब कैदी निकल गये। पुलिस और कैदियों ने मिलकर अंग्रेजों को शहर से निकाल दिया। अंग्रेज दूसरे स्थान में अपनी रक्षा कर रहे हैं। इधर आरा की रक्षा के लिए जो हिन्दुस्तानी सेना रखी गयी थी वह उत्तेजित हो रही है। इस प्रकार शाहाबाद से फिर अंग्रेजी सत्ता हिलने लगी।"†

ऐसे समय में डगलस पर दाना पुर से आरा तक सैन्य संचालन का भार ७००० शिक्षित सैनिकों के साथ दिया गया। उन्होंने लुगार्ड की हार का कारण समझा और उससे लाभ उठाना चाहा। बरसात शुरू हो जाने के कारण जगदीश पुर के जंगलों में लड़ाई को जारी रखना हानि के अतिरिक्त लाभ कर नहीं समझा। उन्होंने बरसात भर जगदीशपुर के जङ्गलों में रास्ता बनाने का कार्य शुरू कराया। अपनी सेना को टुकड़ियों में बाँट कर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर इस तरह रक्खा कि हुक्म पाते ही एक दूसरे से मिल सकें और विश्वासी सैनिकों को

---

* देखिये, १८५७ के गदर का इतिहास ले० शिवनारायण द्विवेदी पृष्ठ ६१५–६१६।

† देखिये, १८५७ के गदर का इतिहास ले० शिव नारायण द्विवेदी पृष्ठ ६१५–६१६।

वेष बदल कर शत्रु का भेद लेने के लिए इधर उधर भेजा तथा राजभक्त लोगों से भेद और सहायता लेकर जनता को अपने पक्ष में लाने का काम शुरू किया। इस समय बाबू दयाल सिंह के पुत्र रिपुभंजन सिंह और गुमान भंजन सिंह तथा डुमराँव के महाराज महेश्वर बक्स सिंह पुरस्कृत और प्रोत्साहित होकर सैनिक और सिविल अधिकारियों के इशारे पर दिल खोलकर अंग्रेजों को मदद पहुँचा रहे थे। इधर अमर सिंह भी बैठे नहीं थे। उन्होंने जगदीशपुर पर फिर कब्जा कर लिया। जुलाई से सितम्बर तक शाहाबाद के विभिन्न स्थानों पर अपनी प्रभुता स्थापित की। गंगा के दक्षिण और सोन नदी के पच्छिम हर स्थान पर उनकी प्रधानता थी। ६ सितम्बर को रामपुर में एक सेनापति ने अमर सिंह को हराया। दूसरे सेनापति ने २० सितम्बर को सोन नदी पर अमर सिंह की नावों को नष्ट किया। पर इन पराजयों की परवाह न करके अमर सिंह ने आरे पर हमला किया और वहाँ की सवार-सेना को त्रस्त कर दिया।

१२ अक्टूबर से डगलस ने सभी विघ्न-बाधाओं का ख्याल छोड़कर आक्रमण करना शुरू किया। इस बीच डगलस ने शत्रु सेना का ज्ञान और भेद तथा उनकी संख्या और रहने का स्थान पूर्व कथित अंग्रेज भक्तों से जो खुलेआम और छिपकर अंग्रेजों को मदद पहुँचा रहे थे, पूरा प्राप्त कर लिया था इसी बीच उसने जंगलों को भी इस तरह कटवा दिया था कि अंग्रेजी सेना अन्दर प्रवेश कर सके उसने अपनी सेना के सात दल बनाकर अमर सिंह की सेना के मुख्य-मुख्य स्थानों पर, जिनका भेद वह पूर्व कथित राजभक्त भेदियों द्वारा पा चुका था, तैनात किया और वहाँ से अमर सिंह की सेना को जगदीशपुर की ओर खदेड़ना शुरू किया। परन्तु ब्रिगेडियर डगलस को यहाँ भी सफलता नहीं मिली। यद्यपि अमर सिंह की साढ़ेचार हजार सेना भिन्न-भिन्न स्थानों पर हारने लगी फिर भी अंग्रेजों की ७००० सेना उनको खदेड़ कर जगदीशपुर तक न ला सकी। सात स्थानों में से ६ अंग्रेजी सेना नायकों ने अपनी ओर से निर्धारित समय पर हमले किये पर सातवें को हमला करने में जो किसी कारण वश पाँच घण्टे की देर हो गयी, उतने समय में उसी ओर से अमर सिंह की सारी सेना निकल पड़ी।

सेनापति डगलस इस स्कीम में सफलता न मिलने से बहुत चिन्तित हुए

और संभवतः आगे की लड़ाइयों में भी उन्हें सफलता नहीं मिली होती यदि सर हेनरी हॉवेल ने अवध में घुड़सवारों द्वारा आगे बढ़कर शत्रु को घेरने और पैदल सेना द्वारा पीछे से हमला करने के अपने सैन्य संचालन के तरीके को न बताया होता। इस तरीके से ६० सवारों को लेकर सर हेनरी सोन नदी के किनारे सिपाहियों को रोकने के लिए तैनात हुए। अमर सिंह ने बारह घण्टे तक प्रचण्ड युद्ध कर के अपने स्थानों की रक्षा की पर अन्त में वे दक्षिण-पश्चिम की ओर हटने लगे। हावेल ने घोड़े पर सवार होकर उनका पीछा किया सिपाहियों के मार्ग की ये लोग पता रखने लगे। सिपाहियों के जगदीशपुर के जङ्गल में घुसने की चेष्टा करने पर जब उन्हें सफलता न मिली तब वे पश्चिम की ओर बढ़े। इधर हावेल के सैनिक सवार उनके पीछे थे, खेतों में पानी भरा था, इसलिए चलने में कठिनाई होने लगी। २० अक्टूबर को तीसरे पहर नोनदी (नोनाडीह थाना-पीरो) नामक स्थान पर घोड़ों से उतर कर सैनिक उनको रोकने लगे। पीछे से पैदल सेना पहुँची। इस दों तरफे आक्रमण से परेशान होकर अमर सिंह गन्ने के खेत में छिप रहे। सिपाही थक चुके थे। तीसरे पहर में अपने भोजन की तैयारी करने लगे, इसी समय हावेल के सवारों ने देशद्रोही भेदियों से पता पाकर घोड़ों से उतर उनके मार्ग को रोका इधर पता पाकर डगलस की सेना भी बढ़ी पर डगलस कीं सेना ने गलती की। वह सिपाहियों के पीछे न पहुँच कर हावेल की सेना के पास पहुँची। डगलस की इस गलती से अमर सिंह की सेना वहाँ से भी निकल गयी। सन्ध्या हो चुकी थी उसमें ४० घण्टे की सफर में ६३ मील चलकर अमर सिंह शाहाबाद के दक्षिण के पहाड़ियों में पहुँचे। २३ अक्टूबर को हावेल के सवारों ने पहाड़ों पर अमर सिंह का पीछा किया। पाँच दिन और पाँच रात में दो सौ एक मील रास्ता पार कर के अमर सिंह ने हावेल से अपनी रक्षा की। इस समय नाना साहब हट कर नेपाल की तराई में पहुँच चुके थे और केन्द्रीय-आर्चाइव्ज के कागजों से यह स्पष्ट है कि अमर सिंह नेपाल की तराई भूमि में नाना साहब के सिपाहियों का नेतृत्व ग्रहण करने के उद्देश्य से पहुँचे। परन्तु वहाँ नेपाल के प्रधान मन्त्री राणा जङ्गबहादुर ने इनको बिना युद्ध के ही चालाकी से अपने कब्जे में कर लिया। कहते हैं कि

अमर सिंह ने नेपाल के हिज़मैजेस्टी जो अमर सिंह के सगोत्रिय पँवार राजपूत हैं— से सहायता चाही और राणा ने इस आश्वासन पर की वे इन्हें सहायता देंगे, पहले उनको अपने आधीन करने में सफलता पायी और फिर बाद को लड़ाई जारी रखने की निरर्थकता समझ कर इस बहाने से उन्हें अंग्रेजों के हवाले किया कि अंग्रेज राणा जङ्गबहादुर की सिफारिश से जगदीशपुर का राज्य अमर सिंह को वापिस दे देंगे।

अमर सिंह के, राणा जङ्गबहादुर द्वारा पकड़े जाने और अंग्रेजों के हवाले किये जाने आदि की बातें बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव द्वारा तैयार की गयी उक्त रिपोर्ट दिनांक ३१।८।१८६५ में उल्लेख की गयी है। उस मिनट (रिपोर्ट) में लिखा है, "१८५६ के दिसम्बर में उत्तर-पश्चिम प्रान्त की सरकार ने बङ्गाल की सरकार को रिपोर्ट की कि अमर सिंह पकड़े गये हैं और इस समय गोरखपुर जेल में रक्खे गये हैं। उसी रिपोर्ट में बङ्गाल की सरकार से यह बात भी पूछी गयी थी कि "अमर सिंह अपने किये हुए अपराधों को जाँचने के लिए बङ्गाल भेजे जाँय या उन्हें गोरखपुर में ही रखकर उनके उत्तर-पश्चिम प्रान्त के जिलों में या गोरखपुर में किये गये अपराधों के मुकदमे चलाये जायँ। उक्त मिनट में आगे लिखा है:—

"बङ्गाल की सरकार ने इस पत्र के उत्तर में उत्तर-पश्चिम की सरकार को सूचित किया कि चन्द दशाओं में अमर सिंह का मुकदमा उनके हीं जिले में देखना बङ्गाल की सरकार की राय में सबसे अधिक उचित और उदाहरणीय होगा। परन्तु उनके निरन्तर बलवा में भाग लेने तथा विद्रोह का नेतृत्व करने के अतिरिक्त यदि उन पर बलवे में दूसरे तरह के अपराध करने के जुर्म वहाँ लगाये जा सकें अथवा उन पर फाँसी की सजा के योग्य अपराध उत्तर-पश्चिम प्रान्त में किये जाने का आरोप लगाया जा सके तब यह वांछनीय होगा कि उनका मुकदमा उसी प्रान्त में देखा जाय अन्यथा शाहाबाद जिले में ही उनके मुकदमे की जाँच करना सर्वोत्तम होगा।"

छोटे लाट के सचिव ने मिनट में आगे लिखा है:—

"चूँकि अमर सिंह के विरुद्ध गोरखपुर जिले में किसी ऐसे अपराध करने

का जुर्म नहीं आरोपित था जिससे उनको फाँसी की सजा दी जा सकती, उत्तर-पश्चिम की सरकार ने इस आशय की आज्ञा निकाली कि अमर सिंह शाहाबाद के मजिस्ट्रेट के पास भेज दिये जायँ, लेकिन उसी पत्र में बङ्गाल की सरकार का ध्यान विदेशीय विभाग की उस आज्ञा की ओर आकर्षित किया गया था जिसमें निर्देश था कि वे व्यक्ति जो नेपाली कमाण्डर द्वारा पकड़े गये हों अथवा अपने को नेपाली कमाण्डरों के समक्ष समर्पित किये हों और जिन पर केवल नेता बनने या विप्लव प्रचार करने का अभियोग हो और हत्या का अभियोग न लगाया गया हो, उन पर न मुकदमा चलाया जायगा और न उन्हें सजा दी जायगी बल्कि वे नजरबन्द रक्खे जायँगे और इसकी रिपोर्ट भारत सरकार को भेजकर उसके अन्तिम निर्णय के लिए प्रतीक्षा की जायगी।"

फिर आगे उसी मिनट में कहा गया है:—

"अमर सिंह की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में कोई कागज इस आफिस में (बङ्गाल के छोटे लाट के आफिस में) नहीं है पर उपर्युक्त आदेश को दृष्टि में रखते हुए यह अनुमान किया जा सकता है कि या तो वे नेपाली कमाण्डरों के द्वारा पकड़ लिये गये या उनके समक्ष आत्म-समर्पण किया। अमर सिंह के शाहाबाद के अधिकारियों के पास भेजे जाने की खबर के सूचना वाले पत्र-प्राप्ति के थोड़े ही दिन बाद पटना के कमिश्नर ने रिपोर्ट की कि अमर सिंह गोरखपुर में मर गये। इस रिपोर्ट की पुष्टि उत्तर-पश्चिम के प्रान्त की सरकार ने भी की। उक्त सरकार ने जो गोरखपुर के सिविल-सर्जन की दी हुई सर्टिफिकेट को भेजी है उससे प्रकट होता है कि अमर सिंह गोरखपुर के जेल के अस्पताल में ३ जनवरी (१८५९) को भर्त्ती किये गये। उनको पुराने अतिसार की बीमारी थी जिससे उनका बल निरन्तर बीमारी के कारण तथा अति अधिक मात्रा में अफीम सेवन के प्रभाव से बिल्कुल घट गया था। वह ५ फरवरी तक किसी तरह जीवित रहे और निर्बलता के कारण वे मर गये।"*

---

* देखिए, बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव की ३१–८–६५ की वह रिपोर्ट जिसमें उन्होंने अमर सिंह के सम्बन्ध की बातें शोध करके लिखी है। जिसकी छपी प्रतिलिपि पटना सचिवालय में मौजूद है।

यहाँ इन कागजों से यह बात सिद्ध होती है कि भारत सरकार का विदेशी विभाग के विरुद्ध उत्तर-पश्चिम-सरकार के ध्यान आकर्षित करने पर भी बङ्गाल सरकार की पटना डिवीजन की नौकरशाही ने अमर सिंह पर मुकदमा चलाना निश्चित किया और उत्तर-पश्चिम की सरकार ने भी उन्हें नजरबन्द न रखकर जेल में बन्द रखा। यह सब कार्य केन्द्रीय सरकार के बिदेशी विभाग की आज्ञा के विरुद्ध अमर सिंह को फाँसी देने के लिए पटना डिवीजन की नौकरशाही द्वारा किये गये थे। उत्तर-पश्चिम प्रान्त ने अमर सिंह के ऊपर हत्या का कोई अभियोग न होने पर भी उन्हें नजर बन्द न रख कर जेल में रखा। और यदि कोई हत्या का अभियोग होता तो इन्हें वहीं फाँसी देने का भी कुचक्र रचा जाता। वहाँ ऐसा केस बनाया भी नहीं जा सकता था क्योंकि गोरखपुर में अमर सिंह गये ही नहीं थे। बङ्गाल सरकार के पास भी उस समय अमर सिंह के विरुद्ध हत्या का कोई अभियोग नहीं था, क्योंकि सैम्युएल्स तथा फर्गुसन दोनों कमिश्नरों ने उनको बलवे में किसी प्रकार भी सक्रिय भाग न लेने की रिपोर्ट भारत-सरकार के पास पहले ही भेज दी थी पर तब भी उनको शाहाबाद में मुकदमे के लिए क्यों बुलाया गया और क्यों नहीं उत्तर पश्चिम प्रांत की सरकार के ध्यान आकर्षित करने पर भी उन्हें नजर बन्द रखने की सिफारिश की गयी। ये प्रश्न ऐसे हैं जिनसे तद्कालीन नौकर शाही को अमर सिंह को साधारण कैदी जैसा फाँसी देने की खोटी नियत साबित होती है। परन्तु ईश्वर को अमर सिंह को इन अपमानों से बचाना था। उसने उनको मृत्यु प्रदान की और इन कुचक्रों के कार्यान्वित होने के पूर्व इह लोक से चल बसे।

अमर सिंह की शासन और सैन्य व्यवस्था

अप्रैल १८५८ में नेतृत्व ग्रहण करने के बाद ही अमर सिंह ने शाहाबाद जिले भर में अपनी सेना भेज कर अपना आधिपत्य स्थापित किया। पटना के कमिश्नर श्री ई० ए० सैम्युएल्स ने अपने १८५७ के पुलिस कार्य पर भेजी हुई रिपोर्ट नं० ७५१५ दिनांक १५ सितम्बर १८५८ में बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री ए० आर० यंग को लिखा था—

"In the month of June last the troops retired in to quarters, & the rebels immediatly took possession of a large portion of the interior of Sahabad. establishing everywhere. Thanas & Tahsildaries appointing judges, magistrates & collectors, conomine & even converting buildings into jails & holding revenue sales,"

"Nor although we can scarcely be said to have held any territory in Shahabad for the last three months beyond a days' march from any military station, have we had any difficulty in obtaining any accurate intelligence of the rebels movements and proceedings."

"We see its constaintly asserted that through out this business the rebels have had excellent information while ours has been very defective."

इस कार्य में हरेकृष्ण सिंह ने अमर सिंह को भरपूर सहायता की थी। जो कागज जगदीशपुर कीं क्रान्तिकारी सरकार की कचहरी से बरामद करके हरेकृष्ण सिंह के मुकदमे में पेश किये गये थे* उनसे सावित है कि अमर सिंह को क्रान्तिकारी सरकार बहुत ही व्यबस्थित रूप से चालू की गयी थी। पटना के कमिश्नर ने लिखा था कि वह सरकार भी अंग्रेजों की चलायी पद्धति के अनुसार कायम की गयी थी। परन्तु जानना चाहिए कि अंग्रेजी शासन पद्धति तथा जमीन की व्यवस्था मुगल सम्राट अकबर की चलायी पद्धति पर आधारित थी। वह अंग्रेजों की अपनी पद्धति नहीं थी। न्याय विभाग में फौजदारी और दीवानी दोनों तरह के मुकदमे और उनके उचित निर्णय होते थे। परवाने अथवा दर्खास्त के ऊपर धर्म और ईश्वर तथा न्याय के नाम पर साची के वाक्य उद्धृत रहते थे।* एक अदालत

*देखिये, हरेकृष्ण सिंह के केस की प्रारम्भिक प्रोसीडिंग और उनकी गवाहियाँ तथा पटना के कमिश्नर एच० ओ० ए० फर्गुसन का पत्र नं० ४००

ग्राम भी खोली गयी थी जिसके चार सदस्य थे शंकर मिश्र, मुलुक सिंह, द्वारका माली और मंगल सिंह।† इन नामों के देखने स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति के सदस्य भी इसमें रखे गये थे।

अमर सिंह ने अपने समय में सिक्का भी चलाया था जिस पर खुदा था—
"सिक्के जदशाह कुँअर सिंह पर वलायत कम्पनी"* यह सिक्का प्राप्त नहीं है।

सेना विभाग का संचालन तो और सुन्दर ढंग से किया गया था इसका संक्षिप्त और साधारण आभास आरा के कलक्टर श्री मणि द्वारा भेजी गयी उस तालिका से मिलता है जिसमें उन्होंने अमर सिंह की सेना के प्रमुख ४२ अधिकारियों और नेताओं के नाम विवरण के साथ पटना के कमिश्नर के पास भेज कर एमनेस्टी (Amnesty) में माफी देने और न देने योग्य व्यक्तियों के नाम पर अपने नोट दिये थे।*

उससे स्पष्ट है कि कुल ४००० सेना जो कुँअर सिंह के साथ आयी थी और अमर सिंह की ५०० सेना को छोटी-छोटी टुकड़ियों में बाँटकर विभिन्न उपाधिधारी अफसरों के अधीन जिले भर में नियुक्त कर दिया गया था। इन टुकड़ियों के नाम भी उन स्थानों के नाम पर रक्खे गये थे जहाँ की रक्षा या संग्राम का भार उन पर छोड़ा गया था, जैसे कारी साथ डिवीजन, चौगाईं डिवीजन

दिनांक २२ नवम्बर १८५६, जो छोटे लाट बंगाल को भेजा गया था और जिसमें इन कागजों के अंग्रेजी अनुवाद भी शामिल हैं।

† देखिये, बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री ए० आर० यंग का पत्र सं० ४२४ दिनांक २४ जनवरी १८५६ जो फोर्ट विलियम कलकत्ता से बड़े लाट के पास भेजा गया था। इस पत्र में पटना डिविजन के कमिश्नर श्री ई० ए० सैम्युएल्स के पत्र नं० २६ दिनांक ११ सितम्बर १८५८ की प्रतिलिपि तथा आरा के कलक्टर द्वारा भेजे हुए नामों की वह तालिका भी है जिसमें अमर सिंह की बागी सेना के प्रमुख ४२ व्यक्तियों के विवरण के साथ नाम हैं। कमिश्नर ने इस पत्र में १४ व्यक्तियों को माफी न देने योग्य घोषित किया है—पटना सचिवालय।

* देखिये, तवारिख उज्जैनिया और बाबू कुँअर सिंह नामक पुस्तक पृ० १६२।

करमवारी तथा डिवीजन, बारकपुर डिवीजन। इन सेनाओं के अफसर और नेताओं की संख्या ४२ थी, जिनमें अमर सिंह और हरेकृष्ण सिंह भी शामिल थे। अमर सिंह राजा थे। आठ नेता थे, दो कप्तान थे, ६ जेनरल थे, दो जनरल घुड़सवार फौज के थे, एक ब्रिगेडियर मेजर थे। पाँच सूबेदार, ११ सरदार, एक सरदार फौज, एक चीफ अफसर, एक कलक्टर, एक मजिस्ट्रेट, एक मुन्सिफ और मुख्य अदालत के सदस्य चार थे। अमर सिंह की उम्र ४७ और हरेकृष्ण सिंह की उम्र ३७ वर्ष उक्त तालिका में दी हुई है। अमर सिंह के सामने कैफियत के खाने में लिखा है :—"Roifancant (रोइफैनकैंट) whose charles martel was Hare Krishna Singh', और हरेकृष्ण सिंह के नाम के आगे लिखा हुआ है :—"Chief leader of murders'

जैसा ऊपर कहा जा चुका है क्रान्ति के बाद की रिपोर्टों में अंग्रेज नौकरशाही ने अमर सिंह के यश और प्रताप को क्षीण करने के लिए इन सभी सुन्दर व्यवस्थाओं का श्रेय हरेकृष्ण सिंह को देने का प्रयत्न किया है, परन्तु इस प्रयास के पीछे जातिगत द्वेष और शत्रुता साधन की भावना अधिक और वास्तविकता की मात्रा बहुत कम है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि अन्तिम लड़ाइयों में हरेकृष्ण सिंह का साथ अमर सिंह से छूट गया था और हरेकृष्ण सिंह अमर सिंह के साथ नेपाल नहीं गये थे।

अमर सिंह की नवाबी के समय अमर सिंह के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारिक बातें प्रचलित हो गयी थी, जिनसे जनता की श्रद्धा उनपर बढ़ती जाती थी। उस समय अमर सिंह के विश्वासी लोकप्रिय सन्त बसुरिया बाबा थे। उनकी चमत्कारिक क्रियायें विप्लव में बड़ी सहायता पहुँचा रही थी। अमर सिंह नामक एक प्रकाशित उपन्यास में, जो आज से ४० वर्ष पूर्व श्री दुर्गाशङ्कर सिंह के पितामह श्री नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह की लाइब्रेरी में था, बंसुरिया बाबा की चमत्कारिक क्रियाओं का सुन्दर वर्णन है। उस उपन्यास के पात्रों में एक बंसुरिया बाबा भी पात्र हैं। बंसुरिया बाबा की ऐसी चमत्कार पूर्ण घटनाओं के अनेक वर्णन तब के बूढ़ों द्वारा भी सुनने को मिलते हैं।

अमर सिंह के सम्बन्ध में गलत फहमियाँ भी बहुत हैं, जैसे जन साधारण का विश्वास है कि अमर सिंह अश्वत्थामा की तरह जीवित हैं। अभी नालन्दा महाविद्यालय के पाली भाषा के भिक्षु प्रोफेसर श्री कश्यप जी ने अमर सिंह के बौद्ध धर्म ग्रहण करने की और बौद्ध भिक्षु के भिक्षु के रूप में लङ्का जाकर बौद्ध धर्म प्रचार करने की बात एक लेख में प्रकाशित करायी है। ये बातें सर्वथा भ्रमात्मक और गलत हैं। जगदीशपुर राज्यवंश के एक सरदार घर छोड़ कर कारण वश बाहर चले गये थे। सम्भव है उन्होंने ही बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया हो।

इस तरह अमर सिंह की बीरता, शासन पटुता और दृढ़ संकल्पता को हम उनके जीवन में सभी पाते हैं और तभी वे इतने जनप्रिय हो गये।

बँसुरिया बाबा

कुंअर सिंह के समय में जगदीशपुर के जङ्गलों में 'बँसुरिया बाबा' नामक सन्त रहा करते थे। आप वंशी बजाने में बड़े सिद्ध हस्त थे। कहते हैं कि जब रात को आप वंशी बजाते थे तो वन खण्ड आपकी कुटिया के सामने इकत्र होकर वंशी ध्वनि सुनने लगते थे। पक्षी गण पीहक उठते थे। आप बड़े सिद्ध दयालु और चमत्कारिक सन्त थे। समय-समय पर आप के चमत्कारों को देखकर जनता की श्रद्धा आपके प्रति बहुत बढ़ी हुई थी अमर सिंह आपके यहाँ अधिक जाया करते थे। कुंअर सिंह भी आपके बड़े भक्त थे। क्रान्ति के प्रसार में अपने चमत्कारिक क्रियाओं द्वारा बंसुरिया बाबा का बहुत बड़ा हाथ था। उनका अंग्रेजों को विधर्मी कह देना जनता के मनमें अंग्रेजों से घृणा उत्पन्न कर देता था। क्रांति के पूर्व कुंअर सिंह से आपकी बीती रातों तक घंटों वार्त्ता हुआ करती थी। उनके सन्देशों की क्रान्ति के संकेत सूचक आह्वानों की इधर उधर 'बंसुरिया बाबा' बहुत आसानी से प्रसार किया करते थे। रणाङ्गण में भी आप घायलों की सेवा-सुश्रूषा से सैनिकों की श्रद्धा के पात्र बन गये। आप क्रान्ति का प्रचार बहुत संयमित और संक्षिप्त तथा आमोद पूर्वक ढङ्ग से जनता में किया करते थे। बंसुरिया बाबा थे आदेश से ही सिपाही सेना निर्बलों पर अत्याचार नहीं करती

थी और न पकड़े हुए शत्रु तथा बच्चे महिलाओं पर क्रोध प्रगट करती थी बीबी-गञ्ज और गांगी तथा जगदीशपुर की लड़ाइयों के समय तक बँसुरिया बाबा सक्रिय रूप में प्रगट नहीं हुए थे। परन्तु जब कुंअर सिंह पश्चिम चले गये और अमर सिंह केमूर के पर्वतों में रहकर छापामार युद्ध से अंग्रेजों को परेशान करने लगे। तब बंसुरिया बाबा सक्रिय रूप में उनको मदद देने लगे। शत्रु सेना का पता देना, अपने योग बल से अमर सिंह की सङ्कट समय रक्षा करना, आम जनता का विश्वास अमर सिह के धर्म युद्ध में कायम रखना तथा उसको धोखा देने के प्रलोभनों से रोकना बँसुरिया बाबा के चमत्कारिक आज्ञाओं का प्रतिफल था। अमर सिह को गिरफ्तार कराने वाले तथा पता बताने वाले को ५,०००) रु० इनाम देने का एलान सरकार ने कर रखा था। और अमर सिह के रहने का स्थान कैमूर पर्वतों के नीचे के गाँवों के अधिकांश निवासियों को रहता था पर तब भी वे रुपये के प्रलोभन से इसका पता अंग्रेजों के अधिकारियों अथवा राज भक्तों को नहीं देते थे। इस बात को पटना के कमिशनर ने आश्चर्य के साथ बङ्गाल के छोटे लाट को अपने २५ सितम्बर १८५८ ई० की रिपोर्ट में लिखा था। जनता के इस श्रद्धा और भक्ति तथा बफादारी के पीछे बँसुरिया बाबा का हाथ था। गाँव के निकट के जङ्गल में वे जाते थे। बाँसुरी बजाते थे और बातकी बात में चरवाहे और गाँव वाले जुट जाते। दर्शन करते। गाँजा पिलाते। कन्द-मूल देते। और बाबा एक ही उपदेश देकर फिर दूसरी ओर चल देते। बाबा का वह दो चार शब्दों का उपदेश जनता के लिए मन्त्र हो जाता। फिर लाख प्रलोभन या भय के उपस्थित होने पर भी कोई जनता उस उपदेश से विमुख नहीं जाती थी।

अमर सिंह की उन लड़ाइयों में जिनको उन्होंने १८५७ के अगस्त से १८५७ के अक्तूबर के बीच अँग्रेजों से लड़ी थी, बँसुरिया बाबा सदा किसी न किसी अवसर पर सहायका के रूप में प्रगट होते रहे और अपने आशीर्वाद पूर्ण संक्षिप्त उपदेशों से थकी माँदी सिपाही सेना को उत्तेजित करते रहे। अमर सिह और कुँअर सिह के पास जो अवैतनिक सेना इतने दिनो तक मरती जीती रही और नाना कष्ट झेलती रही उसको सङ्गठित और भर्ती करने में बँसुरिया बाबा को चमत्कारिक

सहयोग होता था। गाँधीजी, लेनिन, तथा चीन के नेताओं के पहले यूरोप या भारत के इतिहास में कहीं भी ऐसे अवैतनिक सिपाहियों की मदद से दो वर्षों तक युद्ध जारी नहीं रखा गया। परन्तु आज से १०० वर्ष पूर्व कुँअर सिंह अमर सिंह ने इस तरीके को अपनाया और अवैतनिक सेना तैयार करके बरसों तक राष्ट्रीय भाव से अँग्रेजों से लड़ते रहे। इस कार्य में बँसुरिया बाबा का बहुत सुन्दर हाथ था।

इन पंक्तियों के लेखक के पितामह महाराज कुमार नर्वदेश्वर प्र० सिंह के दौड़ और सहाई नामक नौकरों ने बँसुरिया बाबा को देखा था। पितामह जी ने भी उनसे काफी उपदेश पाये थे। इन लोगों ने उस महान सन्त के चमत्कारों को भी बिकट से बिकट संग्राम के समय देखा था। कहते हैं कि बँसुरिया बाबा पर अमर सिंह को इतनी बड़ी आस्था और विश्वास था कि वे विकट से विकट व्यूह में यह सोच कर प्रवेश कर जाते थे कि बँसुरिया बाबा अपने चमत्कारिक क्रियाओं से उन्हें अवश्य बचा लेंगे और अमर सिंह का सचमुच इतनी लड़ाइयाँ लड़ने पर भी शत्रु ने एक बाल भी बाँका नहीं कर पाया।

आज से ४० वर्ष पूर्व इन पंक्तियों के लेखक ने अपने पितामह जी के पुस्तकालय में अमर सिंह नामक एक छपा उपन्यास को पढ़ा था। उसमें अमर सिंह के संग्रामों का जहाँ वीरता पूर्वक वर्णन था वहीं बसुरिया बाबा के चमत्कार पूर्ण क्रियाओं के उल्लेख भी सर्वत्र थे। उसमें बँसुरिया बाबा का बहुत सुन्दर चित्र चित्रित किया था। अभाग्य वश आज वह पुस्तक लुप्त हो गयी। बँसुरिया बाबा लम्बे कद के पतले दुबले अधेड़ अवस्था के सन्त साधु थे। आप दूध तथा जङ्गली फल खाकर जीते थे। गाँवों में नहीं जाते थे। जङ्गलों में घूम-घूम कर रहा करते थे। गाँजा पीना और बाँसुरी बजाना आपका व्यसन कहिये या साधना कहिये था। इनके अन्तिम दिनों की बातें अज्ञात ही हैं।

कहते हैं कि बँसुरिया बाबा के उपदेश से ही अमर सिंह कुँअर सिंह के पक्ष से लड़ने लगे। रिपुभंजन सिंह को भी उन्होंने समझाया था पर जब उन्होंने उनकी बातें नहीं मानी और अँग्रेजों के पक्ष से काम करना शुरू किया। तब किसी ने जब बँसुरिया बाबा से यह हाल सुनाया तो उन्होंने कहा था उसका "धन यश दोनों जायगा" वही हुआ भी। अपने अन्तिम दिनों में रिपुभञ्जन सिंह

की आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय थी। फिर यश तो बहुत पहले चला गया था। शादी ब्याह बिहिटा तक दूर दूर के खानदानी क्षत्रियों से छूट गया था। आपके जीवन में ही ८० हजार आमदनी की रियासत केवल भाई आदि के मुकदमें बाजी और कुप्रबन्ध के कारण बिक गयी।

राजकुमार हरेकृष्ण सिंह

(कुँअर सिंह की सेना का सालारे जंग)

हरे कृष्ण सिंह बाबू कुँअर सिंह के सगोत्री बन्धुओं में थे। आपका वंश यद्यपि राजवंशीय शाख से कुछ दूर का था। फिर भी राजकुमार उपाधिधारी भाइयों में उसकी गणना है। आपका जन्म स्थान बराढ़ी जो भदवर ग्राम के निकट जिला शाहाबाद में है। भदवर ग्राम जगदीशपुर से पच्छिम ६ मील की दूरी पर अवस्थित है। आपके पिता का नाम सैदल सिंह था। आप पाँच भाई थे। अन्य चार भाइयों के नाम थे; लक्ष्मी सिंह, काशी सिंह, आनन्द सिंह और राधे सिंह। जिनकी अवस्था १८५६ की जनवरी में क्रमशः २५, २२, २० और ४५ वर्ष की थी। उस समय हरेकृष्ण सिंह की उम्र ३७ वर्ष सरकारी कागजों में बतायी गयी है।*

आपकी अपनी जमींदारी थी। जो दो गांवों में हिस्से के रूप में १५४) रु० १४ आने की मालियत की थी।†

हरेकृष्ण सिंह बाबू कुँअर सिंह के दरबार में मुसाहब थे और इन्होंने अपनी योग्यता से बाबू साहब के बड़े मुसाहबों में अपना स्थान बना लिया था। आप

---

* देखिये, बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री ए० आर० यंग के जुडिशियल पत्र नं० १२८ दिनांक २५ जनवरी १८५६ जो शाहाबाद के कलक्टर श्री मणि की भेजी हुई रिपोर्ट के आधार पर है जिसमें विद्रोह में प्रमुख भाग लेने वाले ४२ नेताओं और अफसरों के नाम हैं। प्रस्तुत पुस्तक के परिशिष्ट १ में।

† देखिये पटना डिविजन के कमिश्नर के पत्र नं० २०१ दिनांक ६ अगस्त १८५६ द्वारा भेजी गई बिहार की जप्त जायदादों की सूची। प्रस्तुत पुस्तक के परिशिष्ट १ में—

बहुत पढ़े लिखे व्यक्ति नहीं थे। यहाँ पढ़े लिखे का अर्थ केवल किताबी ज्ञान का द्योतक है। आप बड़े चतुर समझदार बहादुर और कुशल राजनीतज्ञ थे। दरबार में जैसी गुट बन्दियाँ रहा करती हैं उन पर आपने अपना पूर्ण अधिकार कर लिया था और जो चाहते थे करा लेते थे। कुँअर सिंह के भाई और भतीजे इनसे द्वेष रखते थे। और ये भी उनको बाबू साहब के निकटवर्ती होने में सदा बाधा पहुँचाया करते थे। पहले की भाई-भाई की शत्रुता को आप अवसर देख-देख कर उभाड़ने में लगे रहते थे। इसी के साथ आप कुँअर सिंह के मान मर्यादा, यश-कीर्ति के पक्के समर्थक थे और इससे आप पर कुँअर सिंह भी प्रसन्न रहते थे। आप काफी जनप्रिय थे और अपने चलते पुर्जे स्वभाव के कारण जिले भर के लोगों से आपका अच्छा परिचय था।

दानापुर की सरकारी सेना में जितने राजपूत तथा उच्च वर्गीय सिपाही थे सब के यहाँ पहुँचना और घनिष्टता बनाये रखना आपका विशेष गुण था। वैसे तो बाबू कुँअर सिंह स्वयं ऐसे जनप्रिय थे कि सभी वीर स्वभाव के व्यक्ति उनपर अपनी निष्ठा रखते थे और उनकी आज्ञा पर मरने जीने को तैयार रहते थे; परन्तु विद्रोह के पूर्व जब बाबू साहब को गोप्य वार्ता दानापुर के सिपाहियों से करनी होती थी तो उस कार्य के लिए विश्वासी मुसाहब हरेकृष्ण सिंह ही चुने गए थे।

जब क्रांति का षड़यन्त्र चल रहा था, तब दयाल सिंह* तथा उनके पुत्र रिपु भञ्जन सिंह और भाई अमर सिंह ने गुट बनाकर भरपूर प्रयत्न किया कि कुँअर सिंह विद्रोही न बनें। उधर हरेकृष्ण सिंह ने अन्य राज वंशीय सरदारों की सहायता से इसका विरोध किया और तुलसी प्रसाद सिंह को अपना मुख्य सहायक बनाया। लगभग १८५७ के प्रारम्भ से ही सम्भवतः यह गुटबन्दी चलने लगी थी, परन्तु जून १८५७ में जब पटना के कमिश्नर श्री टेलर ने अपने विश्वासी डिप्टी कलक्टर श्री अजीमुद्दीन हुसेन खाँ को जगदीशपुर भेजकर कुँअर सिंह को पटना बुलाना चाहा तब दोनों दलों ने अपने-अपने

---

* (सम्भवतः दयालु सिंह उस समय मर चुके थे उनके पुत्रों ने ही ऐसा किया था।)

पक्ष के समर्थन में भरपूर बल लगाया। दयाल सिंह के वंशज कुँअर सिंह को समझा-बुझाकर पटना जाने के लिए जोर दे रहे थे और तुलसी प्रसाद सिंह हरेकृष्ण सिंह और रणदलन सिंह उन्हें पटना जाने से रोक रहे थे। अन्त में हरेकृष्ण सिंह की एक अनोखी युक्ति ने कुँअर सिंह के मन को हरेकृष्ण सिंह के पक्ष में कर लिया।

१८५७ के गदर के इतिहास (लेखक–श्री शिवनारायण द्विवेदी) के पृष्ठ ८७३ में लिखा है:—"कुँअर सिंह के मन्त्रियों में रण दलन सिंह और हरेकृष्ण सिंह प्रधान थे। ये दोनों हर तरह से गदर के पक्षपाती थे। उनकी इच्छा थी कि कुँअर सिंह को सिपाहियों का नेता बना दिया जाय। जब रण दलन सिंह और हरेकृष्ण सिंह उन्हें इस तरह उभाड़ रहे थे तब वे अपने भाई दयालु सिंह और अमर सिंह से सलाह कर रहे थे। ये दोनों कुँअर सिंह को गद्दार का पक्षपाती होने से रोकने लगे क्योंकि उनका विश्वास था कि सरकार की शक्ति बहुत है और उसका विरोध करने से हमारा समूल नाश हो जायगा। पर पटना के कमिश्नर और मौलवियों की घटना के बाद यदि कुँअर सिंह को पटना नहीं बुलाते तो घटना का रूप दूसरा ही होता। पर मुसलमान दूत के आने से उनके चित्त में सन्देह हो गया फिर भी सहसा वे सरकार के विरुद्ध न हुए। उनके भतीजे रिपु भञ्जन सिंह ने कहा:—"अँग्रेज देश के बादशाह हैं और हम मामूली जमींदार मात्र हैं। न हमारे पास बन्दूकें हैं, न तोपें हैं और न फौजें। हम बादशाह के साथ किस तरह युद्ध कर सकते हैं। इस काम से हमारा समूल नाश होगा। इसलिए आपका पटना जाना ही अच्छा है। किन्तु उन्हें चिन्ता अधिक थी, भतीजे की बात पर विश्वास न कर सके। उनको विश्वास हो गया कि बेटा मर चुका, पोता पागल है, उनकी सम्पत्ति के अधिकारी भाई-भतीजे ही हैं। भाइ-भतीजे उन्हें जाने की सलाह दे रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि इनकी सम्पत्ति के ये इच्छुक हैं—उन्होंने रण दलन सिंह और हरेकृष्ण सिंह की बात उचित समझा................। कहा जाता है कि एक और जमींदार (तुलसी प्रसाद सिंह) ने उन्हें युद्ध के लिए उभाड़ा।"

जब कुँअर सिंह को दयालु सिंह के वंशज इस तरह समझा रहे थे और कुँअर सिंह उससे बहुत कुछ विचलित होने लगे थे तब हरेकृष्ण सिंह ने एक चाल चली। उन्होंने जगदीशपुर और निकट-पास के गाँवों में अफवाह उड़वा दी कि पटना का कमिश्नर कुँअर सिंह को फाँसी देने के लिए बुलाता है और दयालु सिंह तथा उनके वंशज उनको पटना जाने के लिए इसलिए जोर दे रहे थे हैं कि वहाँ वे डोम के हाथ फाँसी पर लटकाए जायँ और हम उनका राज्य ले लें और अपनी पुरानी शत्रुता को इस तरह चरितार्थ करें†।

इस अफवाह के कारण बाबू साहब के मित्र और शुभेच्छु आ आकर बाबू साहब से मिलने लगे और अफवाह की चर्चा कर-करके पटना जाने से उन्हें रोकने लगे। इस जनश्रुति को प्रसारित करके हरेकृष्ण सिंह ने जो अपने पक्ष का जनमत तैयार कर लिया यह उनकी विजय का मुख्य कारण हुआ।

इस घटना के उपरान्त विद्रोह सम्बन्धी प्रधान कामों को करने-कराने में हरे-कृष्ण सिंह, तुलसी प्रसाद सिंह और रणदलन सिंह प्रमुख भाग लेने लगे। जुलाई १८५७ में हरे कृष्ण सिंह को दानापुर सिपाहियों को जानने-समझने, तथा उनको सलाह-बात देने के लिए अथवा उनसे विद्रोह कराकर आरा लाने के हेतु भेजा गया। उस समय कुंअर सिंह का यह आदेश था या नहीं कि वे सिपा-हियों को बलवा कराकर आरा लावें—इसमें अभी मतभेद है, परन्तु मतभेद कुछ भी हो इतना तो निश्चित रूप से सत्य है कि दानापुर पहुँच कर हरेकृष्ण सिंह ने अपने व्यक्तित्व और विचार तथा संगठन शक्ति का दृढ़ता पूर्वक बहुत सुन्दर ढ़ङ्ग से परिचय दिया। उन्होंने वहां सिपाहियों से विद्रोह करवाया और जेल आदि तोड़ कर आरा को अपने दखल में किया।

इस तरह हम देखते हैं कि हरे कृष्ण सिंह का विद्रोह के सूत्रपात में बड़ा प्रबल हाथ था और उन्होंने जिस निर्भयता और आत्मा-विश्वास के साथ शत्रु की छावनी में जाकर और वहां ठहर कर सिपाहियों को उभाड़ा और उनसे बलवा

---

†इस आशय के लिखित प्रमाण पटना सचिवालय के पुरातत्त्व विभाग में प्राप्य हैं।

कराया और उनका नेतृत्व ग्रहण कर कुँवर सिंह से जा मिला था यह साधारण बात नहीं थी एक साधारण मुसाहब का व्यक्तित्व और आचरण इस तरह इतनी जल्दी चमक उठे यह उसके असाधारण प्रतिभा और व्यक्तित्व का परिचायक है। फिर जब हम कुछ इतिहास कारों के कतिपय सरकारी कागजों के आधार पर दिए गए इस कथन को विचारते हैं कि बलवाइयों से बलवा कराकर आरा दखल करने के बाद कुँवर सिंह से मजबूरन सिपाहियों का नेतृत्व ग्रहण कराया गया तब हरेकृष्ण सिंह को ही दानापुर में बलवे के सूत्रपात कराने का सारा श्रेय देना पड़ता है।

आरा के जेल खोलने, अदालत आदि को विध्वंस करने में हरेकृष्ण सिंह का मुख्य हाथ था।*

आपने ही गाँगी की लड़ाई में कुँअर सिंह के नीचे सेना का नेतृत्व किया था। शत्रु को पूरे तौर से कुचल देने में आपका दृढ़ विश्वास था। सरकारी कागजातों में आरा हाउस में बन्द सिख और अंग्रेजों की अपनी रक्षा कर लेने के लिये बड़ी बहादुरी गायी गयी है, पर वास्तविक बात यह थी कि उनसे उलझना और अपनी अल्प मात्रा की गोली बारूद को नष्ट करना कुँअर सिंह तथा हरेकृष्ण सिंह ने उचित नहीं समझा। साधारण घेरा डालकर उन्हें रोक रखना और अन्नजल के अभाव में आत्म समर्पण के लिये उन्हें मजबूर करने की नीति उस समय जब पूरब और पच्छिम दोनों ओर से हमले पर हमले हो रहे थे, उचित मानी गयी।

---

* देखिए R.J. Richrdson esq. आफिशिएटिङ्ग जज और स्पेशल कमिशनर का पत्र संख्या १२२ दिनांक १७ दिसम्बर १८५६ जो बंगाल के छोटे लाट के आफिशियेटिङ्ग सेक्रेटरी श्री ई० एच० लुश्निङ्गटन को लिखा गया था। जिसमें हरकिशुन सिंह के ऊपर उनकी गिरफ्तारी के बाद सेशन के मुकदमें का फैसला स्वीकृति हेतु भेजा गया था तथा पटना डिविजन के कमिश्नर H.O.P. फरगुशन का बंगाल के छोटे लाट के सचिव के नाम का पत्र न० ४०० दिनाङ्क २२ नवम्बर १८५६ जिसमें गवर्नमेन्ट आज्ञा न० ६२७६ दिनाङ्क २७ अक्टूबर १८५६ ई० के अनुसार हर किशन सिंह पर सेशन सुपुर्द की रिपोर्ट थी।

बीबी गञ्ज की लड़ाई में भी हरेकृष्ण सिह दिल खोल कर लड़े थे। परन्तु उस युद्ध में हार होने के कारण कुँअर सिह बहुत दुखित थे। सम्भव है मन-ही मन हरेकृष्ण सिह पर भी रुष्ट हों, पर ११ अगस्त १८५७ को जो युद्ध जगदीशपुर में दुलौर के मैदान में हुआ उस युद्ध में अमर सिह कुँअर सिह से आ मिले थे और युद्ध में भाग भी लिये थे। सेना का नेतृत्व अमर सिह को मिला था कि नहीं इसका पता अब तक नहीं है। हरेकृष्ण सिह ने अमर सिह के इस आगमन का और लड़ाई में भाग लेने का स्वागत नहीं किया। और सम्भवतः सैन्य संचालन में इसी कारण कुछ कमी भी कर दी हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। अमर सिह उस लड़ाई में बड़ी बहादुरी से लड़े थे, यह सर्व मान्य बात है, परन्तु तब भी पराजय ही हाथ रहा। सरकारी कागजों में कहा गया है—"इस युद्ध के पराजय के बाद सहसराम पहुँच कर कुँअर सिंह और अमर सिह के बीच बहुत झगड़ा इस लिए हुआ कि जगदीशपुर की करारी हार का कारण एक भाई दूसरे को ठहराते रहे। और इससे दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे। *

कुँअर सिंह रीवाँ की ओर गये और अमर सिंह सहसराम के पास ग्रांडट्रङ्क रोड के निकट की पहाड़ियों में रहने लगे।"*

इस उद्धरण से यह प्रतीत होता है कि हरेकृष्ण सिह ने बीबीगञ्ज की हार के बाद अमर सिह के आगमन और सैन्य सञ्चालन में* सक्रिय भाग लेने के कारण मन ढीला कर दिया था। इसके फल स्वरूप अमर सिह की व्यक्तिगत बहादुरी दिखाने पर भी हार होकर ही रही।*

---

* देखिये पटना सेक्रेटेरियट से प्राप्त ३१।८।१८६५ का एक रिपोर्ट जो बङ्गाल की गवर्नमेंट को लिखा गया था जिसमें अमर सिह के गिरफ्तार होने और गोरख-पुर जेल में रखे जाने तथा उनमें हरकिशन के हाथों को कठपुतली होने की बात है जो अमर सिह के जीवनी के सम्बन्ध में उद्धृत है।

*किन्तु कुछ लोगों का कहना यह भी है और तोताराय की कवित्त से यह पुष्ट भी होता है कि बीबीगञ्ज की लड़ाई में ही हरेकृष्ण सिंह ने मन ढीला कर दिया था जिस पर कुंअर सिह ने अमर सिह को बुलाया। इस में तथ्य है कि नहीं, कहा नहीं जा सकता। पर इतना तो निश्चित है और इसके पुष्ट प्रमाण भी हैं।

सिपाहियों पर हरेकृष्ण सिंह का अधिकार काफी था, इससे उनके जरा भी मन ढीला कर देने से विजय प्राप्त करना असम्भव था। लड़ाई की जो कहानी इन पंक्तियों के लेखक ने अपने पितामह श्री नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह तथा उनके वयोवृद्ध नौकर सहाई और दौड़ से अपने बचपन में सुनी थी उसमें सदा यही कहा गया था कि दुलौर (जगदीशपुर के पास का गांव) की लड़ाई में बिहिया की ओर से अंग्रेज बढ़ता हुआ चला आ रहा था और हरेकृष्ण सिंह अपने तैयार सिपाहियों को गोली चलाने से रोकते रहे। जब अन्त में गोली चलाने का हुक्म हुआ तब अंग्रेज बहुत निकट पहुँच गया था और सिपाही छोटी-मोटी लड़ाई लड़कर कुँअर सिंह के पास आकर कहने लगे कि भाग चलिये, हरेकृष्ण सिंह अंग्रेजों से मिल गया। कुअँर सिंह की लड़ाई के पँवारे जो गाये जाते है उनमें भी यही बात बहुत साफ तरह से कही गयी हैं और बताया गया है कि अंग्रेजों ने हरेकृष्ण सिंह को बिहिया से प्रलोभन देकर अपने पक्ष में कर लिया। इस से इतना तो अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि हरेकृष्ण सिंह ने अंग्रेजों से सौदा नहीं किया तो इतना तो जरूर किया कि अमर सिंह के आगमन से द्वेष कर के बीबीगंज की वे दुलौर की लड़ाई से रण सञ्चालन में मन ढीला कर दिया अथवा आगे बढ़कर बिहिया में नहीं गये, जिससे शत्रु को जगदीशपुर तक चढ़ आने का अवसर मिला।

देखिये पँवारा यों है :—

गंगे गंगे गोरा चले, जहाजन पर तोप चले
रात दिन का धावा किया, आ बिहिया दाखिल हुआ
तब ले जरनैल बोले का, सुन हवलदार मेरी बात
पण्डित जी को लो बुलाय, लिख परमाना भेजे का
सुन पण्डित मेरी बात, हरकिशुन को दो बुलाय
आधा राज तुमको देंगे, आधा राज हरकिशुन को देंगे
बाबू राह दो बताय

× × × ×

ई हरकिशुन जोर किया बिहिया को छोड़ दिया
आ जगदीशपुर दाखिल हुआ, तोप का गोला दागे जाय
बाबू कान गई आवाज, ई बाबू ने जोर किया
परिडत जी को लिया बुलाय, सुनो परिडत जी मेरी बात
सुन्दर सगुन दो बताय,

सुनिये बाबू मेरी बात, सवा दिन भदरा है
ई बाबू ने जोर किया, खोल तरवार रक्खे जाय
तब ले जरनैल जोड़े का, आधी रात आगे जाय
आधी रात पीछे जाय, गोरा को दो उठाय
रात दिन का धावा किया, आ जगदीशपुर दाखिल हुआ

× × × ×

तब ले बाबू करे का, सोने कलम हाथों में ले
लिख परमाना भेजे का :—

सुन त अम्मर मेरी बात, अंग्रेज का गोरा आया है
इतनी बात अम्मर सुने, जा भैया को किया सलाम

इसी तरह दूसरे पँवारा में भी खोलकर कहा गया है कि हरेकृष्ण सिंह और उपरोहित को तथा रिपुभंजन सिंह को अमर ने मिला लिया।

अतः इन तीनों बातों के आधार पर यह मानना गलत नहीं होगा कि हरेकृष्ण सिंह ने कुँअर सिंह के आगमन से अपना भविष्य अच्छा न देख कर अमर सिंह को नीचा दिखाने और कुँअर सिंह के समक्ष विश्वासी बन जाने के विचार से जगदीशपुर की लड़ाई में सैन्य सञ्चालन में कुछ कमी की और उस कमी का दोषी अमर सिंह को सैन्य सञ्चालन में अयोग्य समझा।

हरेकृष्ण सिंह के इस चतुर पर द्वेष पूर्ण कार्य से उन्हें सफलता तो अवश्य मिली पर इस पाप का प्रायश्चित भी उन्हें खूब भोगना पड़ा और उनका सारा यश अपयश में परिणत हो गया। इसका प्रचार तब से अब तक जनता के मध्य दयाल सिंह के वंशजों और अमर सिंह के पक्षपातियों द्वारा जो लड़ाई के बाद हर तरह

से वैभव सम्पन्न थे, इस ओर से किया गया कि इतना देश प्रेमी वीर, बहादुर, चतुर सेनानी तथा सफल शासक और राजनीतिज्ञ होकर भी हरेकृष्ण सिंह को जनता ने कुलांगार, देश द्रोही, अंगरेजों का भेदिया, विश्वास घाती तथा विभीषण कह कर याद किया और आज तक याद करती है। आज भी अंगरेजी की कहावत Thow too Brutus की तरह जो शेक्सपियर के नाटक का उद्धरण मात्र है, भोजपुरी भाषा में यह कहावत प्रसिद्ध हो गयी है कि "तू भी हरकिशुन सिंह हो गइल" ! अर्थात् तू भी हरेकृष्ण की तरह अपने मित्र के साथ छल करने वाला विश्वासी बन गया। नहीं तो सरकारी कागजों में जैसा हरेकृष्ण सिंह का चरित्र चित्रित है उसको देखते हुए कोई कारण नहीं दिखता है ऐसे बहादुर नेता को इस तरह बदनाम क्यों होना पड़ा। फिर लड़ाई के बाद हरेकृष्ण सिंह को अंगरेजों द्वारा जो जगदीशपुर में लाकर फाँसी दी गयी उसका प्रचार भी उनके शत्रुओं ने दूसरे तरह से किया। जनता को समझाया गया कि हरेकृष्ण सिंह, कुँअर सिंह के आधा राज पाने के प्रलोभन में कुँअर सिंह से छल किया और जब लड़ाई के अन्त में इनाम लेने अंग्रेजों के पास गये तब अंग्रेजों ने उनको जगदीशपुर लाकर यह कह कर फाँसी दे दी कि तुम जब अपने मालिक के नहीं हुए तो हमारा कब होओगे। इस प्रचार का विरोध करने वाला उस समय से अबतक था नहीं। जनता ने इसको सत्य मानकर हरेकृष्ण सिंह के विरुद्ध धारणा कायम कर ली और उन्हें आज तक वैसा ही माने रहे।

हरेकृष्ण सिंह कुँवर सिंह के साथ संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) और मध्यभारत में अगस्त १८५७ से मार्च १८५८ तक घूमते रहे और संगठन कार्य में सदा कुँवर सिह का दाहिना हाथ बने रहे। * इस बीच के इतिहास का पूरा पता नहीं चला है फिर भी धीरे-धीरे सरकारी कागजों के सहारे शोध कार्य में बहुत सन्तोष पूर्ण सफलता मिली ही है।

एक कागज पटना कमिश्नरी में ऐसा भी मिला है जिससे साबित होता है कि हरेकृष्ण सिह गोरख पुर गये थे और वहाँ उन्होंने अपने को रिपु भंजन सिह

* देखिए :—हरेकृष्ण सिह के अन्तिम मुकदमें कीहोशिङ्ग और उसकी गवाहियां ता० १६ दिसम्बर १८५६ को फैसला।

(दयाल सिह के पुत्र) जो इनके शत्रु थे के नाम से घोषित किया था और छोटी मोटी लड़ाई भी लड़ी थी। जिसके आधार पर बलवा के शान्त होने पर बाबू रिपु भंजन सिह अंगरेजों द्वारा गिरफ्तार किये गए, पर मुकदमे के दौरान में रिपुभंजन सिह निर्दोष पाये गये और इसलिए छोड़ दिए गए। हरेकृष्ण सिह का गोरख पुर जाने का कारण एकमात्र तराई से गोरखे सिपाहियों को कुँवर सिह की सेना में भर्ती करना अथवा वहाँ के विसेन राजपूतों को अगरजों के विरुद्ध उभाड़ना हो सकता है। वहाँ अपने को रिपुभंजन सिंह बहाने का कारण यह कहा जा सकता है कि आप वहाँ छद्मवेष में गये हों और रिपु भंजन सिह का नाम इसलिए धारण किया हो कि वे अंगरेज भक्त थे और उनके नाम से सरकारी अफसर आपके साथ के छद्मवेषी सिपाहियों को देख कर आप पर शंका नहीं करेंगे।

इस घटना के बाद हरेकृष्ण सिंह १८५८ के १८ मार्च को आजमगढ़ के पास अतरौलिया नामक स्थान पर कुँअर सिंह की सेना को सञ्चालित करते हुए प्रकट होते हैं। वहीं आपको कुँअर सिह ने सालारेजङ्ग की उपाधि दी।† वहाँ से २१ अप्रैल १८५८ को जगदीशपुर तक पहुँचने में आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर के जिलों में कुँअर सिह को जितनी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं सभी में हरेकृष्ण सिंह का उपस्थित होकर सैन्य सञ्चालन करना हरेकृष्ण सिह के मुकदमे में पेश किए गए गवाहों के इजहार से सिद्ध है। जब कुँअर सिह २१ अप्रैल १८५८ को शिवपुर घाट पर गङ्गा पार कर लेने पर आहत हुए तब एक तरह से हरेकृष्ण सिह के ऊपर ही सारे दायित्वों का बोझा था। उस समय उन्होंने जिस चतुरता से सब कार्यों को सम्हाला और अमर सिह को जैसा कहा जाता है पहाड़ से बुलाया* और २३ अप्रैल को

†देखिए—हरेकृष्ण सिह के मुकदमे के ता० १२ सितम्बर १८५६ का फैसला और उसकी गवाहियाँ।

*अमर सिह का हरेकृष्ण सिह द्वारा कैमूर पहाड़ से बुलाया जाना सरकारी कागजों से प्रमाणित है परन्तु उनका पहले से जगदीशपुर रहना और ली ग्रैण्ड के साथ लड़ना भी अप्रमाणित नहीं कहा जा सकता। देखिए अमर सिह की जीवनी।

ली ग्रैण्ड से लड़कर उसकी सेना को विध्वंश किया उससे उनके कुशल राजनीतिज्ञ होने का प्रमाण मिलता है। कुँअर सिंह उस समय आहत थे। और रण सञ्चालन की पद्धति भले बताते रहे पर रण-स्थल पर उनका उस दशा में रहना मान्य नहीं होगा। २६ अप्रैल १८५८ को कुँअर सिंह की मृत्यु हो गई उसके बाद आपने अमर सिंह को राजा घोषित किया और उनके साथ-साथ अंग्रेजों के विरुद्ध १८५८ के दिसम्बर तक लड़ते रहे।

इस लम्बी अवधि में अमर सिंह के अधिनायकत्व में हरेकृष्ण सिंह ने जो काम किये अथवा जो जो लड़ाइयां लड़ीं उनसे आपकी रण कुशलता, शासन क्षमता सरकारी कागजों से अच्छी तरह सिद्ध है। पटना डिवीजन के कमिश्नर जो सैमुएल के बाद आये ने अपनी एक रिपोर्ट में बङ्गाल के छोटे लाट को लिखा था, "यह धारणा कि चूँकि अमर सिंह का नाम कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद बार बार विद्रोहियों द्वारा लिया जाता है इस लिये ये ही सब से बड़े प्रभावशाली नेता थे गलत बात है। कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद अमर सिंह विद्रोहियों द्वारा बुला भेजे गये और वे बहुत आगा-पीछा करके न चाहते हुए भी लाचारी की हालत मे उनसे आ मिले। वास्तव में कामों में वे बहुत सक्रिय भाग नहीं लेते थे। और अपना अधिकांश समय अफीम के नशे में व्यतीत करते थे। मुख्य नेता जिसकी ओर सिपाहियों का ध्यान था हरेकृष्ण सिंह और उनके चार भाई थे। वे कागजात जो बागियों की सरकार के सम्बन्ध के थे और हरेकृष्ण के मुकदमे में पेश किये गये थे उनमें अमर सिंह का नाम मुश्किल से कभी आया है।" यह पत्र तब लिखा था जब नीचले प्रान्तों में बागी निमूंल कर दिये गये और रायल अमनेस्टी घोषित कर दी गयी थी और इन्डिया गवर्नमेंट ने यह सूचना दी थी कि विहार के सभी बागियों में केवल एक बागी आ सका। माफी नहीं मिलेगी और जिसके प्राण न लेने का आश्वासन दिया जा सकता है अमर सिंह है।

फिर वही कमिश्नर उसी पत्र में आगे लिखता है इस आदमी (अमर सिंह) का नाम हर आदमी के मुख में है, हर आदमी इसको (अमर सिंह) प्रान्त का सब से बड़ा नेता मानता है। वह बिचारा गरीब पशु की इस मिथ्या धारणा का

११

शिकार वना हुआ है। पर वास्तव में वह दूसरे के हाथ का पुतला बनकर काम करता रहा है फिर भी वह कुँअर सिह का उत्तराधिकारी नाम मात्र को बना रहा। और काम करता रहा। अतः इस बुरी महानता को प्राप्त कर लेने के बाद अमर सिह को क्षमा करना मेरी राय में राजनीति के विरुद्ध आचरण करना होगा।

इसी पत्र में उस तार का भी उद्धरण दिया गया है जिसमें अमर सिह के पहाड़ से आने की बात आरा के कलक्टर ने कमिश्नर को भेजी थी। उस तार में लिखा था—"Amar Singh is incapacited from taking the command of the rebels who are 4,000 strong & led by Hare Krishna Sihgh." "अमर सिंह विद्रोहियों का नेतृत्व लेने के अयोग्य हैं विद्रोही ४,००० की संख्या में हैं और उनका नेतृत्व हरेकृष्ण सिंह कर रहे हैं।"

इन सरकारी कागजों के उद्धरणों के आधार से यद्यपि इन पक्तियों का लेखक उनसे सहमत नहीं है और उनके सहमत होने के कारण अमर सिंह की जीवनी से भोजपुरी होना जाहिर होता है कि अमर सिंह राजा घोषित कर दिए गए थे परन्तु वास्तव में क्रान्तिकारी सरकार के शासन, न्याय और सेना तीनों विभागों के मूल प्रवर्तक और मुख्य कर्णधार हरेकृष्ण सिंह ही थे। फिर भी हरेकृष्ण सिह का नाम अमर सिंह के यश के सामने कुछ भी नहीं है, बल्कि जनताने उनको विश्वास घाती, और अंग्रेजों को कुँअर सिंह का भेद बतलाने वाला कृतघ्न व्यक्ति माना है। हरेकृष्ण सिंह ने जगदीशपुर में अमर सिंह को राजा घोषित करके क्रान्तिकारी सरकार कायम ही नहीं की थी बल्कि उसके प्रत्येक विभाग को सुचारुरूप से चलाया भी था। कहा जा सकता है कि जब हरेकृष्ण सिह इतनी शक्ति रखते थे तो वह स्वयं ही राजा क्यों नहीं बने और अपने शत्रु अमर सिह को राजा क्यों बनाया इसका उत्तर यह है कि कुँअर सिह की मृत्यु के बाद उनके वंश के ही किसी उत्तराधिकारी को विप्लव सेना का नेता बनाना क्रान्ति-सेना की एकता बनाये रखने और जनता के विश्वास के लिए राजनीति की दृष्टि से नितान्त आवश्यक था। रण सिह के वंशजों में तुलसी प्रसाद सिह के खेत आने के बाद कोई ऐसा बड़ा वयस्क योग्य सरदार नहीं था जो इस भार को कुशलता पूर्वक ग्रहण करें। और

अमर सिंह पहले लड़कर अब तक अपना विद्रोह जारी रखे थे और विहार में काफी नाम कमा चुके थे। फिर उनकी अपनी सेना थी प्रभाव था व्यक्तित्व था। इन सब कारणों से हरेकृष्ण सिंह ने अमर सिंह को जो राजा बनाया राजनीति के सर्वथा उपयुक्त था। और फिर अमर सिंह स्वयं भी बड़े बहादुर थे हरेकृष्ण के खिलाफ होने पर हरेकृष्ण सिंह को ऊपर से विद्रोहियों का विश्वास हट जाता। इससे हरेकृष्ण को वैसा करना ही पड़ा।

फौजदारी और दीवानी के कागजात जो जगदीशपुर की कचहरी से बरामद किये गये थे वे हरेकृष्ण सिंह के मुकदमे में पेश किये गये थे। उनसे स्पष्ट है कि हरेकृष्ण सिंह ने किस निपुणता से न्याय विभाग का कार्य संचालन किया था। शासन-कार्य की निपुणता भी उन्हीं सरकारी कागजों से प्रमाणित है।

पटना डिविजन के तत्कालीन कमिश्नर श्री ई० ए० सैमुएल्स ने अपने २५ सितम्बर १८५८ की रिपोर्ट में बंगाल के छोटे लाट को लिखा था—"गत जून मास मे विद्रोहियों की सेना जिलेके अन्य भागों में फैल गयी और उन्होंने शाहाबाद जिले के भीतरी भाग के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया और हर जगह थाना और तहसील खोलकर जज, मजिस्ट्रेट और कलक्टरों की नियुक्ति कर दी। बड़े बड़े मकानों को जेल में परिणत कर दिया गया और सरकारी मालगुजारी की अदायगी न होने पर जमींदारियों की नीलामी शुरू कर दी गयी।*

इस तरह हरेकृष्ण सिंह द्वारा क्रान्तिकारी सरकार के शासन और न्याय विभाग के काम जिले भर में होने लगे थे। यही नहीं, कुँअर सिंह के नाम का सिक्का भी चालू कर दिया गया था। जिस पर खुदा था—"सिक्के जद शाह कुँअर सिंह बर वलायत कम्पनी"। इस सिक्के का जिक्र 'तवारीख उज्जैनिया' नामक पुस्तक में उद्धृत किया गया है।

अब सेना विभाग को देखिये। हरेकृष्ण सिंह के पास उस समय ४,००० सेना थी, जैसा कि ऊपर के तार से स्पष्ट है। इसे इस सेना के साथ अमर सिंह

देखिये पटना डिवीजन के कमिश्नर श्री E. A. Oamucles के पटना डिवीजन के police पर १८५७ की रिपोर्ट जी नं० 7515 दिनाङ्क २५ सितम्बर १८५८ को बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव A. R. यंग को भेजी गयी थी।

की सेना भी आ मिली थी इस बड़ी सेना को सुन्दर ढङ्ग से छोटी-छोटी टुकड़ियों में विभाजित करके उन्होंने जिले भर में फैला रक्खा था, फिर किस तरह से सेना का सञ्चालन होता था यह बात उस फिहरिस्त से जिसको तत्कालीन आरा के कलक्टर श्री मणि ने पटना डिवीजन के कमिश्नर को भेजा था, स्पष्ट है। इस फिहरिस्त में उन व्यक्तियों के नाम थे जिन्होंने लड़ाई में प्रमुख भाग लिय था। इसके अनुसार सारी सेना को डिवीजनों में बाट कर फिर छोटी टुकड़ियों में बाँटा गया था। इनका कमान ब्रिगेडियर, जेनरल, सुबेदार, कप्तान, आदि उपाधि धारी अफसरों के आधीन था। इन डिवीजनों के साथ भी उन स्थानों के नाम पर रखे गये थे जहाँ की रक्षा या संग्राम का भार उनके जिम्मे था। जैसे कारी साथ डिवीजन चौगाई डिवीजन, करमवारी तथा डिवीजन, वारूक पुर डिवीजन। फिर उस समय अमर सिंह की सेना में ४२ उपाधि धारी अफसर थे जिन्होंने जिले भर की सेना को संचालित करके जिले भर में एक ओर अमर सिंह का शासन स्थापित किया था और दूसरी ओर अंग्रेजों की सेना से लड़-लड़कर उन्हें परेशान कर दिया था। इन में ८ नेता थे, दो कप्तान थे, ६ जेनरल थे, दो जेनरल कैवेलटी (सवार) के थे, १ ब्रीगेडिअर मेजर थे। ५ सूबेदार, ११ सरदार, एक सरदार फौज, चीफ अफसर, १ कलक्टर, १ मजिस्ट्रेट १ मुन्सिफ १ जेनरल कोर्ट मुख्य अदालत के ४ सदस्य थे। अमर सिंह राजा थे। और हरेकृष्ण सिंह नेताओं में थे। इन अफसरों के नामकी सूची जो सरकार के पास भेजी गयी थी उसमें अमर सिंह के नाम के आगे कैफियत के खाने में लिखा है—"Roi Faincant whose charles martel was Hare Kishun Singh. हरेकृष्ण सिंह के नाम के आगे कैफियत खाने में लिखा है—"Chief Leader Of murders."*

---

* देखिए बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री A.R. yong के पत्र के न० ६२४ जिसकी उन्होंने फोर्ट विलीयम कलकत्ता से ता० २२ जनवरी १८५६ को बड़े लाट के पास भेजा था। इस पत्र में पटना के कमिशनर श्री इ.ए. सेमुएल्स के पत्र न० २६ दिनाङ्क ११ दिसम्बर १८५८ की प्रतिलिपि तथा आपको कल-

डुमराँव के तत्कालीन महाराज महेश्वर बक्स सिंह ने भी अंग्रेजों की ओर से इस काम को पूरा करने में वैसी ही मदद की थी जिसको उन्होंने भी अपनी दरख्वास्त दिनाङ्क ४ जून १८६० में जिसकी उन्होंने जे० पी० Grant छोटे लाट बङ्गाल के पास अधिक हथियार रखने की आज्ञा के लिये दी थी लिखी है। घरके अपने लोगों के द्वारा इस घोर विरोध और खिलाफ प्रचार के होते हुए भी हरेकृष्ण सिंह ने अमर सिंह के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई इतने दिनो तक जारी रखी और क्रान्तिकारी सरकार चलाते रहे। और अंग्रेजों के सात जेनरलों

क्टर द्वारा भेजी हुई वह सूची जिसमें बागियों की सेना के उपर्युक्त वर्णन हैं शामिल है कमिश्नर ने इस पत्र में १४ व्यक्तियो को अमेनेस्टी Amensty में माफी न देने योग्य आदेश दिया है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि जब अमर सिंह और हरे कृष्ण सिंह इस तरह क्रान्तिकारी सरकार कायम करके लड़ रहे थे तब दयाल सिंह के पुत्र रिपुभंजन सिंह और गुमान भंजन सिंह अंग्रेजों द्वारा पुरस्कृत होकर अमर सिंह के विरुद्ध अंग्रेजों को मदद पहुँचा रहे थे। और हर तरह से जनता को समझा बुझाकर अंग्रेजों के पक्ष में ला रहे थे। पटना सेक्रेटेरियट में बहुत से कागज इस बात के प्रमाण के मिले हैं और मिल रहे हैं। अमेनेस्टी घोषित होने पर शाहाबाद जिले भर में जब कोई लाभ लेने को तैयार नहीं होता था और क्रान्तिकारी सेना का बल बढ़ता जा रहा था तब यह तरीका अंग्रेज अफसरों द्वारा अपनाया गया था जिसको कार्य्यान्वित करने का मुख्य बोझ रिपु भंजन सिंह और गुलाम भंजन सिंह जो कुँअर सिंह के भाई दयालु सिंह के पुत्र थे दिया गया था जिसके पुरस्कार में उनको पुरस्कृत करके उनको अपने हिस्से की रियासत छोड़ दी गई थी। अन्य सरकारी कागजों के अतिरिक्त भी ये बातें स्वयं बाबू रिपु भंजन सिंह ने अपने ता० ४-६-५६ २६-७-६०, और ७-१-१८६१ के उन दरखास्तों में स्वीकार की हैं जिनको उन्होंने आरा के कलक्टर, पटना के कमिश्नर तथा बंगाल के छोटे लाट को क्रम से दिया था। और जिसमें अपने इन राजभक्ति पूर्ण कार्यों की तालिका देकर उसके लिए जागीर का हकदार बताकर जागीर माँगा था और कुँअर सिंह की जब्त रियासत को वापिस चाहा था।

की लोहे के चने चबाते रहे। यह घटना हरेकृष्ण सिंह के व्यक्तित्व का बहुत महान बनने के लिए काफी प्रमाण है। देखिये उक्त दरखास्त और बंगाल के छोटा लाट के प्रोसिडिङ्ग नं० २६७।६६ दिनांक २६ जून १८६०

इससे स्पष्ट है कि कितना व्यवस्थित रूप से हरेकृष्ण सिंह ने जिले भर में अपनी सेना का सुन्दर और सुदृढ़ जाल फैला रखा था और किस सुन्दरता से क्रान्तिकारी सरकार को चला रहे थे। इसको जनता ने अमर सिंह की नवाबी की उपाधि दी थी जो १८५५ के जून से प्रारम्भ होकर दिसम्बर तक कायम रही। इसमें लड़ाइयाँ भी होती रही और शासन भी चलता रहा इस अवधि के युद्धों के वर्णन अमर सिंह की जीवनी में दिया जा चुका है।*

अमर सिंह की हार के बाद मिसेज सैमुअल नामक एक अंगरेज महिला को आथर ग्राम में हरे कृष्ण सिंह के सिपाहियों ने पकड़ा। हरे कृष्ण सिंह ने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया। और उसको सेनानायक मेयर फरलैर के पास भेजवा दिया।

अमर सिंह नेपाल चले गये। हरे कृष्ण सिंह उनसे मिल नहीं सके अथवा क्यों नहीं गये इसकी जानकारी अब तक नहीं है। सम्भव हैं शत्रु आपको अमर सिंह से मिलने में बाधा देकर आपको हरा दिए हो। इतना मालूम हुआ है कि भादो मास में आपको फकीर के वेष में सारन जिले के 'निनी' नामक ग्राम में दारोगा सिंह नामक व्यक्ति ने देखा था।

बनारस जिले के बन्धौल परगने के 'दिनहा' नामक ग्राम में उसाह सैराव के नवाब के कोतवाल ने आपको २६ अगस्त १८५६ को गिरफ्तार करवाया वहाँ से आप आरा लाए गये और मिस्टर हरशेल नामक मजिस्ट्रेट ने आपके मुकदमें को जाँच करके आप पर सेशन चार्ज किया जो गवर्नमेन्ट आर्डर न० ६२७६ दिनांक २७ अक्टूबर १८५६ के अनुसार दिया गया था इस मुकदमें में हरे कृष्ण सिंह पर चार बड़े बड़े अभियोग लगाये गये थे। ये अभियोग थे हत्या करने, बलवा करने, कुँअर सिंह और अमर सिंह की सेना का सेनापतित्व करने तथा बलवाइयों को दानापुर से लिवा लाकर आरा जेल आदि लुटवाने के सम्बन्ध में थी। इसीके

* पृष्ठ २०२ पर देखिए।

साथ सैमुअल नामक अंगरेज महिला से गिरफ्तार करके उसको अंगरेजों से सुलह की शर्तों को तय करने का माध्यम बनाने का अभियोग था। * इस मामले में जो कागजात जगदीशपुर के क्रान्तिकारी सरकार की कचहरी से जब्त करके लाए गये थे वे पेश हुए थे। देखने से पता चलता है कि उस समय अमर सिंह ने हरे कृष्ण सिंह की राय से कितनी अच्छी सरकार कायम की थी। अन्त में हरे कृष्ण को सेशन जज ने दोषी ठहराया। इस मुकदमें में आदित मिश्र नामक एक ब्राह्मण जो कुँअर सिंह का पुरोहित था, जिसके वंशज आज भी जगदीशपुर में बसते हैं अजायब सिंह जो कुँअर सिंह का नौकर था, तथा रामयाद ओझा ने, जो फौज न० ६० के सिपाही थे और जिनको माफ कर दिया गया था, गवाही दी थी।

इन गवाहों ने आप के ऊपर लगाये गये पूर्वोक्त अभियोगों की पुष्टि की और आपको 'सलारे जंग' उपाधि बाबू साहब द्वारा दिये जाने की बात भी कही थी। आजमगढ़ से जगदीशपुर तक बाबू साहब की सेना में आपको नेतृत्व करने की बात बताई गयी है और अमर सिंह के समय में आपको ही सर्वेसर्वा कहा गया है। अमर सिंह का सारा प्रबन्ध आप ही करते थे। जज ने २६ और ३० नवम्बर तथा २,३,४ दिसम्बर १८५६ को केस की सुनवाई की थी। हरेकृष्ण ने कोई वकील नहीं रक्खा था। गवाहों से जिरह आप स्वयं ही करते थे। आपकी जिरह की तारीफ जज ने की है। आपने उस मुकदमें में अपने को निरपराध बताया था और कहा था कि उन्होंने अंगरेजों को मदद दी थी, रसद पहुँचाई थी। एक अंगरेज महिला तथा एक सिक्ख सिपाही को बलवाइयों से मुक्त करके अंगरेजों के पास भेजा था। सरकार को सदा अपनी जायदाद की मालगुजारी देते रहे। इसके पक्ष में उन्होंने सोहन लाल, दारोगादत्त, सरूप राय नामक तीन गवाह पेश किए थे जिन्हों ने जज के सामने कुछ न जानने की बात कही थी। बिशुनलाल तथा मोहन लाल साहु नामक गवाह प्राप्त नहीं हो सके। जज ने आपकी सफाई की बातों को नहीं माना। उसने आपको सभी अभियोगों का दोषी माना औरफैसला दिया:—

---

* देखिए हरेकृष्ण सिंह के मुकदमें की प्रोसीडिङ्ग और सेशन सुपुर्द होने की उक्त रिपोर्ट जिस फैसले की तिथि १६ दिसम्बर १६५६ थी।

"Finding, finally, nothing whatever in extenuation to any mercy should be shown to the prisoner, Hare Krishna Singh, I recommened that he be taken from the Arrah Jail where he is at present in confinement to the chowk a Jagdishpur, the scene of his vein glory & his cruality, & that he be hanged by the neck until he be dead."

"The property of the prisoner having already been conficeted to the Government no further order in this matter is required."

यह फैसला ता० १६ दिसम्बर १८५६ को हुआ और १७ दिसम्बर १८५६ को पत्र नं० १२२ के द्वारा मुकदमे की कार्यवाही ई० एच० न्यूशिनलोरों, ऑफिसियेटिंग सेक्रेटरी, बङ्गाल सरकार के पास देखने और आज्ञा के लिए भेजी गयी जो वहाँ से यह कहकर लौटा दी गयी कि इस फाइल को १८५७ एक्ट १४ के अनुसार वहीं कार्यान्वित हो जाना चाहिये था। इसे यहाँ भेजने की जरुरत नहीं थी। और फिर फैसले के अनुसार हरेकृष्ण सिंह को फाँसी दे दी गई। जिस पेड़ पर लटकाकर उन्हें फाँसी दी गयी थी वह पेड़ आजतक जीवित बताया जाता है। कहते हैं कि फाँसी के वाद उनकी लाश पेड़ पर ही वहुत दिनों तक टँगी रहने को छोड़ दी गयी ताकि लोगों में इससे आतङ्क छा जाय।

यही कारण है कि हरेकृष्ण सिंह के शत्रुओं ने उनकी फाँसी के बाद अफवाह उड़ाई कि हरेकृष्ण सिंह अंग्रेजों से मिल गये थे और अंग्रेजों ने धोखा देकर उन्हें पकड़ा और यह कह कर जगदीशपुर में फाँसी दे दी कि "तुम जब अपने मालिक के नहीं हुए तो अंग्रेजों के कैसे हो सकोगे ?"

यह अफवाह जो हरेकृष्ण सिंह के शत्रुओं द्वारा उड़ाई गई थी—जनता के हृदय में बैठ गई और हरेकृष्ण सिंह के विरुद्ध ऐसी धारणा कायम हो गई जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, जो सर्वथा निराधार है।

महाराज कुमार बाबू तुलसी प्रसाद सिंह

बाबू तुलसी प्रसाद सिंह बाबू तेग बहादुर सिंह के बड़े पुत्र थे जो बाबू रण बहादुर सिंह के मझिले लड़के थे। और कुँअर सिंह के पितामह उमराव सिंह के सगे भतीजे थे। इस तरह आप कुँअर सिंह के चचेरे भाई थे। १८५७ की क्रान्ति के समय आपकी आयु ५०–५५ के लगभग की थी। कुँअर सिंह जब क्रान्ति की तैयारी करने लगे तब इतिहासज्ञों को ज्ञात है कि उनके भाई बन्धुओं तथा मुसाहबों में दो दल हो गये थे। एक दल वह था जो बाबू साहब को अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति करने से रोक रहा था। इस दल का नेतृत्व कर रहे थे कुँअर सिंह के भाई दयालु सिंह के पुत्र रिपुभञ्जन सिंह और गुमान भञ्जन सिंह तथा कुँअर सिंह के छोटे भाई अमर सिंह। दयालु सिंह सम्भवतः उस समय निर्धन हो चुके थे। डुमराँव के महाराज महेश्वरबक्स सिंह की राय भी इसी दल के पक्ष में थी।*

दूसरा दल जो क्रान्ति के पक्ष का समर्थन करता था उसका नेतृत्व राजवंशीय सरदारों में अपने अन्य चचेरे भाइयों के साथ कर रहे थे तुलसी प्रसाद सिंह इस वंश के इतिहास जानने वालों को ज्ञात है कि मूलपुरुष उदवन्द सिंह के चार पुत्र गजराज सिंह, उमराव सिंह रणबहादुर सिंह और दिगा सिंह थे। प्रथम और अन्तिम के वंशज कुँअर सिंह के समयतक शेष हो चुके थे। उस समय दोही शाख के वंशज जीवित थे। एक शाख में कुँअर सिंह चार भाई और दूसरी शाख में तुलसी प्रसाद सिंह तथा उनके अन्य चचेरे भाई।

तुलसी प्रसाद सिंह के क्रान्ति के पक्ष वाले दलीलों का समर्थन कुँअर सिंह के विश्वासी मुसाहब हरेकृष्ण सिंह और रणदलन सिंह अन्य मुसाहबों के साथ कर रहे थे। यही कारण हुआ कि तुलसी प्र० सिंह को सफलता मिली। तुलसी प्र० सिंह मझोले कद के हृष्ट पुष्ट शरीर के सरदार थे। अस्त्र शस्त्र की शिक्षा

---

*देखिये—१८५७ के गदर का इतिहास ले० शिवनारायण द्विबेदी प्र० ८७३—७४ तथा रिपुभंजन सिंह की जीवनी जो इसी पुस्तक में है।

में वंश की परम्परा के अनुसार दत्त थे ही। जब क्रान्ति करना निश्चित हो गया और हरेकृष्ण और रणदलन सिंह दानापुर सिपाहियों के यहाँ उभाड़ने के लिये भेजे गये तब बाबू तुलसी प्रसाद सिंह रातो रात दो सौ सिपाहियों के साथ डुमराँव भेजे गये। डुमराँव जाने का उद्देश्य यह था कि महाराज महेश्वर बक्स सिंह को समझा बुझाकर इस धर्म युद्ध में शामिल किया जाय परन्तु वहाँ उनको सफलता नहीं मिली। सब बातों को स्वीकार करके भी महाराज यही कहते रहे कि क्रान्ति सफल नहीं होगी। हमारा राज्य बेकार चला जायगा। डुमराँव से लौटने पर वे दलीपपुर और मिठहाँ भी इसी उद्देश्य से भेजे गये पर वहाँ भी रिपुभंजन सिंह दोनों भाई और अमर सिंह अपने पूर्व निश्चय पर दृढ़ रहे।

क्रान्ति जब शुरू हुई तो तुलसी प्रसाद सिंह ने बहुत बीरता और दृढ़ता तथा सच्चाई से कुँअर सिंह का साथ दिया। गाँगी की लड़ाई में हरेकृष्ण सिंह और तुलसी प्र० सिंह प्रमुख काम कर रहे थे। बीबीगंज की लड़ाई में तुलसी प्र० सिंह अपने छोटे पुत्र बा० नर्वदेश्वर प्र० सिंह के साथ कुँअर सिंह के अंग रक्षक थे। जब घमासान संग्राम के बाद कुंअर सिंह ने अपनी सेना को हटाने का आदेश दिया उस समय तीन गोरे सैनिकों ने कुंअर सिंह को एक ओर नेतृत्व करते देख आक्रमण किया। कुंअर सिंह को पीछे हटा तुलसी प्रसाद सिंह ने गोरो का सामना किया और एक टामी को मार गिराया। उसी समय दूसरे गोरे ने तमंचा से गोली मारी। गोली तुलसी प्रसाद सिंह के माथे में लगी वे तत्क्षण खेत आये। तब आपके पुत्र नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह उस गोरे को कुंअर सिंह पर संगीन चलाने ही वाला था खाडे से मार गिराया। नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह भी बाप की तरह बगल के गोरे से मारे जाते यदि कुंअर सिंह कटार फेंक कर गोरे को न मार गिराये होते। इस तरह विपक्षी को मार कर तुलसी प्रसाद सिंह लौट आये। छपरा जिले के ओदर परगने पतारि नामक ग्राम जहाँ नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह का ब्याह हुआ था तद् कालीन कवि तोफाराय ने अपने कुंअर पचासा नामक काव्य पुस्तक में इस लड़ाई का सविस्तार वर्णन नव घनाक्षरियों में किया हैं उनमें तीन घनाक्षरी इसी घटना के सम्बन्ध की हैं।

भूमि पड़ते तुलसी नर्वदेश्वर बाप पूत,
भाई के ढकेलि पीछे आगे लल करले नू।
गोरा कीर्च खींचे जौलें भाला तुलसी के चले,
भेदि झट छाती गोरा के पार निकले नू॥

ओने गिरे गोरा एने साथी के तमंचा छूटे,
ठाँइ ठाँइ ठाँइ कह अवाज दन्न निकले नू॥
हुलसत तुलसी के दमकत माथा फोरि,
अपनो नू माथा फोरि गोली रोइ गिरले नू॥

राम कहिं खेत ऐले जैसे तुलसी तइसे,
बढ़त कुँअर के गोरा भाला तानि दौड़ल नू।
भूमि पड़ले हनिंवत अस आगे ऐलें 'ईश' तौले,
खाँडा भाँजि भाला साथ गोरा क हाथ काटल नू॥

तिसरका अंग्रेज कटा कटा दाँत पीसि,
पीछे से संगीन लेले हाँफत दौड़ टूटल नू।
वार होत घातक देखत कुँअर तुरत,
फेंकि के कटार काम करि तमाम दिहल नू॥ ८॥

बाप लोथि कान्हे लादि झंडा ले आगे बढ़ले,
मारत काटत मानो उहे नायक कुँअर हो।
चतुर कुँअर पीछे से अङ्ग रक्षक बनि,
साथ बढ़े आगे शत्रु घालत जस गाजर हो॥

पलक मारत सेना आपन आगे पवले,
हर हर बम गर्जे जैसे भूखन नाहर हो।
ताकि रहे अंग्रेज माथा धै आयर रोवे,
आँधी पानी ऐले घन चीरि बिच्चू बादर हो॥ ६॥

बाबू तुलसी प्रसाद सिंह तथा रणबहादुर सिंह के अन्य वंशजों के विप्लव में सक्रिय भाग लेने के कारण आप लोगों के नाम उस समय जो कुछ वंश परम्परागत से प्राप्त सम्पत्ति स्त्री धन के रूप में जो मुह देखी अथवा खोंइछा आदि के रूप में इलमाल रियासत से समय-समय पर स्त्रियों को दी गयी थी वह सब १८५८ के जुलाई मास में १८५७ के कानून २५ के अनुसार जब्त कर ली गयी। इस जब्ती को लेकर कमिश्नर और बङ्गाल के छोटे लाट तथा भारत के गवर्नर जनरल इन कौंसिल से जो पत्र व्यवहार हुए थे वे सब आज भी पटना सेक्रेटेरियट में सुरक्षित है।

पटना के तद्कालीन आफिशियेटिङ्ग कमिश्नर श्री एच. डी. एच. फरगुशन अथवा फरकुहर ने वङ्गाल के छोटे लाट के सेक्रेटरी को १० मई १८५९ को पत्र लिखा था।

From,

H. D. H. Fnrguher Esqr.
Officiating Commissioner,
Patna Division.

To,

The Secretary,
To The Govt. Of Bengal.

No. 2—the 10th. May 1859 Patna.

Sir,

The estates of Kishun Prasad Zamindar of Shahabad, were in July 1858, confiscated under act XXV of 1857.

(2) The collector Mr. Money in his letter no 207 dated 2 December 1858 reports "That there is no doubt of his having been with the rebels, but he was not as far as I can learn either a leader (in Govt. construction of the term) nor an murderer, nor an nstigator of revolt."

(3) In December 1858, Kishun Prasad came in under the amenesty & received the usual pardon.

(4) His case appears therefore to come under Paragraph 7 of the letter no. 519 dated 8th. November 1858 from the Secretary, Govt. of India, to your address, & accordingly I solicit His Honour's orders regarding it.

(5) I enclose a list of the confiscated property of the said Kishun Prasad, & I may observe that with reference to other names besides that of Kishun Prasad being entered in its 1st. column the collector reports that "All the defendants Kishun Prasad Singh & his brothers have come in under the amenesty."

(6) I may also state that "No arrangement, were made to collect the revenue in any of Kishun Prasad Singh's estate, as the district was in the hands of the rebels, & it was probably thought useless to lease out the villages or to appoint a Sarbara Kar."

List of villages belonging to Kishun Prasad Singh & others:—

बाबू तुलसी प्रसाद सिंह तथा रणबहादुर सिंह के अन्य वंशजों के विप्लव में सक्रिय भाग लेने के कारण आप लोगों के नाम उस समय जो कुछ वंश परम्परागत से प्राप्त सम्पत्ति स्त्री धन के रूप में जो मुह देखी अथवा खोंइछा आदि के रूप में इलमाल रियासत से समय-समय पर स्त्रियों को दी गयी थी वह सब १८५८ के जुलाई मास में १८५७ के कानून २५ के अनुसार जब्त कर ली गयी। इस जब्ती को लेकर कमिश्नर और बङ्गाल के छोटे लाट तथा भारत के गवर्नर जनरल इन कौंसिल से जो पत्र व्यवहार हुए थे वे सब आज भी पटना सेक्रेटेरियट में सुरक्षित है।

पटना के तद्कालीन आफिशियेटिङ्ग कमिश्नर श्री एच. डी. एच. फरगुशन अथवा फरकुहर ने बङ्गाल के छोटे लाट के सेक्रेटरी को १० मई १८५९ को पत्र लिखा था।

From,

H. D. H. Fnrguher Esqr.

Officiating Commissioner,

Patna Division.

To,

The Secretary,

To The Govt. Of Bengal.

No. 2—the 10th.May 1859 Patna.

Sir,

The estates of Kishun Prasad Zamindar of Shahabad, were in July 1858, confiscated under act XXV of 1857.

(2) The collector Mr. Money in his letter no 207 dated 2 December 1858 reports "That there is no doubt of his having been with the rebels, but he was not as far as I can learn either a leader (in Govt. construction of the term) nor an murderer, nor an nstigator of revolt."

(3) In December 1858, Kishun Prasad came in under the amenesty & received the usual pardon.

(4) His case appears therefore to come under Paragraph 7 of the letter no. 519 dated 8th. November 1858 from the Secretary, Govt. of India, to your address, & accordingly I solicit His Honour's orders regarding it.

(5) I enclose a list of the confiscated property of the said Kishun Prasad, & I may observe that with reference to other names besides that of Kishun Prasad being entered in its 1st. column the collector reports that "All the defendants Kishun Prasad Singh & his brothers have come in under the amenesty."

(6) I may also state that "No arrangement, were made to collect the revenue in any of Kishun Prasad Singh's estate, as the district was in the hands of the rebels, & it was probably thought useless to lease out the villages or to appoint a Sarbara Kar."

List of villages belonging to Kishun Prasad Singh & others:—

Name of Defendants	Name of Parganas	Name of Mahals	Quan. of Mazes	Sudergama Rs. as. p.
Kishun Prasad Singh	Chainpur	Chaubepur	1	152-8-6
Govind Prasad Singh	,,	Khalaspur	1	152-8-6
Thakur Prasad Singh	,,	Debula	1	106-10-8
Ramesur Prasad Singh	,,	Roopur	54	144490-2-2
Raghunath Prasad Singh	,,	Mohanpur	3	186-10-8
Hanooman Prasad Singh	Powar	Baloor	2	1653-5-4
Tulsi Prasad ingh	Behea	Baligaon	1	213-5-4

Sig. A. Money
Collector, Shahabad

महाराजकुमार बाबू नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह कविवर "ईश"

आप बाबू तुलसी प्रसाद सिंह के छोटे पुत्र थे। आपके बड़े भाई का नाम म० कु० भुवनेश्वर प्रसाद सिंह था। आपका जन्म सम्वत् १८६६ शाके १७६ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को जगदीशपुर में हुआ था। आपकी मृत्यु १३२२ फसली माह फाल्गुन तिथि सप्तमी शुक्ल को ७४ वर्ष ६ मास ७ दिन की अवस्था में दलीपपुर ग्राम में हुई। आपकी कुण्डली इन पक्तियों के लेखक के पास आज तक संग्रहीत है जो नीचे दी जाती है—

कुण्डली नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह

शुभ सम्बत १८९६ शाके १७६१ आश्विन शुक्ल पूर्णिमायां अश्विनी नक्षत्रस्य प्रथम चरणे धन लग्नोदये जना—

आप मध्यम कद और गोरे वर्ण के हृष्ट पुष्ट जवान थे। आप कुश्ती, अस्त्र-शस्त्र, घुड़सवारी में वंश परम्परागत प्रथा के अनुसार दक्ष थे। आप हिन्दी संस्कृत, उर्दू, फारसी और अरबी के अच्छे विद्वान थे। बाद को आपने पढ़ने और समझने भर के लिये अंग्रेजी भी सीखकर अंग्रेजी पुस्तकों का अध्ययन किया था। आप हिन्दी के ऊँचे दर्जे के कवि थे। आपका उपनाम "ईश" था। भाषा की प्राञ्जलिता में आपको कमाल हासिल था। आपने ठेठ ब्रज भाषा का प्रयोग न करके देशज भाषाओं के मेल जोल से तुलसीदास की तरह प्राञ्जलिता लाने का सफल प्रयत्न किया था। गद्य रचना में खड़ी बोली की लल्लूलाल और सदल मिश्र की तरह ही प्राञ्जलिता देखने को मिलती है।

वलवे के समय आपकी अवस्था १८ वर्ष की थी। भोजपुरी कहावत की तरह "बारह बरीस के पूता नाहीं त कुत्ता" आप इस अवस्था ही में जवान पहलवान वीर थे। बीबीगञ्ज की लड़ाई में आप अपने पिता से साथ कुँअर सिंह के अङ्गरक्षक थे। जैसा कि आपके पिता तुलसी प्रसाद सिंह की जीवनी में कहा गया है कुँअर सिह की सेना के हटते समय जब तीन गोरे सैनिकों ने कुंअर सिह पर आक्रमण किया था तब आपने अपने पिता के साथ उनका सामना किया और एक को मार कर कुँअर सिह को उसके घातक आक्रमण से बचा लिया।

Name of Defendants	Name of Parganas	Name of Mahals	Quan. of Mazes	Sudergama Rs. as. p.
Kishun Prasad Singh	Chainpur	Chaubepur	1	152-8-6
Govind Prasad Singh	,,	Khalaspur	1	152-8-6
Thakur Prasad Singh	,,	Debula	1	106-10-8
Ramesur Prasad Singh	,,	Roopur	54	144490-2-2
Raghunath Prasad Singh	,,	Mohanpur	3	186-10-8
Hanooman Prasad Singh	Powar	Baloor	2	1653-5-4
Tulsi Prasad ingh	Behea	Baligaon	1	213-5-4

Sig. A. Money
Collector, Shahabad

महाराजकुमार बाबू नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह कविवर "ईश"

आप बाबू तुलसी प्रसाद सिंह के छोटे पुत्र थे। आपके बड़े भाई का नाम म० कु० भुवनेश्वर प्रसाद सिंह था। आपका जन्म सम्वत् १८६६ शाके १७६ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को जगदीशपुर में हुआ था। आपकी मृत्यु १३२२ फसली माह फाल्गुन तिथि सप्तमी शुक्ल को ७४ वर्ष ६ मास ७ दिन की अवस्था में दलीपपुर ग्राम में हुई। आपकी कुण्डली इन पंक्तियों के लेखक के पास आज तक संग्रहीत है जो नीचे दी जाती है—

कुण्डली नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह

शुभ सम्वत १८९६ शाके १७६१ आश्विन शुक्ल पूर्णिमायां अश्विनी नक्षत्रस्य प्रथम चरणे धन लग्नोदये जना—

आप मध्यम कद और गोरे वर्ण के हृष्ट पुष्ट जवान थे। आप कुश्ती, अस्त्र-शस्त्र, घुड़सवारी में वंश परम्परागत प्रथा के अनुसार दक्ष थे। आप हिन्दी संस्कृत, उर्दू, फारसी और अरबी के अच्छे विद्वान थे। बाद को आपने पढ़ने और समझने भर के लिये अंग्रेजी भी सीखकर अंग्रेजी पुस्तकों का अध्ययन किया था। आप हिन्दी के ऊँचे दर्जे के कवि थे। आपका उपनाम "ईश" था। भाषा की प्राञ्जलिता में आपको कमाल हासिल था। आपने ठेठ ब्रज भाषा का प्रयोग न करके देशज भाषाओं के मेल जोल से तुलसीदास की तरह प्राञ्जलिता लाने का सफल प्रयत्न किया था। गद्य रचना में खड़ी बोली की लल्लूलाल और सदल मिश्र की तरह ही प्राञ्जलिता देखने को मिलती है।

बलवे के समय आपकी अवस्था १८ वर्ष की थी। भोजपुरी कहावत की तरह "बारह बरीस के पूता नाहीं त कुत्ता" आप इस अवस्था ही में जवान पहलवान वीर थे। बीबीगञ्ज की लड़ाई में आप अपने पिता से साथ कुँअर सिंह के अङ्गरक्षक थे। जैसा कि आपके पिता तुलसी प्रसाद सिंह की जीवनी में कहा गया है कुँअर सिह की सेना के हटते समय जब तीन गोरे सैनिकों ने कुंअर सिह पर आक्रमण किया था तब आपने अपने पिता के साथ उनका सामना किया और एक को मार कर कुँअर सिह को उसके घातक आक्रमण से बचा लिया।

तो भी शत्रुओं के मारे जाने पर आपने बड़ी बहादुरी से कुँअर सिंह के हाथ का झण्डा ले लिया और अपने पिता के शव को कन्धे पर लाद कर कुँअर सिंह के स्वांग में आगे बढ़कर अपनी सेना से जा मिले। कुँअर सिंह ने भी वीर युवक के इस कृत्य से सन्तुष्ट हो अंगरक्षक के स्वांग में इनका पीछा किया।

इस घटना के उपरांत आप कुँअर सिंह के बड़े विश्वासी युवकों में हो गए थे। कुँअर सिंह ने इस बहादुरी के लिए आपकी इजमाल रियासत के अपने हिस्से से १६ गाँव इनाम दिये और आपकी नवागता धर्मपत्नी श्रीमती धर्मराज कुँअरि को रियासत के दस्तूर के अनुसार ११५० बीघे जमीन मुँह दिखाई और खोंइछा के रूप में प्रदान किया। इसी के साथ अपने हस्ताक्षर और मुहर के साथ एक सनद ता० १ भादों १२६५ साल की लिख कर दी। सनद यों है:—

बाबू कुँअर सिंह

स्वस्ति श्री बबुआ नर्बदेसवर परसाद सिंह के लिखतं श्री—महाराज कुँअर सिंह के आसीस। आगे राउर खानदान आज तक इजमाल रियासती के राख के परवरिस के बोझ रियासत पर छोड़ाये राखल। रियासत भी सदा राँवा सबके ए व्यवहार के कदर कइल और आइन्दा भी अइसने व्यवहार राखी जेह से एका कायम रहे। अंगरेजन के खिलाफ बीबी गंज की लड़ाई में राउर बाबू जी साहब हमार जान बचावे में खेत अइलीं। रउरा भी तीन अँगरेजन के मार के हमार जान बचवली एह से हम रउरा से उगरिन ना हो सकी। एह से इजमाल रियासत में जे हमार हिस्सा बा ओहमे से हम खुशी से रउरा के हसब जैल अनइस गाँव इनाम में देहली। हे राउर निज समपति भइल एसो के साल से ही रउरा मालिक भइली अपना दखल कब्जा में लेके तहसील वोसूल करीं और आमदनी लिहीं और पुस्त दर पुस्त कायम रहीं खाह जे मुनासिब समझीं से करीं दुसर बात कि राउर यह लगन में सादी भइल हा हम हसब दस्तूर खानदान रउरा महल श्री ची० दुलहिन धरम राज कुअर के खोइछा वो मुह देखाई में एगारह सौ पचास बीगहा जमीन मोखतलीफ गावों में मोताबिक फेहरिस्त जैल के माफी लाखराज

देली ऊ ऐही साल से दखल कवजा में लेके आमदनी अपना खास खर्च में तसरुफ करवी एह वास्ते एक सनद लिख देलीं के वकत पर काम आवे।

कैफीयत मौजा जे इनाम में दीआइल :—

नाम स्थान	नाम मौजात	नाम थाना	नाम मौजात	
साह पुर जगदीशपुर	चकवथ १	पीरो	पीरो	६
,,	धनगदि २	,,	बमहवार	७
,,	उलमुर ३	,,	जीतबरा	८
,,	केसरी ४	,,	जमुन्नाव	९
,,	तेनुनी ५	,,	वराँव	१०
		,,	रतनार	११
		,,	छवरही	१२
		,,	मोथी	१३
		,,	भरोही	१४
		,,	हाट पोखर	१५
		,,	रजोवा	१६
		,,	तार	१७
		,,	सनेता	१८
		,,	चौबेपुर	१९

१९ अनइस मौजा हकीअत मिलकियत सोलह आना—

कैफिअत एराजिआत जो खोंइछा और मुँहदेखी में दिआइल

नाम मौजा	थाना		बिगहा
१ जगदीशपुर	साहपुर जगदीशपुर	दोगा सिंह सीलमधे	२००
२ धनगाई	,, ,,		२००
३ चकवथ	,, ,,		२००
४ नेनुनी	,, ,,		१००

५ वमहवार	पीरो जगदीशपुर	१००
६ रतनार	,,	२५०
७ जीतौरा	,,	२५०
	ता० १ भादों–१२६५ साल	११५०

बाबू कुंअर सिंह के जगदीशपुर युद्ध में पराजित होने के बाद आप उनके साथ सासाराम गये। वहाँ आपके घर की महिलाओं के साथ बाबू कुंअर सिंह की माता पञ्चरत्न कुँअर भी आपके साथ आपके ननिहाल पलिवारे के बराँव भेजी गयी। आपको आदेश हुआ कि इनको बलिया जिले के सहतवार नामक ग्राम जहाँ उनका मायका था, पहुँचा कर आप कुँअर सिंह से संयुक्त प्रान्त के निश्चित स्थान पर मिल जायेंगे। कुँअर सिंह के पश्चिम तथा अमर सिंह के रोहतास की तरफ जाते ही आप और आपके भाई भुवनेश्वर प्र० सिंह अंग्रेजी पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। परन्तु आपके नाना ने इनको अपनी निर्दोष सन्तान कहकर कोशिश पैरवी से छुड़ाया।

पुलिस की गिरफ्तारी से मुक्त होकर आप और आपके भाई भुवनेश्वर प्रसाद सिंह स्वयं खटोली ढोकर कहाँर के स्वाँग में कुँअर सिंह की माता को सहतवार पहुँचाये। वहाँ से आप कुँअर सिंह से जा मिले। तब से आप कुँअर सिंह के साथ मध्यभारत और संयुक्त प्रान्त में भ्रमण करते रहे। आप युद्ध में सदा कुंअर सिंह के अंगरक्षक के रूप में रहते थे।

अप्रैल २३ को लीग्रैंएड को हराने के बाद २६ अप्रैल १८५८ को कुँअर सिंह का देहावसान हुआ। उसके उपरान्त आप का तथा रण सिंह के अन्य वंशजो का अमर सिंह के साथ पूर्व अनबनों के कारण ठीक व्यवहार नहीं निबह सका। अतः आप लोग गाजीपुर जिले में जाकर गुप्त वास करने लगे। वहीं गुप्त रूप से क्रान्ति के पक्ष में जो कुछ होता था आप लोग करते रहे। विप्लव शान्त होने के उपरान्त आप लोगों को अपने को छिपाना कठिन हो गया। अमेनेस्टी जो घोषित हुई थीं उसमें हत्या करने वालों तथा नेता और विद्रोह प्रचारक के लिए

क्षमा दान देने की मनाही थी। नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह ने अंग्रेजों को मारा था। अतः रञ्चमात्र भी भेद खुलने पर आपके लिए फाँसी का दण्ड था।

उधर आपके पिताजी के जो शत्रु थे और अंग्रेजों के भक्त बनकर उनको विद्रोहियों के भेद देते थे तथा समझा-बुझाकर विद्रोहियी से माफी मँगवाते थे उन लोगों ने आप को पकड़वाने की धमकी अलग दी। अतः आप लोग छिपे-छिपे रहने लगे। आप लोगों के नाम जो कुछ स्त्री धन के रूप में वंश परम्परागत प्राप्त सम्पत्ति थी उसको तो सूचना देकर शत्रुओं ने जुलाई १८५८ में ही जब्त करवा दिया था। रियासत के हक-हिस्से अलग कुँअर सिह के नाम की जायदाद के साथ जब्त हो गए थे। एक ओर आर्थिक कठिनाई और दूसरी ओर पग-पग पर प्राण जाने की आशङ्का।

इसी समय रिपु भञ्जन सिह ने सरकार के समक्ष अपनी राजभक्ति के पुरस्कार स्वरूप जागीर और कुँअर सिह की अधिकृत रियासत पाने की दरख्वास्त की और उन्होंने अपने को सरकार के समक्ष रियासत का उत्तराधिकारी साबित करने की कोशिश की। इसी के साथ इसकी भी आवश्यकता हुई कि किशुन प्रसाद सिह तथा नर्वदेश्वर प्रसाद सिह वगैरह जब्त रियासत में अपने हक हिस्सों का दावा सरकार के सामने न पेश करें। इसलिए उन्होंने इन लोगों पर इस माँग को रोकने तथा अपने पक्ष को समर्थन करने का दबाव देना शुरू किया और कहा कि यदि आप लोग रियासत में अपने हक-हिस्सों की माँग पेश करेंगे और मेरी अलाहिदिगी की बात खोलेंगे तो मैं आप लोगों के क्रांति में सक्रिय भाग लेने और हत्या करने की बात का भेद अंग्रेजों तक पहुँचा कर आप लोगों को फाँसी दिलवाऊँगा। कहते हैं कि इस प्रयत्न में बाबू रिपु भञ्जन सिह कृतकार्य हुए। परन्तु स्पष्ट कुछ न कह कर रघुनाथ प्रसाद सिंह तथा नर्वदेश्वर प्रसाद सिंह आदि से उन्होंने इतना स्वीकार करावाया कि कुँअर सिंह के बाद रिपु भञ्जन सिंह खानदान का बड़ा सरदार है और इनके कहने के अनुसार रस्म-रिवाज आदि की पाबन्दी करना सबको लाजिमी है। इसके उपरान्त रिपु भञ्जन सिंह ने नर्वदेश्वर प्रसाद सिह को मित्र बनाया और उनको दलीपपुर बसने के लिए कहा।

नर्वदेश्वर प्रसाद सिह ने भी यह सोच कर कि दलीपपुर वस जाने से रिपु भञ्जन सिह फिर उनको अँग्रेजों की हत्या करने वाली बात का भण्डा-फोड़ नहीं कर सकेंगे, वहाँ जा बसे। दूसरा लाभ दलीपपुर जाकर बसने में यह था कि अमेनेस्टी में जब इन लोगों को क्षमा दी गई तब रहने के लिए जगदीशपुर गढ़ के पिछले भाग की बहुत थोड़ी जमीन मिली जिसमें इनका रहना कठिन था।

दलीपपुर वस जाने के बाद आपने डुमराँव का सम्बन्ध बढ़ाया और डुमराँव जो अंग्रेजो की मदद देने के कारण बहुत बदनाम हो चुका था इनकी खातिर बात कर अपने उस कलंक को धोने की चेष्टा किया। आप ने डुमराँव से गाँवों को ठीका पर लेकर उनसे अपने व्यय आदि का प्रबन्ध करना शुरू किया। अब आपको अध्ययन का पूरा अवसर मिला और आपका अधिकांश समय पठन-पाठन में बीतने लगा। आप कविता भी खूब करने लगे और आपकी रचनायें ख्याति पाने लगी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की "कवि वचन सुधा" नामक जो पत्रिका निकलती थी उसमें आपकी कवितायें छपती रही। "शिवा शिव शतक" नामक भक्ति काव्य तथा "शृङ्गार दर्पण" नामक नखसिख वर्णन भारत जीवन प्रेस से छपे। दूसरी काव्य रचना "पञ्चरत्न" अप्रकाशित ही रह गयी। नीति और धर्म का गद्य पद्य मय ग्रन्थ "धर्म प्रदर्शनी" नीति पर अद्वितीय ग्रन्थ है। यह १६१८ के लगभग बम्बई के वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस से छपा है। श्री शिवपूजन सहाय जी का कहना है कि नीति पर ऐसा ग्रन्थ अब तक हिन्दी में नहीं प्रकाशित हुआ है।

जब यह ग्रन्थ छपा तब डुमराँव की महारानी वेनी कुँअर तथा उनके दामाद रींवा के महाराज वेंकट रमण सिंह और अन्य शुभेच्छु राजा महाराजाओं ने सुझाव दिया कि इस ग्रन्थ को सप्तम एडवर्ड को समर्पित किया जाय और अपनी अधिकृत रियासत को वापिस पाने के लिये मेमोरिअल दिया जाय। फलतः इस ग्रन्थ को उन्होंने एडवर्ड सप्तम को समर्पित किया और जगदीशपुर की रियासत वापिस होने के लिये स्मृति पत्र दिया गया जिसमें उपर्युक्त खुदसर महाराजों के सिफारिशी पत्र भी संलग्न थे पर उसमें सफलता नहीं मिली।

आपके वंशज आज भी दलीपपुर में हैं जिनमें इन पक्तियों का लेखक आप का पौत्र है। आपके यहाँ विद्याध्ययन के लिये विद्यार्थी आया करते थे। आपके शिष्यों में पं० धनञ्जय पाठक, महाराज कुमार, पं० हरिहर प्रसाद सिंह (जिनकी कहे काव्य की पुस्तकें अभी अप्रकाशित हैं) और पं० सर्वनन्दन त्रिपाठी अच्छे विद्वान और कवि थे। आपकी रचना की बानगी नीचे दी जाती है।

आपको १६०६ ई० के लगभग लकवा (पक्षाघात) का आक्रमण हुआ तब से आप चल फिर नहीं सकते थे। फिर भी काव्य रचना हुआ करती थी। धर्म प्रदर्शनी जो पहले लिखी जा चुकी थी इसी समय पुनः सम्पादित होकर प्रेस में गयी। आपको कई हस्त लिखित ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का श्रेय है जैसे मुबारक कवि का अलक और तिल शतक की पाण्डु लिपियाँ रसिक मन रञ्जिनी की कापी आपके ही यहाँ से लेकर नकछेदी तिवारी ने भारत जीवन प्रेस में छपवाया।

आप बड़े रख रखाव आचार विचार के रईस थे। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री महाराज कुमार विश्वनाथ प्रसाद सिंह ने जिस दिन खेती करना शुरू किया उस दिन भारी दुःख से आपने भोजन नहीं किया। कहा आज से मेरा वंश गिरहस्त हो गया। आपके दरबार में जरा भी कोई बेअदबी से न बोल सकता था और न बैठ सकता था। इन पक्तियों के लेखक को भी जो उस समय सात आठ वर्ष का बालक था अपने भाइयों के साथ दरबार के कायदे के अनुसार दो घण्टे सुबह और दो घण्टे सन्ध्या समय दूजानू बैठना पड़ता था। इसको जो कुछ एखलाक, विद्याभ्यास अथवा काव्य ज्ञान प्राप्त है वे सब उन्हीं की देन है। फिर उसी के साथ खेल-कूद, अस्त्र-शस्त्र के अभ्यास आदि के लिए भी समय आप दिया करते थे।

आपके पाँव में एक घाव हुआ जो ही आपकी मृत्यु का कारण बना। इन पक्तियों के लेखक को स्मरण है कि जब वह घाव चीरा तथा काटा जा रहा था तब आप चुपचाप मुस्कुराते हुए कुर्सी पर बैठे थे। इससे घटना से ही आपके वीर स्वभाव का पता चल सकता है। आपकी तस्वीर आज भी आपके वंशजों

के पास है तथा प्रा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना के भवन में टँगी है। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण :—

काल रात्री स्तोत्र

अखण्डा अनन्दा चिदानन्द रूपा,
त्रयी मन्त्रिका सर्व रूपा अनूपा।
अपर्णा अवर्णा नमो सर्व धात्री,
नमोकाल रात्री नमोकाल रात्री ॥१॥
अनङ्गा अभङ्गा असङ्गा अजीता,
अनन्या अनिंद्या अभेदा अभीता।
अजा निर्गुणा अम्बिका सर्वधात्री,
नमोकाल रात्री नमोकाल रात्री ॥२॥

× × ×

इत्यादि

वागीश्वरी अष्टक

अकार त्यों उकार को मकार रूप धारिणी।
त्रिदेव त्यों त्रिवेद त्यों त्रिलोक सर्व कारिणी॥
त्रिवृत्ति त्यों जपा जपा अनाह ताहि में रमो।
प्रणस्वरूपिनी सदा सुवाक ईश्वरी नमो ॥१॥

× × ×

असत्य सर्वदा जुहै सो सत्य कै लखाइयो।
सत्य सत्य सत्य सो असत्य कै भ्रमाइयो॥
अलीन को सुलीन कै प्रबोध सीधनी गमो।
उदास दास की दसा सुवाक ईश्वरी नमो ॥२॥
नहीं भयो न होइगे नहीं कछू कहौ सही।
न नाम है न ठाम है न धाम ग्राम है कहीं॥
भयो जु हौ जुहोयगो ढिठाई मातु मो छमो।
तुही कहो कहाइयो सुवाक ईश्वरी नमो ॥३॥

समस्या

संचोटे करे ।

(कवि वचन सुधा में प्रकाशित)

सवैया

तिय दोऊ ये नैन हरोल से ये बढ़ि आगे अनि रिपु छोटे करें ।
मन 'ईश' जुहैं वस कोटिन के नित ही नित पाँय पलोटें करें ॥
भट मोटे जुटे दृग धावन दे घने घायल को सुर चोटें करें ।
अति खोटे नहीं छिन ओटें रहें यह जोटें अनीदे सुचोटें करें ॥१॥
दृग पायक दोऊ के जङ्ग जुरे पलकों की फरीन अगोरे करें ।
रहिईश त्यों दाहिने वाचन ते अध उरध मारि निखोटें करें ॥
जुटिकै हटिकै हटि जूटि दोऊ बहु भाँति के पैतरे जोटें करें ।
नहिं नेकु जके न थके न रुके असि डोटि अनीन की जोटे करें ॥२॥

बसन्त वर्णन

समस्या भारत जीवन प्रेस—बसन्त दरसानी है ।

पूर्ति

प्रेम प्रगटानो राग-रङ्ग लहरानो मैन,
बान बगरानो नैन रूपन लोभानो है ।
शीतता विलानो चन्द चाँदनिहि तानो मान,
मनते मिटानो पीत वसन सुहानो है ॥
"ईश" मनमानी रसराज सरसानो वन,
बागहू लसानो सुख देत पव मानो है ।
सौरभ जहानो विरहनि वन्दिखानो त्यों,
संयोगी सुखदानी यों बसन्त दरसानो है ॥

इत्यादि

गोपी की छवि वर्णन

दृग कञ्जन के मुख कञ्जन के कर कञ्जन की पद कञ्जन की।
प्रतिविम्ब बिलौर मही मल सी तरुनीन के अङ्ग सुरञ्जन की॥
कवि को भीत पाई नई उपमा कविता रस सारस भञ्जन की।
कमलाकर माँह खिली अवली इन्दीवर कञ्जन रञ्जन की॥

बाबू निशान सिंह

बाबू निशान सिंह सासाराम प्रत्यमण्डल (शाहाबाद) के बड्डी नामक ग्राम के निवासी थे। आप चौहान राजपूत थे परगने सासाराम और चैनपुर के ६२ गावों में आपकी जमींदारी थी जिसकी मालियत सरकारी कागजों से ६१८०० थी और जो १८५७ ई० की क्रान्ति में भाग लेने के कारण सरकार द्वारा अधिकृत कर ली गयी।* निशान सिंह कुँअर सिंह के मुख्य सरदारों में थे। कहते हैं कि आपके ही ऊपर कुँअर सिंह के सैन्य संचालन का भार हरेकृष्ण सिंह की तरह था। आप विप्लव के प्रारम्भ से कुँअर सिंह की मृत्यु तक कुँअर सिह के साथ थे। आपही गांगी की लड़ाई, बीबी गंज की लड़ाई तथा अन्य लड़ाइयों में थे। अभी पटना आयुक्त कमिश्नर के दफ्तर से एक कागज मिला है जिसमें निशान सिह के सासराम में पकड़े जाने और तोप से उड़ा दिए जाने की पूरी मिसिल है। उसमें एक निशान सिह का बयान भी है जिससे उनके सम्बन्ध की तथा कुँअर सिह की यात्रा-गति विधि अथवा स्थानों का पता चलता है। ८ जून १८५८ ई० को सासराम के मजिस्ट्रेट श्री कोंल ने आरा के कलक्टर के पास लिखा कि "मैंने श्री ई० वी० वाकर से कार्य भार लिया उन्हें इस बात की सूचना मिली थी कि गदर का सरदार निशान सिह पालकी द्वारा अपने घर के समीप लाया गया है और वहाँ जङ्गल में छिपा है।"

---

* देखिए—पटना के कमिश्नर का पत्र न० २०१ दिनाङ्क ६ अगस्त १८५६ को बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री ए० आर० यंग को लिखा गया था जिसमें बिहार की जब्त जायदादों की तालिका संलग्न है। (पटना सचिवालय)

"श्री बाकर के आदेश से सासाराम के डिप्टी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री निलन के अधीन सिपाहियों की एक टुकड़ी उसी रात निशान सिह को कैद करने के लिए भेज दी गई। यह कार्य सम्पादित हुआ।"

"मैं निशान सिह द्वारा अपनी उपस्थिति में स्वेच्छापूर्वक दिए हुये बयान की एक प्रतिलिपि भी भेज रहा हूँ। उस व्यक्ति की प्रारम्भिक पहचान हो जाने पर मुझे यह आवश्यक जान पड़ा। मैंने भाग लिया था न कुँअर सिह ने लेकिन मैंने अपनी आँखों से लूट का माल देखा था जिसमें कुछ घोड़े भी थे। बाद में आजमगढ़ किले में स्थित सरकारी फौज के दबाव से आजमगढ़ से क्रान्तिकारी सेना हटी। सरकारी फौज ने गंगा तट पर स्थित शिवपुर घाट तक क्रान्तिकारी सेना का पीछा किया। यहाँ क्रान्तिकारी सेना के व्यक्तियों ने नाव से गंगा पार किया। इन नावों का प्रबन्ध किसने किया था यह मैं नहीं जानता। स्वयं बाबू कुँअर सिह ने हाथी पर गंगा पार किया। मैं इस स्थान पर गंगा नहीं पार कर सका। मेरा साथ अपने सेवकों से छूट गया जो बराबर मेरे साथ रहे थे। मैं गंगा नदी के किनारे किनारे पश्चिम की दिशा में २ अथवा ३ कोस तक चला। वहाँ से क्रान्तिकारी सेना के कुछ व्यक्तियों सहित मैंने गंगा पार किया और जगदीशपुर आया वहाँ मुझे मालूम हुआ कि सीमा सम्बन्धी कुछ झगड़ों के फलस्वरूप मुझे पुरानी शत्रुता होने के कारण शाह कबीरुद्दीन ने मेरी सारी सम्पत्ति जब्त करा दी है तथा मेरा लड़का फरार घोषित कर दिया गया है। मुझे घर लौटते भय हुआ। अतः कुछ समय तक के लिए मैं जगदीश पुर में ही रहा। लखनऊ में ठहरने के बाद से ही मैं बीमार था और चल फिर सकने या उठ बैठ सकने से भी लाचार था। आज से प्रायः ११ दिन पूर्व बुधवार के दिन क्रान्तिकारी सेना के कुछ लोग बराँव चले गये जो पीरो के उत्तर है। अमर सिह भी वहाँ चले गये थे। मैं बहुत ही कमजोर हो गया था और सोचता था कि अब जीना सम्भव नहीं है। इसीलिए मैंने बराँव से चार अहीरों को चार रुपये मजदूरी पर बुलाया और उनसे कहा कि मुझे अपने घर पहुँचवा दो। उन्होंने ऐसा ही किया। जब मैं घर पहुँचा तो मेरे पट्टीदार भंजन सिह ने मुझे घर पर ठहरने नहीं दिया। उन्होंने मुझसे कहा, "तुम पहले ही लुट

चुके हो। और स्वयं अपना सर्वनाश बुलाया है। अब तुम क्या यह चाहते हो कि मैं भी लुट जाऊँ और मेरा भी सर्वनाश हो" इस पर मैं यह सोचकर जंगल चला गया कि स्थिति शान्त होने पर या तो आत्मसमर्पण कर दूँगा अथवा फरार हो जाऊँगा। शीघ्र ही मामले की कार्यवाही समाप्त कर दी जाय। आयुक्त (कमिश्नर) की अनुपस्थिति में निशान सिंह को सासाराम स्थित ऑफिसर कमान्डिङ्ग कर्नल रकैटम के हवाले कर दिया गया जिसने फैसला के लिए उसका मामला फौजी अदालत के हवाले किया निशान सिंह को तोप से उड़ा देने का दण्ड दिया गया। और कल इस दण्डाज्ञा की कार्यान्विति हो गयी।

निशान सिंह के बयान से ज्ञात होता है कि आपका लड़का विश्वेसर सिंह किसी मुकदमें के सिलसिले में आरा था वहीं आप भी जाकर १८५७ के जे० अषाढ़ और सावन में रहे। अपने बयान में उन्होंने कहा है कि "इसी बीच दानापुर के मलंगों ने क्रान्ति कर दी। उन्होंने आरा आकर शहर लूटा। उसी दिन कुँअर सिंह भी आरा आये जिस दिन मलंगे आए थे। "यह सावन १८वीं की बात थी। इसके दो तीन दिन बाद अंग्रेजी फौज आई और उनके और दानापुर के मलंगों के बीच लड़ाई हुई। कुँअर सिंह क्रान्तिकारियों को सक्रिय सहयोग दे रहे थे। और जब जब कुँअर सिंह ने मुझको बुलाया उनसे मिलने गया। मेरा पुराना घनिष्ट सम्बन्ध था। बाद में जब गाजीपुर और बनारस से सरकारी सेनायें आयीं तब कुँअर सिंह जगदीशपुर के क्रान्तिकारियों के साथ बराँव चले गए मैं भी उनके साथ हो था। बराँव से मैंने गाँव के मालिक चौधरी शिव सहाय सिंह से उनका टट्टू लिया और अपने घर गया। आठ दिनों के पश्चात् मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे शत्रुओं ने क्रान्तिकारियों की सूची में मेरा नाम लिखा दिया है और थानेदार के पास मेरी गिरफ्तारी का वारन्ट भेजा गया है। आठ दिन के बाद कुँअर सिंह सासाराम एलाका के डेहरी के निकटवर्ती एक पहाड़ी प्रदेश में आए। अपनी जान को जोखिम में जान कर प्राण रक्षा के उद्देश्य से मैं अपने दो सेवकों सहित अपने गाँव से भाग गया और कुँअर सिंह के साथ बाँदा चला गया। बाँदा में हम लोग कुछ दिनों तक ठहरे। उसके बाद हम लोगों ने बाँदा छोड़ दिया। मैं बीमार था। मुझे पालकी

द्वारा कालपी लाया गया। जहाँ हम इस आशा में ठहरे हुए थे कि ग्वालियर से क्रांतिकारी आकर वहाँ हमसे मिलेंगे। उन लोगों ने कुँअर सिंह को यमुना नदी पार करने को लिखा था और लिखा था कि वे कुँअर सिंह से वहीं आ मिलेंगे।† अन्त में ग्वालियर से क्रांतिकारी सेना आई और कुँअर सिंह उनके साथ युद्ध करने के लिए कान्हपुर (कानपुर) गए। मैं भी कुँअर सिंह की सेना के साथ था! लेकिन हमारे पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं थे। कान्हपुर (कानपुर) में नाना राव तथा अन्य विद्रोही सिपाहियों की सरकार की शक्ति के आगे हार खानी पड़ी। उसके बाद कुँअर सिंह लखनऊ आए जहाँ उन्हें अवध के शाह द्वारा खिल्लअत तथा इस आशय का फरमान दिया गया कि वे अपने इलाके में जाकर शासन करें। एक फरमान के द्वारा कुँअर सिंह को आजमगढ़ जिले का शासन-भार भी दिया गया। उन्हें व्यय के लिए नकद १२ हजार रुपये दिए गए तथा राजा मान सिंह द्वारा १६ हजार रुपये ले लेने के लिए एक अधिकार पत्र भी दिया गया। उसके बाद कुँअर सिंह और मैं अयोध्या से आजमगढ़ आए। आजमगढ़ से १० मील पश्चिम शिवनारायण नामक स्थान पर कुँअर सिंह से सरकारी सेना से मुठभेड़ हो गयी। सरकारी सेना कुँअर सिंह की सेना से हार गयी तथा उन्हें आजमगढ़ किले में शरण लेनी पड़ी। जिसे बाद में क्रान्तिकारी सेना ने घेर लिया। बीस दिनों तक घेरा पड़ा रहा तथा प्रतिदिन दोनों पक्षों के कुछ न कुछ व्यक्ति मारे जाते रहे। दो दिनों तक खुले मैदान में युद्ध हुआ। एक दिन जब सिपाही अस्त्र-शस्त्र तथा खाद्यान्नों सहित कुँअर सिंह के घेरे में पड़ी सरकारी सेना को मदद पहुँचाने जा रहे थे, उन पर क्रांतिकारियों ने आक्रमण किया इस लड़ाई में प्रत्येक पक्ष के ५०० से ७०० तक व्यक्ति मारे गए। इस लड़ाई के बाद क्रांतिकारियों के हाथ तम्बुओं से लदे १० हाथी, ११ ऊँट, ६२ बैलगाड़ी तथा अतिरिक्त खाद्यान्न भी आए। इस लड़ाई में न तो वहाँ मुझे गिरफ्तार किया गया।

---

†नोट—केन्द्रीय आर्चाइव्ज के कागजों से सिद्ध है कि कुँअर सिंह ग्वालियर गए थे।

इसके बाद जिरह करने पर निशान सिंह ने बताया कि गङ्गापार करने के पश्चात् बाबू कुंअर सिंह जगदीशपुर पहुँचे जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी। उनका एक हाथ तोप के गोले से उड़ गया था।

इस तरह निशान सिंह की जीवनी उन्हीं के शब्दों में शेष होती है। उनके पुत्र बहुत दिनों तक फरार रहे और नेपाल में १८६५ में पकड़े गये। ३१ अगस्त १८६५ में जो बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव ने अमर सिंह के सम्बन्ध में रिपोर्ट तैयार की थी। वह इस सिलसिले में तैयार की गयी थी कि आपकी गिरफ्तारी पुलिस ने अमर सिंह में शुबहे में किया था। परन्तु उस रिपोर्ट से अमर सिंह की मृत्यु पूर्व ही हो जाने की बात साबित होने पर आप लोगों का मुकदमा अलग देखा गया और आप लोग निशान सिंह के पुत्र साबित हुए और सजा मिली।

रणदलन सिंह

रणदलन सिंह कुंअर सिंह के विश्वासी मुसाहबों में थे। आपने सङ्गठन कार्य में तथा सूचना विभाग में अपनी निपुणता दिखलायी थी। आप शायद सूचना विभाग के प्रमुख अधिकारी थे। आपके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है। कहते हैं कि आप एक नेपाली अपराधी के रूप में कुंअर सिंह के दरबार में आए थे। आपके ऊपर किसी का खून करने का अभियोग नेपाल सरकार ने लगाया था और आप जान बचाने के लिए भागकर यहाँ आए थे। कुंअर सिंह ने आपको शरण दी और धीरे-धीरे कुंअर सिंह के आप विश्वासी मुसाहब बन गये और क्रान्ति में सक्रिय भाग लिए। दानापुर बलवाइयों के यहाँ जब हरेकृष्ण सिंह जून १८५७ में भेजे गये थे तब आप भी उनके साथ गये थे और वहाँ के सिपाहियों को उभाड़कर बलवा कराने में आपका हाथ था। वहाँ से सिपाहियों के साथ आप आरा आये थे। आप बाबू कुंअर सिंह के साथ पश्चिम गये थे और वापसी समय शिवपुर घाट पर जब गङ्गा पार करके बाबू साहब हाथी पर सवार होकर प्रस्थान करने लगे थे तब आप भी उनके साथ मुसाहब के रूप में हाथी पर बैठे थे। उस पार से चलाये गये डगलस के गोलों से आपकी मृत्यु हुई और कुंअर सिंह की बाँह कटी। इस तरह आप भी १८५७ की क्रान्ति के प्रमुख शहीदों में एक व्यक्ति हैं।

१८५८ ई० की क्रान्तिकारी सरकार के अधिकारीगण

१८५८ ई० के नवम्बर-दिसम्बर में आरा के कलक्टर श्री मनी ने कुंअर सिंह और अमर सिंह द्वारा स्थापित क्रान्तिकारी सरकार के ४२ प्रमुख जीवित अधिकारियों की एक सूची तैयार की थी। उसको उसने पटना डिवीजन के कमिश्नर श्री ई० ए० सैमुअल्स के पास भेजकर अमेनेस्टी के अन्तर्गत नियमों के अनुसार किन-किन व्यक्तियों को क्षमादान दिया जाय और किन-किन को नहीं क्षमा किया जाय, की सिफारिश की थी। इस पत्र के उत्तर में कमिश्नर ने अपने पत्र-संख्यक २६ दिनांक ११।१२।१८५८ में १४ व्यक्तियों के नामों की माफी न देने योग्य लिख भेजा था। जिनके नाम थे—१. अमर सिंह, २. हरेकृष्ण सिंह, ३. शिवपरसन सिंह, ४. भोदुर सिंह, ५. सीधा सिंह, ६. नीधा सिंह, ७. रणबहादुर सिंह, ८. मेघन सिंह, ९. इब्राहिम खाँ, १०. देवी ओझा और हरेकृष्ण सिंह के चार भाई ११. लक्ष्मी सिंह, १२. काशी सिंह, १३. आनन्द सिंह, १४. राधे सिंह।

इन्हीं कागजों के आधार पर इन ४२ व्यक्तियों के संक्षिप्त परिचय नीचे दिये जाते हैं। अमर सिंह और हरेकृष्ण सिंह की जीवनी अलग दी जा चुकी हैं।

रामधुन सिंह

आप छपरा जिले के चैनपुर भङ्गोडा के निकटवर्ती ग्राम बेनी छपरा के रहनेवाले थे। आप पहले अंग्रेजों की सिपाही सेना में सूबेदार थे। कुंअर सिंह की सेना में आप जेनरल पद पर काम कर रहे थे और अमर सिंह की सेना के बारुकपुर डिवीजन के जेनरल थे। आप सीधा सिंह के साथ आकर कुँअर सिंह की सेना में शामिल हुए थे। आपके सम्बन्ध में मनी कलक्टर माफी दी जाय अथवा नहीं इसमें कुछ निश्चय नहीं कर पाया था।

भञ्जन सिंह

भञ्जन सिंह चतुर ग्राम परगना आरा के निवासी थे। आप अंग्रेजी सिपाही सेना में सुबेदार थे। कुँअर सिंह के सेना में भी आप उसी पद पर

थे। आप कुरुमवारी तप्पा डीविजन के कमान में थे। आपने आरा जेल को तोड़कर फाटक खोला था। आप के क्षमादान के सम्बन्ध में भी कलक्टर की रिपोर्ट सन्देहात्मक थी।

रामेश्वर सिंह

आप भी अंग्रेजी सेना में सुबेदार थे। कुँअर सिंह की सेना में भी सुबेदार ही रहे। आप बबुरा ग्राम, प्र० आरा के रहने वाले थे। अमर सिंह की नवाबी के समय आप मर चुके थे।

भोरन सिंह

आप आरा परगना के नवादा ग्राम के निवासी थे। अंग्रेजी सेना में आप सूबेदार थे। कुँअर सिंह की सेना में जेनरल हुए और कारीसाथ डिवीजन के कमान में थे। आपकी माफी सन्देहात्मक कही गई है।

तिलक सिंह

आप बलुआ परगना आरा के निवासी थे। अंग्रेजी सेना में हवलदार और कुँअर सिंह की सेना में सूबेदार थे। आप भञ्जन सिंह के साथ थे। उनकी बीमारी की दशा में सैन्य सञ्चालन भी किए थे।

देवकी दूबे

आप भोजपुर परगने के दुर्गावती ग्राम के निवासी थे। १८५६ ई० में आपकी उमर ३६ वर्ष की थी। आप अंग्रेजी सेना में सूबेदार थे। कुँअर सिंह की सेना में ब्रिगेडियर मेजर बनाए गए। आप नेता भी थे और आज्ञा प्रदान करते थे। आप माफी के अयोग्य सिफारिश किए गए थे।

रनजीत सिंह अहीर

अंग्रेजी सेना में सूबेदार कुँअर सिंह की सेना में जेनरल। आपका घर शाहपुर प्र० बीहीआ जि० शाहाबाद था पहले आप बारुकपुर डीविजन के जेनरल थे। फिर जब सीधा सिंह वहाँ आ गए तब आप चौगाई डीविजन के जेनरल बनाए गए। क्षमा योग्य लिखे गये थे।

रामनारायण सिंह

आप बीहीआ परगना के हाटपोखर ग्राम निवासी थे। अंग्रेजी सेना में सिपाही थे। कुँअर सिंह की सेना में सूबेदार बनाए गए थे। बारुकपुर डीविजन में थे। क्षमा योग्य लिखे गए थे।

द्वारिका सिंह

आप आरा परगने के गुण्डी ग्राम के निवासी थे। घुड़सवार सेना के जेनरल कुँअर सिंह के यहाँ बनाए गए। अंग्रेजी घुड़सवार सेना नं० ३ के आप सवार थे। कारीसाथ और तुमुरवारी तप्पा डीविजन के सवारों का कमान आपही के अधीन था। आपकी माफी सन्देहात्मक लिखी गई थी।

देवी ओझा

आप बीहीआ परगना के सहजबली ग्राम के रहने वाले थे। पहले आप कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। क्रांति में आप सरदार फौज बनाए गए। आपके कमान में पहले कारी साथ डीवीजन और बारुकपुर डीवीजन था बाद में आप ४०० गाँवों के चकलेदार बनाए गए। आपकी माफी सन्देहात्मक सिफारिश की गई।

जीवधन सिंह

आप नेता थे। आपका निवासस्थान उरवन परगना जिला गया का खमदनी ग्राम था। आप कुँअर सिंह के यहाँ सरदार थे। पहले जमींदार थे। आप बीहीआ की जनता का नेतृत्व करते थे। आपको माफी के अयोग्य लिखा गया था।

सीधा सिंह

नेता थे। गाजीपुर जिले के बलिया परगना के भेनदाई ग्राम के निवासी जमींदार थे। आपके पिता का नाम था जयनाथ सिंह। आप गाजीपुर के आदमियों के नेता थे। आपको माफी के अयोग्य कलक्टर ने लिखा था।

रन बहादुर सिंह

पहले आप जमींदार थे। जिला गाजीपुर के रहने वाले थे। कुँअर सिंह की सेना में सूबेदार थे। सीधा सिंह के साथ आए थे। बारुकपुर डीवीजन में थे। माफी के सम्बन्ध में कलक्टर ने सन्देहात्मक रिपोर्ट दी थी।

हरी सिंह

आप बीहीआ परगने के हेतमपुर ग्राम के निवासी थे। पहले जमींदार थे। विप्लव के बाद कुँअर सिंह की सेना में सरदार थे। क्षमा के योग्य सिफारिश थी।

लक्ष्मी सिंह, काशी सिंह, आनन्द सिंह, राधे सिंह

आप लोग हरेकृष्ण सिंह के भाई थे। आपका घर बराढ़ी प्र० भोजपुर जिला शाहाबाद था। आप लोग कुँअर सिंह की सेना में सरदार थे। आप लोगों के पिता का नाम आदिल सिंह था। आप लोगों की उमर १८५६ ई० में क्रम से २५, २३, २० और ४५ वर्ष की थी। आप लोग माफी न दिए जाने योग्य घोषित किए गए थे सरकार द्वारा कलक्टर ने माफी के योग्य ही लिखा था।

महादेव सिंह

महादेव सिंह आयर ग्राम परगना पीरो के थे। आज आयर ग्राम जगदीशपुर थाना में है। आपकी उमर १८५९ ई० में ३० वर्ष की थी। आपके पिता का नाम शोभा सिंह था।

सुन्दर सिंह

पहले आप कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। क्रांति में जेनरल पद पर नियुक्त हुए थे। डुमौर परगने के देहगाँव ग्राम के निवासी थे। आपकी अवस्था १८५९ ई० में ५० वर्ष की थी। आप कुँअर सिंह के साथ सारी सेना के कमान में थे। आपकी माफी सन्देहात्मक लिखी गयी थी।

साहबजादा सिंह

आप नोनउर परगने के कारवासिन ग्राम के निवासी थे। आप पहले कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। बाद को कप्तान बने। और १०० सिपाही का कमान करके सरकारी स्टीमर को सोन के पास पीछा किये। आपकी उम्र १८५६ ई० में ५० वर्ष की थी। माफी के योग्य कलक्टर ने लिखा था।

हरखू राय

आप सरदार थे। आप पहले कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। झोवा ग्राम प्र० बीहिआ के निवासी थे। आपकी उम्र १८५६ ई० में ३५ वर्ष की थी। आप छोटी सेना के कमान करते थे। आपने सितम्बर १८५८ में सरकारी नाव को किनारे खीचवा लाया था। आपकी माफी भी कलक्टर द्वारा सन्देहात्मक लिखी गयी थी।

मेघन राय

आप नेता और मुख्य अफसर थे। आप पहले कुँअर सिंह के नौकर थे। आप गहमर, प्र० जमनिया, जि० गाजीपुर के रहने वाले थे। आपकी माफी के सम्बन्ध में कलक्टर ने अयोग्य लिखा था।

इब्राहिम खाँ

आप नेता थे। आप भी मुख्य अफसर थे। आप असई ग्राम, प्र० जमानिया, जि० गाजीपुर के रहनेवाले थे। आप पहले कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। माफी के सम्बन्ध में कलक्टर ने अयोग्य लिखा था।

भोला सिंह

आप पहले कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे फिर कप्तान हुए। आप दलीप-पुर, प्र० वीहिआ के निवासी थे। आप अम्यूनिशन (गोला बारूद अस्त्र-शस्त्र) के इञ्चार्ज थे और बारूद बनाने के कारखाने आपके चार्ज में थे। आपके वंशज आज भी दलीपपुर में हैं। आपको माफी के योग्य कहा गया था।

रूपनारायण सिंह

आप उगना, प्र० वीहिश्रा के निवासी थे। आपकी उपाधि बन्शी की थी, आपकी उम्र १८५९ में ५२ वर्ष की थी। आपके पिता का नाम रघुनाथ सिंह था। आप सारी सेना को वेतन वितरण करते थे। माफी के योग्य लिखा गया था।

नीधा सिंह

आपके पिता का नाम जयनाथ सिंह था। आप सीधा सिंह के भाई थे। आप गाजीपुर जिले के वैरिया ग्राम के जमीन्दार थे। बलवे में आप सरदार थे। सीधा सिंह के साथ ही आप भी आये थे। आपकी माफी की रिपोर्ट सन्देहात्मक थी।

शिवपरसन सिंह

आप मुख्य नेताओं में थे। आप वीहिश्रा, प्र० जि० शाहाबाद के कबरा ग्राम के निवासी थे। पहले आप कुँअर सिंह के यहाँ नौकर थे। १८५९ ई० में आपकी उम्र ४५ वर्ष की थी। आप कलक्टर के पद पर थे। आपके सम्बन्ध में क्षमादान के अयोग्य कलक्टर की रिपोर्ट थी।

किफायत हुसेन

आप पहले कुंअर सिंह के यहाँ नौकर थे। बलवे में आप मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए थे। आप पटना जिले के डोमरी ग्राम के रहने वाले थे। आप सैन्य सञ्चालन भी करते थे। आपके सम्बन्ध में माफी योग्य लिखा गया था।

उदित सिंह

पहले आप कुंअर सिंह के यहाँ नौकर थे। आप मुन्सिफ बनाये गये थे। आप बँभन गाँव, प्र० वीहिश्रा के निवासी थे। आपके पिता का नाम तानदारी सिंह था। आपके सम्बन्ध में क्षमादान के योग्य लिखा गया था।

हजारी सिंह

आप आरा परगने के बलुआ ग्राम के निवासी थे। पहले आप कुंअर

सिंह के नौकर थे फिर बलवे में सूबेदार बनाये गये थे। आप करमवारी तप्पा डिवीजन में नियुक्त थे। माफी के योग्य कलक्टर ने लिखा था।

श्यामबिहारी लाल

आप परगने दनवार जिले शाहाबाद के डिलिया ग्राम के निवासी थे। आपके पिता का नाम कालीचरन था। आपकी आयु १८५६ में २१ वर्ष की थी। पहले आप कुंअर सिंह के नौकर थे। फिर क्रान्ति में मुंसिफ पद पर नियुक्त थे। माफी के योग्य कलक्टर ने लिखा था।

शिवबालक सिंह

पहले आप सिपाही सेना के सूबेदार थे, फिर क्रान्ति में जेनरल-पद पर नियुक्त किये गये। डेराहत सेना के कमान में कुछ दिनों के लिये थे। माफी के योग्य कलक्टर ने लिखा था।

महीपति सिंह

पहले आप कुंअर सिंह के यहाँ नौकर थे। फिर क्रान्ति के समय सवार पलटन के जेनरल बनाये गये। सेन्चा सेना के कमान में अस्थायी रूप में थे।

शिवबक्स मिश्र

पहले आप सिपाही सेना में सूबेदार थे। फिर जेनरल बनाये गये थे कुंअर सिंह की सेना में।

शङ्कर मिश्र, मुलुक सिंह, द्वारिका माली, जयमङ्गल सिंह

आप लोग अङ्गरेजी सेना में सिपाही थे। फिर क्रान्तिकारी सरकार के समय अदालत आम के कौन्सिलर थे।

महाराजकुमार बाबू रिपुभंजन सिंह

बाबू रिपुभंजन सिंह कुँअर सिंह के छोटे भाई दयाल सिंह के बड़े पुत्र थे। आपके छोटे भाई का नाम था गुमानभंजन सिंह। १८५७ ई० में क्रान्ति के समय आपकी अवस्था प्रौढ़ थी। आपके पिता उस समय शायद मर चुके थे, और

आपही अपनी रियासत के कर्त्ता खानदान थे। आप लम्बे कद के जवान थे। वंश की प्रथा के अनुसार आपको अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान अच्छा था। आप हिन्दी, संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान थे। आपको काव्य शास्त्र का अध्ययन भी काफी था। दर्शनशास्त्र के आप अच्छे आलोचक थे। आप कवि भी थे परन्तु आपका कहना था कि पूर्ववर्ती कवियों ने इतना कह रखा है कि उनको पढ़ने भर का ही समय नहीं मिलता। अपनी रचना क्यों और कैसे की जाय। बातें भी कहने को कुछ बची नहीं हैं। आपकी दो चार इनी-गिनी रचनायें ही प्राप्य हैं! आपके अन्तिम दिनों की एक घनाक्षरी का अन्तिम चरण यों हैं :—

"आपनों देखत में जगत सब चल्यो जात,
जगत के देखन में चलन ह्वै हैं आपनो।"

आपके दरबार में विद्वानों और कवियों का आना-जाना हुआ करता था। वहाँ एक पारखी जी नामक व्यक्ति रहा करते थे जिनका काम था आगन्तुक विद्वानों को परखना। कहते हैं एक बार कोई सन्यासी आया और पारखी जी बुला भेजे गये। उनके आने पर उनसे जब कहा गया कि आप सन्यासी हैं, जिज्ञासा कीजिए तो पारखी जी जूता उठाकर सन्यासी को मारने लगे। दो चार जूते पड़ने के बाद भी जब सन्यासी महाराज शान्त भाव से निश्चिन्त बैठे रहे तो पारखी जी जूता फेंककर सन्यासी के पावों पर गिर पड़े और क्षमा मांगकर कहे—"आप सच्चे सन्यासी हैं, मेरी परखने की इस क्रिया के लिए मुझे क्षमा दान दें।"

आपके पिता दयालु सिंह कुँअर सिंह से न पटने के कारण इजमाल रियासत से अपना हिस्सा निकालकर अपने पिता साहबजादा सिंह के समय में ही आपने लिखा लिए थे।* साहबजादा सिंह की मृत्यु के बाद फिर कुँअर सिंह से जब दयालु सिंह की शत्रुता अधिक बढ़ गयी तब उन्हें जगदीशपुर को त्याग देना पड़ा। आप अपनी जमींदारी दलीपपुर में १२२६ फसली में जाकर बस गये। यह साहबजादा सिंह की मृत्यु के थोड़े ही दिन बाद की घटना है।

* देखिए कुँअर सिंह के चारों भाइयों के बीच का सुलहनामा दिनाङ्क ११ पूस १२२१ फसली जिसकी रजिस्ट्री आरा में २ मार्च १८१३ ई० को हुई, जिसकी छपी कापी में अंग्रेजी अनुवाद पटना सेक्रेटेरियट में हैं।

आप दोनों भाइयों का जन्म जगदीशपुर छोड़ने के बहुत पूर्व हुआ था। आपकी रियासत लगभग साठ सत्तर हजार आदमी की थी, जो दलीपपुर तालुका शाहपुर और बिहिया तथा भोजपुर परगने में अवस्थित थी।* इस रियासत का उपयोग आपने अपने भाई के साथ लगभग १२८३–८४ फसली तक किया, जब कर्ज तथा मुकदमें के कारण सारी रियासत बिक गयी।

बलवे के पूर्व जब कुँअर सिंह के दरबार में क्रान्ति के पक्ष और विपक्ष में दो दल काम कर रहे थे तब रिपुभंजन सिंह क्रान्ति विरोधी दल का नेतृत्व कर रहे थे। रिपुभंजन सिंह ने अपने पक्ष के समर्थन में चचा को समझाया 'अंग्रेज देश के बादशाह हैं। हम मामूली जमींदार हैं। हमारे पास न बन्दूकें हैं, न तोपें और न फौजें। हम बादशाह के साथ किस तरह युद्ध कर सकते हैं? ऐसे काम से हमारा समूल नाश होगा। इसलिए आपका पटना जाना ही अच्छा है।'

किन्तु भतीजे की बात पर कुँअर सिंह विश्वास नहीं कर सके। इस कथन से उनका विश्वास हो गया कि मेरा बेटा मर चुका है। एक पोता है वह भी पागल है। भाई भतीजे उन्हें जाने देने की सलाह दे रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि उनकी सम्पत्ति के वे इच्छुक हैं। उन्होंने रिपुभंजन सिंह की दलील को अमान्य माना।†

क्रान्ति के प्रारम्भ में जब तक कुँअर सिंह आरा और गांगी के युद्धों में विजयपति रहे पर तब तक रिपुभंजन सिंह तटस्थ हो परिस्थिति परखते रहे। परन्तु अगस्त १ को बीबी गंज की लड़ाई में कुंअर सिंह के हारते ही रिपुभंजन सिंह ने अपने चचा कुँअर सिंह, अमर सिंह के विरुद्ध अंग्रेजों की सहायता देना शुरू किया। कुछ कागज ऐसे भी मिले हैं जिनसे रिपुभंजन सिंह का अंग्रेजों को मदद बीबी गंज की लड़ाइयों से ही सिद्ध होता है। रिपुभंजन सिंह के जंगल के लिए मुकदमें लड़ने की एक फाइल है जिसमें स्पष्ट है कि आयर ने जब जगदीशपुर

* दयालु सिंह के पौत्र बाबू छत्रपति सिंह का इजहार जो मु० न० ११८ सन् १९२९ दि० १९-७-२७ को आरा कोर्ट में दिया गया था।

† देखिए १८५७ के गदर का इतिहास, लेखक शिवनारायण द्विवेदी, पृष्ठ ८७४।

का विध्वंस करके कुँअर की जायदाद जब्त की तब उसने रिपुभंजन सिंह को उसका जङ्गल उसी दिन दे दिया जो उनके कब्जे में बहुत दिनों तक रहा, पर बाद को जब सरकार द्वारा वह छुड़ा लिया गया तब रिपुभंजन सिंह ने मुकदमा लड़ा। इस घटना से सिद्ध होता है कि वे बीबीगञ्ज की लड़ाई के बाद ही मदद देने लगे थे। फिर आयर ने जो पत्र ११ अगस्त १८५७ से १६ अगस्त तक जगदीशपुर और पीरो कैम्प से भेजे थे उसमें रिपुभंजन सिंह का आयर के कैम्प से जाकर उसको मदद देने की बात स्वीकृत है। रिपुभंजन सिंह ने अपने इस कार्य में डुमरांव के तत्कालीन महाराज महेश्वर बक्स सिंह से सहयोग लिया और अंग्रेजों को खुलकर मदद देने की नीति अपनायी। तब से वे दोनों जनता को क्रान्ति में भाग लेने से रोकने लगे और अपनी राजभक्ति अंग्रेजों के प्रति साबित करने के लिए क्रान्ति के विरुद्ध सभी उचित-अनुचित आचरणों को करने लगे। सैनिक अफसरों और जिला अधिकारियों से मिलना-जुलना, उनको क्रान्तिकारियों के भेद देना, उनकी आज्ञाओं का पालन करना, अंग्रेजी सेना को रसद पहुँचाना, विद्रोही सिपाहियों को समझा-बुझाकर क्रान्ति से विमुख करना और अङ्गरेजों से माफी मँगवाना, उत्तेजित आम जनता तथा प्रमुख व्यक्तियों को समझा-बुझाकर अङ्गरेजों के पक्ष में लाना इत्यादि आपके मुख्य कार्य थे। इसके लिए आपने अङ्गरेजों से सनदें प्राप्त की और अपनी राजभक्ति के प्रमाण हर तरह से दिये।*

---

* देखिए बाबू रिपुभञ्जन सिंह की १४-६-१८५६ तथा ६-१-१८६१ ई० की दरख्वास्तें, जिनको उन्होंने विद्रोह के बाद आरा के कलक्टर तथा बङ्गाल के छोटे लाट के समक्ष दी थीं जिनमें उन्होंने कुंअर सिंह की रियासत वापिस करने और जागीर पाने की प्रार्थना की थी। छोटे लाट के समक्ष की दरख्वास्त के दूसरे अनुच्छेद में लिखा है :—

When from the reports of the Local authorities as well as military officers and also from other proofs and documents filed in this case your petitioner's loylty to the British Govt. at the time of mutiny and also privi-

कुंअर सिंह की मृत्यु के बाद भी जब अमर सिंह की नवाबी १८५८ के अप्रैल से अक्टूबर तक शाहाबाद में रही, आप अङ्गरेजों से पुरस्कृत होकर पूर्वोक्त तरीके से खुलकर मदद देते रहे और देशी सेना का भेद बताते रहे। कहते हैं कि २ जुलाई १८५८ को लुगार्ड और अमर सिंह की सेना से जो मुठभेड़ दलीपपुर और केशवाँ में हुई थी और जंगल का रास्ता कटा होने के कारण लुगार्ड को विजय प्राप्त हुई थी उसमें अमर सिंह की उस पराजय में रिपु-भञ्जन सिंह का प्रमुख हाथ था। रिपुभञ्जन सिंह ने ही वहाँ के जंगलों को कटवाकर रास्ता साफ करा दिया था।

जब १८५६ में विद्रोह शान्त हो गया और अङ्गरेजों की विजय तथा 'अमेनेस्टी' का डंका जिलेभर में पीटा गया तब भी शाहाबाद जिले की आम जनता भीतर ही भीतर अङ्गरेजों के विरुद्ध थी और अमेनेस्टी से नफा उठाने में डरती थी। उस समय अङ्गरेजों की ओर से रिपुभञ्जन सिंह ने बहुत ही जोर का प्रचार किया और जनता को तथा विद्रोहियों को समझा-समझा कर माफी मँगवायी। कुंअर सिंह की जब्त रियासत आपको मिले इसके लिए आपने कोई प्रयत्न और कोई तरीका अङ्गरेजों को प्रसन्न करने का उठा नहीं रक्खा। १८५८ की जनवरी में दर्ख्वास्त देने के बाद आपने अपने को रियासत का हकदार प्रमाणित करने के लिये राज्य वंश के उन सरदारों को धमका कर अपने

---

ous to it, and his saving the lives of many Europian gentle men and ladies, and supplying. provisions to the British force, persuading many sepoys to lay down their arms, and dissuading others from mutiny, and also his doing other good acts are clearly evident than your petitioner is entitled to receive Jagir from Govt.; but far from receiving any, he has been deprived of his ancestral estete.

This is not consistant with royal proclaimation nor with law and justice."

पत्त को समर्थन करने वाला कागज भी तैयार किया जिन्होंने स्वयं लड़ाइयों में भाग लिया था और अङ्गरेजों को मारकर कुँअर सिंह की जान बचायी थी। आपने तुलसीप्रसाद सिंह के पुत्र नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह को जिन्होंने बीबीगञ्ज की लड़ाई में ३ अङ्गरेजों को मारकर कुंअर सिंह की जान बचायी थी। और जिनके पिता तुलसीप्रसाद सिंह उसी प्रयत्न में मारे गये थे धमकाया कि आप मेरी सहायता करो और मुझको कुंअर सिंह के बाद गद्दीनशीन मानो और मेरे अधीन रहने का एकरारनामा लिख दो तब तो तुम्हारी खबर अङ्गरेजों को नहीं दी जायगी, नहीं तो तुम्हारा खैर नहीं है। कहते हैं कि इस सम्बन्ध का कागज नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह और रघुनाथप्रसाद सिंह से लिखा भी लिया गया था जो आज भी उनके वंशजों के पास है।* यही कारण था कि नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह ने जगदीशपुर छोड़कर दलीपपुर आ बसना इसलिये उचित समझा कि यहाँ आ बसने से रिपुभञ्जन सिंह उनके भेदों को अङ्गरेजों तक इस भय से भी पहुँचाने की हिम्मत आगे नहीं करेंगे कि बागी को अपने साथ रखना उस समय राजभक्ति के विरुद्ध प्रबल प्रमाण था और रिपुभञ्जन सिंह पूरे राजभक्त थे।

रिपुभञ्जन सिंह की अपनी रियासत तो जब्त हुई नहीं थी। आपके चचा अमर सिंह तथा कुंअर सिंह के नाम की पूरी रियासत जो अमर सिंह, दयालु सिंह और राजपति सिह के हिस्सों को निकालने के बाद उनके नाम दर्ज थी, जब्त हुई थी।* आपने अपनी माँ के नाम निकाली हुई जायदाद को भी अपने नाम कराना चाहा पर वह नहीं हुआ और उसके लिए मुकदमे लड़े पर सफल नहीं हुआ।† कहते हैं कि अभी पटना के कमिश्नरी में एक ऐसा कागज मिला है

---

*देखिये वीरेन्द्र बहादुर सिंह दलीपपुर शाहाबाद का "बाबू कुँअर सिंह के वंशज" शीर्षक लेख जो १४ मई १९५५ में "नवराष्ट्र" नामक हिन्दी दैनिक में छपा है। †देखिये पटना डिवीजन के कमिश्नर का पत्र नं० २०१ दिनांक ६ अगस्त १८५९ का पत्र जिसमें बिहार भर की सभी जब्त जायदादों की रिपोर्ट छोटे लाट के पास भेजी गयी थी। उस लिस्ट में दयालु के अथवा राजपति सिंह की किसी भी जायदाद के जब्त होने का जिक्र नहीं है।

जिससे रिपुभञ्जन सिंह का सुबहा पर गिरफ्तार होना भी प्रगट होता है। परन्तु उसी कागज में बाद की मजिस्ट्रेटी जाँच के बाद यह शंका झूठी साबित हुई है और रिपुभञ्जन सिंह निर्दोष छोड़ दिये गये यह बात साबित है।

बलवे के बाद आपमें और आपके भाई गुमानभञ्जन सिंह में अनबन शुरू हुई। रिपुभञ्जन सिंह को कोई सन्तान न होने के कारण आप खर्चीले स्वभाव के थे। आपके भाई गुमानभंजन सिंह के लड़के थे। इसलिए आप दोनों में अधिकाधिक भेद बढ़ता गया और उसी तरह रियासत पर कर्ज भी बढ़ता गया। अन्त में मुकदमेबाजी भी हुई और सारी रियासत आपकी १८८३ के लगभग तक बिक गयी। तब आपकी आर्थिक दशा बहुत बिगड़ गयी और महाराज डुमराँव ने १००) का महीना आपको देना शुरू किया। जगदीशपुर रियासत के ठेकेदार श्री एनेर्स्ट मेलन भी १००) का मासिक आपको अन्तिम दिनों तक दिया। डुमराँव के महाराज राधा प्रसाद सिंह ने जो वसीयत मरते समय लिखी थी उसमें रिपुभञ्जन सिंह को १००) मासिक राज्य से दिये जाने की एक शर्त है और यह भी है कि उनकी मृत्यु के बाद वह रकम उनकी स्त्री को उनके जीवन काल तक दी जाय। आपकी मृत्यु-तिथि का ज्ञान ठीक-ठीक नहीं हो सका। इस तरह हम खेद के साथ देखते हैं कि भारत के इतिहास की जो यह विशेषता शुरू से रही है कि हर स्वतन्त्रता के संग्राम में उसका अपना कोई न कोई विपत्ती दल से मिलकर विभीषण का काम किया है वह कुंअर सिंह द्वारा सञ्चारित क्रान्ति में भी चरितार्थ होकर रहा। रिपुभञ्जन सिंह सन्तान-हीन मरे। उनके बाद उनकी स्त्री बहुत दिनो तक जीती रही।

धर्मन बीबी

१८०० ई० के द्वितीय पचीसी में धर्मन बीबी आरे शहर की सबसे सुन्दरी और धनी वेश्या थीं। वे संगीत में अपना शानी नहीं रखती थीं। बाबू कुंअर सिंह को अपनी ओर आकर्षित करने में आप सफल हुईं। पहले ये जगदीशपुर नाचने जाया करती थीं। फिर बाद को बाबू साहब ने इनको बजाप्ते रख लिया तब से ये पर्दा में रहने लगीं। पालकी पर जाना आना होता रहा। आपके लिये जगदीशपुर में पठान टोली में एक मकान बाबू साहब ने बनवा दिया था। धर्मन

बीबी मुसलमान थीं अतः बाबू साहब ने आपके नाम पर दो मस्जिदें बनवायीं। एक जगदीशपुर में दूसरी आरा शहर के चित्र टोली मुहल्ले में। आरा की मस्जिद बड़ी है। उसके प्रबंध के लिये आरा के फकीर साबित शाह तथा प्रतिष्ठित मुसलमानों की एक कमेटी बाबू साहब ने बनवा दी थी जो अब तक थी।

धर्मन बीबी को इस तरह सम्मान देने के पीछे बाबू साहब का प्रेम तो काम करता ही रहा किन्तु उसी के साथ धर्मन बीबी के सबसे सुन्दरी वेश्या होने की बात भी अवश्य थी। तद्कालीन सामाजिक प्रथा के अनुसार बड़े रईसों के यहाँ ऐसे मशहूर वेश्याओं को असमान मर्यादा से रखना इज्जत और शान की बात समझी जाती थी।

धर्मन बीबी बाबू साहब की भक्त और सच्ची प्रेमिका आजीवन बनी रहीं। कहते हैं जगदीशपुर के पतन के बाद जब बाबू साहब संयुक्त प्रांत और मध्य भारत की ओर अपनी सेना के साथ गये तब धर्मन बीबी साथ गयी थीं। काल्पी पहुँचने पर धर्मन बीबी का शरीरान्त हुआ। बाबू साहब बड़े दुःखी हुए। वहीं ज़मीन खरीदकर उसमें धर्मन बीबी दफनायी गयीं।

बाबू साहब के इस प्रेम कहानी के पीछे उनकी आन-बान शान-शौकत की भी अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं जो उनके महान् व्यक्तित्व के परिचायक हैं। धर्मन बीबी के लिये मस्जिद बनवाकर अपने धर्म के अनुसार बाबू साहब ने शिव का मन्दिर बनवाया था। ये ऐसी बातें हैं जो बाबू साहब के धर्म-ज्ञान की पराकाष्ठा को बताती हैं तथा उनकी सर्व धर्मप्रियता इससे स्पष्ट हो जाती है।

कुँअर सिंह के व्यक्तित्व का आलोचनात्मक अध्ययन

जैसा कि युद्ध अथवा क्रान्ति के महान नायकों के साथ प्रायः संघटित होता है, सिपाही विद्रोह के सेनानी बाबू कुँअर सिंह के व्यक्तित्व का असली चित्र भी आज उसी तरह वर्तमान पीढ़ी की जनता की आँखों से ओझल हो गया है और उनकी स्मृति की जो कुछ भी अवशेष झाँकी उनके सामने रह गयी है वह एक योद्धा के रूप में जिन्होंने गदर के समय अंग्रेजों के विरुद्ध अनेकों लड़ाइयाँ लड़ी थीं और उन अवसरों पर अद्भुत साहसिकता, अपूर्व रणकौशलता तथा अलौकिक वीरता और अद्वितीय संगठन-शक्ति का परिचय दिया था। यह सच है कि बाबू साहब के नाम में अजीब जादू आज भी भरा हुआ है जिसके फलस्वरूप उनके स्मरणमात्र से जनसाधारण के दिमाग में मानवता की सोयी हुई कल्पना जाग उठती है, हृदय में अनेक प्रकार की भावनायें मुखरित हो उठती हैं और उनकी एक पुरानी तस्वीर नजरों के सामने खड़ी हो जाती है। उसी क्षण कुछ बीती हुई दर्दभरी-सी बातें याद आती हैं और एक बेबसी-भरा रोष उत्पन्न होकर दिल को मसोस देता है और तब मस्तक अपने अतीत राष्ट्रीय गौरव का अनुभव करके ऊपर उठ जाता है।

ये सारे लक्षण बाबू साहब की लोकप्रियता के प्रमाण हैं। उस लोकप्रियता के, जिसका सम्बन्ध जनसाधारण के हृदय के गहनतम भावनाओं से है, जिसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति के लिए ऐतिहासिक अभिलेखों जनित वाद-विवाद का सहारा नहीं लेना पड़ता। किन्तु इतिहास लेखकों का दायित्व इससे कहीं अधिक बड़ा है। उनका कार्य इतने ही से समाप्त नहीं हो जाता कि वे कुँअर सिंह के गदरकालीन कार्यों का उल्लेख तिथि सम्वत् के साथ कर दें जिससे नायक की तस्वीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बन जाय, बल्कि इससे भी महान और गुरुतर उनका यह पवित्र कर्तव्य है कि वे उन सारी घटनाओं और परिस्थितियों की ओर भी पाठक का ध्यान ले जायँ जिनकी नींव पर उस क्रान्तिनायक के

व्यक्तित्व की दीवाल खड़ी की गयी थी और पूरे ७५-७६ वर्षों तक जिनके सहारे उस चरित्रनायक के चरित्र और विचार के विकास में क्षण प्रतिक्षण जीवन दान का सञ्चार किया गया था। जो इतिहासकार इस चित्र को बनाने में सफल होगा वही सन् सन्तावन के महान सेनानी कुँअर सिंह के व्यक्तित्व का असली चित्र उतार सकेगा।

इसी से तो रीवा, ग्वालियर, कानपुर, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर और शाहाबाद आदि स्थानों में दिखाये गये जौहरों की अभिव्यक्ति करके भी हम कुँअर सिंह की उन विभूतियों का पूरा चित्र नहीं खींच पाते हैं जिनके कारण आज १०० वर्ष बाद भी उत्तर भारत के समतल मैदानों में कुँअर सिंह के यश-गौरव की रश्मियाँ ज्यों-की-त्यों चमक रही हैं।

यह हमारी भूल होगी यदि हम यह सोचें कि चूँकि सन् संत्तावन की क्रान्ति बाबू साहब के अन्तिम चरण में संघटित हुई थी। इसलिए इस महा मेध यज्ञ में उनको अपने लम्बे और बहुमुखी जीवन के केवल दस ही मास लगाने के अवसर प्राप्त हुए। वास्तविक बात यह थी कि ये दस मास उनके जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान समय थे जिनमें उनके गत ७६ वर्षों में तपाये गये सभी उज्वल तत्त्वों के समावेश तथा उस लम्बी अवधि के बीच संघटित सारी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक अथवा वैयक्तिक अनुभवों की प्रक्रियाओं के सम्मिलित विस्फोट हुए थे जिनकी सहायता से उस क्रान्ति के उस दस मासीय महा मेध यज्ञ की पूर्णाहुति हुई थी और जिनके माध्यम से उनके व्यक्तित्व का निखार संसार को देखने का ऐसा अवसर मिला था कि आज १०० वर्षों के बाद भी वह उस सेनानी के व्यक्तित्व और महानता पर मुग्ध है।

उदाहरण के लिए उनके जीवन की एक आखिरी घटना को ही लीजिये। २१ अप्रैल १८५८ के सूर्योदय की वेला थी। शाहाबाद के शिवपुरघाट का गङ्गा-तट अर्द्ध पराजित अवस्था में अपनी बची-खुची सेना के साथ बाबू साहब उत्तर-पश्चिम प्रांत से अपनी जन्मभूमि शाहाबाद में गङ्गा पार कर प्रवेश कर चुके थे। विगत सप्ताह भर जनरल लुगार्ड और डग्बर की गोरी पलटन बेतहाशा उनका पीछा करती चली आ रही थी। आगे कुँअर सिंह और पीछे अंग्रेजी सेना।

यहाँ तक कि जिस गाँव में अर्द्धरात्रि तक बाबू साहब की सेना टिकी रही उसी गाँव में प्रातः ४ बजे डम्बर की पलटन पहुँच गयी। ठीक उसी सुखे तालाब में जहाँ से अभी-अभी विद्रोही दल ने कूच किया था।* आगे गङ्गा का किनारा पड़ता था जहाँ से बाबू साहब पार उतरने वाले थे। अंग्रेजों ने उन प्रदेशों की सारी नावों को डुबवा दिया था। चारों तरफ ढिंढोरा पिटवा दिया गया था कि किसी ने अगर कुँअर सिंह को गङ्गा पार करने में मदद दी तो वह अंग्रेजी सल्तनत के कोप का भाजन बनेगा।† प्रातः होते ही डम्बर गङ्गा के किनारे पहुँचता है और देखता है कि कुँअर सिंह ससैन्य गङ्गा पार कर चुके हैं और सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनके तथा उनकी वाहिनी के लिए वहीं के लोगों ने पहले से नावों को तैयार कर रखा था।¶ निशाना साध कर उसने अपने गुप्तचर द्वारा बताये गये बाबू साहब के हाथी पर तोप मारता है। दो व्यक्तियों के साथ बाबू साहब आहत होते हैं। घायल सेनानी अपनी सेना में छायी हुई मुर्दनी को देखता है। कमर से झट तलवार खींचकर अपनी टूटी बाँह काट डालता है और उसे गंगा को समर्पित करते हुए कहता है:—'गंगे, यह बाँह फिरंगी के गोले से अपवित्र हो गयी। यह मेरे योग्य नहीं रही।' वीर सेनानी के इस वीर कार्य से उसकी थकी-माँदी सेना का उत्साह पुनः लौट आता है। सब सैनिक मिलकर दूने उत्साह से संग्राम करने की प्रतिज्ञा करते हैं और तुरत कूच कर चन्द घण्टों में जगदीशपुर आ पहुँचते हैं। उधर बिहार आँखें बिछाये उनके पुनरागमन का स्वागत कर रहा था। उनके शाहाबाद में पुनः प्रवेश करने का समाचार बिजली की तरह सर्वत्र दौड़ जाता है। लोगों के दिल में सेनानी के घायल होने पर भी उसके वीर कार्य से एक अजीब स्फूर्ति, एक विचित्र उत्साह का संचार शिवपुरघाट ही पर हो उठा था। अंग्रेजों और उनके वफादारों का हृदय काँप उठता है। अंग्रेजो और उनके पक्षपातियों के कैम्प में भगदड़ मच जाती है। यद्यपि अंग्रेजी सल्तनत फिर से शाहाबाद

---

*कलकत्ता गजट १८५८ पृ० १०६४

†बंगाल गवर्नमेन्ट, जुडिशियल प्रोसीडिंग

¶ बंगाल अण्डर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर्स, बकलैण्ड।

में स्थापित हो चुकी थी, तो भी वह भगदड़ जारी रहती है। सुगौली से लेकर सासाराम तक २४ घण्टे के भीतर ही बिजली की तरह यह खबर फैल जाती है कि कुँअर सिंह ने फिर से शाहाबाद को जीत लिया। एक ही दिन बाद आरा से सजधज कर विशाल अंग्रेजी सेना ने जगदीशपुर पर इसलिये तत्क्षण हमला किया कि कुँअर सिंह की थकी-माँदी सेना साँस न ले सके और उसको तत्क्षण विघटित कर दिया जाय। परन्तु, कुँअर सिंह की थकी-माँदी सेना जनता की मदद से अपने सेनानी की अन्तिम कुर्बानी से प्रभावित होकर शत्रु को ऐसी करारी हार दी कि वैसा पराजय ब्रिटिश सेना को शायद ही कहीं सहना पड़ा हो।

इस तरह आप देखेंगे कि उत्तर-पश्चिम प्रांत तथा बिहार की आम जनता ने ऐसी वफादारी, ऐसी लोकप्रियता बाबू साहब के प्रति अन्तिम घड़ी तक दिखलाई कि इसको सानी १८५७ की क्रांति के इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। पर इस लोकप्रियता का कारण अगर केवल गदर के घटनाचक्रों में ढूँढ़ा जायगा तो शोधन की चेष्टा निष्फल जायगी। इतिहासज्ञों को विदित है कि गदर के अनेक नेताओं को विश्वासघातकों की करतूतों के कारण ही बाजी हारनी पड़ी थी और उन्हें जान भी खो देनी पड़ी थी। यहाँ तक कि अनेक जगहों में विद्रोहियों के जुलूसों पर अंग्रेज-भक्त जनता की ओर से ईंट और पत्थर भी फेंके गये थे, पर कुँअर सिंह के साथ बाँदा छोड़कर संग्राम के दस मास की अवधि में कहीं भी ऐसी घटना नहीं घटी। कुँअर सिंह के प्रति उत्तर-पश्चिम प्रांत तथा बिहार की जनता की यह वफादारी, यह लोकप्रियता और यह सहायता की भावना ही यह सिद्ध करती हैं कि १८५७ का अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध देश-व्यापी क्रांतिकारी आयोजन एकमात्र विशुद्ध राष्ट्रीय भावना से किया गया था न कि व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण सिपाही विद्रोह या बलवा के रूप में। तभी तो १८ लाख के कर्जदार वृद्ध कुँअर सिंह के पास क्रांति के पहले ही दिन से अवैतनिक सेना दस-दस बारह-बारह हजार की संख्या में जीने-मरने को तैयार रहने लगी। इतिहासकारों ने माना है कि कुँअर सिंह की सेना लूट से रुपये इकट्ठा करती थी। फिर, वेतन के रुपये इतनी बड़ी सेना के लिये आते

थे तो कहाँ से? यही तो सिद्ध करता है कि कुँअर सिंह संग्राम जन सेना को लेकर राष्ट्रीय भाव से अंग्रेजी शासन को हटाने मात्र था। लेनिन तथा महात्मा गान्धी ने अवैतनिक स्वयंसेवकों की राष्ट्रीय सेना इकट्ठा करने की पद्धति जो बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में स्थापित की, उस पद्धति को बिहार का वीर सेनानी कुँअर सिंह १०० वर्ष पूर्व १८५७ में ही अपना लिया था।

पर इसके साथ-साथ यह बात भी अवश्य थी कि १८५७ की क्रान्ति के आयोजकों का राष्ट्रीयता के मनोभाव पाश्चात्य देशों से लाये गये आधुनिक मनोभावों से सर्वथा भिन्न थे। उनकी राष्ट्रीयता भारतीय परम्परा के अनुकूल धर्म मूलक थी। अनुकूल रूढ़िवाद और परम्परावादिता से पूर्ण मुक्त न होने के कारण बहुत अंशों में आधुनिक दृष्टि में प्रक्रियवादी भी कही जा सकती थी; परन्तु साथ-ही-साथ उसमें लाखो हिन्दी-उर्दू पढ़े हुए शिक्षितों की नौकरी छिन जाने की आशंका, जमींदारों, सामन्तों, बेकस सिपाही परिवारों की विशाल जागीरों का अपहरण, सैकड़ों राजसिंहासनों का पददलित अपमान उनकी मान-मर्यादा की अवहेलना, देशी भाषाओं और संस्कृतियों का खुलेआम अपमान, हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों पर ईसाई प्रचारकों द्वारा आये दिन होने वाले दुराक्षेप आदि अनेक आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रश्न उस राष्ट्रीय क्रांति के आधारभूत कारण के रूप में जनता के सामने उपस्थित थे। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियों ने एक होकर भारतीय इतिहास में पहली और शायद अन्तिम बार इन राष्ट्रीय समस्याओं को आज से १०० वर्ष पूर्व के वातावरण में सुलझाने की दिल खोल कर चेष्टा की थी। पर यह चेष्टा धर्मान्धता की प्रेरणा से नहीं, बल्कि पूर्णतया साम्प्रदायिक धर्मों के निरपेक्ष भाव से अपनायी गयी थी यद्यपि धर्म की रक्षा इसका मूल उद्देश्य था। अंग्रेजी सरकार यह कह कर भी कि राज्य को धर्म के मामले में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं हैं, देशीय धर्म और संस्कार पर खुलेआम प्रहार किया था। सच तो यह है कि तत्कालीन राष्ट्रवादी सेना अंग्रेजों के चले जाने के बाद हिन्दुस्तान का शासन किस सिद्धान्त पर चलायेगी उसका मूलमन्त्र उन्होंने पहले ढूँढ़ लिया था और भारत की सच्ची राष्ट्रीयता की नीव अपनी परम्परागत

संस्कार के आधार पर क्रांति के श्रीगणेश के साथ-साथ डाल दी गयी थी। फिर आन्दोलन का श्रीगणेश भले ही सामन्त और सिपाही वर्गों की ओर से प्रचालित किया गया हो पर वह थी तो पूर्ण राष्ट्रीय भावना से सम्पन्न अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध जनक्रांति। पर यह बात जरूर थी कि क्रांति के प्रारम्भ से ही क्रांति के नेताओं पर यह भार छोड़ रखा गया था कि वे इस आन्दोलन को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनावें और जन साधारण को सहायता इसमें प्राप्त करें। पर क्रान्ति के नायकों ने यह जनप्रियता एक समान सर्वत्र प्राप्त करने में सफलता नहीं प्राप्त की और देश के स्वार्थियों ने सदा की भाँति अंग्रेजों को स्वार्थवश देशद्रोही भाव से सहायता दी। इसलिए आन्दोलन असफल भी रहा। पर आन्दोलन को उत्तर-पश्चिम प्रान्त तथा बिहार की भोजपुरी भाषी जनता ने उसको राष्ट्रीय रूप में अपनाया और अपना पूरा सहयोग उसकी सफलता में प्रदान किया। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है इन प्रदेशों में इस आन्दोलन को जनसाधारण का समर्थन मिला और इस समर्थन की मात्रा शायद हिन्दुस्तान भर की तुलना में यहाँ (भोजपुरी भाषी प्रदेशो में) सबसे अधिक थी। परन्तु भोजपुरी देश ही में ऐसा क्यों हुआ, सारे हिन्दुस्तान भर में यह लहर क्यों नहीं दौड़ी ?

इस प्रश्न के उत्तर में केवल इतना कह देना कि भोजपुरी भाषी देश बलवाई सेना का गृह प्रदेश था इसलिये यहाँ आन्दोलन को लोकप्रियता प्राप्त हुई, पर्याप्त नहीं होगा। इतिहासज्ञों को मानना होगा कि राष्ट्रीय क्रांति के प्रति यहाँ की जनता में ऐसी लोकप्रियता जाग्रत करने का श्रेय उपर्युक्त कारणों को है, बल्कि यहाँ के योग्य और जनप्रिय नेतृत्व और उसके महान् व्यक्तित्व और जनप्रियता तथा उसके साहस पूर्ण कारनामों तथा संगठन-शक्ति को प्राप्त हैं। इस प्रदेश के प्रधान नेता बाबू कुंअर सिंह के जीवन की अस्सी वर्षों की लम्बी अवधि में प्रदर्शित नेतृत्व के इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर भोजपुरी भाषी प्रदेशों की जनता ने अन्त तक कुंअर सिंह का साथ दिया और उनकी मृत्यु के बाद भी उनके उत्तराधिकारी अमर सिंह को तब तक सहायता पहुँचाती रही जब तक वे अंग्रेजों के साथ जेनरलों द्वारा पूर्ण पराजित करके शाहाबाद से बाहर नहीं निकाल दिए गये।

अतः कुँअर सिंह द्वारा इस अद्वितीय लोकप्रियता के प्राप्त करने के कारणों को जानने के लिए इतिहास-समीक्षक उनके जीवन के अस्सी वर्ष के कारनामों का अध्ययन करेंगे जिनके सापेक्ष समिश्रण से ही १८५७ ई० की जुलाई तथा उसके बाद १० महीनों के इतिहास का प्रधान प्रेरक कुंअर सिंह का निर्माण हुआ था और उनसे वे जौहर चमक पाये थे जिनसे प्रभावित होकर जनसमुदाय ने आज १०० वर्ष बाद भी उनकी यादगारी नहीं भुला सकी।

बाल्य जीवन का वायुमण्डल

सन् १८१२ ई० में फ्रान्सिस बुचानन ने शाहाबाद के गाँवों का भ्रमण किया था और इसी सिलसिले में बाबू कुँअर सिंह के पिता बाबू साहबजादा सिंह की जन्मभूमि जगदीशपुर भी वह गया था। साहबजादा सिंह से उसकी मुलाकात नहीं हो सकी थी क्योंकि उस समय गुलेल की चोट लग जाने के कारण उनकी हाथ की अँगुली टूट गयी थी। साहबजादा सिंह की अवस्था उस समय ६५ वर्ष की थी। बाबू साहबजादा सिंह की जमीन्दारी का वर्णन करते हुए बुचानन लिखता है—"रैयतों से लगान नहीं वसूल हो रही है और सरकार की मालगुजारी चुकाने के लिये जमीन्दार के सिर पर कर्ज बढ़ता जा रहा है। यह याद रखने की बात है कि बाबू साहबजादा सिंह की जमीन्दारी शाहाबाद में सबसे बड़ी और सम्पूर्ण जिले भर में फैली हुई है जिसमें रैयतों की संख्या १ लाख से ऊपर की होगी और उस शोषण और उत्पीड़न के युग में भी यह जमीन्दार अपनी रैयतों की लाचारी वगैरह का विचार करके बराबर लगान छोड़ देता है और सामन्तशाही के युग में भी अपने वर्ग के लोगों की आलोचनाओं की परवा किये बिना छोटी जाति और नीचे तबके के लोगों को पास बैठाता है। उनकी बातें सुनता है, मुसीबतों में उनका साथ देता है और राज्यकाज में भी उनसे सहायता लेता है। इसलिये यह जमीन्दार साहबजादा सिंह शाहाबाद का सबसे लोकप्रिय व्यक्ति है, खासकर ऐसी स्थिति में जब उसके खून और खानदान भी वैसे ही उच्च और श्रेष्ठ है जैसा कि भारतीय जनता में नेतृत्व करने के लिये सदा आवश्यकता रहती है। यह भी जानने की बात है कि बाबू साहब-

जादा सिंह और उनके पुत्र बाबू कुँअर सिंह के समय में ही आप दोनों के अतिशय शिकार प्रेमी होने और पिछड़ी जातियों का साथ देने के कारण शाहाबाद और निकटवर्ती जिलों की अछूत जातियाँ यानी पासी बहेलिया और मिस्कार जिनका पेशा ही शिकार और चिड़िया पकड़कर बेचना था, स्पृश्य बन गयीं और उनके छुए हुए जल आदि का पान सभी उच्च वर्ण के लोग करने लगे।

अपने पिता के समय के ऐसे ही वातावरण के बीच बाबू कुँअर सिंह का पालन-पोषण हुआ था और इन्हीं उदारता पूर्ण तत्वों के द्वारा उनके संस्कार की सृष्टि हुई थी। उन्होंने भी तो अपने पिता की तरह ही गरीबी के तीखेपन को बचपन में स्वयं अनुभव किया था। तभी तो स्वयं बाबू कुँअर सिंह के राज्य-काल में भी उनकी रियासत से कभी भी लगान आधा से अधिक वसूल नहीं हुआ, पर लगान के लिये कभी रैयतों पर नालिश भी नहीं हुई। यद्यपि उनकी पूरी जिन्दगी मुकदमेबाजी ही में बीती थी, पर वे हमेशा समान स्थितिवाले जमीन्दारों और समाज के सूदखोर शत्रुओं के साथ ही लड़ते रहे। इधर लगान वसूली में ऐसी रियायत और उधर रैयतों के हित के लिये बाँध, आहर, तालाब और कुँओं की संख्या बढ़ती ही गयी। नये-नये मन्दिर, मस्जिद और भवन आदि बनते ही गये। ऊपर से हर गाँव में हर साल रैयतों को इनाम स्वरूप माफी लखराज के रूप में दी हुई जमीन की तायदाद भी बढ़ती ही गयी। आज भी कुँअर सिंह के राज्य की जमीन्दारियों में ऐसी जमीनों का अनुपात उस गाँव के पूरे क्षेत्रफल की तुलना में कहीं एक तिहाई, कहीं आधा, तथा कहीं एक चौथाई या पाँचवें हिस्से से कम नहीं होगा। इस उदारता का फल यह हुआ कि ऋण ८ लाख से बढ़कर १८ लाख हो गया। परन्तु उस समय भी जगदीश-पुर के जङ्गल का पैदावार जङ्गल के निवासी ही खाते रहे। जमीन्दार को शिकार के समय कुछ आवभगत कर देने के सिवा शायद ही उन्हें कभी कुछ देना पड़ता था। आम-महुआ के बागों के फल कभी भी निलाम नहीं होते थे तथा खाने बाग के फलों को भी रैयत ही खाते थे उनको बेचना या निलाम करना शान के विरुद्ध बात थी। और यह वही जमाना था जब कि तत्कालीन जमीन्दार

गए बगीचों के झड़े हुए पत्तों को भी बन्दोबस्त करते थे, गाँव की परती जमीन पर उभड़ी हुई नोनी का भी दाम ले लेते थे, खुद सरकार भी अफीम जैसी जहर की अनैतिक खेती कराकर पैसे टानती थी, रैयतों का, उनकी इच्छा के विरुद्ध अपने खेतों में नाज के बदले 'नील' का घिनौना पौधा लगाने के लिये बाध्य करती थी, जिसका मुनाफा विलायती साहबों की जेब में जाता था, जबकि अधिकांश जमीन्दारियों के बाँध ढह चुके थे, तालाब और कुएँ सूख चुके थे, किसान रो रहे थे, जमीन्दार महल के भीतर मौज उड़ा रहे थे।

यही कारण है कि विहार के तत्कालीन अँग्रेजी अफसरान को जब कभी भी कुँअर सिंह अथवा उनके पिता के विषय में कुछ लिखने की जरूरत हुई तो उन्होंने स्पष्ट रूप से बिना किसी अत्युक्ति के लिखा कि शाहाबाद में उनकी सबसे अधिक प्रतिष्ठा है, जिलेभर की जनता में उनका सबसे बढ़कर आदर है। जहीं आदर है वहीं प्रेम है। आदरशून्य प्रेम क्षणिक होता है। सच्चा प्रेम वह होता है जो कठिन से कठिन घड़ी में भी नहीं टूटे। सच्चा नेता वह होता है जिसका बड़ी से बड़ी मुसीबत में भी जनता साथ दे। बाबू साहब को बुलाने के लिये पटने के कमिश्नर का परवाना आता है। विद्रोह छिड़ चुका है। चारों तरफ वातावरण सन्देह तथा अविश्वास से भरा हुआ है। अभी-अभी कमिश्नर ने पटने के कई गणमान्य व्यक्तियों को अपनी कोठी पर इसी तरह बुलाया था और उनको गिरफ्तार कर पीछे फाँसी पर लटकवा दिया था। लोगों को भय होता है कि कहीं उनके प्यारे बाबू साहब के साथ भी ऐसा ही विश्वासघात न किया जाय। वे इन्हें पटना जाने से रोकते हैं। शीघ्र ही चारों तरफ यह अफवाह बिजली की तरह फैल जाती है कि लाखों भोजपुरी जनता की श्रद्धा के भाजन, उनकी पूजा के देवता बाबू कुँअर सिंह को अंग्रेज बे-कसूर फाँसी देना चाहते हैं। क्या भोजपुर की जनता उनके पवित्र शरीर को जिसमें इतिहास प्रसिद्ध राजा भोज का रक्त प्रवाहित हो रहा है, डोम कसाइयों द्वारा फेंका जाना बर्दास्त करेगी ? नहीं, हर्गिज नहीं ! चारों ओर से आवाज आती है "हम मर मिटेंगे, पर बाबू साहब को बेईमान अंग्रेजों के हाथ में नहीं पड़ने देंगे। उलटे हम उस बेईमान की सल्तनत को मिटा देंगे, हम विद्रोहियों का साथ देंगे, भोजपुर के राजा

को अंग्रेजों का ताज छीन कर पहना देंगे।" भोजपुर के जवानों ने बाबू साहब को दिये गये अपने वचन का आखिरी दम तक अक्षरशः पालन किया। बाबू साहब को लगे गोले का बदला लीग्रांड की पराजय से लिया, लीग्रांड की मृत्यु से चुकाया। बाबू साहब की मृत्यु के बाद भी अपना संग्राम दूने उत्साह से जारी रखा। शाहाबाद से अंग्रेजी राज को फिर से उखाड़ा। अपनी सरकार बनायी, अपना शासन कायम किया। अपनी कचहरियाँ, अपना जेल, अपनी व्यवस्था यानी पूरा स्वराज्य कायम किया।

यह तो बिलकुल नयी चीज थी। पूरी प्रगतिशील क्रांति के लक्षण निर्माणों-न्मुख आन्दोलन की तस्वीर। चर्बी लगी हुई कारतूस के लिए की गयी बगावत, रेल, तार और जहाज को प्रेतकार्य समझने वालों द्वारा किए गये विद्रोह में सृजन की यह भावना कहाँ से आयी। परन्तु याद कीजिए, शाहाबाद में क्रान्ति छिड़ने के पहले ही दिन बाबू कुँअर सिंह ने बलवाइयों को कलक्टरी के कागजों को जलाने से मना किया था। उन्हें यह बतलाया था कि यह देश की सम्पत्ति हैं और नयी शासन व्यवस्था कायम करने और चलाने में हमें इनकी जरूरत होगी। पुनर्निर्माण की यह प्रेरणा उन्हें बाबू साहब के जिम्मेदारी भरे नेतृत्व से मिली थी—उस अनुभवी और उदार व्यक्ति के नेतृत्व से, जो जीवन भर एक ओर तो देश में चलने वाले अधिकांश राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों में भाग लेते रहे थे तो दूसरी ओर बचपन से ही पश्चिमी विचारों के निकटतम सम्पर्क में रहे थे, बचपन से ही सैकड़ों से दोस्ती की थी, उनके विकसित स्वातंत्र्य भावों का एक राष्ट्रीय क्रान्ति के नेतृत्व के लिये जिन-जिन गुणों की आवश्यकता है उन सबों से अपने को अलंकृत करने की जीवन भर चेष्टा की थी।

कुँअर सिंह की ऐसी महान जनप्रियता तथा उनका व्यक्तित्व ही इस बात के प्रत्यक्ष कारण हैं कि १८५७ की क्रान्ति के प्रारम्भ होने के अन्तिम क्षणों तक अंग्रेजी सरकार के अधिकारियों ने बाबू कुँअर सिंह को अपनी ओर मिलाये रखने का भरपूर प्रयत्न किया था।

१८५५-५६ साल में कुँअर सिंह की सम्पत्ति और मान-मर्यादा की रक्षा करने के अभिप्राय से बंगाल सरकार और उसके स्थानीय अधिकारियों ने भारत में

अंग्रेजी सल्तनत की प्रचलित परम्परा के प्रतिकूल उनके राज्य को सरकारी प्रबन्ध में ले लिया था और उसके अनुसार काम करना भी शुरू कर दिया था। ऐसा करने में उनकी राजनैतिक दूरदर्शिता थी, इसके बहुमुखी उद्देश्य थे। प्रथम तो यह कि कम्पनी सरकार का सुस्थिर दुर्ग बंगाल (कलकत्ता) था और बंगाल और उत्तर-पश्चिम भारत के बीच बिहार का वह भूभाग (शाहाबाद जिला) पड़ता था जिसको भोजपुर प्रदेश कहते हैं और जहाँ से गंगा और ग्रैण्डट्रङ्क रोड एक साथ गुजरती हैं। उन दो भागों द्वारा ही बंगाल का रास्ता अच्छे दिनों में अथवा संकट की घड़ियों में उत्तर-पश्चिम भारत से उस समय सुलभ था। अतः इस भूभाग पर किसी बहाने सरकारी अधिकार रखना उनकी राजनैतिक दूरदर्शिता थी।

दूसरा उद्देश्य इसी के साथ यह था कि इस भोजपुर प्रदेश की जनता के स्वभाव, अक्खड़पन और देशप्रियता से सरकारी अधिकारी भलीभाँति भिज्ञ थे वे। जानते थे कि इस अञ्चल की जनता रुपये के लोभ से देश के विरुद्ध नहीं लड़ सकती। वह इतना अक्खड़ स्वभाव की होती है कि लड़ाई-लड़ाई भर के लिए मोल लेने को तैयार हो जाती है, फिर ऐसी जनता के नेता बाबू कुँअर सिंह थे जो बेताज के बादशाह के समान इनके बीच प्रिय थे। अतः तद्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए उन्होंने कुँअर सिंह को अपनी ओर मिलाये रखना सर्वथा उचित और राजनैतिक दूरदर्शिता समझी।

ऐसा करने का तीसरा उद्देश्य या कारण यह था कि अंग्रेज इस बात से भिज्ञ थे कि इस भोजपुर प्रदेश के निवासियों ने अंग्रेजी सरकार की सार्वभौमिकता और सत्ता को तब तक पूर्णरूपेण हृदय से स्वीकार नहीं किया था। इससे उनके सर्वप्रिय नेता को अपनी ओर मिलाये रखना अत्यावश्यक था।

चौथा कारण यह भी था कि अंग्रेजों की जमीन जब्ती तथा राज्यापहरण की नीति से अंग्रेजी सरकार देशभर में बहुत अधिक बदनाम हो गयी थी। इसलिए बिहार के वीरभूमि, भोजपुर प्रदेश के सर्वेसर्वा कुँअर सिंह के प्रति अपनी उस नीति के विरुद्ध उदारता और स्वेच्छा प्रकट करके यदि उनके राज्य का प्रबन्ध केवल कर्ज साफ करने और राज्य बचाने तथा कुँअर सिंह की संकट

काल में सहायता देने के अभिप्राय से सरकार ले लेती है तो उसका प्रभाव अन्य राज्यवंशों पर तथा जनता पर सरकार के पक्ष में अच्छा पड़ेगा।

पाँचवाँ भीतरी कारण तथा उद्देश्य राज्य-प्रबन्ध लेने का यह भी साबित है कि कुँअर सिंह की कोई सन्तान नहीं थी और अंग्रेज यह जानते थे कि एक-न-एक दिन यह बड़ा राज्य, जिसकी प्रधानता सैनिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, सरकार के अधीन होने को ही है क्योंकि कुँअर सिंह काफी वृद्ध हो चुके हैं और अधिक दिन नहीं चल सकते। इसलिये पहले ही से कुँअर सिंह की भलाई की भावना से उनके राज्य का प्रबन्ध-भार ग्रहण करने के दिखावा में उसको अपने अधीन रखना राजनीतिज्ञता की सुन्दरतम चाल थी। फिर इसी के साथ कुँअर सिंह का व्यक्तित्व, उनका अंग्रेजों के प्रति सद्व्यवहार और मित्रता, उनकी उदारप्रियता और महानता आदि गुण भी ऐसे थे जिनसे उच्चतम मानवता के भावों को वहन करने वाले अंग्रेजों की सहानुभूति उनके प्रति सहसा आकृष्ट थी। बाबू साहब की शिकार-मित्रता और अंग्रेजों का उसमें शरीक होना, नवीन सुधारों को कार्यान्वित करने में बाबू साहब का दिल खोलकर सहयोग दान, उनका महान व्यक्तित्व जिसके प्रभाव से प्रथम सहचर्या में ही मिलने वाले के मन में उनके प्रति विश्वास जम जाता था, ऐसे गुण थे जो विपक्षी अंग्रेज को भी अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल होते थे और इसीलिये अधिकारियों ने अन्तिम घड़ी तक बाबू साहब के प्रति अंग्रेजी सरकार का ध्यान आकृष्ट रखा। लेकिन कम्पनी के अफसरों की व्यक्तिगत नीति में चाहे जितनी भी उदारता और दूरदर्शिता भरी हो, कम्पनी राज की नीति कुछ और थी। स्थानीय अधिकारियों की इच्छा के विरुद्ध भी सरकार ने जब उनकी सम्पत्ति का प्रबन्ध-भार एकाएक त्याग कर कुँअर सिंह को आग में झोंक देने तथा उनको अपनी नगण्यता और लाचारी अनुभव करा देने की चाल चली, तो वे अफसर जो इससे सहमत नहीं थे क्षुब्ध नहीं थे, तो कम-से-कम हताश जरूर हो गये होंगे। शायद उनकी कटुता का अनुभव वे सरकारी अफसर अच्छी तरह कर सके होंगे जिनकी चेतावनी और चेष्टा के बावजूद भी सरकार ऐसी त्रुटियाँ कर बैठी थी, पर तब भी अन्त में उन्हीं बेचारों को दोषी भी बनना पड़ा था। वही टेलर,

जिसने शाहाबाद के जिला-जज की हैसियत से १८५५ ई० में सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में अपने ऊपर बदनामी उठाते हुए भी महाजनों से बाबू कुँअर सिंह की सम्पत्ति और मर्यादा की रक्षा के लिए कई अनाधिकार प्रयत्नों को किया था, जिसने पटना के कमिश्नर की हैसियत से बंगाल सरकार और बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के समक्ष कुँअर सिंह के पक्ष की बातों की सिफारिश करने में कुछ उठा नहीं रखा था, जिसके हृदय में अन्तिम घड़ी तक कुँअर सिंह के प्रति विश्वास और सद्भावना बनी रही, कुँअर सिंह को विरोधी बनाने का अपराधी ठहराया गया और सरकारी दृष्टिकोण से सही तरह से दण्डित किया गया।

ठीक यही दशा अन्य अधिकारियों की भी थी। १८५५ में पटना के कमिश्नर श्री.................था। उसे जब यह ज्ञात हुआ कि आरे के अंग्रेज अफसर बाबू कुँअर सिंह सम्पत्ति और मान रक्षा के लिए कई अवैधानिक कार्य करने पर उतारू हो गये हैं तो उसने एक सरकारी अधिकारी होने के नाते उन्हें ऐसा करने से रोका और बंगाल सरकार का ध्यान उन अवैधानिक प्रयत्नों की ओर आकर्षित किया, परन्तु जब वह स्वयं इस बात की जाँच के लिए आरा गया तो वह भी कुँअर सिंह को संरक्षण देने के पक्ष में हो गया। और आरे के सरकारी अफसरों के वैयक्तिक कार्यों को सरकारी नीति के अनुरूप परिणत करने का प्रयत्न किया। ठीक यही हालत बंगाल सरकार के उच्चतम अधिकारी लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर एफ० जे० हैलीडे के साथ भी संघटित हुई। वे भी जब १८५५-५६ के जाड़े में बिहार का भ्रमण किये तो वे भी बाबू कुँअर सिंह के व्यक्तित्व की महानता से इतना प्रभावित हुए कि उनकी सम्पत्ति को सरकारी संरक्षण देने का निश्चय कर लिये। ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस सरकार के अधिकारीगण कलक्टर, जिला-जज, कमिश्नर, गवर्नर सभी एक स्थानीय नीति को अपनाने के लिए जोर दे रहे हैं और वे सबके सब उस नीति के अवलम्बन में सरकार की भलाई मानते हैं, उस नीति को लगभग दो वर्षों तक कार्य में परिणत करके भी एकाएक उसकी अवहेलना कर दी जाती है और उस अवहेलना का कारण राजस्व विभाग के कुछ विशेषज्ञों के मतानुसार यह बताया जाता है कि वह नीति कतिपय प्राचीन अधिनियमों और नियमों की मंशा के अनुकूल नहीं है। जिस सरकार

का ढाँचा इतना कठोर और भयावना हो गया हो कि जिसमें परिस्थिति की गम्भीरता और आवश्यक नीति अवलम्बन की समझ का सर्वथा अभाव है। उससे ऐसे कार्यों का प्रतिपादन होना आश्चर्यजनक बात नहीं है।

कम्पनी सरकार ने जो सन् ५७ के जुलाई में शुरू होने वाली क्रांति के केवल दो-ढाई मास पूर्व मई मास में कुंअर सिंह की रियासत का प्रबन्ध छोड़ कर यह ऐलान कर दिया कि सरकार अब कर्जदारों के कर्ज को चुकता करने का जिम्मेदार नहीं है और उधर से कर्जदारों को भी उकसाया कि एक माह के अन्दर ही वे अपने रुपये वसूल करलें नहीं तो सरकार इसके लिये जिम्मेदार नहीं होगी और उसके साथ-साथ कुँअर सिंह से भी कहा कि आप एक मास के अन्दर कर्ज देने का प्रबन्ध करें नहीं तो रियासत निलाम होगी। इस कार्यवाही पीछे के आधारभूत कारण क्या थे यह जानने की आवश्यकता है। यह प्रश्न बड़ा ही जटिल और गम्भीर है। सरकार के राजस्व विभागीय अधिकारियों को उन नियमों और अधिनियमों का ज्ञान दो वर्ष पूर्व जब कुँअर सिंह के राज्य का प्रबन्ध सरकार ने लिया था, थाही। तब उस समय ही यह प्रश्न क्यों नहीं उठाया गया ? १८५७ के मई मास में जब चारों ओर का वातावरण विद्रोह के पक्ष में हो रहा था तभी एकाएक सरकारी पूर्व नीति के विरुद्ध कुँअर सिंह को संकट में डालने, उनकी रियासत को महाजनों के हाथ में दे देने की सुविधा देने, उन्हें हर तरह से अपमानित और जनता के समक्ष हेय तथा दिवालिया साबित करने के लिए ही क्यों उनकी रियासत छोड़ दी गयी ? इन प्रश्नों के पीछे महान् राजनैतिक रहस्य छिपा हुआ प्रवाहित होता है। इसको जानने-समझने के लिए इतिहासज्ञों को विशेष अध्ययन करने की आवश्यकता है। उन्हें सोचना है कि आरा से फोर्टविलियम तक उच्चतम अधिकारियों में एकाएक यह परिवर्तन केवल उन राजस्व विभागीय नियमों और उपनियमों के कारण नहीं हुआ होगा जिनका ज्ञान सरकार को पहिले भी था, बल्कि इसके पीछे किसी दूसरे योग्य और महान् राजनैतिक घटना का कारण अवश्य छिपा रहा होगा। उस कारण को जानने के लिये समीक्षकों को १८५७ और ५६ की राजनीतिक परिस्थिति का अध्ययन करना होगा तथा उसके पूर्व के घटना विशेषों की छानबीन करनी होगी और तब

समझना होगा कि सरकार ने एकाएक अपने पूर्व निर्धारित राज्य जब्त की नीति तथा कार्यवाइयों को क्यों बदली और स्थानीय अधिकारियों की राय के विरुद्ध इतना जल्दी कुँअर सिंह के राज्य का प्रबन्ध-भार क्यों छोड़ दिया ? दिसम्बर १८५६ में इन्हें इस आशय की नोटिस दी गयी कि आपका राज्य-प्रबन्ध सरकार चन्द कारणों से अब नहीं कर सकेगी और मई में बलवा के ठीक दो मास पूर्व उसे छोड़ भी दिया।

उस समय बिहार की ही नहीं, उत्तर-पश्चिम प्रांत की सरकार की भी विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा था। एक ओर सेना तथा पुलिस असंतुष्ट होकर षड्यन्त्र रच रही थी, दूसरी ओर जमींदार भी राज्य जब्ती की नीति से क्षुब्ध थे। सरकार को इन दोनों से निबटना था, पर वह दोनों से एक साथ निबटने की शक्ति नहीं रखती थी। कलकत्ता से आगरा तक उस समय गोरी पलटन की संख्या शायद दस-बारह हजार के लगभग ही थी जो एक सौ स्थानों में बँटी हुई थी। उधर जमींदारों में केवल अंग्रेज-भक्त जमींदार ही सरकार से किसी न किसी रूप में पुरष्कृत होकर संतुष्ट थे। पर इनकी संख्या के प्रचुर होने पर भी इनका प्रभाव जनता या समाज में नहीं के बराबर था। पुराने खानदानी जमींदार भी अंग्रेजों के व्यवहारों से भीतर-ही-भीतर क्षुब्ध होकर भी प्रगट में उनके समर्थक ही थे। इसलिए सरकारी नीति जमींदारों को मिलाकर सेना से पहले निबटने की हुई। बिहार में इस नीति के अनुसरण में सरकार ने जान-समझकर भी कई बड़े जमींदारों के विद्रोह-भावों की उपेक्षा की और उन्हें अपनी ओर मिलाये रखा। गिद्धौर के महाराज जयमङ्गल सिंह के भावों और व्यवहारों से कटुता का अनुमान होते ही सरकार ने उन्हें बड़ी राजनीतिकता से मिलाकर अपने पक्ष में किया। फिर टेकारी की रानी के किला पर अंग्रेजों के आक्रमण की आशंका में लड़ाई हेतु तोप लगवा देने पर भी सरकार ने उसकी इस विद्रोही हरकत की उपेक्षा की और उसे मिलाये रखने में सफलता पायी। हथुआ और बनारस के राजाओं को, वारिसों के उलट-फेर के जरिये पहले से ही पक्ष में बना कर रक्खा गया था; कुँअर सिंह को भी तो १८५५ से ही हर तरह से संरक्षण देकर मिलाया ही गया था। परन्तु अब

कुँअर सिंह के भीतरी भाव अप्रकट नहीं रह सके और वे सरकार के समक्ष १८५६ के दिसम्बर मास के पूर्व के कुँअर सिंह नहीं रहे। उनके विद्रोह-भाव पर सरकार की शंका कई विश्वस्त आधारों से अब दृढ़ हो गयी। शाहाबाद, गया और छपरा के कलक्टरों ने उनके अंग्रेज विरोधी होने की रिपोर्ट कर दी थी। बिहार के अंग्रेज-भक्त रईसों ने भी कुँअर सिंह के भीतरी रहस्यों की सूचना सरकार को देना अपना परम कर्त्तव्य समझा था। कुँअर सिंह का क्रांतिकारियों पर प्रभाव और उनके साथ सम्पर्क, सहानुभूति और सहयोग बहुत पहले से सरकार को विदित था। इसका प्रतिपादन प्रस्तुत पुस्तक के अन्य लेखों से भी किया गया है। फिर कुँअर सिंह के विद्रोह-भाव को सरकार के लिये न जान लेना ही आश्चर्य की बात थी। परन्तु सरकार अब तक जान-जानकर सरकारी तरीकों से रिपोर्ट पा-पाकर भी उसकी उपेक्षा ही करती रही थी और जाहिरा व्यवहार से उनको मिलाये रखने की नीति बरत रही थी क्योंकि कुँअर सिंह के राजद्रोही बनने की शंका को ठीक मानकर भी शायद उसके पक्ष में सरकार के पास प्रमाण नहीं थे। कुँअर सिंह ने अपनी राजनीतिज्ञता और दूरदर्शिता से ऐसा व्यवहार अंग्रेजों के प्रति रखा था कि सरकार के लिये विद्रोह की बातें उन पर आरोपित करके सिद्ध करना कठिन कार्य था। फिर उस समय क सरकार तत्कालीन परिस्थितियों को जानकर यह भलीभाँति समझती थी कि उस तप्त राजनैतिक परिस्थिति में कुँअर सिंह पर सैनिक या कठोर कार्यवाही करने का मतलब विद्रोह की जलती अग्नि में घृत डालने के ऐसा कार्य होगा। इसी से उसने प्रत्यक्ष रूप से कुँअर सिंह के विरुद्ध कोई सैनिक अथवा कठोर कार्यवाही करने की हिम्मत नहीं की। और दूसरी राजनैतिक चाल चलकर उनको परेशान और बदनाम तथा जनता में अप्रिय बनाना चाहा। उसने कुँअर सिंह की रियासत का प्रबन्ध-भार ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि जैसा पूर्व कहा जा चुका है महाजनों को रुपया वसूली के लिये उकसाया भी और स्वयं बाबू साहब को कर्ज न चुकाने की दशा में रियासत निलाम होने की धमकी दी। इस कार्य से सरकारी मनशा कुँअर सिंह की जनता के समक्ष दिवालिया, कर्जदार और प्रभाव हीन बनाने की थी जिससे बाबू साहब की बलवाइयों की सहायता देने

का न अवसर मिले और न बलवाइयों के समक्ष वे धनाढ्य, महान और शक्तिशाली व्यक्ति समझे जा सकें जिससे उनका ध्यान इनका नेतृत्व ग्रहण करने की ओर आकर्षित हो।

इसी के साथ बिहार के निलहे साहबों और अन्य अंग्रेजों ने जो कुँअर सिंह के विरुद्ध सम्मिलित आवाज उठायी और पटना के कमिश्नर टेलर से आपत्ति के समय अपनी जान-माल की रक्षा की माँग जोरदार शब्दों में पेश की। उससे भी यदि कुँअर सिंह पर विश्वास करने वाले कमिश्नर टेलर की शङ्का कुँअर सिंह के विरुद्ध दृढ़वती हो गयी हो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है और सम्भवतः तभी उसने कुँअर सिंह को पटना बुलाकर कुछ कठोर कार्य करने की योजना बनायी हो और डिप्टी कलक्टर को जगदीशपुर भेजकर कुँअर सिंह को पटना बुलाने तथा उनकी भीतरी तैयारी जानने का प्रयत्न किया हो। भविष्य के इतिहासज्ञों के समक्ष सम्भव है वर्तमान समय से अधिक सामग्री इन बातों के शोध के लिये प्रस्तुत हो जायँ, परन्तु वर्तमान समय में जो कुछ भी प्रचुर सामग्री प्राप्त हो सकी हैं उनसे तो यही सिद्ध होता है कि कुँअर सिंह के विद्रोहियों का साथ देने की बात जब ठीक-ठीक सरकार पर प्रकट हो गयी तभी उसने कुँअर सिंह को सहानुभूतिपूर्ण व्यवहारों से अपनी ओर मिलाये रखने की पूर्वनीति बदली और उनके राज्य-प्रबन्ध का भार छोड़कर उन्हें आर्थिक सङ्कट में डालकर उनका ध्यान विद्रोह-योजना से हटाना चाही और विद्रोही समुदाय में इस कार्य से उनको बदनाम करने और प्रभावहीन बनाने का कुचक्र रचा।

परन्तु कुँअर सिंह बड़े ऊँचे दर्जे के राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने अंग्रेजों के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों के सम्पर्क में अपने जीवन के ८० वर्ष व्यतीत किये थे। फिर देश-प्रेम के ही कारण अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध उन्होंने क्रांति की योजना में अपना सहयोग दान दिया था। वे अंग्रेजों की इस चाल को समझ गये और अपना पटना जाना खतरा से शून्य नहीं समझे तथा वहाँ जाने से क्रांति की बनी बनायी योजना के विफल हो जाने की सम्भावना समझे। इसी से उन्होंने अपने भाई अमर सिंह और भतीजे रिपुभञ्जन सिंह और गुमानभञ्जन

सिंह के लाख समझाने पर भी पटना जाना उचित नहीं समझा और क्रांति का सूत्रपात करने के लिये जगदीशपुर रह गये ।

क्रान्ति के बाद की झाँकी

यह तो हुई क्रान्ति के पूर्व की घटनाओं की समीक्षा । अब क्रान्ति के समय तथा उसके बाद की घटनाओं का अध्ययन करना है । इस सिलसिले में पहला प्रश्न जो सामने आता है वह यह है कि कुँअर सिंह ने क्यों बगावत की ? कर्ज के भय से अथवा कर्ज से मुक्त होने के अभिप्राय से ? कुछ लोगों का मत है कि अपने विशाल ऋण से घबड़ा कर उन्होंने बागी बनना स्वीकार किया । अंग्रेजी सरकार द्वारा उनकी सम्पत्ति का प्रबन्ध-भार जो सहसा त्याग दिया गया उससे घबड़ाकर desperate हो गये और विद्रोहियों का साथ पकड़ना स्वीकार कर लिये । इसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह है कि कुँअर सिंह ने वैयक्तिक और स्वार्थ भाव से प्रेरित होकर क्रान्ति का पक्ष ग्रहण किया ।

दूसरे दल के लोगों का विचार है कि कुँअर सिंह सन् १८५७ के जून-जुलाई मास में पटने में होनेवाली सरकारी दमन-नीति से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो, अंग्रेज सरकार की नीति को गलत समझ, पूरी गलतफहमी के कारण स्वेच्छा-विरुद्ध विद्रोहियों का पक्ष ग्रहण किये ।

तीसरे दल की मान्यता है कि कुँअर सिंह ने दानापुर के विद्रोही सिपाहियों द्वारा यह धमकी दिये जाने पर कि यदि वे (कुँअर सिंह) उनका साथ नहीं देते हैं तो जगदीशपुर गढ़ लूट लेंगे, विद्रोह का नेतृत्व स्वीकार किया ।

चौथा मत यह है कि उनके दरबार में अपने कुटुम्बों में तुलसीप्रसाद सिंह तथा मुसाहबों में हरेकृष्ण सिंह, रणदलन सिंह आदि ऐसे जबरदस्त व्यक्ति थे जो पूर्ण रूप से विद्रोह करने के पक्ष में थे और जगदीशपुर में होनेवाली कुटुम्बियों की महती सभा में उन्होंने कुछ ऐसी चाल चली और अंग्रेजों के मनतव्यों के विषय में कुछ ऐसी उभाड़नेवाली बातों का प्रचार किया कि कुँअर सिंह को अपने सगे भाई-भतीजों की रायों के विरुद्ध विद्रोह करने पर मजबूर होना पड़ा ।

ये सभी मत-मतान्तर तत्कालीन स्थानीय अंग्रेज अफसरों के द्वारा ही उपस्थित

किये गये हैं और एक दूसरे के द्वारा उनका खण्डन भी खूब किया गया है। किन्तु यहाँ हमें स्मरण रखना है कि पटने के कमिनश्र टेलर की बर्खास्तगी में लगाये गये अभियोगों में एक अभियोग कुँअर सिंह को बागी बना देने का भी था और टेलर बड़े जोरदार शब्दों में यावत्जीवन इस अभियोग को गलत साबित करता रहा। टेलर के आक्षेपों के उत्तर बार-बार सरकारी अधिकारियों को देना पड़ता था, अतः कुँअर सिंह के विद्रोह के कारणों को बतलाने वाले सरकारी परिपत्रों में सचाई और निरपेक्षता का अभाव तथा खींचा-तानी का अस्तित्व होना सर्वथा स्वाभाविक है। इसलिये निस्संकोच यह कहा जा सकता है कि यद्यपि उपरोक्त चारों कारण कानों से सुनने में युक्ति-संगत और जोरदार मालूम पड़ते हैं, तथापि उनमें अर्ध सत्यता और खींचा-तानी का दोष अवश्य है और यह एक पुरानी युक्ति है कि अर्ध सत्य झूठ से भी अधिक खतरनाक होता है।

कुँअर सिंह ने जब बगावत की तब वे कर्ज से लदे हुए थे। उन्होंने महाजनों के जालपाश से अपनी सम्पत्ति की रक्षा करने के लिये सरकार से प्रार्थना की थी। सरकार ने उनको संरक्षता प्रदान करके भी एकाएक मुँह मोड़ लिया था। ये सारी बातें सच हैं और इन सबों का संघटन भी क्रमशः एक सिलसिले में हुआ था; परन्तु इसीलिये पहली और शेष घटनाओं के बीच कार्य-कारण का सम्बन्ध स्थापित कर देना तर्कशास्त्र की दृष्टि से दोषपूर्ण है। खासकर ऐतिहासिक पुरुषों के चरित्र-चित्रण के समय ऐसी परिस्थिति में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। कहा जाता है कि सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को अंग्रेजों ने सिविल सर्विस में प्रवेश नहीं करने दिया और स्वामी दयानन्द सरस्वती को मथुरा के चन्द पंडों ने किसी यज्ञ के अवसर पर अपमानित कर दिया था। इसीलिये यह कह देना कि सर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तत्कालीन सनातन धर्म के विरुद्ध व्यक्तिगत कारणों को लेकर आन्दोलन चलाया उतना ही लचर हास्यास्पद होगा जितना यह कहना कि कुँअर सिंह ने उपर्युक्त व्यक्तिगत कारणों से अंग्रजों के विरुद्ध तलवार उठायी। राष्ट्रनायकों के आन्दोलित करने में व्यक्तिगत कारणों का भी कभी-कभी हाथ जरूर रहता है, पर वह उसी अंश

तक सीमित रहता है जिस अंश तक व्यक्तिगत कारण और सार्वजनिक कारण में एकता रहती है। और कोई भी व्यक्ति तभी राष्ट्रनायक का पद प्राप्त कर पाता है जब वह राष्ट्र के जनसाधारण के कष्टों को भी व्यक्तिगत रूप से उसी तीखापन के साथ अनुभव किया हो और उसके निराकरण के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति का बलिदान कर दिया हो। कुँअर सिंह ने जीवन भर अंग्रेजी राज के कारनामों को देखा था। उनकी लम्बी जिन्दगी एक प्रकार से भारत में अंग्रेजी राज के संगठन और विकास का इतिहास थी। उनका जन्म चेत सिंह के विद्रोह के साल में हुआ था जब कि सम्पूर्ण बिहार के वातावरण में चेत सिंह के प्रति साधारण जनता की नैतिक सहानुभूति प्राप्त थी। और अंग्रेजी नीति की कठोरता के कारण प्रायः सभी क्षुब्ध थे। शाहाबाद में तो राजा नारायण सिंह और राजा अकबर अली खाँ आदि के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध चेत सिंह के पक्ष में प्रकट सशस्त्र विद्रोह भी किया गया था। अपनी बाल्यावस्था से ही कुँअर सिंह ने देखा था कि अंग्रेजी राज में जो देशद्रोही हैं, जो भारत की मिट्टी के साथ गद्दारी करके अंग्रेजों के हाथ देश को बेचने का निन्दनीय कार्य करते हैं उन्हें सम्मान, आदर, जागीर, खिल्लत सब कुछ दी जाती है और जो अन्याय को अन्याय कहने का साहस करते हैं उन्हें सताया जाता है, उनके राज्य छीने जाते हैं। स्वयं उनके स्वसुर और साले गया जिले के देव राज्य के राजा फतह नारायण सिंह और उनके पुत्र छत्रपति सिंह को अंग्रेजों की ओर से बहुत बड़ी जागीर इसलिए मिली थी कि उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध किये गये सभी अन्दोलनों में अंग्रेजों को सैनिक सहायता दी थी। उनके अपने सगे भाई दयाल सिंह के वंशजों ने तथा डुमराँव के तत्कालीन कुटुम्बी महाराज महेश्वर बक्स सिंह ने उनको सहायता देने से इन्कार ही नहीं किया, बल्कि अंग्रजों को कुँअर सिंह के विरुद्ध हर तरह की सहायता दी। इसलिए कुँअर सिंह के परिपक्व अनुभव ने यह अच्छी तरह जान लिया था कि ऐसे लोगों का जो अपने हृदय में मानवता की भावना, देशप्रेम की लगन तथा अत्याचार से घृणा भाव रखते हैं वे अंग्रेजों के सामने दुश्मन हैं। इसी के साथ वे यह भी जानते थे कि अंग्रेजों के साथ दोस्ती करना फूस का तापना है। कुँअर सिंह के गोतिया बक्सर

के महाराज भगत सिंह ने वारेन हेस्टिंग को चेत सिंह के विरुद्ध मदद दी थी। यहाँ तक कि उन्हें बक्सर का अपना पुश्तैनी किला तक दे दिया था और बदले में उन्हें जागीर और पेन्शन अंग्रेजों से प्राप्त हुई थी, परन्तु अन्त में भगत सिंह के वंशजों की जागीर अंग्रेजी सरकार द्वारा वापस ले ली गयी और उनकी पेन्शन भी बन्द कर दी गयी। और उस राजघराने को दरिद्रता से बचाने का कोई प्रयत्न तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने नहीं की।

अंग्रेजों को बिहार की दिवानी दिलाने वाले महाराज शिताब राय और उनके लड़के महाराज कल्याण सिंह की विशाल जागीर को जब्त करके अंग्रेजों ने मित्रता का जो सुन्दर नमूना उपस्थित किया था वह कुँअर सिंह की आँखों के सामने की बात थी। बनारस और हथुआ के राज्य उनके असल हकदारों से छीन कर किस प्रकार अपने पक्षपातियों को दे दिये थे, यह भी कुँअर सिंह की जानकारी से परे की बात नहीं थी। सन् १८१६ से लेकर १८४५ ई० तक बिहार में सिपाही चौकीदार, मिरदाहा, कानूनगो, पटवारी, पासवान आदि की चाकरन जमीनों को अंग्रेजों ने छीन कर किस प्रकार उन्हें जीविका विहीन कर दिया था इसकी फरियाद आये दिन कुंअर सिंह के कानों तक पहुँचा करती थी। अवध, झाँसी, पञ्जाब आदि की बातें तो दूर की बातें रहीं, स्वयं बिहार की जनता के मस्तिष्क में भी अंग्रेजों की इस स्वार्थपरायणता की कहानियाँ काफी जहर डाल चुकी थीं। साथ ही कुंअर सिंह की दृष्टि अंग्रेजों की भेद डाल कर काम लेने वाली नीति की ओर अवश्य गयी थी,—किस प्रकार विद्रोह अथवा अशान्ति के उपस्थित होने पर अंग्रेजी सरकार देशी नरेशों और जमीन्दारों से सैनिक सहायता मिली थी और उन्हीं के माध्यम से वहाँ के आन्दोलनों को एक पर एक कुचलती जाती थी, किस तरह गुरखे, मराठे, सिख, कोल, संथाल सबों ने बहादुरी के साथ अंग्रेजों का सामना किया था और उनको पराजित भी किया था, पर यहीं के देश-वासियों ने जब अंग्रेजों को सैनिक सहायता दी तो उन्हें हार खानी पड़ी। इन सारी घटनाओं के भयावने चित्र कुंअर सिंह के अनुभवी मस्तिष्क पर जो अंकित हुए थे उनके आधार पर यह मानना असंगत नहीं होगा कि कुंअर सिंह ने १८४५ ई० में ही निश्चित रूप से इन दो तथ्यों को समझ लिया था—प्रथम

यह कि बिना छोटे बड़े सभी वर्ग के लोगों को आपस में मिलाये हुए अंग्रेजी राज्य को भारत से नहीं हटाया जा सकता। दूसरा यह कि जब तक भारत में अंग्रेजी राज्य है किसी की सम्पत्ति, मर्यादा, धर्म स्वतंत्रता खतरे से खाली नहीं है।

इसीलिये १८४५-४६ में ही कुँअर सिंह के उपर्युक्त घटनाओं के आधार पर कायम किये हुए अनुभवों ने अंग्रेजो सरकार के प्रति कुंअर सिंह की धारणा को विद्रोही बना दिया था। और इसका फल यह हुआ कि १८४५-४६ में जब क्रान्ति के गोप्य संगठन की लहर बिहार भर में दौड़ रही थी तब उन्होंने देश में शीघ्र होने वाले भावी कार्यक्रमों के गम्भीर विषय में कम से कम तो इतना निश्चय अवश्य कर लिया था कि भावी राष्ट्रीय क्रान्ति के अवसर पर उनकी सहानुभूति किस ओर होगी। यद्यपि उन्होंने इस भाव को स्पष्ट रूप से अँग्रेजों पर प्रगट नहीं होने दिया और अपने हृदय के गोप्यतम कोने में ही आबद्ध रखा फिर भी उनकी इस भावना के अनुसार उनके कार्यक्रम धीरे-धीरे जीवन के हर क्षेत्र में होने अवश्य लगे थे। सन् सत्तावन की क्रान्ति की योजना अत्यन्त गोपनीय ढङ्ग से की गयी थी, यह सबको जाहिर ही है। फिर कुँअर सिंह यह भी भलीभाँति समझते थे कि अपने आचरणों से यदि विद्रोहात्मक कार्यों का प्रगटीकरण किसी तरह हो जायगा तो वह केवल उनके ही विनाश का कारण नहीं बनेगा बल्कि वह इस महान राष्ट्रीय आन्दोलन की गोप्यता नष्ट करके अंग्रेजों को ऐसे दमनचक्र चलाने का अवसर देगा कि राष्ट्रीय जागरण की भावना उससे बहुत दिनों के लिये मर जायगी। इसीलिए उनके प्रकट आचरणों की अभिव्यक्ति इतना सुन्दर और असंदिग्ध ढङ्ग से होती रही कि अंग्रेजों का बड़ा समुदाय उनको अन्त तक अपना राजभक्त मानता रहा।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जब ऐसी बात थी तब उन्होंने १८५५ ई० में अँग्रेजी सरकार से अपनी रियासत की रक्षा के लिये उतने स्पष्ट रूप से प्रार्थना क्यों की ? इस प्रश्न का उत्तर भी कुँअर सिंह के व्यक्तित्व के समीक्षण में सुन्दर प्रकाश डालता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि ७५ वर्ष की उम्र में बाबू साहब को उनके सारे राजनैतिक, सामाजिक और वैयक्तिक विचारों के बावजूद

भी यदि कोई वस्तु सबसे अधिक उन्हें प्रिय थी तो वह उनकी ईमानदारी, मान-मर्यादा, अपने खानदान का नाम और उसकी शान। उनकी धारणा थी कि इन पर किसी तरह आँच न लगने पावे चाहे इनकी रक्षा में उनका सर्वस्व ही क्यों न चला जाय। परन्तु उन्होंने भविष्य में जिन राजनैतिक कार्य-क्रमों को करने का निर्णय कर रखा था यानी अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति, उसके और उनके व्यक्तित्व के बीच जो बड़ी दिवाल उस समय खड़ी हो गयी थी वह थी महाजनों के ऋण। सम्पत्ति और राज-रियासत का उन्हें मोह नहीं था क्योंकि दोनों दशा में वे अपनी सम्पत्ति को न्योछावर कर देने के लिये तैयार बैठे थे। रियासत तो उन्हें खर्च करने के लिये ही मिली थी जिसको उन्होंने दिल खोलकर खर्च किया था और यश लूटा था। इतिहास जानता है कि न तो जन्म के समय ही उनके पास कोई सम्पत्ति थी और न मृत्यु तथा बगावत के समय ही। उनको इसलिये व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से सम्पत्ति की न तो चिन्ता थी न ममता। फिर इसी के साथ उनको इस बात की अवश्य चिन्ता थी कि उनके क्रान्ति के महायज्ञ में सम्मिलित हो जाने पर महाजन या कोई भी व्यक्ति यह न कहे कि कुँअर सिंह ने कर्जदारों का पैसा मारने के लिए अवसर देखकर विद्रोह किया, इसीलिए भावी क्रान्ति में खुले रूप से शामिल होने के पूर्व उन्होंने उचित समझा कि अपनी ओर से महाजनों के कर्ज का एक पूरा व्यौरा बनाकर अंग्रेजी सरकार को दे दिया जाय और उनसे कह दिया जाय कि मेरी रियासत से बेचकर या पैसे वसूल कर या कर्ज लेकर या जैसे उचित समझा जाय सरकार इन लोगों के ऋण साफ कर दे। और इस सम्पत्ति का प्रबन्ध-भार स्वयं ग्रहण करे। इससे उनका ईमान बच जाता था और महाजनों के कर्जों की अदायगी की सूरत निकल आती थी। क्रान्ति में सफलता हो या विफलता दोनों दशा में कर्ज तो देना ही था क्योंकि क्रान्ति की लम्बी अवधि में ऋण चुकाने की सूरत कोई निकल ही नहीं सकती थी और कुँअर सिंह के क्रान्ति संचालन में उलटे इससे बाधा ही पहुँचती। इसलिए क्रान्ति में अपना स्वतन्त्र योगदान प्रदान करने के लिये उन्होंने इस तरह अपना रास्ता साफ करना चाहा। यदि क्रान्ति सफल हो गयी तब तो कोई बात ही नहीं, परन्तु यदि वह विफल रहे तो उस दशा

में भी अंग्रेजी सरकार जो विद्रोह छिड़ते ही निश्चय उनकी सम्पत्ति जब्त कर लेगी, कम-से-कम उन कर्जों के लिए देनदार हो जायगी जिनकी अदायगी का बोझ उसने अपने ऊपर रियासत के प्रबन्ध-भार के साथ लिया था और जिनके ऋणों की पूरी सूची महाजनों को स्वीकृति के साथ अंग्रेजों को ही दी गयी थी। अतः अंग्रेज अगर उनका राज ले भी लेता है तब उसे वह राज मुफ्त नहीं मिलता है और उसी के साथ कुँअर सिंह का ईमान और महाजनों का पैसा दोनों बेदाग बच जाते हैं। यदि महाजनों के ऋण को इतने स्पष्टीकरण के बाद भी अङ्गरेज स्वीकार नहीं करेंगे तो अंग्रेजी राज के समर्थक उस साहूकार समुदाय के सामने शासकों की बदनीयती और बेईमानी का पर्दाफाश तो जरूर हो जायगा। इत्यादि इत्यादि।

कुँअर सिंह के मस्तिष्क ने ऐसा ही कुछ सोच-समझ कर वैसा ही निर्णय किया होगा, नहीं तो ऐसा ईमानदार कर्जदार कौन होगा जो अपने ऊपर के छोटे-बड़े सभी कर्जों की फिहरिस्त अपने मन से बना कर सरकार के घर दे आये और उसी के साथ अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध भी उन्हें कर्ज अदा करने के लिए दे दे। यह काम उन्होंने उस समय किया था जब महाजनों को अपने कर्ज के रुपयों को साबित करने में महान कठिनाइयाँ उठानी पड़ती थीं। कुँअर सिंह का यही मन्तव्य इस ऐतिहासिक पहेली को भी स्पष्ट कर देता है कि सन् सत्तावन में जब कि अधिकांश देशी नरेशों ने इसलिए विद्रोह किया था कि अंग्रेजों ने उनके राज्य छीन लिए थे, बिहार के क्रांति का नायक बाबू कुँअर सिंह ने कुछ लोगों के मतानुसार इसलिए बगावत की थी कि अंग्रेजों ने उनकी सम्पत्ति लेने से इनकार कर दिया था और उसका प्रबन्ध-भार बाजाब्ते ग्रहण करके पुनः उसे कुँअर सिंह को वापस कर दिया था।

इस प्रकार निश्चित रूप मे यह कहा जा सकता है कि कुँअर सिंह जब क्रांति में सम्मिलित हुए तो पूरी तरह से सोच-विचार कर लेने के बाद, न कि देश-प्रेम के आवेशपूर्ण क्षणिक भावना की प्रेरणा से। उनका यह कार्य जल्दबाजी या आवेश या दबाव या किसी के बहकावे में आकर नहीं सम्पादित किया गया था, बल्कि इसके सम्पादन के पूर्व पूरे दो-तीन वर्षों तब उन्होंने इसके सम्बन्ध में

विचारा था और एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की तरह इसकी तैयारी की थी। इस तरह सन् सत्तावन की यह क्रान्ति सम्पूर्ण देश का भीषण निर्णय, (grim resolve) थी, किसी एक या दो खुराफातियों का आवेश पूर्ण कार्य नहीं और कुँअर सिंह ने जिस सच्चाई और ईमानदारी तथा बुद्धिमत्ता के साथ देश के उस भीषण निर्णय के संघटन और संचालन में योग दान दिया था उससे सौ गुनी अधिक तत्परता, सच्चाई, दृढ़ता और लगन के साथ उस भीषण निर्णय को कार्यान्वित करने का प्रयत्न भी किया था। इसीलिए तो क्रांति के दौरान में मरते दम तक और दो-तीन मास उसके बाद भी उनका नाम बङ्गाल सरकार के लिए दहशत पैदा करने वाली चीज बना रहा। फिर भी विरोधी दल में यानी अंग्रेजों के दल में जब कभी वह नाम लिया जाता था तब आदर की मात्रा उसमें कम नहीं रहती थीं। उनकी स्वयंसेवक और अवैतनिक सेना के नाम मात्र से ही अंग्रेजी हुकूमत काँपती थी और उनके व्यक्तिगत गुणों और देश-वासियों में व्याप्त उनके प्रति सम्मान, आदर और श्रद्धा को स्मरण करके गदर के बाद भी अंग्रेज अधिकारी झेंप जाते थे।

इस तरह पाठक देखेंगे कि क्रान्ति के समय में ही उनके व्यक्तित्व के वे गुण, जिनकी अभिव्यक्ति उपयुक्त वातावरण के अभाव के कारण उनके जीवन भर नहीं हो पायी थी, पूर्ण रूप से विकसित हुए। उनकी अद्भुत संगठन-शक्ति, नेतृत्व-शक्ति का जन्मजात गुण जिनकी प्रशंसा बड़े-बड़े अधिकार प्राप्त अंग्रेज दुश्मन भी मुक्तकण्ठ से करते थे, अपने उद्देश्य के प्रति उनकी वफादारी और कट्टरता भरी बहादुरी, शत्रु की जान लेने और अपनी जान उस प्रयत्न में हँसते-हँसते दे देने की तीव्र व्यग्रता, आवेग, उत्साह, लड़ाई के मैदान में बिलकुल एक शिकारी जैसी प्रवृत्ति, हार-जीत की कटुता के प्रति लापरवाही, समरांगण में भी सारी भयानक कठिनाइयों के बीच स्थित प्रज्ञ जैसी अनासक्ति और दृढ़ता यानी एक महान योद्धा को जिन-जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उन सभी गुणों का सामंजस्य एक साथ बाबू साहब के चरित्र में—व्यक्तित्व में मौजूद था।

कुँअर सिंह के व्यक्तित्व के अन्यान्य गुणों की झाँकी प्रस्तुत पुस्तक के लेखों में आद्योपान्त विविध दृष्टिकोणों से घटना विशेष के साथ प्रस्तुत की गयी है जिनको

पढ़ने से इस समीक्षण में कही गयी सारी बातों की पुष्टि हो जायगी। उनकी छापा-मार युद्ध कला पर पुस्तक के प्रारम्भ में ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख दिया गया है। उसके पाठ से उनके सैनिक बहादुरी की बातें जो इस लेख में जानकर छोड़ दी गयी हैं, स्पष्ट हो जायँगी। ऐसे ही उनकी संगठन-शक्ति, क्रान्ति की बहुत पहले से तैयारी, जनप्रियता आदि बातें उनकी तथा उनके अन्य सरदारों की जीवनियों से स्पष्ट हो जायँगी। उनको इस लेख में कायावृद्धि के डर से जानकर नहीं लाया गया है।

अन्त में इतिहासज्ञों और शोधकों से निवेदन है कि प्रस्तुत आलोचनात्मक निबन्ध में अथवा अन्यत्र जो नयी बातें अपने खोजों के आधार पर अपनी दृष्टि-बिन्दु से मैंने रखने की चेष्टा की है उनको विद्वत् मण्डली अन्वेषक की स्पिरिट से मनन करें और उन पहलुओं से कुँअर सिंह के व्यक्तित्व को समझने की चेष्टा करें। मत-मतान्तर तो सर्वत्र रहता ही है, पर नायक के चरित्र चित्रण में अपने शक्ति भर जो मैंने ईमानदारी से परिश्रम किया है उसका विचार रखकर सहानुभूतिपूर्ण भावना से उसमें चार चाँद लगाने के यदि प्रयत्न किये जायँगे तो उस वीर कुँअर सिंह के त्यागों का उचित मूल्यांकन हो सकेगा जो आज तक विस्मृति के गर्त में छिपा हुआ था और जिस पर लेखनी उठाने से इतिहास-कार तथा लेखक डरते थे अथवा ज्ञान के अभाव से निष्प्रिह थे।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

परिशिष्ट १

उन प्राचीन सरकारी कागजों के उद्धरणों के हिन्दी अनुवाद, जिनकी सहायता से प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण हुआ है।

सरकारी कागज

कागज नं०—१

पटना डिविजन में १८५७ ई० में जो क्रान्ति हुई थी उस पर पटना डिविजन के कमिश्नर ने एक रिपोर्ट बंगाल के छोटे लाट के सचिव श्री ए० आर० यंग को भेजी थी जिसका नम्बर १५१५ है। उक्त रिपोर्ट से आवश्यक उद्धरण :

प्रेषक—इ० ए० सामुएल्स
कमिश्नर।

पटना कमिश्नर का ऑफिस।
२५ सितम्बर, १८५८

सेवा में—ए० आर० यंग एसक्वायर,
सचिव, बंगाल सरकार।

पृष्ठ ४—"शाहाबाद में विद्रोह ने एक दूसरा ही रूप धारण किया। वहाँ जिले के प्रमुख जमींदार ने, जो जिले का बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था और प्राचीन खानदान का वंशज था, इन विद्रोही दलों का सञ्चालन-भार अपने हाथों में ले लिया और अपने को देश का शासक घोषित किया। अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित और पूर्णरूप से शासित तीन रेजिमेंट सेना उसकी आज्ञा में थी। इनके अलावे उसकी रियासत से बहुसंख्यक सिपाही इस सेना में आकर मिल गये जिनमें बहुत सिपाही तो सरकारी सिपाही सेना के उन सैनिकों के दोस्त और सम्बन्धी थे जो उस समय छुट्टी पर अपने घर आये हुए थे। ऐसे लोगों ने फौरन विद्रोह का पक्ष ग्रहण किया और सेना में भर्त्ती हो गये।"

पृष्ठ ५—"इसलिये शाहाबाद का आन्दोलन राष्ट्रीय क्रान्ति के सभी सद्गुणों के गौरव से सम्पन्न था और इसे वहाँ के बहुत से छोटे जमींदारों तथा करीब-करीब उस जिले की समूची राजपूत आबादी की सहानुभूति एवं सहायता प्राप्त थी।"

पृष्ठ ५ के पारा ३ में लिखा है कि उन्होंने इसलिये बगावत की "कि वे बुरी तरह से ऋणग्रस्त थे" और "विद्रोह ने उन्हें एक ही बार में समूचे ऋण को खतम कर देने का मौका दिया।"

"जब आरा उनके अधिकार में था तो उन्होंने पहला काम यह किया था कि अपने सभी दस्तावेजों को इकट्ठा कराया और सावधानी से उन्हें नष्ट कराया।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि कुँअर सिंह के व्यक्तित्व में मरदानगी और वीरता कूट-कूट कर भरी हुई थी तथा क्षेत्रीय कठिन कामों की निपुणता और उनमें आत्म-विश्वास प्रदर्शित करने का इतना सुन्दर स्वभाव था कि यदि उन्हें लड़कपन से अच्छी सैनिक शिक्षा मिली होती तो वे अच्छे सेनापति होते।"

"ऐसे बहादुर मनुष्य के लिये दानापुर की ३ नम्बर रेजिमेंट के विद्रोही सिपाहियों की सहायता तथा उनके दरबार के उग्र स्वभाववाले महत्वाकांक्षी दरबारियों का चारों ओर से समर्थन ने क्रान्ति में भाग लेने का प्रलोभन प्रदान किया जिसको रोकना उनके लिये अपरिहार्य हो गया।"

"इसमें सन्देह नहीं कि वास्तविक विद्रोह प्रारम्भ होने के कुछ ही समय पहले से ही वे विद्रोह करने के लिये दृढ़प्रतिज्ञ हो गये थे। जिला मजिस्ट्रेट ने इसकी दृढ़तापूर्वक शंका की और उसने अपनी शंका को किसी तरह नहीं छिपाया, फिर भी कमिश्नर ने जो कुँअर सिंह को बहुत दिनों से जानता था उनकी सच्ची मित्रता पर विश्वास किया। उसका निश्चित विश्वास था कि उसकी बुलाहट को स्वीकार कर कुँअर सिंह पटने आ जायेंगे। एक डिप्टी कलक्टर उनको समझा-बुझाकर पटना बुला लाने के लिये भेजा गया, लेकिन कुँअर सिंह का अपराधी हृदय सतर्क हो गया। उन्होंने चारों तरफ के अपने गाँवों में यह सन्देश भेजवाया कि अधिकारीगण उन्हें फाँसी देना चाहते हैं इसलिये उनके आदमी उनको डोम के हाथ से मरने से बचावें। उनके इस आह्वान की तुरत प्रतिक्रिया हुई

और इसीलिये जब दानापुर की विद्रोही सेना आरा पहुँची तो वहाँ हथियार से सुसज्जित कम-से-कम तीन या चार हजार बन्दूकधारी मनुष्यों का झुण्ड उनसे आ मिला।'

"कुँअर सिंह को न तो वृटिश सरकार से दुश्मनी थी न अंग्रेजों से। यहाँ तक कि अनेकों किरानी और दूसरे ईसाई जो उनके या उनके सम्बन्धो रिपुभञ्जन सिंह के हाथों में पड़े, उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया गया। स्टेशन के घरों को सिपाहियों, कैदियों और अन्य लोगों ने लूट लिया और जज तथा मजिस्ट्रेट की कचहरियों को जला डाला गया, परन्तु कलक्टरी के कागजों को नये महाराज (यह पदवी दिल्ली के बादशाह द्वारा विद्रोह के थोड़े ही दिन बाद कुँअर सिंह को मिली थी) के इस्तेमाल के लिये सुरक्षित रखा गया।"

"कुँअर सिंह के आरा में थोड़े समय तक ठहरने के बीच के समय के सभी कामों से यह सिद्ध होता है कि कुँअर सिंह आरा विजय के बाद से अपने राज्य को बाजब्ता तरह से स्थापित हो जाना समझते थे और उसे उसी ढर्रे पर चलाना चाहते थे जिस ढर्रे पर चलाने के कारण उन्होंने अंग्रेजों से उसे छीना था।'

पृष्ठ ६—"परन्तु शाहाबाद जिले के राजपूत, प्रधान गाँव तथा जिले की आम जनता कुंअर सिंह के आरा छोड़कर पश्चिम के देशों का ओर जले जाने के बाद भी यूरोपिअनों को विद्रोहियों के पता लगाने तथा पकड़ने में मदद नहीं करते थे बल्कि अनेक अवसरों पर जब पुलिस उनके गाँवों में विद्रोहियों को पकड़ने के लिये जाती थी तो उसे गाँव में घुसने नहीं देते थे और उन्हें मार भगाते थे।"

पृष्ठ ६—प्रारम्भ—"अभी भी अमर सिंह और श्रीनाम सिंह तथा अन्य विद्रोही यद्यपि उनके पकड़वाने वालों को भारी पुरस्कार देने की घोषणा कर दी गयी, कैमूर की पहाड़ियों में छिपकर रहना जारी रखे थे। उनके छिपने के गोप्य स्थान पहाड़ के नीचे के गाँवों के निवासियों को मालूम था फिर भी वे इसको प्रकट नहीं होने देते थे और उस विश्वास और भक्ति के साथ उसकी गोप्यता की रक्षा कर रहे थे कि यदि वह वफादारी अच्छे कार्य में दिखलायी गयी होती तो अवश्य ही वह अत्यन्त प्रशंसनीय थी।'

पृष्ठ ७—"विगत जाड़े में कर्नल मिचेल द्वारा किये गये कठिन और सख्त कार्यवाहियों से विद्रोहियों की बची बचायी अन्तिम जत्था को भी छिन्न-भिन्न हो जाना पड़ा था और रोहिताश्व, तिलौथू और अन्य स्थानों में सरकारी केन्द्र स्थापित कर दिये गये थे। उनसे विद्रोहियों की बची हुई थोड़ी संख्या को बहुत सावधानी से बचकर एक दूसरे के अति निकट रहना पड़ता था।"

"वास्तव में जिला पूर्णरूपेण शान्त कर दिया गया था। रेलवे के काम काफी जोर-शोर से शुरू कर दिये गये थे, जब्त जमीन्दारियों की मालगुजारी की अत्यधिक वसूली होने लगी थी, बनारस के महाजनों ने जिन्होंने कुँअर सिंह की जमीन्दारी को मकफूल कराकर कर्ज दी थी, अपने कर्ज के संबंध में सरकार के साथ किसी तरह का सुलहनामा करना अस्वीकार कर दिया था। इन दोनों बातों से प्रकट होता है कि अंग्रेजी सरकार में जनता का विश्वास पूर्णरूपेण जमने लगा था। कुँअर सिंह और उनके अनुयायी अवध में थे और इस तरह ऐसा अनुमान करना कि १८५८ का साल शाहाबाद में अमन-चैन का वर्ष रहेगा, किसी तरह अनुचित नहीं प्रतीत होता था। परन्तु गत अप्रैल में कुँअर सिंह के अपने बचे-खुचे आदमियों के साथ पुनः शाहाबाद में अचानक बिना किसी उम्मीद के लौटे आने से इस आशा पर पानी फिर गया। हालाँ कि उनका लौटना उनके लिये यहाँ सिर्फ मरने भर के लिये ही साबित हुआ। इस समय जनता को सरकारी शक्ति का परिचय अन्य अवसरों की तुलना में अधिक मिल चुका था। इसी का यह परिणाम था कि कुँअर सिंह के पहुँचने पर सर्वप्रथम लोगों ने उनका स्वागत उतना उत्साह के साथ नहीं किया। कप्तान लिग्रागड के दुर्भाग्यपूर्ण हार से जो कुँअर सिंह की सेना को क्षणिक सफलता मिली, उससे भी उनको शक्ति-संचय में थोड़ा ही बल प्राप्त हो सका। गत जून माह में सरकारी फौजें छावनी में लौट आयीं और विद्रोहियों ने शाहाबाद के भीतरी भाग के एक बड़े हिस्से पर तुरत अधिकार जमा लिया और वहाँ उन लोगों ने सर्वत्र थाना और तहसीलें कायम की, जज तथा मैजिस्ट्रेटों की बहाली की, बहुत से मकान जेलों में परिणत कर दिये गये और मालगुजारी भी वसूल होने लगी। मालगुजारी न देने पर जमीन्दारियों की नीलामी भी शुरू कर दी गयी।"

"गत तीन महीनों तक शाहाबाद जिले में सरकारी फौज के निवास-स्थान से एक दिन की सफर की दूरी के बाद ही हम लोगों का अधिकार गायब था। फिर भी हम लोगों को विद्रोहियों की रफ्तार तथा उनके आन्दोलन और कार्य-वाही आदि की पूरी-पूरी खबर और विवरण प्राप्त कर लेने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। हम देखते हैं कि ऐसा बराबर कहा जाता है कि विद्रोहियों के सूचना का प्रबन्ध हमारी सूचने के प्रबन्ध से आद्योपान्त अच्छा था और हम लोगों का सूचना-विभाग दोषपूर्ण था। विद्रोह शुरू होने के समय से आज तक इस डिविजन में पाँच पुलिस के दारोगा इस विभाग में विद्रोहियों द्वारा मार डाले गये थे।"

पृष्ठ १०—"विद्रोहियों के इस भाग में आने के तुरत बाद ही जमीन्दारों से इन विद्रोहियों को मार भगाने के लिये सरकार द्वारा मदद माँगी गयी। उनकी सहायता प्राप्त करने के लिए बड़ी कड़ी दबाव डाली गयी। शाहाबाद के अनेकों ग्रामों के, जहाँ विद्रोही सिपाहियों के परिवार थे, जमीन्दार तथा किसान शक्तिहीन थे, रैयत जमीन्दारों को कर देना तथा उनकी आज्ञा पालन करना अस्वीकार कर देती थीं और आम तरह से अपनी जान बचाने के लिये लाचार होकर गाँव छोड़कर उन्हें भाग जाना पड़ता था। इसके अतिरिक्त शाहाबाद जिले में तथा बिहार और छपरा में जहाँ मालिक अपने अधिकारों को रैयतों पर कायम रखते थे और जहाँ के किसान सिपाहियों से सम्बन्धित नहीं थे वहाँ के जमीन्दारों ने सहायता देने की इच्छा प्रकट की, पर उन लोगों ने उसी के साथ बन्दूकधारी घुड़सवारों के सामने तलवार तथा लाठियों से लड़ने में अपनी असमर्थता भी प्रकट की। उन्होंने कहा हमें बन्दूक दो, हम लोंग अपने गाँव की सड़कों को बन्द कर देंगे, विद्रोहियों का सामना करेंगे और यदि संग्राम में उनसे पार न पावेंगे तो आत्मसमर्पण कर देंगे, यों मुफ्त में जान क्यों दें।"

"इस दशा में छावनी से थोड़ी हो दूरी पर बसे ऐसे अ-अनुशासित ग्रामीणों को बन्दूक देने का मतलब यह होता था कि हम विद्रोहियों को ही बन्दूकें समर्पित कर दें।"

"आरा के नागरिकों के सम्बन्ध में जहाँ उन्होंने अब तक बहुत अच्छी

तरह बर्ताव किया था और सरकारी सेना की अनुपस्थिति में बलवाइयों को ईंटों से मार कर भगाया था जिस प्रयत्न में तीन नागरिक मारे भी गये थे। वहाँ के मजिस्ट्रेट ने प्रस्ताव किया कि मजिस्ट्रेट द्वारा चुने हुए नागरिकों की एक संख्या को तोड़ेदार बन्दूकें दी जायँ और शहर के प्रवेश-मार्ग बन्द कर दिये जायँ। इस पर वहाँ के निवासियों ने अपनी आत्म-रक्षा की अपनी पूरी योग्यता बतायी, परन्तु सैनिक अफसरों ने जो इस समय कमान में थे, इसमें आपत्ति की और किसी भी नगर निवासी को अस्त्र देने के विरुद्ध राय जाहिर की जिससे यह प्रस्ताव छोड़ देना पड़ा। हो सकता है कि ग्रामीणों में जो विद्रोहियों का सामना करने की शक्ति का अभाव था वही उन लोगों को विद्रोहियों से भ्रातृ-भाव से रहने को विवश करता था। परन्तु अधिकांश जनता विरोध की अयोग्यता अथवा विजय की भावनाओं के सम्बन्ध में गलत हिसाब लगा लेने से विद्रोही पक्ष को ग्रहण करती थी। अब विजेता और विजयी, गोरे और काले का प्रत्यक्ष भेद-भाव इस तरह और आगे बढ़ेगा और अन्याय तथा अविश्वास से घृणा उत्पन्न होगी और एक दिन ऐसा आ सकेगा जब सचमुच हिन्दुस्तानी अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंकने के लिये उठ खड़े होंगे और संसार को सैनिक विद्रोह जो हिन्दुस्तान की आबादी के नस-नस में प्रवेश कर गया है तथा विद्रोह के भेद को जिसका नेतृत्व देश के राजे-महराजे तथा सरदार राष्ट्रीय सामान्य वैयक्तित कारणों से ग्रहण करेंगे, संसार को दिखला देंगे। इस भावी राष्ट्रीय क्रान्ति को प्रत्येक देशवासी चाहे हमको माल देता हो या हमारे पक्ष से लड़ता हों अथवा हमारी नौकरी करता हो, अपनी निजी व्यक्तिगत ध्येय मानकर गले लगावेगा। जिन स्वभाव की जातियों ने अंग्रेजी सरकार से शत्रुता प्रकट की उनके जैसी की आशा की जाती थी विशेषकर उज्जैन राजपूत, जिस जाति के कुँअर सिंह, सैनिक वर्ग और उनके भाई-बन्धु तथा रिस्तेदार और मुख्यतः उज्जैन जाति के राजपूत थे जो जाति बाबू कुँअर सिंह की थी।"

"शाहाबाद जिले के सभी वर्तमान विद्रोही नेता अमर सिंह, हरेकृष्ण सिंह, शिवपरसन सिंह इत्यादि इसी उज्जैन जाति के राजपूत थे। हिन्दुओं की दूसरी जाति में किसी ने वर्गीय जाति भाव के विचार से इस विद्रोह में प्रधान भाग

नहीं लिया और जैसा कि मैं इस पत्र के प्रारम्भिक भाग में पहले लिख चुका हूँ, पटना सिटी के कुछ फौजी मुसलमानों को छोड़कर इस कमिश्नरी के सभी मुसलमान शांत रहे। उनमें बहुतों ने सरकार के प्रति अपूर्व स्वामीभक्ति दिखलायी।'

"सिपाही विद्रोह के कारणों के सम्बन्ध में कुछ लिखना मेरे इस पत्र का विषय नहीं है। इस पत्र में जो कुछ रिमार्क मैंने लिखा है उनको लिखने के पीछे मेरी मुख्य भावना यह थी कि मैं विद्रोह के समय में इसी डिविजन के मनुष्यों की भावनाओं तथा चरित्रों के सम्बन्ध में क्या विचार रखता हूँ, उनको कागज में अङ्कित कर दूँ। साधारणतया सभी प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मेरा विश्वास है कि विद्रोह का कारण बहुत दिनों से शक्ति प्राप्त कर रहा था। सिपाही एक तरफ तो सोचते थे कि अगर हमारी जाति नहीं तो हमारी जातीय सुलभ प्राप्त सुविधाओं का हनन अवश्य हो रहा है और दूसरी ओर उनको विश्वास होता जाता था कि हमलोग पूर्णरूपेण पराधीन हैं और हम अंग्रेजों के हाथ के पुतले बन रहे हैं तथा देश की आर्थिक दशा अंग्रेजों के आधीन हो गयी है। यह निःसन्देह सत्य है कि सभी रेजिमेण्ट की पञ्चायतों ने आपस में इन विषयों पर अपने विचार एक दूसरे से व्यक्त किये थे और किसी सीमा तक योजनायें केन्द्रिय रूप से बनायी गयीं। मुझे विश्वास है कि यह बात सत्य है और यह भी सम्भव है कि जब सिपाहियों में असन्तोष के चिन्ह प्रकट हुए तो उन्हें देश के सभी कोनों से कट्टर उपद्रवियों और साजिशकारों से प्रोत्साहन मिला; लेकिन मुझे कोई ऐसा सबूत कभी नहीं मिला कि जिसके आधार पर मैं यह विश्वास कर सकूँ कि इस षड़यन्त्र का कारण सैनिक वर्ग के बाहर भी कहीं था। ऐसे षडयन्त्र जिनका हमें ज्ञान है मालूम होता है विद्रोह के स्वाभाविक प्रतिफल थे और दिल्ली के शाहंशाह का विद्रोह की मदद देना था।"

"यह सच है, जैसा कि मि० मनी ने कहा है कि जिस रास्ते से सैनिक गये उन जिलों में अपने विद्रोह का कारण इसके सिवा कि उनकी जातीयता खतरे में हैं, दूसरा नहीं बतलाया। अप्रधान रूप में उन्होंने यह भी बतलाया था कि अंग्रेज उन्हें मारने का विचार कर रहे थे तथा दिल्ली के शाहंशाह ने उन्हें बुलाया परन्तु जिन आधारों पर वे जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये अपील करते

थे वे आधार जातीयता खोने की खतरों के ही आधार थे। जातीयता के अलावे और किसी दूसरे कारण से सरकार के प्रति असंतोष नहीं प्रकट किया गया।

"निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि मैंने सदा यही साबित करने का प्रयत्न किया है कि मेरा शासन प्रबंध का तरीका दोषी नहीं था और मैंने प्रतिकूल रूप से प्रभावित होकर विद्रोह की आवाजों को सुना है; पर मेरे विचार से जो भविष्य में यह साबित हो जायगा कि जो वर्तमान सरकार की शासन-पद्धति का विरोध करते हैं वे दूसरी दिशा में अपने को बहकाते हैं और मैं ईमानदारी के साथ कह सकता हूँ मेरा ध्येय एक मुख्य भाव बनाने का नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तान की इस महान विद्रोह के इतिहास में कुछ रूक्ष और कठोर प्रमाण को उपस्थित करना ही है।

महाशय,

कमिश्नर का आफिस
पटना कमिश्नरी
२५ सितम्बर, १८५८

आपका आज्ञाकारी दास
इ० ए० सामुएल्स
कमिश्नर

कागज न०—२

प्रेषकः—ए० आर० यंग,
बंगाल के छोटे लाट का सचिव
प्रेषीः—भारत सरकार के सचिव
विदेशीय विभाग
फोर्ट विलियम : १६ अगस्त, १८५६

दिवानी

महाशय,

मार्जिन में उद्धृत उप-सचिव श्री सिमसन के पत्र के सम्बन्ध में मुझे छोटे लाट का निर्देश हुआ है कि मैं बड़े लाट और उनकी कौंसिल के समक्ष पेश करने के लिये निचले प्रांतों के कई जिलों की जब्त जमीनों की विवरण पूर्ण तालिका भेजूँ जो इस समय सरकार के समक्ष हल करने की है। उसी के साथ पटना कमिश्नरी के कमिश्नर

(न० ३०५४, दिनाङ्क २६ मई १८५६)

नं० ५६१४, दिनाङ्क २६ जुलाई १८५६ द्वारा प्रेषित २०१ संख्यक पत्र, दिनाङ्क ६ अगस्त '५६ का विवरणात्मक पत्र भी भेजूँ जिसमें कमिश्नर ने अपनी कमिश्नरी की जब्त रिआसतों की विवरणपूर्ण तालिका दी है।

मैं हूँ,

आपका आज्ञाकारी दास

ए० आर० यंग

बंगाल सरकार के छोटे लाट का सचिव

कागज नं०—२

पटना के कमिश्नर का उपर्युक्त पत्र नं० २०१, दि० ६ अगस्त १८५६

प्रेषक:—कमिश्नर,

पटना कमिश्नरी।

प्रेषी:—बंगाल के छोटे लाट के सचिव।

महाशय,

मैं गत ३ जून को सरकार की आज्ञा नं० ३५४० की प्राप्ति स्वीकृति ससम्मान भेज रहा हूँ।

(२) पटना और तिरहुत जिलों में बागियों की छोटी जायदाद में हक-हिस्से जो थे, उन्हीं की जब्तियाँ हुई हैं और उन हक-हिस्सों को निलाम करके सबसे अधिक दाम देने वालों को दे दिया गया है।

(३) सारन और चम्पारन के जिलों में कोई जमीन जब्त नहीं हुई है।

(४) विहार के जिले में भी किसी-किसी बागी के हक-हिस्से की जमीन जब्त की गयी और निलाम कर दिया गया। इस जिले में जो एकमात्र जमीन देने योग्य थी वह गया जिले के देव के राजा जयप्रकाश सिंह को जागीर के रूप में दे दी गयी है।

(५) शाहाबाद जिले से आवश्यक सूचना प्राप्त करने में कुछ देर हुई है। इस जिले में अमर सिंह और दूसरे बागियों की विस्तृत रियासतें जब्त की गयी हैं जिनका विवरण साथ की तालिकों में दिखाया गया है।

(६) परन्तु यह बयान देना इस समय असम्भव पाया गया कि इन गाँवों में से कौन-कौन गाँव अब भी सरकार के समक्ष बन्दोबस्त करने को बाकी हैं और कौन-कौन नहीं हैं क्योंकि कई मनुष्यों को जागीरें दी गयीं जैसे श्री बिड़ला, हजरत खां, कविरुद्दीन, मित्र लाल और दूसरे जो अभी अपने लिये उन गावों का नहीं चुनाव किये हैं जिनमें से उनकी जागीर लेने की इच्छा है। यह बात तब तक अंतिम रूप से तय नहीं की जा सकेगी जब तब कई गाँवों के लगान विधिवत् बन्दोबस्ती (settlement) ऑफिसर श्री एम० सी० डीजल द्वारा जो इस कार्य के लिये अभी नियुक्त हुए, जाँच नहीं ली जा सकती है।

बिहार प्रांत की जब्त जमीनों की सूची, मालगुजारी माफ नहीं है।

न०	जिले का नाम	बागी का नाम	रियासत का नाम	मालियत	कैफियत
१	पटना	अली करीम खाँ			
२	”	महावीर सिंह उर्फ अनमोल सिंह	अज़ीमाबाद परगने में एक रियासत में हक	८०२-१-२	×
३	”	तिरभुवन सिंह			
४	”	काशी सिंह			
५	”	गोपाल सिंह			
६	”	शिवनारायण सिंह			
७	”	गुलवर सिंह			
८	”	राम प्र० मिश्र			
१	शाहाबाद	कुँअर सिंह	४७६ गाँव परगना आरा, बीहीआ, सासाराम और रोहतास तथा भोजपुर के ६ गाँवों में हिस्से	१७,६४,७६२/४/१० कमीशन के बयान के अनुसार मालियत का जमा रु० २७,६४, ३६५/४/८ है न कि ऊपर की रकम—	

नं०	जिला	नाम बागी	नाम रियासत जब्त	मालियत	कैफियत
२	शाहाबाद	अमर सिंह	परगना आरा, बिहिआ, पोआर रोहतास, में ४४ गाँव		१७८६२५/८/१० वास्तविक अथवा जोड़ा हुआ।
३	,,	निशान सिंह	६२ गाँवों में हिस्से परगना सासाराम और चैनपुर में।	६१८००	,,
४	,,	गुलाम हुसेन	सासाराम परगने के एक गाँव में हिस्सा	४११/४/४	वास्तविक अथवा जोड़कर निकाला हुआ ठीक नहीं ज्ञात।
५	,,	गुलाम अहमद	आरा प्र० के दो गाँवों में हिस्से—	६,६०५/१५	,,
६	,,	सुलतान जंबा	,, एक गाँव में	२४८५/६	,,
७	,,	सिरनाम सिंह	रोहतास प्र० के दो गाँवों में हिस्सा	६०६/-	,,
८	,,	भैरो सिंह	,, के १०गाँवों में हिस्सा	२३७/-	,,
६	,,	जोधन सिंह और दूसरे	दनवार प्र० के गाँव		
१०	,,	किशुन प्र०सिंह और दूसरे	६३ गाँव चैनपुर और पोआर और बिहिया प्र० में—	१४६,६१३/-	,,

नं०	जिला	नाम बागी	नाम रियासत जब्त	मालियत	कैफियत
११	शाहाबाद	बसावन सिंह	दिनार, चैनपुर सासाराम, भोजपुर प्र० के ४८ गाँवों में हिस्से—		ये गाँव गवर्नमेन्ट आज्ञा नं० १३७८ दि० १/३/१८५६ के अनुसार छोड़ दिये गये।
१२	,,	पृथ्वीनारायण सिंह	२६ गाँवों में हिस्सा प्र० आरा, भोजपुर, चौसा, सासाराम		ये गाँव गवर्नमेन्ट आज्ञा नं० १३७८ दि० १।३।१८५६ के अनुसार छोड़ दिये गये।
१३	,,	दिलावरअलीखाँ	रोहतास प्र० के दो गाँवों में हिस्सा	१,६३७/-	वास्तविक या जीतकर निकाला हुआ, ठीक नहीं ज्ञात।
१४	,,	हरेकृष्ण सिंह	दो गाँवों में हिस्सा प्र० भोजपुर	१५६/१४/-	,,
१५	,,	नेपाल सिंह, हुरमुडुल सिंह, हिरामन कुरमी	१० गाँवों में हिस्सा प्र० चैनपुर	३१,०८२/-	,,
१६	,,	नायक सिंह			
		दुदुन सिंह, छत्रर नाथ सिंह, तपसी सिंह बेटा राम सहाय सिंह	सासाराम, प्र० के छः गाँवों में हिस्सा रोहतास प्र० के १ गाँव में हिस्सा	८०,०७२/-	वास्तविक या जीतकर निकाला हुआ, यह ज्ञात नहीं।

१७	,,	निधा सिंह सेधा सिंह अछैबर सिंह	प्र० भोजपुर में १ गाँव में हिस्सा ,, दनवार ,,	१८,४१७/- ,,

छोटानागपुर कमिश्नरी तथा द० प० के सुरक्षित राज्य

१	लोहारडग्गा	ठा० विश्वनाथ साही	वर्कागढ़ ६७ गाँव	११,४३३	वास्तविक लाभ
२	,,	गनपत राय	मुनरो १२ गाँव	१,२७५	,,
६	,,	टिकैत ओमरू सिंह	खुट्टुंगा पट्ठा १२ गाँव	३३८/-	,,
४	,,	शेख भिखारी	खोआदेव सोतवा ४ गाँव	१२६/-	
५	,,	बहोरन सिंह	पाकुरडी १ गाँव	१७/-	
६	,,	दमा साही	तीसीआ १५ गाँव	१,४०७/-	
१	कोरंडा (रांची)	पीताम्बर और निलाम्बर भोगता	चैनो संगा में असली तथा १२ दखली गाँव	८,४४६	इन्हें पलामू के योग्य जमींदारों को पुरस्कार देनेके लिये रखा गया है। चूँकि नयी बन्दोवस्ती नहीं हुई इसलिये इनका मूल्य परगना वही में दर्ज उपज के हिसाब से दिया गया है।
१	मानभूमि	ठा० कञ्चन सिंह			
१	सिंहभूमि	उरजोआ. सिंह पोरहट के भूतपूर्व राजा	जमींदारी ओरहट की जिसकी आय ६००० या १०००० थी।	१००००	अभीतक इस जमींदारी की उचित बन्दोवस्ती नहीं हुई है।

वैसे ही सम्बलपुर में २२ व्यक्ति छोटे-मोटे हैं जिनकी आय जब्त जायदाद की ४०० से नीचे ४) से ऊपर की है।

१६

कछार जिला में एक ही व्यक्ति है दिवान मियां जिसका जमा २) है।

कागज नं०—३

अमर सिंह के सम्बन्ध में बंगाल के छोटे लाट के तद्कालीन सचिव ने नेपाल में पकड़े गये चन्द बागियों के अमर सिंह होने की शंका होने पर सरकारी कागजों से एक रिपोर्ट तैयार किया था, जो २१–८–१८६५ को समाप्त हुई थी। इसकी छपी प्रतिलिपि आज भी पटना सेक्रेटेरियट के राजनीति विभाग में वर्तमान है।

जब कुँअर सिंह जगदीशपुर की लड़ाई में अपनी दूसरी हार के बाद रीवाँ की ओर पश्चिम में चले गये तब उनके भाई अमर सिंह सासाराम के पास ग्रैन्ड-ट्रङ्क रोड के समकक्ष पहाड़ियों में रहने लगे। उनके जिम्मे परिवार की स्त्रियाँ छोड़ी गयी थीं और कहा जाता है कि सासाराम पहुँच कर कुँअर सिंह और अमर सिंह के बीच झगड़ा भी हुआ। कुँअर सिंह जगदीशपुर की हार का कारण अमर सिंह को बताते रहे और इस कारण दोनों भाई अलग-अलग रहने लगे। अमर सिंह की सेना पर्वतीय सुरक्षित स्थानों से जहाँ से वे आसानी से हटायी नहीं जा सकती थीं, बहुत उपद्रव करती रहीं। अंग्रेजों के कारखाने जला दिये गये, गाँव लूट लिए गये और बिजली के तार नष्ट कर डाले गये। सारांश यह कि इन पर्वतों में अमर सिंह का रहना सरकार के लिए विशेष चिन्ता का कारण बन गया।

उनकी गिरफ्तारी के लिए एक हजार के इनाम की घोषणा की गयी। फिर बाद को अधिकारियों द्वारा यह रिपोर्ट आयी कि अमर सिंह की गिरफ्तारी के लिए जो एक हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया है वह काफी नहीं है और अमर सिंह १८५७ के गदर का प्रधान प्रवर्त्तक मालूम होता है और इस समय शाहाबाद जिले की बागी सेना का मुख्य नेता है। इसीलिए इनाम की रकम १०००) से बढ़ाकर पाँच हजार रुपये कर दी गयी।

१८५८ के जून में जब यह मालूम हुआ कि अमर सिंह जगदीशपुर के जंगलों में पुनः प्रवेश कर गये हैं तब पटना डिविजन के सभी जिलों में इस पाँच हजार रुपये के इनाम की घोषणा सर्वत्र कर देने के लिए सरकारी आज्ञा जारी कर दी गयी।

कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद अमर सिंह पहाड़ियों से नीचे उतर आये और अपने भाई कुँअर सिंह द्वारा अनुशासित सेना का नेतृत्व किये। जब निचले प्रान्तों से बागी दल साफ कर दिया गया और राजकीय अमनेस्टी की घोषणा हो गयी तब कमिश्नर के पूछने पर इण्डिया गवर्नमेंट ने आज्ञा भेजी कि बिहार के सभी बागियों में जो क्षमादान से रिक्त होने को हैं और जिनका जीवनमात्र रक्षा करने का आश्वासन सरकार दे सकती है, एकमात्र अमर सिंह ही ऐसे बागी हैं।

इस पर (इस आज्ञा पर) श्री सैमुअल ने लिखा "यह धारणा कि चूँकि अमर सिंह का नाम कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद बागियों द्वारा सबसे प्रथम लिया जाता रहा है इसलिए वही नेताओं में सबसे अधिक प्रभावशाली नेता थे, एक गलती थी। अमर सिंह कुँअर सिह की मृत्यु के उपरान्त बागियों द्वारा बुला भेजे गये और कहा जाता है कि वे अनिच्छापूर्वक आये। निस्सन्देह उन्होंने बागियों की कार्यवाही में बहुत सक्रिय भाग नहीं लिया और आम तरह से अफीम की नशा में रहा करते थे। वास्तविक नेता अथवा आदमी जिनका अनुशासन सिपाही मानते थे, हरेकृष्ण सिंह और उनके चार भाई थे।"

सैमुअल्स (पटना का कमिश्नर) ने आगे लिखा है कि इस जिले के मनुष्यों में अमर सिंह के प्रति अधिक सहानुभूति है। इसलिए सैमुअल की दृष्टि में अमर सिंह को क्षमादान देना बहुत बड़ा अनुचित कार्य होगा। बागी सरकार के शासन सम्बन्धी चन्द कागजों में जो कि हरेकृष्ण सिंह के मुकदमा के समय पेश किये गये यह बात कही गयी है कि अमर सिंह का नाम उन कागजों में मुश्किल से कहीं व्यक्त किया गया है। इससे सैमुअल द्वारा अमर सिंह का चरित्र जो व्यक्त किया गया है उसकी पुष्टि होती है।

उस तार में जिसमें अमर सिंह का पहाड़ियों से उतर कर आने का जिक्र किया गया है लिखा है कि "अमर सिंह बागियों की चार हजार सेना का कमांड जिसका नेतृत्व हरेकृष्ण सिंह के जिम्मे था, करने के अयोग्य है।"

फिर भी पूर्व इसके कि उपर्युक्त बातों के सम्बन्ध की हिदायत इण्डिया गवर्नमेण्ट से प्राप्त हो श्री सैमुअल (पटना का कमिश्नर) ने १४ आदमियों को अमनेस्टी से नफा उठाने से बरी करने की आज्ञा जारी कर दी जिनके सम्बन्ध में

उसने कहा कि उसके विचार में वे क्रान्ति के नेता और प्रवर्त्तक थे और इन चौदहों नामों में अमर सिंह का भी नाम था।

श्री फरगुशन ने जो श्री सैमुअल का उत्तराधिकारी कमिश्नर हुआ, बतलाया है कि उसके पूर्ववर्ती कमिश्नर की यह आज्ञा कभी भी रद्द नही की गयी और चूँकि उस समय बागियों के चन्द नेताओं द्वारा सुलह की बातों को चालू करने का प्रयत्न किया जा रहा था उसने सरकार से यह जानने की प्रार्थना की थी कि वैसी परिस्थिति में वह (फरगुशन) क्या करेगा। श्री फरगुशन ने आगे लिखा हैं "कि इस प्रान्त के हर आदमी के मुख में अमर सिंह के महान नेता होने की बात है और अमर सिंह एक बेचारा जानवर बना हुआ है और अधिकांश में वह दूसरों के हाथ का खिलौना मात्र है। फिर भी निःसन्देह वह कुँअर सिंह का उत्तराधिकारी नाममात्र को बना और ऐसा काम भी नाम ही मात्र को किया। परन्तु अमर सिंह के इतनी प्रमुखता प्राप्त कर लेने के बाद मेरी राय में उसको क्षमादान प्रदान करना अराजनीतिक होगा।"

श्री फरगुशन के उपर्युक्त इस आशय की सिफारिश जो सैमुअल द्वारा प्रारम्भ में शुरू की गयी कि अमर सिंह अमनेस्टी के अन्तर्गत क्षमादान प्राप्ति करने से रिक्त किए जाय बंगाल सरकार के छोटे लाट द्वारा भी समर्थित हुई और इंडिया गवर्नमेंट ने अपने इस विषय के पूर्व आज्ञा का संशोधन भी किया।

१८५६ के दिसम्बर मास में उत्तर-पश्चिम प्रान्त की सरकार ने इस (बंगाल) सरकार को रिपोर्ट किया कि अमर सिंह पकड़े गये हैं और उस समय गोरखपुर हिरासत में रक्खे गये हैं। उसी के साथ इस सरकार से यह बात पूछी गयी थी कि अमर सिंह मुकदमें चलाये जाने के लिये बंगाल भेजे जाँय अथवा गोरखपुर में ही उन अपराधों की जाँच के लिए रक्खे जाँय जिनको उन्होंने उत्तर-पश्चिम प्रांत के जिलों में तथा गोरखपुर जिले में खुद किया था।

उत्तर में बंगाल सरकार ने लिखा कि अमर सिंह के मुकदमें की जाँच करना उनके ही जिले में बंगाल सरकार की राय में सबसे अधिक उपयुक्त और जनता के समक्ष उदाहरण पेश करने वाला होगा। परन्तु इसी के साथ यदि उनके ऊपर नेतृत्व ग्रहण करने और निरन्तर क्रांति को चालू रखने के अतिरिक्त यदि उत्तर-

पश्चिम प्रान्त में ऐसे अपराध करने के अभियोग लगाये जा सकें जिनमें उनको फाँसी की सजा दी जा सकती हो तो उस दशा में उनके ऊपर उसी प्रांत में मुकदमा चलाना इस सरकार की राय में अधिक उपयुक्त होगा, नहीं तो शाहाबाद में उनके ऊपर मुकदमा चलाना सबसे अच्छा होगा।

चूँकि गोरखपुर में कोई ऐसे अपराध करने का चार्ज अमर सिंह के विरुद्ध नहीं पाया गया जिसके आधार पर उन पर फाँसी की सजा का मुकदमा चलाया जा सके। उत्तर-पश्चिम प्रांत की सरकार द्वारा इस आशय की आज्ञा जारी की गयी कि अमर सिंह शाहाबाद के मजिस्ट्रेट के पास भेज दिये जाएँ। इसी समय उत्तर-पश्चिम सरकार ने बङ्गाल की सरकार का ध्यान विदेशीय विभाग के उस आज्ञा की ओर आकर्षित किया जिसमें यह निर्देश दिया गया था कि वे मनुष्य जो नेपाली सेनानायकों द्वारा पकड़े गये हों या उनके समक्ष आत्मसमर्पण किये हों और जिनके ऊपर केवल नेता और क्रांति का प्रवर्त्तक होने का अभियोग लगाया गया हो, तथा जिनके विरुद्ध हत्या का कोई अभियोग न हो, मुकदमा चलाये जाने तथा जेल दिये जाने से बरी कर दिये जायँ और उन्हें नजरबन्द रक्खा जाय और इस आशय की एक रिपोर्ट इंडिया गवर्नमेण्ट के पास अन्तिम निर्णय के लिये भेजा जाय।

अमर सिंह की गिरफ्तारी के विवरण इस आफिस में कहीं प्राप्त नहीं है। परन्तु इस घटना से हमलोगों का ध्यान इंडिया गवर्नमेण्ट के विदेशीय विभाग के उपर्युक्त निर्देश की ओर आकर्षित किया गया है यह प्रत्यक्ष अनुमान किया जा सकता है कि अमर सिंह नेपाली सेनाधिपतियों के द्वारा पकड़े गये अथवा उनके समक्ष उन्होंने आत्मसमर्पण किया।

उत्तर-पश्चिम प्रांत के द्वारा प्रेषित इस पत्र की प्राप्ति के थोड़े दिन बाद ही जिसमें लिखा था कि अमर सिंह शाहाबाद के अधिकारियों के पास भेज दिये जायेंगे, पटना के कमिश्नर ने अमर सिंह की मृत्यु की सूचना की रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट को उत्तर-पश्चिम सरकार ने अपनी रिपोर्ट भेजकर तुरन्त समर्थित किया। गोरखपुर के सिविल सर्जन के सर्टिफिकेट से जिसको कि उत्तर-पश्चिम की सरकार ने भेजा था, प्रकट होता है कि अमर सिंह गोरखपुर के जेल के अस्पताल में

३ जनवरी १८६० को भर्ती हुए। वे पुराने अतिसार रोग से ग्रसित थे। उनकी जीवन-शक्ति निरन्तर बीमारियों के प्रकोप से तथा अफीम के प्रभाव से जिसको वे अधिक मात्रा में सेवन करते थे, पूर्णतः क्षीण हो चुकी थी। वे फरवरी तक किसी तरह जीवन-यापन करते रहे और जीवन-शक्ति कम होने के कारण उसी दिन यानी ५ फरवरी को मर गये।

इस लम्बे रिपोर्ट का सारांश यह है कि अमर सिंह १८५६ के अन्त में उत्तर-पश्चिम प्रांत में पकड़े गये और गोरखपुर जेल के अस्पताल में ५ फरवरी १८६० को मुकदमा चलाये जाने के पूर्व ही निधन प्राप्त किये।

हस्ताक्षर..............(अपठनीय)
३१-८-१८६५
गवर्नमेण्ट ऑफ बिहार
राजनैतिक विभाग
स्टेट सेंट्रल रिकार्ड ऑफिस,
बिहार।

कागज नं० — ४

हरेकृष्ण सिंह की फांसी का मुकदमा

बंगाल के छोटे लाट के सचिव को पटना डिविजन के कमिश्नर एच० डी० एच० फरगुशन द्वारा उक्त पत्र (संख्या ४००, दिनाङ्क २२ नवम्बर १८५६);

गवर्नमेंट के आर्डर सं० २७६६, दिनाङ्क २७ अक्टूबर, पारा २ के सम्बन्ध में ससम्मान हरे कृष्ण सिंह के विरुद्ध अभियोगों और साक्षी से लिये हुए नोटों की प्रतिलिपि भेजता हूँ।

२. साथ नत्थी किये हुए कागजों का अनुवाद जो जगदीशपुर में पाये गये है, निरीक्षण योग्य, ज्ञातव्य और मनोरंजक है।

३. आफिसियेटिंग मैजिस्ट्रेट श्री हर्सेल ने जो इस मुकदमे में तत्परता और समझदारी दिखलाई है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ..............................

हरेकृष्ण सिंह के विरुद्ध अभियोग और गवाही

अभियोग—

१. राज्य के प्रति जालसाजी। २७ जुलाई १८५७ को और उसके बाद कई एक अवसरों पर जब तक उसकी सेना छिन्न-भिन्न नहीं कर दी गयी उसने बगावत का प्रचार का प्रवर्तन करने में काम किया और बागियों की सेना का जो अंगरेजी सरकार के खिलाफ सशस्त्र बगावत का नेतृत्व ग्रहण किया।

२. दानापुर के विद्रोहियों का नेतृत्व करके आरा लाया और उनको २७ जुलाई को जेल तोड़ने के लिये उभाड़ा और आरा हाउस के घेरे के समय कुँअर सिंह के अधीन कार्य करने में एक प्रमुख भाग लिया।

दूसरा—जगदीशपुर में २१ अप्रैल १८५८ को कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद विद्रोही सेना का कमांड उसने किया और अमर सिंह के द्वारा जो सरकार कायम की गयी उसका प्रधान बन कर काम किया।

तीसरा—१८५८ के २४ नवम्बर की रात्रि में जब ये विद्रोही सेना का प्रधान था आयर नामक ग्राम में श्रीमती सैमुअल को पकड़ा और उसको बंदी के रूप में इस इरादे से ले भागा कि उसको माध्यम बना कर अपने लिये शर्तों को वह सरकार से तय करेगा।

अभियोग द्वितीय—हत्या—२१ अप्रैल १८५८ को जगदीशपुर में उसने अंग्रेजी सरकार की निरस्त्र और शान्तिपूर्वक मालगुजारी वसूल करती हुई प्रजा श्री जानकी सिंह, देवदास, हरिहर पाण्डेय और भगवान दास को पकड़ा और शोभी दास को बहुत बुरी तरह घायल किया।

चार्ज तीसरा—हत्या—२३ अप्रैल १८५८ को उसने जवाहिर राउत जो जगदीशपुर का एक शान्तपूर्ण निवासी था हाथ और नाक काट लिये और उसे गड्ढे में मरने के लिये फेंक दिया और वह मर गया।

चार्ज चौथा—महादेव लाल नामक सरकारी पुलिस के बरकन्दाज का दाहिनी हाथ और नाक उसने काट ली।

हस्ताक्षर—जे० डब्लू० सी०

१८ दिसम्बर, १८५६।

कतिपय उल्लेखनीय गवाह

गवाह

अजायब सिंह—कुंअर सिंह का एक वृद्ध वैयक्तिक नौकर, उसने कैदी हरे कृष्ण सिंह को घुड़सवारों के आगे घोड़ा दौड़ाते हुये देखा जब कि उसने कुंअर सिंह की घायल होने की बात सुनी। वह दौड़ कर अपने मालिक से मिलने गये और उनकी बगल में उनके मौत तक खड़े रहे। इस गवाह ने ठीकेदारों की लाशों को कैदी के सामने पड़ा हुआ देखा। इसका यह भी बयान है कि इसने हरे कृष्ण सिंह को कुंअर सिंह की मृत्यु के बाद और अमर सिंह के पहाड़ से उतरने तक कमांड ग्रहण करते देखा।

आदित्य मिश्र—आदित्य मिश्र जो कि कुंअर सिंह के परिवार का पुरोहित था कुंअर सिंह की २१ अप्रैल १८५८ को मृत्यु के समय मौजूद था इस बात का तसदीक करता है कि कैदी हरे कृष्ण सिंह ने मुख्य कमांड ग्रहण किया (यह गवाह बहुत निकटवर्ती गवाह था और एक शब्द भी बिना दबाव दिये नहीं कहता था।)

हुसेन बख्श—यह जगदीशपुर का कोतवाल था जो बागियों के अधीन काम करता था। कैदी हरेकृष्ण सिंह के आधीन जो सरकार उस समय चलायी जा रही थी उसका पूरा विवरण बताता है और अमर सिंह को हरे कृष्ण सिंह के हाथ का खिलौना कहता है। कागजों पर दी हुई मोहरों को तथा हरेकृष्ण सिंह के हस्ताक्षरों को भी पहचानता है। हरे कृष्ण सिंह की आज्ञा से की गयी कई हत्याओं अंगविच्छेद के विवरण बतलाया हैं। कैदी हरेकृष्ण सिंह लिखना न जानने की वजह से कागजों पर कम ही हस्ताक्षर करता था। उनमें से एक ही कागज ऐसा हैं जिस पर उनका पूरा हस्ताक्षर हो। ये सभी कागज उनके "इजलास में लिखे गये कहे जाते हैं।"

श्रीमती सैमुअल और उनका नौकर हुसेन बख्श इस बात को साबित करते हैं कि वे हरेकृष्ण सिंह द्वारा जो सेना के आगे था, गिरफ्तार किये गये। उनके साथ हरेकृष्ण सिंह का वर्ताव बहुत सावधानी का था और हरेकृष्ण सिंह ने उनको एक खत के साथ ब्रिटिश कैम्प में भेज दिया। परन्तु बन्दी हरेकृष्ण

सिंह अपने बचाव में बयान देता है कि जब वह एक दिन घर रुपया लाने के लिये गया तब उसने बागियों के हाथ में एक यूरोपीय महिला को पाया जिनसे उसने उनको रुपया देकर छुड़ाया और ब्रिटिश कैम्प में भेज दिया।

सूरज बख्श सिंह का बयान है कि ठेकेदार पूर्णतः अचानक पकड़े गये और उन्हें कुँअर सिंह के गङ्गा-तट से कूच के समक्ष लाया गया।

चार्ज चौथा—महादेव ही एक गवाह हैं जिसकी एकमात्र इस सम्बन्ध में गवाही है। उसका इजहार अङ्ग-विच्छेद करने के दूसरे दिन लिया गया और उस बयान में वह कैदी को इस अपराध का अपराधी बतलाता है और वह हरेकृष्ण सिंह को पहचानता है और एक स्पष्ट कहानी कहता है।

अपने बचाव में कैदी का बयान यह है कि वह अपने निरन्तर (alibee....) में छपरा, आजमगढ़, गोरखपुर, पटना घूमता रहा। उसका ऐसा बयान बिल्कुल मनगढ़न्त है कि वह श्रीमती सैमुअल को बचाने के लिए तथा गवर्नमेण्ट की सेना को रसद पहुँचाने के लिए तथा सदा अपनी रियासत की मालगुजारी देते रहने के आधार पर अथवा उन जमा-खर्चों के आधार पर जिसको उसे अपने तमाम भ्रमण काल में खर्च करना पड़ा था अपने को पुरस्कार का अधिकारी बतलाता है न कि सजा का। अपनी इस बात के समर्थन में वह श्रीमती सैमुअल को तथा उस अफसर को जिसके पास उसने श्रीमती सैमुअल को भेज दिया था, गवाह बनाता है। इसी के साथ इन्हों से वह अपनी और विभिन्न पार्टियों के बीच की पुरानी शत्रुता को भी प्रमाणित करना चाहता है।

हस्ताक्षर,
डब्लू० ज० हरसेल,
मजिस्ट्रेट।

उस फार्म का नकल जिस पर कुंअर सिंह के मजिस्ट्रेट के समक्ष दरखास्त दी जाती थी।

परम दयालु ईश्वर के नाम में और ईश्वर की अनुकम्पा से विनय निकट है।

सेवा में,

न्याय की मूर्त्ति दण्डा धीश बहादुर श्री बाबू हरेकृष्ण सिंह जिनका यश और भविष्य दिन दिन वर्द्धमान है—

मैं प्रार्थना करता हूँ कि·········

बंगाल के छोटे लाट के पास न्यायाधीश की रिपोर्ट

प्रेषक—श्री आर० ज० रिचार्डसन

आफिसियेटिंग जज और विशेष कमिश्नर, शाहाबाद।

प्रेषी—श्री ई० एन० लसिंगटन

बंगाल के छोटे लाट का आफिसियेटिंग सेक्रेटरी

नं० १२२, दिनाङ्क १७ दिसम्बर १८५६

बागी हरेकृष्ण सिंह के मुकदमा की मूल कार्यवाही मैं स-सम्मान सेवा में भेज रहा हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इसको बंगाल के छोटे लाट के समक्ष अवलोकन और आज्ञा के लिये पेश करें।

१८५७ के १४ वीं धारा के अनुसार १६ और ३० नवम्बर तथा १, २ तथा ३ दिसम्बर १८५६ को केस देखा गया।

मुद्दई—गवर्नमेण्ट

मुद्दालय—हरेकृष्ण सिंह बेटा आदिल सिंह

(नोट—कैदी हरेकृष्ण सिंह बनारस जिले के बुद्धौल परगने के दिनेह मौजा में २६ अगस्त १८५६ मुताबिक १६ भादों १२६६ फसली दुशासन्देह के नबाव के कोतवाल द्वारा पकड़ गया।)

वह अपने को अभियोगों का अपराधी नहीं मानता। पहले अभियोग का दूसरा चार्ज यह था कि २१ अप्रैल १८५८ को कुँअर सिंह की मृत्यु के उपरान्त हरेकृष्ण सिंह ने विद्रोही सेना का कमान ग्रहण किया।

उसी अभियोग का यह भी चार्ज था कि हरेकृष्ण सिंह कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद अमर सिंह द्वारा स्थापित क्रान्तिकारी सरकार का प्रमुख नेता था और उस हैसियत से उसने काम भी किया। पूर्वोक्त दोनों अभियोग निम्न-लिखित गवाहियों से प्रमाणित है।

रामयाद ओझा—यह गवाह ६० नम्बर के नेटिम इन्फैन्ट्री नामक रेजिमेंट में काम करने वाला सिपाही था। इसको माफी मिली थी। यह कुंअर सिंह की सेना के साथ आजमगढ़ में १८५८ के मार्च या अप्रैल में शरीक हुआ। उस समय बन्दी हरेकृष्ण सिंह विद्रोही सेना में था और इसको कुँअर सिंह द्वारा प्रदत्त सलारेजंग की उपाधि प्राप्त थी। जब कुँअर सिंह और हरेकृष्ण सिंह अंगरेजी सेना पहुँच जाने पर आजमगढ़ छोड़े और गङ्गा पार किये तब गवाह दो दिन बाद जगदीशपुर पहुँचा और वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि बन्दी हरेकृष्ण सिंह कुंअर सिंह के मर जाने पर उच्चतम शासन का भार ग्रहण किये था। उस दिन से लेकर उस समय तक जब विद्रोही जगदीशपुर से हटा लिये गये बन्दी हरेकृष्ण सिंह प्रधान अधिकारी था। अमर सिंह नाममात्र के अधिकार रखते थे।

हुसेन बख्श—यह गवाह पहले सरकारी दारोगा था—उसका बयान है कि कुंअर सिंह की मृत्यु के बाद बन्दी हरेकृष्ण सिंह ही उच्चतम अधिकारी था। यह मोर्चा बनाने के काम का निरीक्षण करता था, सब रिपोर्टों को तैयार कराता था और उन्हें जेनरल के पास भेजता था। सारांश यह कि सभी कामों और सभी मनुष्यों पर उसकी हुकूमत थी। उधर अमर सिंह यद्यपि राजा कहे जाते थे कुछ नहीं थे और बन्दी के हाथ में बिलकुल खिलौना थे। चौथा चार्ज सैमुअल के बयान से साबित है। उसका बयान है कि बन्दी हरेकृष्ण सिंह ने उसके 'फाउलर' के कैम्प के लिए रवाना होने के पूर्व उससे कहा था कि वह बन्दी तथा उसके भाई अफसरों के माफी के लिए बीचवान बने और उसके नौकर को जवाब आने तक के लिए रोक रक्खा था।

बचाव पक्ष के सम्बन्ध में मुकदमा की जाँच इस प्रकार है। बन्दी ने जो alibi...का निरूपण किया है वह गवाहों से समर्थित नहीं हुआ। केवल एक गवाह दारोगा सिंह ने बन्दी को फकीर के लिबास में सारन जिले के नीमी नामक ग्राम में जो आरा से १८ मील की दूरी पर है १२६५ फसली के भादों में देखा था।

सोहन लाल
दरोगादत्त
स्वरूप रात } ये बन्दी के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते।

विशेशरदयाल
सोहनलाल साहु } नहीं हाजिर हुए।

"बन्दी की यह कहानी कि मेजर फाउलर ने उसको एक पत्र भेजा जिसमें श्रीमती सैमुअल के बचाये जाने की सेवा की प्रशंसा की झूठी बात है। इसकी यह असत्यता पत्र संख्या १७७, दिनांक २८ नवम्बर १८५८, प्रेषक मजिस्ट्रेट शाहाबाद, प्रेषी मजिस्ट्रेट पटना डिविजन के उद्धरण से प्रमाणित है। उद्धरण इस प्रकार है—"

"हरेकृष्ण सिंह के कमान के अन्दर विद्रोही २४ नवम्बर १८५८ को दक्षिण की ओर चलकर आयर के पास पहुँचे जहाँ उन्होंने श्रीमती सैमुअल नामक यूरोपीय महिला को जो शाहाबाद के कलक्टरेट के एक क्लर्क की स्त्री थी, पकड़ा। इस औरत को उन लोगों ने जगदीशपुर से ७ मील पश्चिम बगेन नामक स्थान पर जहाँ मेजर फाउलर कमांडिंग आफिसर था, भेजा और उसके जरिये उन लोगों ने अपनी अमनेस्टी की शर्तों से उन्हें क्या जमा प्राप्त होने वाला था यह जानने की इच्छा प्रकट की। जवाब में मेजर फाउलर ने उनके पास राजकीय घोषणा की एक प्रति भेजा और इच्छा प्रकट की कि यदि वे आत्मसमर्पण करना चाहते हों तो दूसरे सुबह वे जगदीशपुर आवें और अपनी शर्त बतावें।"

फाँसी की सजा का निर्णय

"अन्त में मुझे ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है जिसके आधार पर मैं बन्दी पर दया दिखलाने की सिफारिश करूँ इसलिये मैं सिफारिश करता हूँ कि वह आरा जेल से जहाँ वह इस समय बन्दी है, जगदीशपुर के उस चौक पर ले जाया जाय जो उसके मिथ्या गौरव और निर्दयता प्रदर्शन का स्थान है और वहाँ उसे गर्दन से लटका कर फाँसी दी जाय जब तक वह मर न जाय।"

"उसकी जायदाद पहले ही सरकार द्वारा जब्त करली गयी है इसलियें इस सम्बन्ध में कोई आज्ञा देना जरूरी नहीं है।"

कागज नं०—५

उदवन्त सिंह की वसीयत—दिनाङ्क २६ माह जे० ११३७ साल

उदवन्त सिंह

ली० वसी०(अ)त श्री महाराज उदवन्त सिंह जीउ रीआसत जगदीशपुर जी० शाहाबाद—

आगे हमरा पाछिल राजन्ह के खानदानी दस्तू हौव के रियासत में सरदारन के हक-हिस्सा हमेसा कायम मानल जाई और रियासत हजमाल रही और खानदान बड़ा लड़का बड़ा साह के हजमाल रियासत के गद्दी नसीन भइल करी उसबकर भरन-पौशन मोताबिक खानदानी इज्जत-मरजादा के कइल करी। जब जगदीशपुर रियासत भोजपुर से अलग भइल तब एह रिवाज एहाँ भी कायम भइल। यह वासते वसी(अ)त लिख देल कि हमार बाद चार लड़िका बाबू गजराज सिंह, बाबू उमरावो सिंह, बाबू रनबहादुर सिंह, बाबू दिगा सिंह जेबा(नी) से यही रिवाज के पाबन्दी कइल करी ता की एका काएम रहे रेआस्त बनल रहे।

ता० २६ माह जेठ ११३७ साल

उर्दू की मुहर	उर्दू अक्षर में लिखा मुहर जिसके ऊपर माथा पर ११३३ साल अङ्कित है और उदवन्त सिंह का नाम भी है और कुछ भी लिखा है जो नहीं पढ़ा जा सका।

बदस्तूर साबीक हम वसीत कइल।

उदवन्त सिंह की कलम से स्वीकृत रूप हस्ताक्षर। पुराने समय में सामन्तगण आज ऐसा अपना नाम लिखकर दस्तखत नहीं करते थे।

कागज नं०—६

बाबू कुँअर सिंह की सनद दिनाङ्क १ भादों १२६५ साल जिसकी मूल प्रति आज भी बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह के पास वर्तमान है। कुंअर सिंह ने इस सनद को बीबीगञ्ज के संग्राम में बहादुरी दिखाने के उपलक्ष में बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह के पूज्य पितामह बाबू नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह को दी थी।

प्रतिलिपि सनद

बाबू कुंअर सिंह

स्वौस्ती श्री ची० (चिरञ्जीवी) बबुआ नरवदेसवर प्रसाद सिंह के लि० (लिखतं) श्री महाराजकुमार बाबू कुंअर सिंह के आसीस—आगे राउर खानदान आज तक इजमाल रेआसती के राखके अपना प्रवरिस के बोझ रेआसती पर छोड़ले

राखल । रेआसत भी हमेसा राँवाँ सब के एह बेवहार के कदर कइल और आइन्दा भी अइसने बेवहार राखी जेह से एका काएम रहे । अगरेजन के खीलाफ बीबीगञ्ज के लड़ाई में सउर बाबू जी साहेब हमार जान बचावे में खेत अइल (ि) रउरा भी तीन अगरेजन के मार के हमार जान बचौली एह से हम राउरा से उगरिन (उऋण) ना हो सकीं—एह से इनमाल रेआसत में जे हमार हीसा बा वोह में से हम खोसी (खुशी) से राउरा के हसबजैल अनइस गावो इनाम में देली—ई राउर नीज समपती भइल एसो के साल से ही राउरा मालिक भइलीं अपना दखल कबजा में लेके तहसील वोसुल करी और आमदनी लीही और पुस्त दर पुस्त काएम रही खाह जे मोनासिब समझी से करी—दूसर बात की राउर एह लगन में शादी भइल हा—हम हसब दसतूर खानदान रउरा महल श्री० चि० दुलहीन अमराज कुँअर के खोइछा वो मुँह देखी में एगारह सौ पचास बीगहा जमीन मोखतलीफ गावों में मोताबीक फेहरिस्त जेल के माफी लाखराज देली । ऊ एही साल से दखल कबजा में लेके आमदनी अपना खास खच तसरूफ में करवी एह वासते एह सनद लीख देल के वोकत पर काम आवे ।

कुँअर सिंह की कलम से लिखी हुई इबारत

सनद लीखल जमीन गाँव देल ।

उर्दू की मुहर

मुहर उर्दू अक्षर में जिसमें कुँअर सिंह का नाम है और साल है ।

कैफिअत मौजा जे इनाम में दीआहल

नाम थाना	नाम मौजात	नाम थाना	नाम मौजात
शाहपुर—		पीरो	पीरो—६
जगदीशपुर	चकवथ—१	,,	वमहवार—७
,,	धनगाई—२	,,	जीतवरा—८
,,	दुलउर—३	,,	जमुआव—९
,,	केसरी—४	,,	वराव—१०
,,	तेनुनी—५	,,	रतनार—११

नाम थाना	नाम मौजात	नाम थाना	नाम मौजात
		,,	छवरही—१२
		,,	मोथी—१३
		,,	मरोही—१४
		,,	हाटपोखर—१५
		,,	रजेश्रा—१६
		,,	तार—१७
		,,	सनेश्रा—१८
		,,	चौबेपुर १६

१६ अनइस मौजा हकीअत मिलकीअत सोलह आना—

कैफीअत अराजीआत जे खोइछा और मुह देखी में दीअहल—

नाम मौजा	थाना			
१—जगदीश(पुर)	शाहपुर जगदीशपुर	दीगासिंह	खीलमधे—२००	बीगहा
२—धनगाई	,,	....	.... ३००	,,
३—चकवथ	,,	...	.... २००	,,
४—तेनुनी	,,	....	... १००	,,
५—वमहवार	पीरो	....	... १००	,,
६—रतनार	,,	....	.... २५०	,,
७—जीतौरा	,,	....	... १००	,,
			११५०	बीगहा

ता० १ माह भादों १२६५ साल.

कागज न०—७

बाबू कुँअर सिंह तथा उनके तीन भाई दयाल सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह के बीच का वह सुलहनामा जो उनके पिता साहबजादा सिंह ने रणबहादुर सिंह वंशज हकदार फरीकों की राय से ता० ११ पूस १२१२ फसली को लिखवाया और जिसे रजिष्ट्री होने के लिए ता० २ मार्च १८१३ ई० को आरा के जिला रजिष्ट्रार के समक्ष पेश किया गया। इस सुलहनामे का छपा हुआ

अंग्रेजी रूप (ज्ञात नहीं मूल किस भाषा में था) पटना के सचिवालय में आज भी वर्तमान है। इससे कुछ आवश्यक उद्धरण :—

"हम बाबू कुँअर सिंह, दयाल सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह बाबू साहबजादा सिंह के लड़के हैं जो परगना पीरू और नानौर तथा तालुका भोजपुर बीहिआ दनवार और आरा के मालिक हैं। चूंकि हम चार भाइयों में लड़ाई-झगड़ा और दुश्मनागत कतिपय बातों के कारण चली आ रही है और चूँकि यह पाया गया कि परेशानी और तरद्दूत तथा खर्चे के अतिरिक्त और कोई लाभ इस झगड़े और दुश्मनागत से नहीं प्राप्त होगा, इसलिये हम लोगों के बीच में नीचे लिखी बातें आपस की दुश्मनागत को रोकने के लिये स्वेच्छापूर्वक तय की गयी।

"यह कि हर रियासत के खानदानी रिवाज-रस्म के अनुसार बड़ा लड़का बाबू कुँअर सिंह का नाम रियासत के सभी गाँवों, ताल्लुकों के ऊपर जिनका जिक्र ऊपर किया गया है सरकारी बन्दोबस्ती के कागजों में शाहजादा सिंह की मृत्यु के बाद चढ़ेगा।"

"यह कि रियासत के इन गाँवों और परगनों में से निम्नलिखित गांव और परगने बाबू दयाल सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह तथा उनकी माता पंचरत्न कुँअर के कब्जे में दिये जायेंगे।'

"ऊपर लिखी रियासत के सभी परगनों और गांवों में जिनके ऊपर कुँअर सिंह का नाम चढ़ेगा वे गाव और परगने जो कुँअर सिंह के छोटे भाइयों और उनकी माता पंचरत्न कुँअर को दिये गये हैं वे उन लोगों के कब्जे में शाहजादा सिंह की मृत्यु के बाद आवेंगे।'

"इसलिये अब हम लोग घोषित करते हैं और लिख देते हैं कि अपने जीवन भर बाबू शाहजादा सिंह रियासत पर सब तरह से अधिकार रक्खेंगे और जो कुछ भी वे हम लोगों को परवरिश के लिए देंगे वह हमको मान्य होगा और उनकी मृत्यु के बाद हम चार भाइयों और हमारी माता ऊपर कहे गये परगनों और गाँवों को अपने अपने अधिकारों में क्रम से रखेंगे।"

"यह कि अगर किसी समय सरकारी लगान को न अदा करने के कारण

ऊपर कहे हुए गाँवों में से कोई गाँव इस वजह से निलाम हो जाय कि रियासत का सरकारी लगान इजमाल है और कुँअर सिंह का नाम सरकारी कागजों में रियासत के रस्म-रिवाज और खान्दानी दस्तूर के अनुसार दर्ज है तो उस दशा में हम में से उस आदमी को जिसके लगान न देने के कारण गाँव निलाम हुआ रहेगा दूसरे की क्षति पूर्ति अपने हिस्से की सम्पत्ति से करनी पड़ेगी।"

"यह कि जाहिर हो कि बाबू साहबजादा सिंह की मृत्यु के बाद हम चारों भाई इस कागज के बल पर ऊपर कहे हुए गाँवों और ताल्लुकों को अपने अधिकारों में लायेंगे जिसके सम्बन्ध में हमारे बीच सुलह हो गयी है और सरकारी लगान दाखिल करने के बाद हम और हमारे वंशज पुस्त दर पुस्त अपने अपने हिस्से की रियासत के नफा को बिना एक दूसरे के किसी तरह के सम्बन्ध रखे हुए भोगेंगे और हम या हमारे वारिसान दूसरे भाई के अथवा उसके वंशज के कब्जे के गाँव परगना से किसी तरह कभी भी कोई सम्बन्ध या हक (concern) अनिवार्य रूप से कभी भविष्य में नहीं रखेंगे।"

फाइल का रेफ्रान्स—१८६१ बंगाल की सरकार का लैण्ड रेवन्यु शाखा—जनवरी १८६१ की एक प्रोसिडिङ्ग—

कागज नं०—८

रणबहादुर सिंह के वंशजों की जो सन्तान आज भी जगदीशपुर और दलीपपुर में वर्तमान है तथा जगदीशपुर से हटकर बलवा के बाद दलीपपुर जा बसी थी उनके पूर्वजों द्वारा कुँअर सिंह की ओर से क्रांति में सक्रिय भाग लेने के पक्ष के सरकारी कागज तुलसी प्रसाद सिंह, किशुन प्रसाद सिंह आदि की सम्पत्ति की जब्ती ता० १० मई १८५९ ई० को पटना कमिश्नरी के ऑफिसियेटिंग कमिश्नर श्री एच० डी० एच० फरकुहर (फरगुशन भी पाठ मिलता है) ने अपने पत्र संख्यक २ में बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव को लिखा था।

"महाशय,

शाहाबाद के जमीन्दार किशुन प्रसाद सिंह की रियासत १८५७ के २५ ऐक्ट के अनुसार १८५८ ई० के जुलाई मास में जब्त कर ली गयी थी।"

"(२) कलक्टर श्री मनी (शाहाबाद) ने अपने पत्र संख्यक २०७, दिनांक

अंग्रेजी रूप (ज्ञात नहीं मूल किस भाषा में था) पटना के सचिवालय में आज भी वर्तमान है। इससे कुछ आवश्यक उद्धरण :—

"हम बाबू कुँअर सिंह, दयाल सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह बाबू साहबजादा सिंह के लड़के हैं जो परगना पीरू और नानौर तथा तालुका भोजपुर बीहिआ दनवार और आरा के मालिक हैं। चूंकि हम चार भाइयों में लड़ाई-झगड़ा और दुश्मनागत कतिपय बातों के कारण चली आ रही है और चूँकि यह पाया गया कि परेशानी और तरद्दूत तथा खर्चे के अतिरिक्त और कोई लाभ इस झगड़े और दुश्मनागत से नहीं प्राप्त होगा, इसलिये हम लोगों के बीच में नीचे लिखी बातें आपस की दुश्मनागत को रोकने के लिये स्वेच्छापूर्वक तय की गयी।

"यह कि हर रियासत के खानदानी रिवाज-रस्म के अनुसार बड़ा लड़का बाबू कुँअर सिंह का नाम रियासत के सभी गाँवों, ताल्लुकों के ऊपर जिनका जिक्र ऊपर किया गया है सरकारी बन्दोबस्ती के कागजों में शाहजादा सिंह की मृत्यु के बाद चढ़ेगा।"

"यह कि रियासत के इन गाँवों और परगनों में से निम्नलिखित गांव और परगने बाबू दयाल सिंह, राजपति सिंह और अमर सिंह तथा उनकी माता पंचरत्न कुअर के कब्जे में दिये जायेंगे।"

"ऊपर लिखी रियासत के सभी परगनों और गांवों में जिनके ऊपर कुँअर सिंह का नाम चढ़ेगा वे गांव और परगने जो कुँअर सिंह के छोटे भाइयों और उनकी माता पंचरत्न कुँअर को दिये गये हैं वे उन लोगों के कब्जे में शाहजादा सिंह की मृत्यु के बाद आवेंगे।"

"इसलिये अब हम लोग घोषित करते हैं और लिख देते हैं कि अपने जीवन भर बाबू शाहजादा सिंह रियासत पर सब तरह से अधिकार रक्खेंगे और जो कुछ भी वे हम लोगों को परवरिश के लिए देंगे वह हमको मान्य होगा और उनकी मृत्यु के बाद हम चार भाइयों और हमारी माता ऊपर कहे गये परगनों और गाँवों को अपने अपने अधिकारों में क्रम से रखेंगे।"

"यह कि अगर किसी समय सरकारी लगान को न अदा करने के कारण

ऊपर कहे हुए गाँवों में से कोई गाँव इस वजह से निलाम हो जाय कि रियासत का सरकारी लगान इजमाल है और कुँअर सिंह का नाम सरकारी कागजों में रियासत के रस्म-रिवाज और खान्दानी दस्तूर के अनुसार दर्ज है तो उस दशा में हम में से उस आदमी को जिसके लगान न देने के कारण गाँव निलाम हुआ रहेगा दूसरे की क्षति पूर्ति अपने हिस्से की सम्पत्ति से करनी पड़ेगी।"

"यह कि जाहिर हो कि बाबू साहबजादा सिंह की मृत्यु के बाद हम चारों भाई इस कागज के बल पर ऊपर कहे हुए गाँवों और ताल्लुकों को अपने अधिकारों में लायेंगे जिसके सम्बन्ध में हमारे बीच सुलह हो गयी हैं और सरकारी लगान दाखिल करने के बाद हम और हमारे वंशज पुस्त दर पुस्त अपने अपने हिस्से की रियासत के नफा को बिना एक दूसरे के किसी तरह के सम्बन्ध रखे हुए भोगेंगे और हम या हमारे वारिसान दूसरे भाई के अथवा उसके वंशज के कब्जे के गाँव परगना से किसी तरह कभी भी कोई सम्बन्ध या हक (concern) अनिवार्य रूप से कभी भविष्य में नहीं रखेंगे।"

फाइल का रेफ्रान्स—१८६१ बंगाल की सरकार का लैण्ड रेवन्यु शाखा—जनवरी १८६१ की एक प्रोसिडिङ्ग—

कागज नं०—८

रणबहादुर सिंह के वंशजों की जो सन्तान आज भी जगदीशपुर और दलीपपुर में वर्तमान है तथा जगदीशपुर से हटकर बलवा के बाद दलीपपुर जा बसी थी उनके पूर्वजों द्वारा कुँअर सिंह की ओर से क्रांति में सक्रिय भाग लेने के पक्ष के सरकारी कागज तुलसी प्रसाद सिंह, किशुन प्रसाद सिंह आदि की सम्पत्ति की जब्ती ता० १० मई १८५९ ई० को पटना कमिश्नरी के ऑफिसियेटिंग कमिश्नर श्री एच० डी० एच० फरकुहर (फरगुशन भी पाठ मिलता है) ने अपने पत्र संख्यक २ में बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव को लिखा था।

"महाशय,

शाहाबाद के जमीन्दार किशुन प्रसाद सिंह की रियासत १८५७ के २५ ऐक्ट के अनुसार १८५८ ई० के जुलाई मास में जब्त कर ली गयी थी।"

"(२) कलक्टर श्री मनी (शाहाबाद) ने अपने पत्र संख्यक २०७, दिनांक

२ दिसम्बर १८५८में लिखा है कि "इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि किशुन प्रसाद ने बागियों के साथ होकर युद्ध किया था, परन्तु जहाँ तक मैं जान पाया हूँ वह गवर्नमेन्ट की बतायी परिभाषा के अर्थ में नेता नहीं था और न वह हत्यारा ही था और न बगावत का प्रचारक ही था।" "(३) १८५८ ई० की दिसम्बर में किशुन प्रसाद सिंह को अमनेस्टी के अन्दर साधारण रूप से माफी दी गयी।" "(४) उसका मामला इसलिये इण्डिया गवर्नमेन्ट के सचिव की, आपके नाम भेजा हुआ पत्र संख्यक ५१६ दिनाङ्क ८ नवम्बर १८५८ ई० के पारा ७ के अन्तर्गत आता है। इसलिये मैं छोटे लाट की सम्बन्ध की आज्ञा की प्रतीक्षा करता हूँ।" "(५) मैं इसी पत्र के साथ उक्त किशुन प्रसाद की जब्त सम्पत्ति की एक तालिका नत्थी करता हूँ और उस तालिका के प्रथम खाने में जो दूसरे नाम दर्ज किये गये हैं उनके सम्बन्ध में मुझको कहना है कि (शाहाबाद के) कलक्टर ने रिपोर्ट किया है कि वे प्रतिवादी किशुन प्रसाद सिंह और उसके भाई सभी माफी के अन्दर आ गये हैं।" "(६) मैं यह भी सूचना दे देना चाहता हूँ कि किशुन प्रसाद सिंह की किसी भी सम्पत्ति के लगान की वसूली के लिए कोई प्रबन्ध इसलिए नहीं किया गया था कि जिला (शाहाबाद) उस समय बागियों के हाथ में था और उन गाँवों को ठीका पर दे देना अथवा मालगुजारी वसूली के लिए सरवराकार रखना उस समय सम्भवतः बेकार समझा गया।

किशुन प्रसाद सिंह और दूसरे भाइयों के गाँवों की उक्त तालिका—

नं०	प्रतिवादी के नाम	परगने के नाम	महाल	मौजा	सदर जमा
					रु० आ० पा०
१	किशुन प्रसाद सिंह	चैनपुर	चौबेपुर	१ मौजा	१५२–८–६
२	गोविन्द प्रसाद सिंह	,,	खलासपुर	१ ,,	१५२–८–६
३	ठाकुर प्रसाद सिंह	,,	देबुला	१ ,,	१०६–१०–८
४	रामासुर प्रसाद सिंह	,,	रूपुर	५४ ,,	१४४६०–२–२
५	रघुनाथ प्रसाद सिंह	,,	मोहन पुर	३ ,,	१८६–१०–८
६	हनुमान प्रसाद सिंह	पोवार	बलूर	२ ,,	१६५३–५–४
७	तुलसी प्रसाद सिंह	बीहिआ	बलगाँव	१ ,,	२१३–५–४

हस्ताक्षर—ए० मनी, कलक्टर।

कागज नं०—९

बङ्गाल सरकार के सचिव श्री ए० वी० यङ्ग का पत्र संख्यक ३३६२.

प्रेषक—श्री ए० वी० यङ्ग,

सचिव, बङ्गाल सरकार।

सेवा में—गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया का सचिव,

गृहविभाग।

दिनाङ्क फोर्ट विलियम, २५ मई १८५९ ई०

दीवानी

महाशय,

सुप्रीम गवर्नमेण्ट के विचारार्थ और आज्ञार्थ पटना डिविजन के कमिश्नर के पत्र संख्यक २, दिनाङ्क १० मई १८५९ की प्रतिलिपि भेजते हुए मैं सूचित करता हूँ कि छोटे लाट महोदय को इस बात में सन्देह नहीं है कि शाहाबाद के जमींदार किशुन प्रसाद सिंह जिसकी जमींदारी १८५७ ई० के २५ ऐक्ट के अनुसार जब्त कर ली गयी है आपके पत्र संख्यक ५१९, दिनाङ्क १८ नवम्बर १८५८ ई० के पारा ७ के अन्दर आ जाते हैं और इसलिये उसके फैसले का विचार उनके पक्ष में होना चाहिए, किन्तु छोटे लाट इस राय के पक्ष में हैं कि इस तरह के मामलों में जब्त सम्पत्ति के बिना जुर्माने के निःशुल्क रूप से मुक्त कर देने से अच्छा और स्थायी फल उत्पन्न करने के लिए यह ठीक होगा कि सम्पत्ति-मुक्ति के लिए नाममात्र की नहीं, बल्कि औसत दर्जे का जुर्माना वसूल करने की शर्त रखी जाय। ऐसी नीति छोटे लाट की समझ में काफी तत्वपूर्ण होगी और इससे (नेटिवों) देशवासियों के दिमाग पर हक और दावा के सम्बन्ध की बातें अधिक स्पष्ट हो जायेंगी। यदि बिना किसी शर्त के निःशुल्क रूप से जब्त सम्पत्ति मुक्त कर दी जाती है तो उससे जनता के विचार में सहजो ही यह गलत भावना जाग्रत हो उठने की सम्भावना है कि सरकार ने अपराधी से जुर्माने को इसलिए वसूल नहीं किया कि उसने शांतिपूर्ण विचार करने पर बगावत को कोई अपराध नहीं समझा। इससे स्थायी रूप से भी जो जमींदार

बन्दोबस्त है और जिनके जमींदार वृटिश सरकार के हर तरह से राजभक्त हैं उनके दिमाग पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा और उनके आचरण इससे प्रभावित होंगे।

"(२) चूँकि यह मामला अपने तरह का पहला मामला है जो कि छोटे लाट के समक्ष आया है इसलिये उन्होंने इसको सुप्रीम सरकार के समक्ष उक्त विचारों के साथ उपस्थित करना उचित समझा।

मैं हूँ,
आपका आज्ञाकारी दास
ए० बी० यङ्ग,
सचिव, बङ्गाल सरकार।

कागज नं—१०

इसी सम्बन्ध का दूसरा पत्र नं० ४४८७
प्रेषक—श्री ए० आर० यंग
सचिव, बंगाल सरकार
प्रेषी—पटना डिविजन का कमिश्नर
दिनाङ्क फोर्ट विलियम—१६ जुलाई १८५६ ई०

दीवानी

महाशय,

आपने जो शाहाबाद के जमीन्दार किशुन प्रसाद सिंह जिसकी जमीन्दारी १८५७ के २५ कानून के अनुसार जब्त कर ली गयी है, के सम्बन्ध में पत्र संख्यक २, दिनाङ्क १० गत मई को भेजा है उसकी प्राप्ति स्वीकृति भेजने के लिये मुझे निर्देश मिला है। इसी के साथ मैं आपके पास उस पत्र व्यवहार की प्रतिलिपि भी भेज रहा हूँ जो गवर्नमेंट आँफ इन्डिया से आपकी इस सिफारिश के सम्बन्ध में हुए हैं कि उक्त किशुन प्रसाद सिंह की सम्पत्ति की जब्ती के सम्बन्ध का फैसला उनके पक्ष में विचारा जाय।

(गवर्नमेण्ट आँफ इंडिया की सेवा में—गृह विभाग नं० ३३६२, दि० २५ मई १८५६—प्रेषक—गवर्नमेण्ट आँफ इंडिया—गृह विभाग—नं० १३५१ दिनाङ्क ५ जुलाई १८५६)

"(२) मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इस मामले के सम्बन्ध को सभी परिस्थितियों को विचार करके अब जुर्माने की एक ऐसी रकम का सुझाव भेजिये जिसको अदा करने के बाद किशुन प्रसाद सिंह की सम्पत्ति छोड़ी जा सके। आप से यह भी अनुरोध है कि आप उस जुर्माने की रकम को वसूल करने के तरीकों को भी सविस्तार भेजेंगे।

मैं हूँ,

आपका आज्ञाकारी दास

ए० आर० यङ्ग

सचिव, बङ्गाल सरकार

कागज नं०—११

इसी सम्बन्ध का तीसरा पत्र जो हाथ का लिखा है—

प्रेषक—सचिव, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

गृह विभाग।

नं० १३५१, दिनाङ्क ५ जुलाई १८५६

इस कार्यालय के पत्र संख्यक ३३६२, दिनाङ्क २५ मई १८५६ के प्रत्युत्तर में जो शाहाबाद के जमींदार किशुन प्रसाद सिंह की १८५७ के २५ कानून के अनुसार जब्त जायदाद के जुर्माने के सम्बम्ध का था, यह आज्ञा दीं जाती है कि इस मामला में जैसा कि व्यक्त किया गया है, जब्त सम्पत्ति के मालिक को अपनी सम्पत्ति स्थानीय सरकार द्वारा निर्धारित समय के अन्दर निर्धारित रकम जमा करके वापिस लेने की आज्ञा दी जा सकती है। स्थानीय सरकार के ऊपर यह छोड़ दिया जाता है कि वह जब्त सम्पत्ति का कुछ भाग ही ऐसे मामलों में मुक्त करे जहाँ सम्पूर्ण सम्पत्ति छोड़ने से सरकार को अत्यधिक नर्मी बर्तने का भाव प्रदर्शित होता हो अथवा ऐसा तरीका बिना किसी व्यावहारिक असुविधा के वर्ता जा सकता हो।

बन्दोबस्त है और जिनके जमींदार बृटिश सरकार के हर तरह से राजभक्त हैं उनके दिमाग पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा और उनके आचरण इससे प्रभावित होंगे।

"(२) चूँकि यह मामला अपने तरह का पहला मामला है जो कि छोटे लाट के समक्ष आया है इसलिये उन्होंने इसको सुप्रीम सरकार के समक्ष उक्त विचारों के साथ उपस्थित करना उचित समझा।

मैं हूँ,
आपका आज्ञाकारी दास
ए० बी० यङ्ग,
सचिव, बङ्गाल सरकार।

कागज नं—१०

इसी सम्बन्ध का दूसरा पत्र नं० ४४८७

प्रेषक—श्री ए० आर० यंग
सचिव, बंगाल सरकार

प्रेषी—पटना डिविजन का कमिश्नर

दिनाङ्क फोर्ट विलियम—१६ जुलाई १८५६ ई०

दीवानी

महाशय,

आपने जो शाहाबाद के जमीन्दार किशुन प्रसाद सिंह जिसकी जमीन्दारी १८५७ के २५ कानून के अनुसार जब्त कर ली गयी है, के सम्बन्ध में पत्र संख्यक २, दिनाङ्क १० गत मई को भेजा है उसकी प्राप्ति स्वीकृति भेजने के लिये मुझे निर्देश मिला है। इसी के साथ मैं आपके पास उस पत्र व्यवहार की प्रतिलिपि भी भेज रहा हूँ जो गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया से आपकी इस सिफारिश के सम्बन्ध में हुए हैं कि उक्त किशुन प्रसाद सिंह की सम्पत्ति की जब्ती के सम्बन्ध का फैसला उनके पक्ष में विचारा जाय।

(गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया की सेवा में—गृह विभाग नं० ३३६२, दि० २५ मई १८५६—प्रेषक—गवर्नमेण्ट ऑफ इंडिया—गृह विभाग—नं० १३५१ दिनाङ्क ५ जुलाई १८५६)

"(२) मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इस मामले के सम्बन्ध को सभी परिस्थितियों को विचार करके अब जुर्माने की एक ऐसी रकम का सुझाव भेजिये जिसको अदा करने के बाद किशुन प्रसाद सिंह की सम्पत्ति छोड़ी जा सके। आप से यह भी अनुरोध है कि आप उस जुर्माने की रकम को वसूल करने के तरीकों को भी सविस्तार भेजेंगे।

मैं हूँ,

आपका आज्ञाकारी दास

ए० आर० यङ्ग

सचिव, बङ्गाल सरकार

कागज नं०—११

इसी सम्बन्ध का तीसरा पत्र जो हाथ का लिखा है—

प्रेषक—सचिव, गवर्नमेंएट ऑफ इंडिया

गृह विभाग।

नं० १३५१, दिनाङ्क ५ जुलाई १८५६

इस कार्यालय के पत्र संख्यक ३३६२, दिनाङ्क २५ मई १८५६ के प्रत्युत्तर में जो शाहाबाद के जमींदार किशुन प्रसाद सिंह की १८५७ के २५ कानून के अनुसार जब्त जायदाद के जुर्माने के सम्बम्ध का था, यह आज्ञा दी जाती है कि इस मामला में जैसा कि व्यक्त किया गया है, जब्त सम्पत्ति के मालिक को अपनी सम्पत्ति स्थानीय सरकार द्वारा निर्धारित समय के अन्दर निर्धारित रकम जमा करके वापिस लेने की आज्ञा दी जा सकती है। स्थानीय सरकार के ऊपर यह छोड़ दिया जाता है कि वह जब्त सम्पत्ति का कुछ भाग ही ऐसे मामलों में मुक्त करे जहाँ सम्पूर्ण सम्पत्ति छोंड़ने से सरकार को अत्यधिक नर्मी बर्तने का भाव प्रदर्शित होता हो अथवा ऐसा तरीका बिना किसी व्यावहारिक असुविधा के वर्ता जा सकता हो।

कागज न०--१२

किशुन प्र० सिंह सम्बन्धी पाँचवाँ पत्र नं० १३५१

प्रेषक:—श्री डब्ल्यू ० ग्रे०

सचिव, गवर्नमेंट आफ इण्डिया।

प्रेषी:—ए० आर० यंग,

सचिव, बंगाल सरकार।

दिनाङ्क कौंसिल चैम्बर, ५ जुलाई १८५६

महाशय,

आपका गवर्नर जेनरल और उनकी कौंसिल के विचारार्थ एवं आज्ञार्थ भेजा हुआ पत्र संख्यक ३३६२, दिनांक २५ मई १८५६ प्राप्त हुआ जिसमें आपने पटना के कमिश्नर का वह पत्र नत्थी किया है जो शाहाबाद के जमींदार किशुन प्रसाद सिंह की १८५७ के २५ कानून के अनुसार जब्त की हुइ सम्पत्ति के सम्बन्ध का है।

(२) कमिश्नर रिपोर्ट करते हैं कि यह जमींदार गत दिसम्बर मास में अमनेस्टी के अन्दर आ गया और इसे माफी भी दी गयी और इसलिये कमिश्नर की राय है कि यह मामला सुप्रीम सरकार के उस पत्र के पारा ७ के अन्दर आ जाता है जिसका नम्बर मार्जिन में दिया गया है और जिसमें छोटे लाट से अनुरोध किया गया है कि वे ऐसी जब्त सम्पत्ति के मामलों के फैसले उनके पक्ष में विचार करें। परन्तु उसमें शर्त यह रखी गयी है कि प्रतिवादी कतिपय निर्धारित श्रेणी के अपराधी में न हो और अन्य तरह से उनके पक्ष के साबूत सबल हों।

गवर्नर जनरल के सेक्रेटरी का पत्र बंगाल की सरकार के नाम दिनांक इलाहाबाद नवंबर १८५८संख्यक५१६

(३) इस वर्तमान मामला के सम्बन्ध में छोटे लाट इस बात में कोई शंका नहीं रखते कि यह मामला उपर्युक्त आज्ञा के अन्दर आ जाता है परन्तु छोटे लाट ऐसे मामलों में जब्त सम्पत्ति को निःशुल्क वापिस करने के औचित्य पर शंका

करते हैं। उनका विचार है कि ऐसे मामलों में स्थायी और पक्का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए अधिक अच्छा यह होगा कि जब्त सम्पत्ति की वापसी के लिए मध्यम दर्जे का जुर्माना वसूल करने की शर्त रखी जाय।

(४) इसके उत्तर में मुझे यह लिखने का निर्देश मिला है कि वह आज्ञा जारी करते समय सरकार ने सोचा था कि उस पत्र के नियमों के अन्दर जो मामले आयेंगे उसमें जब्त सम्पत्ति पर जुर्माना आम तरह से बलपूर्वक लगाया नहीं जा सकता फिर भी उस आज्ञा के वाक्य स्थानीय सरकार को अपने निर्णय को निर्धारित करने के लिए काफी गुंजाइश रखते हैं और उनमें कोई बात ऐसी निषेधात्मक नहीं रक्खी गयी है जो छोटे लाट के सुझाव में बाधक होती हो जिसमें उन्होंने सम्पत्ति को सम्पूर्ण जब्त कर लेने के बजाय जब्त की नोटिस देने का सुझाव पेश किया है। ऐसी माँगें उस आज्ञा के प्रतिकूल नहीं होंगीं जिसका मुख्य भाव यह है कि बिना किसी शर्त के जब्त सम्पत्ति को मुक्त न की जाय और यदि ऐसा हो भी तो वह ऐसा खास मामिला हों जिसमें जमींदार का आचरण खास तरह से सभ्य पाया जाता हो।

(५) यह सन्देहात्मक है कि स्थानीय सरकार किसी कानूनी कार्यवाही द्वारा १८५७ के पास किये गये किसी कानून के आधार पर जब्त सम्पत्ति को मुक्त करने के समय जुर्माना लगा सकती है अथवा नहीं, क्योंकि यदि जब्त सम्पत्ति को मुक्त करने के लिये कोई जुर्माना निर्धारित किया जाय तो उस दशा में यह भी आवश्यक होगा कि उस जुर्माना की वसूली के लिए कोई कानूनी तरीका भी सरकार के पास हो। यह कठिनाई आसानी से हटायी जा सकती है। सम्पत्ति के उत्तराधिकारी को सम्पत्ति वापस लेने के लिये ऐसी आज्ञा दी जाय कि वे अमुक समय में अमुक रकम को जमा करके ही अपना जब्त सम्पत्ति वापस ले सकते हैं और यह रकम और समय को निश्चत करना स्थानीय सरकार के आधीन होगा। मुझको निर्देश मिला है कि गवर्नर जेनरल और उनकी कौंसिल इसमें कोई आपत्ति नहीं देखती। इसी तरह स्थानीय सरकार के लिये यह भी खुला हुआ है कि वह जब्त सम्पत्ति का कुछ भाग अथवा पूरी सम्पत्ति ऐसे मामलों में मुक्त करें जहाँ सम्पूर्ण सम्पत्ति

मुक्त करने से सरकार द्वारा अत्यधिक नर्मी बर्तने के भाव प्रदर्शित होते हों अथवा ऐसा तरीका किसी व्यवहारिक असुविधा के कारण बरता जा सकता हो।

मैं हूँ,
आपका आज्ञाकारी दास,
हस्ताक्षर.........नहीं पढ़ा जा सका
सचिव गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया।

कागज नं०—१३

बङ्गाल के छोटे लाट जुडिशियल विभाग के प्रोसिडिङ्ग बुक, ६ अक्टूबर १८५६, नं० ४६ पृष्ठ १३२ से उद्धृत।

प्रेषक—एच० ओ० एच० फरगुशन, एस्क्वायर,
कमिश्नर, पटना कमिश्नरी।

सेवा में :—सचिव, बङ्गाल सरकार

(नं० १७, तारीख १७ सितम्बर १८५६)

मैं आपके पत्र संख्यक ४४८७, दिनाङ्क गत जुलाई १७ की प्राप्ति की सूचना भेजते हुए अपना पत्र संख्यक २, दिनाङ्क १० मई में की गयी सिफारिश कि लेफ्टिनेंट गवर्नर द्वार शाहाबाद के जमीन्दार किशुन सिंह और उनके ६ भाइयों की जमीन्दारी की जब्ती के केस का फैसला उनके पक्ष में दिया जाय, के सम्बन्ध के भारत सरकार के पत्राचार की प्रतिलिपि भेज रहा हूँ।

(२) आपकी इच्छानुसार मैंने उस जमीन्दार के मुकदमें से सम्बन्धित सभी परिस्थितियों का पूर्ण विचार किया है और मैं जुर्माना की राशि निश्चित कर दे रहा हूँ जिसे चुकाकर पूर्व अधिकारी को अपनी जायदाद पुनः प्राप्त करने की आज्ञा दी जा सकती है। आपकी इच्छानुसार इस जुर्माने की वसूली का विस्तृत तरीका लिख रहा हूँ।

(३) जैसा कि मैं पहले की रिपोर्ट में लिख चुका हूँ किशुन प्रसाद सिंह और उनके भाइयों के मुकदमें में कोई विलक्षणता अथवा ज्यादती नहीं है।

(४) कुँअर सिंह के सम्बन्धी होने तथा उनकी विद्रोह में सफलता प्राप्त करने की गलत विश्वास की वजह से वे उनके साथ बगावत में शरीक हुए। चन्द ही महीनों में अपनी गलती देखकर मालूम होता है कि उन्होंने कुँअर सिंह का साथ छोड़कर अपने को गाजीपुर में तब तक छिपा रखा जब तक कि अमनेस्टी होने पर उन्हें इससे नफा उठाने का मौका नहीं मिला।

(५) निजी (Private) जाँचों से, जिन्हें मैंने शाहाबाद के मैजिस्ट्रेट और दूसरों से कारवाई है, मुझे मालुम हुआ है कि किशुन प्रसाद सिंह और उनके भाई इस समय बहुत ही गिरी हुई परिस्थिति में हैं और कहा जाता है कि वे कभी भी धनवान् नहीं थे और उनकी उन रियासतों की मौजूदा जब्ती अथवा अन्त में राज्य में मिला लिया जाना जो आज कलक्टर के हाथ में है, से ही उनकी वैसी दशा हुई है क्योंकि उनको दूसरी जायदाद नहीं है।

(६) इसलिये मैं सुझाव देता हूँ कि साधारण नहीं बल्कि औसद दर्जे का जुर्माना सभी परिस्थितियों को विचारते हुए वसूल होना चाहिये। मैं हर भाई पर ५००) से अधिक जुर्माना लगाने की सिफारिश नहीं कर सकता। इसलिये मैं सिफारिश करता हूँ कि सब मिलाकर ३५००) की जामा पर उनकी रियासत उनको याने पूर्व अधिकारियों को वापिस कर दी जाय।

(७) मैं प्रस्ताव करता हूँ कि कलक्टर को हिदायत किया जाय कि किशुन प्रसाद सिंह और दूसरे हिस्सेदारों को सूचना दें कि रियासत उनको पैतिस सौ रुपये नजराने जमा करने पर वापिस दी जायेगी। अगर इन रुपयों को सरकारी खजाने में उस सूचना के एक मास के अन्दर नहीं जमा किया जायेगा तब बेलाउर नामक रियासत (जिसका विवरण मेरे पूर्व के रिपोर्ट में भेजा जा चुका है।) सदा के लिये जब्त समझी जानी चाहिए और गवर्नमेंन्ट द्वारा उसे बेच देना चाहिए। निलाम करने पर जितना रुपया प्राप्त होगा जो निश्चय ही प्रस्ताविक जुर्माने से अधिक होगा, सरकारी खजाने के हिसाब में रखा जायेगा।

उसी प्रोसिडिङ्ग बुक में नं० ५० की प्रोसिडिङ्ग

कागज नं०—१४

प्रेषक—एच० डी० ब्राउनी,

अन्डर सेक्रेटरी

बङ्गाल सरकार के छोटे लाट के उप-सचिव।

प्रेषी—पटना डिविजन का कमिश्नर

नं० ४६४२, दिनाङ्क १२ अक्टूबर १८५६

मुझे निर्देश मिला है कि आपके पत्र नं० १७, दिनाङ्क ६ सितम्बर, १८५६ की प्राप्ति स्वीकृति आपको भेजूँ और मैं जबाब में आपको सूचना दूँ कि उन परिस्थितियों में जो कि आपके पत्र में व्यक्त की गयी है छोटे लाट आपके इस प्रस्ताव को कि किशुन प्रसाद सिंह और उनके छः भाइयों की जब्त रियासत उनको पैंतिस सौ रुपये एक साथ अथवा पाँच सौ रुपये एक भाई द्वारा जमा किये जाने पर उनको वापस कर दो जायँ। अतः आपको अधिकार दिया जाता है कि इस आज्ञा को उस तरीके से जिसका व्यवरा आपने अपने पत्र में दिया है, कार्यन्वित करें।

पटना के कमिश्नर का शाहाबाद के कलक्टर के नाम पत्र जिसको बङ्गाल के छोटे लाट के सचिव ने इन्डिया गवर्नमेन्ट के पास भेजा—

कागज नं०—१५

प्रेषक—श्री ई० ए० साएमुअल्स

कमिश्नर, पटना डिविजन

प्रेषी :—मजिस्ट्रेट शाहाबाद

नं० २६, दिनांक ११ दिसम्बर १८५८

महाशय,

मैं ससम्मान आपकी उस सूची की प्राप्त स्वीकृति भेज रहा हूँ जिसमें शाहा-

बाद जिले के उन व्यक्तियों की नामावली हैं जिन्होंने बगावत में प्रमुख भाग लिया था।

मैंने फौरन ही गवर्नमेन्ट से तार से पूछा कि बागी सेना के डिविजन जेनरल को नेता में समझा जायेगा अथवा नहीं और उनको अमनेस्टी का नफा उठाने से वंचित किया जायगा कि नहीं, परन्तु अबतक गवर्नमेन्ट के यहाँ से कोई उत्तर नहीं आया है और यह अत्यन्त आवश्यक है कि मैं इसका निर्णय तुरत कर दूँ। अतः गवर्नर जेनरल तथा महारानी विक्टोरिया की घोषणा की शर्तों और हिदायतों को अध्ययन करके विश्वास करता हूँ कि मैं गवर्नर जेनरल और उनकी सेना के विचारों के अनुकूल काम करूँगा यदि मैं यह तय करूँ कि वे सिपाही जो जेनरल बना दिये गये अथवा दूसरे सैनिक पद पर बागियों द्वारा स्थापित किये गये साधारण बागी अफसर हैं और वे घोषणा के अर्थ के अनुकूल नेता नहीं हैं।

उस सूची में जिसको आपने मेरे पास भेजी है मुझे मालुम होता है कि केवल १४ आदमी नेता अथवा विद्रोह प्रचारक माने जा सकते हैं और वे हैं :—

अमर सिंह, हरे किशुन सिंह, शिवपरसन राव, जोधन सिंह, सीधा सिंह, नीधा सिंह, रणबहादुर सिंह, मैघर राव, इब्राहिम खाँ, देवी ओझा और हरकिशुन सिंह के चार भाई लक्ष्मी सिंह, काशी सिंह, आनन्द सिंह और राधे सिंह।

आपको अधिकार दिया जाता है कि इनके अतिरिक्त जो दूसरे नाम सूची में हैं उनको अमनेस्टी से नफा उठाने की स्वीकृति दे सकते हैं।

पटना के कमिश्नर से प्राप्त इस पत्र की प्रतिलिपि बंगाल के छोटे लाट के सचिव ए० आर० यंग द्वारा छोटे लाट की अनुमति से अपने आफिस के पत्र संख्यक ६२४, दिनाङ्क फोर्ट विलियम २३ जनवरी १८५९ (जूडिसिएल 25 th Jan. 1859 No. 128) को गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, गृह विभाग के पास उस आफिस के पत्र नं० ४५०६, दिनांक २३ नवम्बर १८५८ के सिलसिले में भेजी गयी।

कागज नं०---६।२

उन बागियों के नामों की सूची जिन्होंने बलवे में शाहाबाद जिले में प्रमुख साएमुअल्स के समक्ष भेजी गयी थी।

नं०	नाम	पेशा	पहला पेशा	निवास स्थान
१	रामधुन सिंह (सन्देहपूर्ण doubtful)	जेनरल	सूबेदार	बेनी बहुआरा, चैनपुर भगोरा, छपरा के निकट
२	भञ्जन सिंह (सन्देहपूर्ण)	जेनरल	सूबेदार	चातर
३	रामेसुर सिंह	सूबेदार	सूबेदार	बबुरा
४	भोरम सिंह (सन्देहपूर्ण)	जेनरल	सूबेदार	नवादा
५	तीलक सिंह	सूबेदार	हवलदार	बलुआ
६	देवकी दूबे (नेता)	ब्रिगेड मेजर	सूबेदार	डुगबलीआ
७	रणजीत सिंह अहीर	जेनरल	सूबेदार	शाहपुर
८	चतुरधारी ओझा (सन्देपूर्ण)	×	×	×
९	रामनारायण सिंह	सूबेदार	सिपाही	हाट पोखर
१०	द्वारका सिंह (सन्देहपूर्ण)	घुड़सवारसेना का जेनरल	तीन नं० कैलरली का सवार	गूंडी
१	देवी ओझा (सन्देहपूर्ण)	सरदार फौज	कुंअर सिंह का नौकर	सबजौली

भाग लिया था जो आरा के कलक्टर द्वारा पटना के कमिश्नर श्री० ई० ए०

परगना	उम्र	पिता का नाम	कैफियत
×	×	×	सीधा सिंह के साथ आये और बास्कपुर डिविजन में थे।
आरा	×	×	कुरुमवारी तपा डिविजन का कमान किये और आरा जेल तोड़े।
आरा	×	×	मृत।
आरा	×	×	कारीसाथ डिविजन का कमान किया।
आरा	×	×	भञ्जन सिंह के साथ थे और उनके डिविजन का कमान किये जब वे बीमार थे।
भोजपुर	३६ वर्ष	×	इस आदमी ने स्वयं आज्ञा दिया, यह कागज में यहाँ साबित है।
बिहिया	×	×	ये पहले बारगपुर डिविजन के जेनरल थे, बाद में जब नीधा, सिंह आये तो चौगाई डिविजन का जेनरल बनाये गये।
×	×	×	×
बिहिया	×	×	बारगपुर डिविजन में थे।
आरा	×	×	कारीसाथ और तुमरवारी नापा के डिविजन के सवारों का कमान करते थे।
बिहिया	×	×	पहले कारीसाथ और बारगपुर डिविजन का कमान किये बाद में ४०० गाँवों का चकलेदार बने।

नं०	नाम	पेशा	पहला पेशा	निवास स्थान
१२	ज्योधर सिंह (नेता)	सरदार	जमीन्दार	खमईनी
१३	सीधा सिंह (नेता)	सरदार	जमीन्दार	भदई
१४	रंगबहादुर सिंह (संदेहपूर्ण)	सूबेदार	जमीन्दार	गाजीपुर
१५	हरि सिंह	सरदार	जमीन्दार	हेतमपुर
१६	लच्मी सिंह	सरदार	जमीन्दार	बराढ़ी
१७	काशी सिंह	सरदार	जमींदार	बराढ़ी
१८	आनन्द सिंह	"	"	"
१९	राधे	"	"	"
२०	महादेवसिंह	"	"	आयर
२१	महादेवा सिंह	"	"	×
२२	सुन्दर सिंह (सन्देहपूर्ण)	जेनरल	कुँअर सिंह का नौकर।	देहगाँव
२३	साहबजादा सिंह	कप्तान	कुँअर सिह का नौकर।	कारबासीन
२४	हरसू राव (सन्देहपूर्ण)	सरदार	"	झोआ
२५	मेघन राव (नेता)	मुख्य अफसर	"	गहमर
२६	इब्राहिम खाँ (नेता)	"	"	असई
२७	भोला सिंह	कप्तान	"	दलीपपुर

परगना	उ	पिता का नाम	कैफियत
अरवल जि० गया	×	×	बिहिया के आदमियों के नेता।
बलिया जि० गाजीपुर	×	जयनाथ सिंह	गाजीपुर के आदमियों के नेता थे।
×	×	×	सीधा सिंह के साथ आये, भारगपुर डिविजन में थे।
बिहिया	×	×	×
भोजपुर	२५ वर्ष	आदित सिंह	हरकिशुन सिंह का भाई।
भोजपुर	२३ वर्ष	आदित सिंह	हरकिशुन सिंह का भाई।
"	२० "	"	" "
"	४५ "	"	" "
पीरो	३० "	शोभा सिंह	× ×
×	×	×	× ×
डुमराउर	५० "	×	कुँअर सिंह के साथ थे और सारी सेना का कमान करते थे।
ननोर	५० "	×	सौ सिपाहियों का कमान किये जो सोन नदी पर गवर्नमेंट के स्टीमर पर धावा किये थे।
बिहिआ	३५ "	×	गङ्गा नदी में छोटी पलटन में कमान किए।
जमानिआ जिला गाजीपुर	×	×	इस आदमी ने नावों को दिसम्बर मास में बोझा लादकर डुबो दिया।
			... ...
	×	×	
बिहिआ	४२ "	×	अस्त्र-शस्त्र, गोली-बारूद वगैरह के चार्ज में थे और बारूद बनवाने के सुपरिन्टेन्डेण्ट थे।

नं०	नाम	पेशा	पहला पेशा	निवास स्थान
२८	रूपनारायण सिंह	बक्सी	कुँअर सिंह का नौकर।	उगना
२९	नीधा सिंह (सन्देहपूर्ण)	सरदार	जमींदार	बैरिया
३०	हरकिशुन सिंह (नेता)	नेता	कुँअर सिंह का नौकर।	बराढ़ी
३१	अमर सिंह (नेता)	राजा	जमींदार	मीठहा
३२	शिवपरसन राय (नेता)	कलक्टर	कुँअर सिंह का नौकर।	कवरा
३३	कीफायत हुसेन	मजिस्ट्रेट	कुंअर सिह का नौकर।	ठु री
३४	उदित सिंह	मुन्सिफ	,,	बभन गाँवा
३५	श्यामबिहारी लाल	,,	,,	डेलीआ
३६	हजारी सिंह	सूबेदार	,,	बलुआ
३७	शिवबालक मिसिर	जेनरल	सूबेदार	×
३८	महीपद सिंह	घुड़सवार सेना का जेनरल थे।	कुंअर सिंह का नौकर।	×
३९	शिवबक्स मिसिर	जेनरल	सूबेदार	×
४०	शङ्कर मिसिर	आमअदालत कौन्सिलर	सिपाही	×
४१	भुलुक सिंह			
४२	द्वारका माली			
४३	जयमङ्गल सिंह			

ऊपर की सूची मे जहाँ 'सन्देहपूर्ण' शब्द लिखा गया है, उसका अर्थ ऐसे मनुष्यों में है जो मुझको अमनिस्टी से बरी रखने योग्य मालुम हुए और इसलिए

परगना	उम्र	पिता का नाम	कैफियत
बिहिया	५२ वर्ष	रघुनाथ सिंह	सारी सेना के तनख्वाह के चार्ज में थे। (paymaster)
गाजीपुर	×	जयनाथ सिंह	सीधा सिंह का भाई। उन्हीं के साथ आये।
भोजपु र	३७ ,,	आदित सिंह	हत्या करने वालों का मुख्य नेता।
बिहिआ	४७ ,,	शाहजादा सिंह	रोफाईन कैएट (Roefiancant) जिसका चार्जड् मार्टेन (Chargs Master) हरकिशुन सिंह थे।
	४५ ,,	×	नेता मुख्य सामन्तों में एक।
पटना	×	×	मालूम होता है कि इसने सेना को भो आज्ञा दी थी।
बिहिआ	४७वर्ष	नन्दारी सिंह	×
दनवान	२१वर्ष	कालीचरण	×
आरा	×	×	कुरुमवारी तपा डिविजन में थे।
×	×	×	अस्थायी रूप से डेराइल का कमान किये।
×	×	×	×
×	×	×	अस्थायी रूप से सेना का कमान कि`।
×	×	×	×

उनको बरी कर देने में संदेह रह जाता है। वे नाम जिनके नीचे 'संदेहपूर्ण' शब्द नहीं लिखा गया है, अमनिस्टी के अन्दर आ जाते हैं।

कुंअर सिंह के सम्बन्धियों ने उनके विरुद्ध अंग्रेजों को मदद दी। इस सम्बन्ध के कागज :

कागज नं०—१६

प्रोसिडिंग का नम्बर	विषय (Subject)
१५२	रिपुभंजन सिंह की दरखास्त जिसमें उनकी उस पैतृक सम्पत्ति को मुक्त (release) करने की प्रार्थना है जो कुंअर सिंह के कब्जे में थी और जो जब्त करली गयी।

बाबू दयाल सिंह के पुत्र बाबू रिपुभंजन सिंह ने ता० १४-६-१८५६ को शाहाबाद के कलक्टर के पास एक दरखास्त इस आशय की दी कि उन्होंने अंग्रेजों को बलवे में मदद दी है। इस राजभक्ति के उपलक्ष में उनको जागीर मिलनी चाहिये। इस दरखास्त को पटना के कमिश्नर एच० फर्गुशन ने २६ जुलाई १८६० को खारिज करते हुए निम्नलिखित आज्ञा लिखी—

"यह दावा पूरी तरह से सारहीन और निरर्थक (absurd) है। १८५७ ई० के ऐक्ट के ३ सेक्शन के अनुसार उन सभी जायदादों पर यह जब्ती लागू है जिन पर से अपराधी (offenders) कुंअर सिंह का क़ब्जा छीना गया है। इन सम्पत्तियों पर अब सभी दावे १८५७ के ऐक्ट के दफा ६ के अनुसार वंचित हो जाते हैं।"

इसकी अपील बाबू रिपुभंजन सिंह ने रेवेन्यु बोर्ड में दूसरी दरखास्त देकर की जो ता० २६-११-१८६० को निम्नलिखित आज्ञा से खारिज की गयी :

"यह तर्क कि जब्ती (confiscation) उस जायदाद की नहीं की जा सकती जिसमें बागी का हक जीवन भर के लिये ही था, सर्वथा अमान्य है। अतः दरखास्त खारिज की गयी जिसकी सूचना प्रार्थी को दे दी गयी।

एच० एल० डेनिअर
ऑफिसियेटिंग सेक्रेटरी, बोर्ड ऑफ रेवेन्यु
२७ नवम्बर १८६०।

कागज नं०—१७

तब बाबू रिपुभंजन सिंह ने ता० ७ जनवरी १८६० को एक दरखास्त बङ्गाल के छोटे लाट श्री जे० पी० ग्रैण्ट के पास दी जिसकी छपी प्रतिलिपि पटना सचिवालय में उपर्युक्त फैसलों के साथ मौजूद है। उस दर्खास्त से आवश्यक उद्धरण नीचे दिये जाते हैं :—

पारा १—"यह कि जगदीशपुर की रियासत वंशपरंपरा से पैतृक (Heredetary) है और पूर्ण रूप से इसके एक मात्र (Solely and absolutely) मालिक नहीं हैं। यह रियासत समय समय पर जैसी परिस्थिति उपस्थित हुई एक के बाद दूसरे को मिलती आयी है और बाबू कुंअर सिंह संतान-हीन मरे। इन कारणों से बाबू रिपुभंजन सिंह जो कुँअर सिंह के भाइयों के शाख में सबसे बड़े है इस रियासत के पाने के हकदार हैं।

"यह कि बाबू साहबजादा सिंह ने ईश्वरी प्रसाद सिंह से जिला, प्रान्त और सदर अदालत से इसी बिना पर दिनांक १६ मार्च १७६६, ११ नवम्बर १७६६ तथा ६ मई १८०३ के फैसले के अनुसार जो खानदानी रस्म-रिवाज के आधार पर दिये गये थे, रियासत को पाया।"

पारा २—"यह कि (१) जब आरा के सरकारी अधिकारियों तथा फौजी अफसरों की रिपोर्टों से और दूसरे सबूतों और कागजों से जो इस मुक़दमें में दाखिल किये गये है यह साबित है कि प्रार्थी ने (रिपुभंजन ने) सिपाही विद्रोह के समय और उसके पहले भी अँग्रेजी सरकार के प्रति सदा अपनी राज्यभक्ति दिखलाई है।"

(२) प्रार्थी ने बहुत से यूरोपियन, भद्र पुरुष और महिलाओं की जान बचायी है। (३) प्रार्थी ने अँग्रेजी सेना को भरपूर मदद पहुँचायी है (४) प्रार्थी ने बहुत से विद्रोहियों को हथियार रखने को राजी किया है। (५) प्रार्थी ने बहुत दूसरे लोगों को भी बलवा में भाग न लेने के लिये समझाया है (६) और प्रार्थी ने बहुत से दूसरे अच्छे कामों को सरकार की मदद में उस बलवे में किया है तब आपका प्रार्थी रिपुभंजन सिंह अङ्गरेजी सरकार से जागीर पाने का हकदार है। परन्तु जागीर पाने की बात तो बहुत दूर रही फिदवी (प्रार्थी) अपने पैतृक

रियासत (कुँअर सिंह की जब्त रियासत) को पाने से भी वंचित रखा जाता है। यह विक्टोरिया महारानी की घोषणा के अनुकूल कार्य नहीं है और न कानून और न्याय से ही समर्थित है।"

तीसरे पारे में कहा गया है कि रियासत पैतृक है और कुँअर सिंह का इस पर केवल जीवन भर का हक था (Life interest) उन्होंने बगावत की और सन्तान हीन मरे। अब रियासत मुझको मिलनी चाहिये जो खानदान की बड़ी शाख का सबसे बड़ा लड़का है और अँग्रेजों का पक्का राजभक्त है।'

चौथा पारा—"यह कि यदि कोई सामन्त या सरदार विद्रोह करने के कारण गद्दी से उतार दिया जाता है तब रियासत उसके दूसरे नजदीकी वारिस को दी जाती है जैसे कि हजारी बाग का राजा एवाक, राजा अमुत मल्ल, राजा फतेह साही, मंगुली का राजा युगल किशोर और सारन और गोरखपुर के राजे (बलवा) विद्रोह के बहुत पूर्व अराजभक्त साबित हुए और उनकी पैतृक रियासत उनके कानूनी हकदार को दे दी गयी।'

पारा पाँच :—"यह कि बाबू कुँअर सिंह की निर्दोषता डिप्टी कलक्टर की रिपोर्ट से प्रकट है और यह सिद्ध है कि जब कुंअर सिंह विवश कर दिये गये तभी उन्होंने विद्रोह किया। यह बातें यदि देशी या यूरोपीय भद्र पुरुषों की जाँच की जाय तो स्पष्ट हो जायँगी। साथ ही ये बातें कागजी प्रमाणों की बाहुल्यता से भी साबित हैं। इसलिये बाबू कुँअर सिंह का विवशता की दशा में विद्रोही बनना क्षम्य होना चाहिये और उसे भुला भी देनी चाहिये।'

६ठाँ पारा..

परन्तु उपर्युक्त बातों के होने पर भी सरकार प्रार्थी को कुँअर सिंह की रियासत नहीं देती है, बल्कि उसको शाहाबाद के कलक्टर द्वारा निलाम करवा रही है।

उपर्युक्त फाइल का रेफ्रेंस :—

१८५९—बंगाल सरकार, राजस्व विभाग, भूमि राजस्व शाख—एक प्रोसिडिङ्ग जनवरी १८६१ ई०........

प्रोसिडिङ्ग का नं०	विषय	प्रोसिडिङ्ग की तिथि
१५२	बाबू रिपुभञ्जन सिंह का आवेदनपत्र जिसमें उनकी पैतृक सम्पत्ति छोड़ देने के लिये प्रार्थना है जो कुंअर सिंह के अधिकार में थी और सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी है।	२४।१।१८६१

कागज नं०—१८

१८६० में डुमराँव के महाराज महेश्वर बख्श सिंह ने ४ जून को बंगाल के छोटे लाट श्री जे० पी० ग्रांट के पास एक दरखास्त दी जिसका फाइल रेफेरेन्स निम्नलिखित है :

कार्यवाही का नम्बर	विषयः—
२९७/९९	महाराजा महेश्वर बख्श सिंह बहादुर के अधिक अस्त्र-शस्त्र रखने के आवेदनपत्र के सम्बन्ध में।
कार्यवाही की तिथि	
२६-६-१८६०	

आवेदनपत्र के आवश्यक अंशों का अनुवाद

पहला अनुच्छेद—आपका प्रार्थी पटना डिविजन के कमिश्नर के ३० मार्च की आज्ञा से दुःखित होकर जिसमें उन्होंने प्रार्थी के उस आवेदनपत्र को खारिज कर दिया है जिसमें सीमित और अपर्याप्त अस्त्र-शस्त्र-संख्या को बढ़ाने की प्रार्थना निम्नलिखित थी, अपील आपके सामने उपस्थित करता है।

(२) अपने अभियोग के विवरण पेश करने के पूर्व आपका प्रार्थी आपकी जानकारी में लाना चाहता है कि बंगाल के भूतपूर्व छोटे लाट ने जो शाहाबाद के कलक्टर और मजिस्ट्रेट श्रीमनी के उस रिपोर्ट की स्वीकृति प्रदान की जिसमें आपके प्रार्थी को अपनी जमींदारी के लिए केवल ५० बन्दूकें और १०० तलवार रखने की अनुमति दी गयी थी वह प्रार्थी को बिना सूचना दिए हुए सम्पादित की गयी।

(३) आपका प्रार्थी और उसके पूर्वज कई पुश्तों से अंगरेज सरकार के शुभेच्छु, राजभक्त और (devoted) प्रजा रहे हैं और जो कुछ सहायता आपके

महाराजा महेश्वर बख्श जो शाहाबाद, गाजीपुर और पटना में क्रान्ति के शुरू से २० मई १८५९ तक अङ्गरेजों को सहायता पहुँचायी उसके पूर्व आवेदन पत्र के सिलसिले में तालिका—

दिनाङ्क	जगह का नाम	अधिकारी का नाम	अस्त्रों की संख्या जो दी गयी	कैफियत
११ जून १८५७	आरा	मजिस्ट्रेट	५० बन्दूकधारी सैनिक, ४ सवार, २० दौराहा।	कमिश्नर की आज्ञा के अनुसार राजी हो कर।
१४ अक्टूबर १८५७	आरा	मजिस्ट्रेट	१०० बन्दूकधारी ।	मजिस्ट्रेट के माँगने पर।
१६ अप्रैल १८५८	आरा	मजिस्ट्रेट	१ सवार	×
२६ अप्रैल १८५८	डुमराँव और सिनहा	नायब दरोगा	बन्दूकधारी की असीमित संख्या	डिप्टी मजिस्ट्रेट के हुक्म से २४ अप्रैल १८५८ को बागियों की सूचनाहेतु।
१४ मई १८५८	जगदीशपुर	मजिस्ट्रेट सारन	४ सवार	
१४ अगस्त १८५८	डुमरांव	दी मेजर	मनुष्यों की असीमित संख्या	महाराजा और उनके आदमी मेजर सेना के साथ क्रान्तिकारियों से युद्ध किये।
१४ अक्टूबर १८५८	यत्र-तत्र	मजिस्ट्रेट	सौ आदमी	खुफियागिरी और बागियों के भेद पहुँचाने के लिए।

११ जून १८५७ से २० जून १८५६ तक विभिन्न स्थानों पर दी हुई सहायताओं की संख्या ६३ थी।

पटना और आरा जिले के अधिकारियों से जाँच कराने के बाद छोटे लाट की आज्ञा निम्नलिखित थी :

आज्ञा संख्या का नम्बर ३३५६

दीवानी

फोर्टविलियम

दिनाङ्क २६ जून १८६०

४ जून १८५६ का महाराजा महेश्वर बख्श का स्मृति-पत्र जिसमें उनका अस्त्र-शस्त्र जितना वे उचित समझें तथा ४०५ बन्दूक और ६७५ तलवार अपनी जमींदारी की वसूली और निगरानी के लिए रखने की आज्ञा पाने की प्रार्थना की गयी है, पढ़ा गया। आज्ञा हुई कि महाराजा को इत्तला दी जाय कि अस्त्र-शस्त्र रखने की जो आज्ञा दी गयी है याने ७३२ हर तरह के अस्त्र-शस्त्र वह छोटे लाट महोदय को सभी कार्यों की पूर्ति के लिए पर्याप्त समझी जाती है।

बाबू कुंअर सिंह के वंश के प्रतापी पूर्वजों की दी हुई सनदें जो ऐतिहासिक महत्त्व की हैं और जिनसे उन पुरुषों के समय, यश, प्रताप और राज्य विस्तार आदि की बातों का बोध होता है। इसी साथ बाबू साहब के ५५० वर्ष पूर्व से वर्त्तमान समय तक के पूर्वजों और वंशजों का वंश-वृक्ष।

कागज नं०—१९

नकल सनद १०२७ साल की

8th Nov. 1797
G. W. Webb.
A 19 India

उर्दू में कुछ लिखा है

मुहर जो इतना डिम है कि वह भी नहीं मालूम होता कि किस लिपि में है। परन्तु ऐसा ही मुहर जो पृष्ठ पर सनद के है, साफ कैथी लिपि में है। (अक्षर शिरोरेखा साथ कैथी मिश्रित नागरी है।)

महाराजा महेश्वर बख्श जो शाहाबाद, गाजीपुर और पटना में क्रान्ति के शुरू से २० मई १८५९ तक अङ्गरेजों को सहायता पहुँचायी उसके पूर्व आवेदन पत्र के सिलसिले में तालिका—

दिनाङ्क	जगह का नाम	अधिकारी का नाम	अस्त्रों की संख्या जो दी गयी	कैफियत
११ जून १८५७	आरा	मजिस्ट्रेट	५० बन्दूकधारी सैनिक, ४ सवार, २० दौराहा।	कमिश्नर की आज्ञा के अनुसार राजी हो कर।
१४ अक्टूबर १८५७	आरा	मजिस्ट्रेट	१०० बन्दूकधारी ।	मजिस्ट्रेट के माँगने पर।
१६ अप्रैल १८५८	आरा	मजिस्ट्रेट	१ सवार	×
२६ अप्रैल १८५८	डुमराँव और सिनहा	नायब दरोगा	बन्दूकधारी की असीमित संख्या	डिप्टी मजिस्ट्रेट के हुक्म से २४ अप्रैल १८५८ को
१४ मई १८५८	जगदीशपुर	मजिस्ट्रेट सारन	४ सवार	बागियों की सूचनाहेतु।
१४ अगस्त १८५८	डुमरांव	दी मेजर	मनुष्यों की असीमित संख्या	महाराजा और उनके आदमी मेजर सेना के साथ क्रान्तिकारियों से युद्ध किये।
१४ अक्टूबर १८५८	यत्र-तत्र	मजिस्ट्रेट	सौ आदमी	खुफियागिरी और बागियों के भेद पहुँचाने के लिए।

११ जून १८५७ से २० जून १८५६ तक विभिन्न स्थानों पर दी हुई सहायताओं की संख्या ६३ थी।

पटना और आरा जिले के अधिकारियों से जाँच कराने के बाद छोटे लाट की आज्ञा निम्नलिखित थी :

आज्ञा संख्या का नम्बर ३३५६

दीवानी

फोर्टविलियम

दिनाङ्क २६ जून १८६०

४ जून १८५६ का महाराजा महेश्वर बख्श का स्मृति-पत्र जिसमें उनका अस्त्र-शस्त्र जितना वे उचित समझें तथा ४०५ बन्दूक और ६७५ तलवार अपनी जमींदारी की वसूली और निगरानी के लिए रखने की आज्ञा पाने की प्रार्थना की गयी है, पढ़ा गया। आज्ञा हुई कि महाराजा को इत्तला दी जाय कि अस्त्र-शस्त्र रखने की जो आज्ञा दी गयी है याने ७३२ हर तरह के अस्त्र-शस्त्र वह छोटे लाट महोदय को सभी कार्यों की पूर्ति के लिए पर्याप्त समझी जाती है।

बाबू कुंअर सिंह के वंश के प्रतापी पूर्वजों की दी हुई सनदें जो ऐतिहासिक महत्त्व की हैं और जिनसे उन पुरुषों के समय, यश, प्रताप और राज्य विस्तार आदि की बातों का बोध होता है। इसी साथ बाबू साहब के ५५० वर्ष पूर्व से वर्त्तमान समय तक के पूर्वजों और वंशजों का वंश-वृक्ष।

कागज नं०—१९

नकल सनद १०२७ साल की

8th Nov. 1797
G. W. Webb.
A 19 India

उर्दू में कुछ लिखा है

मुहर जो इतना डिम है कि वह भी नहीं मालूम होता कि किस लिपि में है। परन्तु ऐसा ही मुहर जो पृष्ठ पर सनद के है, साफ कैथी लिपि में है। (अक्षर शिरोरेखा साथ कैथी मिश्रित नागरी है।)

मुहर हिन्दी में

स्वस्ति श्री राजकुमार भैया श्री प्रताप मल लि॰ महाराज कुमार भैया श्री नारायण मल के.......(आसीस) आगे पितम्बर दसवधि क नेग मैं दिहल है से (........ विवीस कै-------- ---------------------

जे भाटन्ह के दीले ताकर दसवध दसवधि के देब— नान्ह जाति परजा (.........) पीआदा का विवाह में (....) कोइ से दुइ आना ले (....) दीहे ſ=

महतव गौंआ का विआहे एक सुका ।) असवार जे जस लाएक हों (खें) अमनैक से ते तेही भाँति से दसवधिक नेग दी लो (ग)

नेग कै दीहल है कुअतिना कुअति अदमिन्ह होवे दसवधि लिहे (................)

कैथी में

सन् १०२७ साल मो॰ (....................)
नकल १०२७ साल के सनद के पृष्ठ पर के लेख का (उर्दू में तीन लाइन में लिखा है।) उर्दू के लेख का कुछ अंश—हस्त्र हुकुम अठारह माह १७४८ सद् तारीख व सद हाकिम.........।

ता॰ ६ जनवरी १८६०

महाफिज

(१) राजाकाबीआहवेटाका भइलाघोराजोरासोनदेव

(२) देशमाहजाहालेहअमलबड़ागावन्हएकरुपैयाछोटा गावन्ह आधा रुपैया देही

(३) शवधीकाकवीलाकेचालीसबीगहाकातरीदेव ४०)

(१) नगदीसीपाहकेजेदीताहकाह......... रुपैअहीआधआनालेकदीआइबी

(२) जागीरमाहबड़ागावन्हपाचमनछोटा गावन्हदुइमनलेजेदेव

(३) शायरमाहजीनीशीवहतीवरदेहीएक दमरीधानीबरदहीआधपावजीनीशदव बीक्रीहोरुपैअहीआधपावदेव=ſ

(४) शरकारमाहबीतबेकाएताही माहसैंएबीतुमाहदुइबीतदेव

(५) दसइफगुआश्रीपंचमीसरकारसेवपराशोनदेव—

(४) सरकारमाहबधुआबधाएअरोहताहमाह रुपैअहीआनालेजेदेव--

कागज नं०—२०

मुहर देवनागरी ऐसा अक्षर है।	स्वस्तिश्रीरिपु............
	राजाश्रीअमरसिंहदेवदेवानांसदासमर............
	जोग्यशिकदारवोवाजेवोहदारचौधरीवो............
नीवाज	केमद्याअपिपितम्अरदसौंधीकेनेगकैदीहल......(जे)देव....
	जेदीहलसेसम............तेदीहल............
विआहवोबेटाकाभैला	जेभाटन्हकेदिलीताकरअमनैककाविआहहोखे
घोरजोराशोनदेव—	दसवधदशौधिकेदेव....तवनजसलाएकतसदेइ........
नान्हजातिपरजावोपि-	महतो...काविवाहहोए ——
आदासौदुइआना ꣱=	तोएकसुकाबीत꣱। ——
एकामहसारीशीरमह	(....)वहरिआधपाक꣱= ——
बड़गाँवपाँच मनछोट	बरदही।꣱)जेकेइआवै ——
गाँवदुइमनदेइसाल	सेएकरहीदुइबीत ——
सालदेब	देव.... ——

यहाँ भी कैथी में (अपठनीय) दस्तखत हैं। साल १०४७

कागज नं०—२१

इसमें जो अक्षर नागरी के नहीं है न कैथी ही है।

मुहर हिन्दी में

स्वस्तिश्रीरिपुराजदैत्यनारायणेत्यादिविविधविरुदावलीविराजमानोन्नतमहाराजधिराजराजाश्रीअमर सिंहदेवदेवानांसदासमरविजईनाजोग्यसिकदारवो वाजेवोहदारवोचौधुरीवोकानुगोकेमाजावोअखौरीराजमलके....अजप्रगनैओरमाहवैस्मभैआ अमरसिघवोसभभाइन्हसमेत केमहलुलदिहलहै मौजे१७४

असल १०४

तपै सहसराव मौजे ४०

असल २५ दाघीली १५

मौजे पवट मौजे पवट मौजे पवट
पजरैआ १ रसालू १ सागर १
मौजे पवट मौ० टीकरिआ मौ० सरआ
कीनु—१ १ अर खुर्द १
मौ० सिकन्दरपुर मौ० बघहा मौ० चक
करैमानपुर-२ ३ भाउ १
अ० १ दा० १ अ० १ दा०१
मौ० सेवरिया मौ० श्रीरामपुर मौ० गो-
भान्द्रपुर १ गोपाल-१ पालपुर १
मौ० चादी मौ० शरली मौ० सहसराव
अजौरी ४ अरक पु १ खास ५
अ० १ दा०३ अ०१ दा० ४
मौ० धीरोखां मौ० मधुवनी २ मौ० शरा
डी० १ अ० १ दा०१ इजगनाथ ३
अ० १ दा० २
मौ० मोपति मौ० घोर मौ० मर-
पुर १ डहरी १ वरिआ १

दाली ७०

तपै पाकरी मौजे ४३

असल २३ दाघीली २०

मौ० वाघी मौ० उदै मौ० जाहौ
पापुरी खास १ भानपुर १ पुर १
मौ० रमकरई ४ मौ० गैघटा१ मौ० धरम-
अ० १ दा० ३ पुरा १
मौ० मभौली३ मोहनपुर ३ दरियापुर २
अ०१ दा०२ अ०१ दा०२ अ०१ दा०१
तेतरियापुकु २ मौ० वेहरा १ मौ० अगर-
संडा १
मौ० मडरा मौ० मुराडी ५ मौ० खजु-
खुर्द १ रीआ २
अ०१ दा०४ अ०१ दा०१
वाजिदपुर १ मौ०गाजीपुर१ शीगीताला १
नरायनपुर २ मौ०हवतपुर ४ धमारी २
अ०१ दा०१ अ०१ दा०३ अ०१ दा०१
गीरीधरपुर २ मुश्तआपुर १
अ०१ दा० १

तपै कल्यान मौजे ४०

असल २६ दघीली १५

मौ. गुडी मौ. इटइना इटइना
खास ६ कस्तुरी १ मनीआ १
अ.१ दा.८
वेलघाट १ भोपतिपुर१ वेलाहोरील २
अ.१ दा. १
परिगुना जोगवलि जहागीर
एर १ आ० १ पाई ३
अ. १ दा.२
हाजीपुर १ रतनपुर २ सोनदिया १
अ.१ दा.१
घाघरी २ मौ०चोपहा१ पीश्नपुरा २
अ.१ दा.१ अ. १ दा. १
वमनवली १ दलपति पवगा
पुर १ हुलम १
घुखलिया १ शवलपुर १ —

मौ० मोहन मौ० मङ्गली मौ० मङ्गली
पुर १ खुर्द १ वुउ १
मौ० मीस-
वलीआ २
अ०१ दा०२

तपै वाजीदपुर मौ० २२
असल १५ दाखीली ७
वाजदपुर मौ० मन- मौ० नरायन
खास २ पुरा १ पुर २
अ०१ दा०१ अ०१ दा०१
मौ० जवहर मौ०वाराकान्हर२ खानपुर १
अ०१ दा० १
महथवलिआ१ मनसुपुर १ दौलतिपुर १
तुकुम्ही १ मौ.हरासमरपुर१ गगवली २
अ०१ दा०१
सरीसिआ २ कवजा मौ०२ श्रीमतपुर २
अ०१ दा०१ अ०१ दा०१ अ०१ दा०१

तपैवहिआरा मौजे १७
असल ११ दाखिली ६
मौ० वलि- मौजे शादी गाजीपुर १
हारी १ पुर १
लवहर कुवरिया अरहदा
कुंकउका ५ १ धुधुआल १
अ०१ दा०४
मौ०जमीरा १ मौ०शेरपुर २ दलपतिपुर १
अ०१ दा०१
अरंदा २ मौ०वोखारापुर१ ऽ

तपै अरहंगपुर वोगएरह मौ० ११
अ० ४ दाखी ७
तपैअहंगपुर तपैगीधाअलमौले
मौ० २ अनिपुर ३
अरहंगपुर सुरजा अ० दा०
खास १ १ १ २
तपै कुहरिआ
अज मौ० पपुरी ऽ
मौजे ६
अ० १ दा० ५

एक सै चौहतरी मौजे असलि मौजे एक सै चारि दारिवली शतरी भैया अमर सिंह के भाइन्ह समेत महलुल दीहल है अमल कराइबि। ता० १६ सुदी भादो (लौअलि ?) शन ॥१०६५ शाल मोकाम बहादुरपुर

कागज नं०—२२

नकल सनद सुजान सिंह प्रदत्त

श्री राम १

मुहर	मुहर फारसी में गोला रुपये के माप का, शाहआलम पढ़ा जा सका । सन् लिखा है पर पढ़ा नहीं जा सका ।

स्वोश्ति श्री महाराज कुमार श्री वा० सुजान सिंह जी उद्योग पुशी (कु....) चो वाजे वोहदार वो चौधुरी व कानूनगो के (म) आ आगे (शा.........)नै वीही-आ माह व इस्म (वइस्म) दसौंधी राम प्रसाद के दर वोजह ज्मीन दीहल भ ।। (सन्) ११११० साल अ० घरीशै

(पुश्त पर कैथी में लिखा है—
मोताविक हुकुम आज के कागज हाजा बंधु दसौंधी को वापस दिया गया । ता० २६।२।८८

दस्तखत उर्दू शिकश्त में है ।

कुछ उर्दू लिपि में भी लिखा है जो नहीं पढ़ा जा सका ।

राम प्रसाद दसवधी के पाच वीगा खेत दीहल वाग लावै के ।

कागज नं०—२३

कागद वगसर बाबू बुखता सिंह ।

मुहर उर्दू

स्वोस्ति श्री रीपुराज दैत्य नाराये महत्यापी वीवीध वीरुदावली विराजमान मानोन्त श्री महाराजकुमार श्री बाबू बुध सीध जी दैव देवानां सदा समर वीजइनां

आगे सुघरू पाडे प्रयाग को उपरोहीत पाछील रजन्ह कै हौअही हमहूँ आपन उपरोहित कइल जे कैउ प्रयाग मह आवै से सुवंश पाडे के मानै..................

सन् ११३७ साल मोकाम बगसर अमलै परगने भोजपुर ग्राम वसंगित वघसर गोत्र शवनुक मूल उजेन जाति पवार संवत १७८६ समै नाम अगहन वदो चौथी सन् ११३७ शाल

द० माधोप्रसाद पन्डा सा० दारागंज नं ६६८ प्रयाग राज आगे यह कागज पुरखों से हमें मिला था उसी का नकल उसी रूप में किया गया है १०-१०-४३

वा० खुद

सुवश पाडे पछीला रजन्ह के उपरोहित हउअही से हमहूँ उपरोहित कइल ।

उज्जैन वंशावली

महाराज जयदेव सिंह अथवा जय सिंह चतुर्थ धार के महाराज थे। सन् १३०५ ई० में धार (उज्जैन) अलाउद्दीन बादशाह द्वारा जीत लिया गया। अतः राज वंश का वहाँ रहना कठिन हो गया। अतः अपने दल-बल के साथ गया श्राद्ध के बहाने ये लोग अपने पूर्वज महाराज भोज के पूर्वीय प्रदेश भोजपुर में जाकर पुनः राज्य स्थापित करने के लिए चल पड़े। जयदेव के वंशजों में एक शाखा सुदूर पूर्वीय प्रदेश काशीपुर में जा बसी। और अपना राज्य स्थापित किया। शान्तन शाह ने भोजपुर प्रदेश के बिहिया स्टेशन के पास अपना राज्य स्थापित किया। और ये यहाँ उज्जैन राजपूत के नाम से विख्यात हुए।

पहली पीढ़ी

महाराज जयदेव सिंह अथवा जय सिंह चतुर्थ, इन्हीं के समय में धार अलाउद्दीन बादशाह द्वारा पराजित किया गया। सन् १३०५ ई०।

दूसरी पीढ़ी

महाराज जय सिंह के पुत्र महाराज शान्तन शाह थे, ये ही शाहाबाद के दाँवा ग्राम में चेरों राजा को परास्त कर राज्य स्थापित किये। पण्डा प्रयाग के पास प्राप्त बंशावली में ८११ फसली समय दिया गया है जो गलत प्रतीत होता है। देखिये भूमिका।

तीसरी पीढ़ी

महाराज शान्तन शाह के तीन पुत्र थे। हंकार शाह, ईश्वर शाह, बिम्मार शाह।

चौथी पीढ़ी

महाराज हंकार शाह के तीन पुत्र थे। देव शाह, राजा दुल्लह शाह, प्रताप शाह।

पाँचवीं पीढ़ी

राजा दुल्लह शाह के तीन पुत्र थे। राजा वादिल शाह, महाराज राम शाह, राजा दलीपशाह।

छठीं पीढ़ी

राजा वादिल शाह के दो पुत्र—राजा रिशाल शाह, राजा सज्जन शाह। महाराज राम शाह के दो पुत्र—महाराज संग्राम शाह, राजा धववेन्द्र शाह। राजा दलीप शाह सन्तान-हीन थे।

सातवीं पीढ़ी

महाराज संग्राम शाह के तीन पुत्र हुए। चिन्तामणि शाह, महाराज उग्रसेन शाह और जितवार शाह।

आठवीं पीढ़ी

महाराज उग्रसेन शाह के एक ही पुत्र हुए। होरिल शाह (१) ये भोजहर छोड़ कर मठिला गए। वहाँ से डुमराँच गए और डुमराँव का नाम होरिल नगर रक्खा गया।

नवीं पीढ़ी

होरिल शाह के तीन पुत्र हुए। पहला महाराज नारायण मल्ल, ये बड़े प्रतापी राजा थे। शाहजहाँ बादशाह के दरबार से आपको राजा मन मनसबदार सात हजारी की उपाधि मिली थी। दूसरा महाराज प्रताप रुद्र शाह थे, ये सन्तानहीन थे। तीसरे कीरत शाह, ये भी सन्तानहीन थे।

दसवीं पीढ़ी

महाराज नारायण मल्ल के दो पुत्र हुए। पहिला महाराज अमल शाह अथवा अमरेश शाह, दूसरा प्रबल शाह थे। आप दिल्ली दरबार में कैद हुए और वहाँ से लिखा हुआ आपका पत्र उद्धृत है भूमिका के परिशिष्ट नं० ५० २६ में। आपकी दूसरी रचना छोटा काव्य ऋतु वर्णन है जिसमें आपने अपना वंश-परिचय भी दिया है:—

सूबा मध्य बिहार के, नगर भोजपुर धाम ।
भूप नारायण मल्ल तँह, प्रगटे सब सुख धाम ॥
तिनके पुत्र प्रसिद्ध हैं, बड़े भूप अमरेश ।
जाको जस महि खगुकें, फैलो देश-विदेश ॥
दान कृपान दुहुँ ससि, भयो अमर नृप जान ।
ताको अनुज प्रबल कछु, कहौ सुनौ दय कान ॥

ग्यारहवीं पीढ़ी

महाराज अमरेश शाह के पुत्र महाराज रुद्र शाह हुए । और प्रबल शाह के दो पुत्र हुए । पहला महाराज मानधाता शाह तथा दूसरे बाबू सुजान सिंह हुए । बाबू सुजान सिंह भोजपुर छोड़ कर जगदीशपुर में जाकर बस गये ।

बारहवीं पीढ़ी

महाराज रुद्र शाह के एक ही पुत्र महाराज सहमत शाह हुए । ये सन्तानहीन थे । महाराज मानधाता शाह के एक पुत्र हुए जिनका नाम महाराजा होरिल शाह था । ये भोजपुर छोड़ कर डुमराँव जा बसे । और डुमराँव का नाम होरिल नगर रखा । बाबू सुजान सिंह के तीन पुत्र थे । पहिला बाबू उदवन्त सिंह, ये जगदीशपुर में रहे । दूसरा बाबू बुध सिह थे । ये जगदीशपुर छोड़ कर बक्सर जा बसे थे । तीसरे बाबू शुभ सिह थे । ये जगदीशपुर छोड़ कर आयर जा बसे थे ।

तेरहवीं पीढ़ी

महाराज होरिल शाह के चार पुत्र हुए । पहला महाराज छत्रधारी शाह दूसरा महाराज अलीमर्दन शाह, तीसरा चतुर शस्य शाह और चौथा भवन शाह थे ।

महाराज उदवन्त सिंह के चार पुत्र हुए । पहिला बाबू गजराज सिंह, दूसरा बाबू उमराव सिंह, तीसरा रणबहादुर सिंह, चौथा दिग्विजय सिंह थे ।

बाबू बुध सिंह के दो पुत्र थे । पहिला बाबू शिवबख्श सिंह और दूसरा बाबू दिगविजय सिंह थे ।

चौदहवीं पीढ़ी

महाराज छत्रधारी शाह के दो पुत्र थे। पहिला महाराज विक्रमाजीत सिंह, ये सन्तानहीन थे। दूसरा दुष्टदमन शाह थे।

अलीमर्दन शाह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू अजीत सिंह और दूसरे बाबू रामानुग्रह सिंह थे। बाबू गजराज सिंह के पुत्र बाबू शिवराज सिंह थे। बाबू उमराव सिंह के पुत्र बाबू साहबजादा सिंह थे। ये मुकदमा लड़कर बाबू ईश्वरी प्रसाद सिंह से सन् १८०४ ई० में राज्य प्राप्त किये।

बाबू रणबहादुर सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू रामबक्श सिंह, दूसरा वृज सिंह और तीसरा बाबू तेगबहादुर सिंह थे।

बाबू शिवबक्श सिंह के पुत्र बाबू शत्रुभञ्जन सिंह थे। ये सन्तानहीन थे। बाबू दिगविजय सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू भगत सिंह सन्तानहीन थे। दूसरा बाबू जगत सिंह थे और तीसरा बाबू मेघबरन सिंह सन्तानहीन थे।

पन्द्रहवीं पीढ़ी

बाबू दुष्टदमन शाह के तीन पुत्र थे। पहला बाबू जयप्रकाश सिंह थे, दूसरा बाबू शिवप्रकाश सिंह थे और तीसरा हरिप्रकाश सिंह थे। बाबू रामानुग्रह सिंह के पुत्र बाबू हरिगुलाब सिंह थे।

बाबू शिवराज सिंह के पुत्र बाबू भूपनारायण सिंह थे। ये सन्तानहीन थे। इनकी धर्मपत्नी तालवन्त कुँअरि ने ईश्वरी प्रसाद सिंह को गोद लिया और हार गयीं।

बाबू साहबजादा सिंह के चार पुत्र थे। पहला बाबू कुँअर सिंह थे। ये सन् १८५७ के क्रांति के नायक थे। दूसरा बाबू दयाल सिंह थे। ये कुँअर सिंह के मालिक होने पर दलीपपुर जा बसे। तीसरा बाबू राजपति सिंह थे। ये कुँअर सिंह के मालिक होने पर कंकिला जा बसे थे। चौथा बाबू अमर सिंह थे। ये सन्तानहीन थे। कुँअर सिंह के मालिक होने पर ये मिठहाँ जा बसे थे।

बाबू रामबक्श सिंह के दो पुत्र थे। पहिला लक्ष्मी प्रसाद सिंह थे और दूसरा ईश्वरी प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे। बाबू वृज सिंह के पुत्र बाबू भवानी सिंह थे। बाबू तेगबहादुर सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू तुलसी प्रसाद सिंह थे। ये बीबीगञ्ज की लड़ाई में बड़ी बहादुरी से लड़े और वीरगति को प्राप्त हुए। दूसरा बाबू दुर्गा सिंह थे।

बाबू जगत सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू सरोज बक्श सिंह सन्तान-हीन थे, दूसरा बाबू इन्द्रजीत सिंह, ये भी सन्तानहीन थे और तीसरा बाबू गोपाल शरण सिंह थे।

सोलहवीं पीढ़ी

महाराज जयप्रकाश सिंह के दो पुत्र थे। पहिला लाल निखेस बक्श सिंह थे। दूसरे महेश्वर बक्श सिंह थे। बाबू शिवप्रकाश सिंह के एक पुत्र थे जिनका नाम रामेश्वर बख्श सिंह था। बाबू हरि प्रसाद सिंह के एक पुत्र थे जिनका नाम ब्रह्मेश्वर बख्श सिंह था, ये सन्तानहीन थे। बाबू हरिगुलाम सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू बाल गोविन्द सिंह थे। दूसरा बाबू गणपति सिंह थे।

बाबू कुँअर सिंह के एकमात्र पुत्र बाबू दलभञ्जन सिंह थे। बाबू दयाल सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू अरिभञ्जन सिंह, दूसरा रिपु भञ्जन सिंह, ये सन्तानहीन थे। तीसरा बाबू गुमान सिंह थे।

बाबू राजपति सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह और दूसरा बाबू महावीर प्रसाद सिंह। ये सन्तानहीन थे।

बाबू लक्ष्मी प्रसाद सिंह के पाँच पुत्र थे। पहिला किशुन प्रसाद सिंह, दूसरा बाबू परमेश्वर प्रसाद सिंह, ये सन्तानहीन थे। तीसरा बाबू काली प्रसाद सिंह, चौथा बाबू ठाकुर प्रसाद सिंह और पाँचवाँ बाबू गोविन्द प्रसाद सिंह थे।

बाबू भवानी सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू हनुमान प्रसाद सिंह और दूसरा बाबू लावन प्रसाद सिंह थे।

बा० तुलसी प्रसाद सिंह के दो पुत्र थे पहिला बा० नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह कविवर 'ईश' थे। सन् १८६० ई० में ये दलीपपुर जाकर बस गए। दूसरा भुवनेश्वर प्रसाद सिंह थे।

बा० दुर्गा सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बा० कलदत्त सिंह सन्तानहीन थे। दूसरा बा० उदित भान सिंह थे। तीसरा बा० चन्द्रभान सिंह सन्तानहीन थे। बा० गोपाल शरण सिंह के एकमात्र पुत्र बा० उदय प्रकाश सिंह थे।

सत्रहवीं पीढ़ी

बा० लाल बिखेस बक्स सिंह के एकमात्र पुत्र महाराज जानकी प्रसाद सिंह थे। बा० महेश्वर बक्श सिंह के एकमात्र पुत्र महाराज राधा प्रसाद सिंह थे। बा० रामेश्वर बक्श सिंह के एकमात्र पुत्र बा० रमा प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे।

बा० बाल गोविन्द सिंह के चार पुत्र थे। पहिला बा० किशुन प्रसाद सिंह थे, दूसरा बा० राजेश्वर प्रसाद सिंह थे। तीसरा बा० बेणीमाधो प्रसाद सिंह थे और चौथा बा० दामोदर सिंह सन्तानहीन थे।

बा० गणपति सिंह के एकमात्र पुत्र बा० शिव प्रसाद सिंह थे। ये कवि थे।

बा० दलभञ्जन सिंह के एकमात्र पुत्र बीरभञ्जन सिंह थे। ये सन्तानहीन थे।

बा० गुमान भञ्जन सिंह के चार पुत्र थे। पहिला छत्रपति सिंह, दूसरा दलपति सिंह, तीसरा जगतपति सिंह और चौथा देशपति सिंह थे। बा० महावीर प्रसाद सिंह के देशपति सिंह गोद आये थे।

बा० काली प्रसाद सिंह के एकमात्र पुत्र रघुनाथ प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे। बा० गोविन्द प्रसाद सिंह के एकमात्र पुत्र बा० बैजनाथ प्रसाद सिंह थे। बा० हनुमान प्रसाद सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बा० जोगेश्वर प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे। दूसरा बा० भागीरथी सिंह और तीसरा बा० अम्बिका प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे।

बा० लावन प्रसाद सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बा० शत्रुघ्न प्रसाद सिंह और दूसरा बा० विंध्याचल प्रसाद सिंह थे।

बाबू नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू विश्वनाथ प्रसाद सिंह दूसरा बाबू कालिका प्रसाद सिंह और तीसरा बाबू सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह

सन्तान हीन थे। बाबू भुवनेश्वर प्रसाद सिंह के एक मात्र पुत्र बाबू हरिहर प्रसाद सिंह थे। इनका उपनाम 'हरिहर' कवि और बाबू उचित भान सिंह के दो पुत्र थे। पहला बाबू राघो प्रसाद सिंह और दूसरा बाबू माधो प्रसाद सिंह थे।

बाबू उदय प्रकाश सिंह के एकमात्र पुत्र लाल मारकंडे सिंह सन्तानहीन थे। आपकी धर्मपत्नी आज भी जीवित हैं। बक्सर में रहती हैं।

अठारहवीं पीढ़ी

महाराज राधा प्रसाद सिंह की धर्म-पत्नी महारानी बेणी कुँअरि थीं। बाबू राजेश्वर प्रसाद सिंह के एकमात्र पुत्र बाबू केशो प्रसाद सिंह थे। मुकदमा जीतकर ये बाद में महाराज हुए। बाबू बेणीमाधो प्रसाद सिंह के अकेले पुत्र बाबू द्वारिकाधीश प्रसाद सिंह थे। बाबू शिव प्रसाद सिंह के दो पुत्र थे। पहिला बाबू भगवत प्रसाद सिंह सन्तान हीन थे। दूसरा बाबू रणबीर प्रसाद सिंह थे। बाबू छत्रपति सिंह के तीन पुत्र थे। पहिला बाबू श्यामा प्रसाद सिंह सन्तान हीन थे, दूसरा बाबू रण विजय सिंह और तीसरा सूर्य प्रताप सिंह थे। बाबू दलपति सिंह के दो पुत्र थे। पहिला भगवती प्रसाद सिंह तथा दूसरा ज्वाला प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे। बाबू जगतपति सिंह के चार लड़के थे। पहिला श्री प्रसाद सिंह, दूसरा बागेश्वरी प्रसाद सिंह, तीसरा महेश्वरी प्रसाद सिंह और चौथा भुवनेश्वरी प्रसाद सिंह थे। बाबू बैजनाथ प्रसाद सिंह के एकलौते बेटे शारदा प्रसाद सिंह थे। बा० शत्रुघ्न प्रसाद सिंह के तीन लड़के थे। पहिला सोमेश्वर प्रसाद सिंह, दूसरा हरनारायण सिंह और तीसरा विहारी सिंह।

बाबू विन्ध्याचल सिंह के अकेले पुत्र कुलेश्वरी प्रसाद सिंह सन्तानहीन थे। बाबू भागीरथी प्रसाद सिंह के दो पुत्र। पहिला मथुरा प्रसाद सिंह, दूसरा बाबू गया प्रसाद सिंह।

बाबू विश्वनाथ प्रसाद सिंह के तीन पुत्र। पहिला बाबू गौरीशंकर प्रसाद सिंह, दूसरे बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह उपनाम कविवर 'नाथ' प्रस्तुत पुस्तक "कुँअर सिंह : एक अध्ययन" के लेखक हैं। तीसरे बाबू उमाशङ्कर प्रसाद सिंह।

बाबू कालिका प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू ईश्वर प्रसाद सिंह बी॰ए॰, बा॰हरिहर प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू गिरिजा प्रसाद सिंह। बाबू राघो प्रसाद सिंह के तीन पुत्र। पहिला बाबू सहदेव प्रसाद सिंह, दूसरा और तीसरा सन्तानहीन थे।

बाबू माधो प्रसाद सिंह के छः पुत्र। पहिला नरेश्वरी प्रसाद सिंह, दूसरा रणजीत सिंह, तीसरा गोपाल सिंह, चौथा बालजी, पांचवाँ बनवारी जी, छठां कन्हैया जी।

उन्नीसवीं पीढ़ी

बाबू केशो प्रसाद सिंह के दो पुत्र। पहिला महाराज रामरण विजय सिंह और दूसरा बेबी जी., बी. ए.। बाबू रघुबीर प्रसाद सिंह के दो पुत्र। पहिला बाबू उमा प्रसाद सिंह, दूसरा बाबू गणेश प्रसाद सिंह ये सन्तान हीन।

बाबू रणविजय सिंह के चार पुत्र। पहिला बाबू सच्चितानन्द सिंह; दूसरा नित्यदानन्द सिंह तीसरा यज्ञानन्द सिंह और चौथा ब्रह्मानन्द सिह।

श्री प्रसाद सिंह के तीन पुत्र। ;पहिला आद्या प्रसाद सिंह, दसरा विद्या प्रसाद सिंह, तीसरा महेश प्रसाद सिंह। बाबू महेश्वरी प्रसाद सिंह के एकेले पुत्र वीरेन्द्र बहादुर सिंह। बाबू भुवनेश्वरी प्रसाद सिंह के नृपेन्द्र जी हैं।

बाबू भगवती प्रसाद सिंह के तीन पुत्र। पहिला कैलाश सिंह, दूसरा फेंकन जी, तीसरा फतिङ्गन जी। बाबू सोमेश्वर प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू धर्मधुरन्धर प्रसाद सिंह। बाबू हरनारायण सिंह के पुत्र बाबू बद्री प्रसाद सिंह।

बाबू मथुरा प्रसाद सिंह के दो पुत्र। पलिा अयोध्या प्रसाद सिंह, दूसरा श्री जी॰। बाबू गया प्रसाद सिंह के दो पुत्र पहिला नरसिंह प्रसाद सिंह, दूसरा श्री निवास प्रसाद सिंह।

बाबू गौरी शङ्कर प्रसाद सिंह के आट पुत्र। पहिला ईश्व प्रसाद सिंह, दूसरा गिरीश प्रसाद सिंह, तीसरा श्रीश प्रसाद सिंह, चौथा जगदीश प्रसाद सिंह, पाँचवाँ नरेन्द्र प्रसाद सिंह, छठां अवधेश प्रसाद सिंह, सातवाँ राणा प्रताप सिंह और आठवाँ भरत प्रसाद सिंह।

लेखक की रचनाएँ :—

प्रकाशित

१—ज्वाला मुखी
२—गद्य संग्रह
३—हृदय की ओर
४—भूख की ज्वाला
५—भोजपुरी लोकगीत में करुण रस
६—नारी-जीवन-साहित्य
७—फरार की डायरी I
८—वह शिल्पी था
९—तुम राजा मैं रङ्क
१०—भोजपुरी के कवि और काव्य
११—गुनावन
१२—कुँअर सिंह : एक अध्ययन
१३—कुँअर सिंह नाटक [प्रेस में]
१४—कुँअर सिंह : वृहद जीवनी [प्रेस में]

अप्रकाशित

१—अतीत भारत
२—फरार की डायरी भाग II, III, IV
३—युवक युवती की बातें
४—भोजपुरी लोकगीत में शान्त रस
५—भोजपुरी लोकगीत में शृङ्गार और वीर रस
६—भोजपुरी निबन्ध
७—डैन टूट सारस
८—तुम्हारा रूप
९—विरही हृदय
१०—शीश माला
११—पद्यांजलि

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना।

बाबू दुर्गा शङ्कर प्रसाद सिंह के तीन पुत्र। पहिला बाबू शक्तिप्रसाद सिंह, B. A. B. Ed., दूसरा बाबू शतीशकुमार सिंह I. F. S., तीसरा बा० सरस्वती प्रसाद सिंह B. A.

बाबू ईश्वर प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू अभय सिंह। बाबू गिरिजा प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू कमला प्रसाद सिंह। बाबू सहदेव सिंह के तीन पुत्र। पहिला बाबू नगीना सिंह दूसरा बाबू आनन्द सिंह, तीसरा पन्ना जी। बाबू नरेश्वरी प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू गणेश सिंह।

बीसवीं पीढ़ी

महाराज रामरण विजय सिंह के पुत्र महाराज कमल नारायण सिंह बी० ए०, एम० पी०, डुमराँव के वर्तमान महाराज। बाबू उमा प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू लव प्रसाद सिंह। यह शाखा डुमराँव में निवास करती हैं।

बाबू सच्चिदानन्द सिंह के तीन पुत्र। पहिले बाबू विभु जी, दूसरे बाबू विधु जी, और तीसरे रेणु जी। बाबू आद्या प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू भरत भूषण सिंह यह शाखा दलीपपुर में है।

बाबू नरसिंह प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू प्रताप सिंह, बी० ए०। श्री निवास प्रसाद सिंह के दो पुत्र। पहिले बाबू दिगविजय सिंह, दूसरे बाबू विष्णु प्रसाद सिंह। बाबू श्रीश प्रसाद सिंह के पुत्र बाबू अनूप सिंह। बाबू शक्ति प्रसाद सिंह के पुत्र श्री अरुण सिंह, बाबू कमला प्रसाद सिंह के दो पुत्र पहिला गोपाल जी दूसरा कन्हैया जी। बाबू नगीना सिंह के पुत्र बाबू बीरेन्द्र सिंह।

इक्कीसवीं पीढ़ी

गोपाल जी के पुत्र बाबू अमर सिंह।